श्री
कुलजम सरूप

निजनाम श्री जी साहिबजी, अनादि अछरातीत ।
सो तो अब जाहेर भए, सब विध वतन सहीत ।।

सनन्ध

नोट १. यह सनन्ध किताब दिल्ली से अनूपशहर जाते समय रास्ते में उतरी। इसमें असराफील (जागृत बुद्धि से) कुरान के तीसों सिपारों के शब्द मुक्तआत (छिपे भेद) जो लोगों को जाहिर नहीं हो सके, क्योंकि रसूल साहब ने साफ कह दिया था कि इनके मायने आखिर में खुद खुदा आकर अपनी उम्मत (नाजी फिरका) के वास्ते खोलेंगे।

नोट २. रसूल साहब को अल्लाह तआला ने जबराइल फरिश्ते को भेजकर अर्श में बुलाया और बातें कीं। उसको दर्शन की रात कहा है। शबे मेयराज का अर्थ दर्शन की रात्रि है।

ढूंढे सबे मेयराज को, सबे मेयराज में सब।
सो सबे मेयराज जाहेर करी, सो सब मेयराज देखसी अब।।

उस मेयराज (दर्शन) की रात्रि को सब ढूंढते हैं। वह रात नब्बे हजार बातों का ब्योरा है। उसमें तीस हजार शरीयत की बातें तो कुरान में स्पष्ट कही गयी हैं और तीस की हिदायत की गई कि यदि कोई इनके योग्य हो तो कहना। बाकी के तीस हजार जो मारफत के अर्श अजीम की खास बातों की हैं, रसूल साहब को खोलने का अधिकार नहीं दिया। उसे खुदा अपनी उम्मत के लिए आकर खोलेंगे। यही मेरे और मेरी उम्मत के आने की पहचान होगी। उसी मेयराज की रात्रि को शबे मेयराज कहा है, जिसे आज दिन तक सारी दुनियां के लोग खोज रहे हैं, पर किसी को स्पष्ट उस रात्रि और उस ज्ञान का पता नहीं चला। उस शबे मेयराज (दर्शन की रात्रि) के भेद को अपने कहे अनुसार खुद खुदा अल्लाह तआला आखरुल जमा इमाम मेंहदी साहब श्री प्राणनाथजी महाराज ने अपनी ब्रह्मसृष्टि के लिए जाहिर किया है, जिससे सबको उस खुदा के दर्शन होंगे।

सनन्ध पेहेली अल्ला रसूल की

अल्ला मुहबा मासूक, सो खासी खसम दिल।
तो नाम धराया रसूलें, आसिक अपना असल।। १ ।।

अल्लाह के प्यारों में प्यारे माशूक श्यामा महारानी हैं। यह श्री राजजी महाराज के खास दिल हैं, इसलिए जब यहां श्यामा महारानीजी के साथ बसरी शक्ति हकी सूरत श्री इन्द्रावतीजी के दिल में आए तो उस दिन से पूर्ण ब्रह्म कहलाए और खुद अल्लाह आशिक कहलाए।

आसिक कह्या अल्लाह को, मासूक कह्या महंमद।
न जाए खोले मायने, बिना इमाम एक सब्द।। २ ।।

आशिक अल्लाह को कहा है और माशूक श्यामा महारानी को कहा है। इमाम मेंहदी के बिना इसकी कोई व्याख्या नहीं कह सका।

Nijanand App

आए रसूलें यों कह्या, काजी आवेगा खुद सोए।
पर फुरमान यों केहेवहीं, जिन कोई केहेवे दोए।। ३ ।।

मुहम्मद साहिब ने आकर कहा था कि आखिर में अल्लाह स्वयं काजी (न्यायाधीश) बनकर आएंगे पर कुरान में लिखा है कि मुहम्मद साहेब और अल्लाह (श्री राजजी महाराज) को दो नहीं समझना।

एक कह्या न जावहीं, दो भी कहिए क्यों कर।
भेले जुदे जुदे भेले, माएने मुसाफ इन पर।। ४ ।।

इनको एक भी नहीं कहा जा सकता और दो भी क्यों कहें (कैसे कहें)? परमधाम में साथ थे। खेल में आकर ब्रज और रास में जुदा लीला करने से जुदे कहलाए और अब फिर श्री प्राणनाथजी इमाम मेंहदी के तन में आ जाने से इकट्ठे हो गए। उनके पास ही सारे कुरान के मायनों को खोलने का अधिकार है।

ऐसे माएने गुझ कई, तिन गुझोंमें भी गुझ।
ए माएने अपने आप बिना, और न काहूं सुझ।। ५ ।।

ऐसे कई रहस्य भरे (गुह्य बातें) भेद हैं उन रहस्यों के अन्दर भी गूढ़ रहस्य छिपे हैं। उनका भेद स्वयं इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी के बिना और किसी को पता ही नहीं चल सकता।

फुरमान ल्याया रसूल, तिनमें अल्ला-कलाम।
सो भेज्या मोमिनों पर, अंदर गुझ अलाम।। ६ ।।

रसूल साहब अल्लाह तआला का फरमान (कुरान) लेकर आए हैं जो अल्लाह के ही वचन हैं। यह उन्होंने अपने मोमिनों के लिए भेजा है। इसके अन्दर छिपे भेद हैं।

ए जिन भेज्या सो जानही, या जाने आया जिन पर।
ए गुझ खसम मोमिन की, बिना रसूल न कोई कादर।। ७ ।।

यह जिसने भेजा है वह जानते हैं या जिनके लिए भेजा है वह जानते हैं। यह मोमिनों की और अल्लाह की छिपी बातें है। बिना आखिरी रसूल इमाम मेंहदी साहब के और कोई उसको खोलने की सामर्थ्य नहीं रखता।

खसमें लिखी हकीकत, जोलों न पाइए सोए।
तोलों असलू मोमिन को, चैन जो कैसे होए।। ८ ।।

खसम (धनी) के लिखे हुए वचनों के भेद को जब तक उनके मोमिन (सखियां) जान नहीं जाते, तब तक असली मोमिनों (ब्रह्मसृष्टियों) को चैन (आराम) कैसे मिलेगा?

माएने इन कुरान के, जोलों ना समझाए।
तोलों सो रूह आपको, मोमिन क्यों केहेलाए।। ९ ।।

जब तक उस कुरान के गुझ भेदों को समझ नहीं लेती तब तक कोई भी रूह अपने को ब्रह्मसृष्टि कहलाने की हकदार नहीं है।

तो लिख्या आगूहीं थें, रसूलें अल्ला कलाम।
करसी जाहेर मोमिन, आखिर आए इमाम।। १० ।।

इसलिए पहले से ही आकर मुहम्मद साहब ने अल्लाह कलाम (कुरान) में लिख दिया है कि ब्रह्मसृष्टि (मोमिन) और इमाम मेंहदी आखिर में आकर इसे खोलेंगे।

Nijanand App

हकीकत फुरमानकी, कहूं सुनो सब मिल।
नूर अकल आगे ल्याएके, साफ करूं तुम दिल।। ११ ।।

अब श्री प्राणनाथजी कह रहे हैं कि मैं जागृत बुद्धि (असराफील) को लेकर आया हूं और कुरान के सारे भेदों को खोलकर तुम्हारे दिल के संशय मिटाता हूं।

अब सो आखिर आइया, उठ खड़े रहो मुस्लिम।
पाक करूं नूर अकलें, खबर देऊं खसम।। १२ ।।

अब वही आखिरत का समय आ गया है। इसलिए, हे मुसलमानो! (मोमिनो-सुन्दरसाथजी) उठकर जागृत हो जाओ। नूर अकल (असराफील-जागृत बुद्धि) से तुम्हें निर्मल कर अपने धनी की पहचान कराता हूं।

सबको प्यारी अपनी, जो है कुल की भाख।
अब कहूं भाखा मैं किनकी, यामें भाखा तो कई लाख।। १३ ।।

सबको अपनी-अपनी पारिवारिक भाषा प्यारी है। संसार में तो लाखों भाषाएं हैं तो मैं किस बोली (भाषा) में वर्णन करूं?

बोली जुदी सबन की, और सबका जुदा चलन।
सब उरझे नाम जुदे धर, पर मेरे तो केहेना सबन।। १४ ।।

यहां तो सबकी बोली जुदा है और सबकी रस्मो रिवाज अलग हैं और सभी अलग-अलग नाम के पीछे लड़ रहे हैं, परन्तु मुझे तो सभी के लिए कहना है।

बिना हिसाबें बोलियां, मिने सकल जहान।
सबको सुगम जानके, कहूंगी हिंदुस्तान।। १५ ।।

इस संसार में तो बिना हिसाब बोलियां (भाषाएं) हैं, इसलिए सब के लिए सब से सरल जानकर मैं हिन्दुस्तानी भाषा में कहूंगी।

बड़ी भाखा एही भली, सो सबमें जाहेर।
करने पाक सबन को, अंतर मांहें बाहेर।। १६ ।।

यही भाषा सबसे अच्छी है जिसे सब समझते हैं, इसीलिए मैं इसी भाषा में कहूंगी, क्योंकि मुझे तो सभी के संशय मिटाकर निर्मल करना है।

।। प्रकरण ।। १ ।। चौपाई ।। १६ ।।

सनन्ध आरबीकी

कलाम आरबी हक रसूल ना, फआल कसीदे कलम।
बोली आरबी सच है रसूल मेरे की, करके साखियां कहत हों।
लाकिन माय आरफो, मिन्हुम हिंद मुस्लिम।। १ ।।
लेकिन नहीं समझेंगे, इनमें हिंद के मुसल्मान।।

स्वामीजी कहते हैं कि मेरे रसूल ने जो अरबी भाषा में वचन कहे, वह सत्य हैं। उनकी गवाहियां देकर मैं कहती हूं, पर हिन्दुस्तान के मुसलमान नहीं समझेंगे क्योंकि कुरान अरबी भाषा है।

Nijanand App

इस्म्यो हिंद मुस्लिम, अना कलम सिदक।
सुनो हिंद के मुस्लमानों, मैं कहुं सच।
मा कलिम अना किजब, मा कुंम इन्द कलिमा हक।। २ ।।
ना कहुंगी मैं झूठ जो, तुम पास कलमा सांच है।।

हे हिन्द के मुसलमानो! सुनो, मैं झूठ नहीं कहूंगी। सच कहूंगी कि तुम्हारे पास जो कलमा है वह सच है (अल्लाह की वाणी है)।

अल्लजी मुस्लिम असलू, अना हवा मरा कुंम।
जो कोई मुस्लिम असल हैं, मेरा प्यार बहुत तुम से।
अना हाकी हकाईयां असलू, लिना इमाम इलंम।। ३ ।।
मैं कहूं बातें असल की, साथ मेरे इमाम का ग्यान है।।

जो कोई सच्चे मुसलमान हैं, मेरा उनसे बहुत प्यार है। मेरे पास इमाम मेंहदी का इल्म है, जिससे मैं तुम्हें असल की बातें (अर्श अजीम की बातें) कहूंगी।

लागिल हिंद मुस्लिम, अना कलिमों हिंद कलाम।
खातर हिंद के मुसलमानों के, मैं कहुं हिंद की बोली।
अना कुल्ल सवा सवा, अना हुरम इमाम।। ४ ।।
मुझ को सब बराबर-बराबर है, मैं हुं औरत ईमाम मेंहदी की।।

मैं इमाम मेंहदी की बेगम हूं। हिन्द के मुसलमानों को मैं हिन्द की बोली में ही कहूंगी, क्योंकि मेरे लिए सब बराबर हैं।

हिंद कलाम जिद हवा अना, लागिल हिंद मुस्लिम।
हिंद की बोली ज्यादे प्यारी है, मुझे खातर हिंद के मुस्लमानों के।
अल्लजी सिदक यकीन, हुब हक रसूल कदम।। ५ ।।
जो कोई सच्चे यकीन वाले हैं, प्यार सांचा रसूल के कदमों पर।।

मुझे हिन्दुस्तान के मुसलमानों के लिए हिन्द की बोली ज्यादा प्यारी है, इसलिए जिनको सच्चा यकीन है और रसूल पर सच्चा प्यार और भरोसा है, वह मेरी बात सुनें।

बेन कुरान मकतूब, अल्लजी रसूल कवल।
दरम्यान कुरान के लिखा है, जो कि रसूल ने आगे ही से।
जाया मेहेदी कलम, लिसान लुगाद बदल।। ६ ।।
आए के मेंहदी कहेगा, जुबान बोल बदल कर।।

रसूल साहब ने पहले से ही कुरान में लिख दिया है कि इमाम मेंहदी जब आएंगे तो मेरी ही बातों को अलग भाषा में कहेंगे।

वाहिद लिसान वाहिद लुगद, अल्लजी सेसमा उलगवर।
एक जुबान एक बोल जो कुछ आसमान जमीन में है।

Nijanand App

बेन हिम इमाम लुकनत, लिसान लुगाद ला कादर।।७ ।।
दरम्यान इनों के इमाम मेंहदी तोतला, जुबान बोलने से ना समरथ।।

आसमान जमीन का जो ज्ञान है उसे स्पष्ट एक जबान में बोलेंगे, परन्तु इनके बीच में इमाम मेंहदी की जबान तोतली होगी, अर्थात् वह सरल भाषा बोलेंगे।

कुल्ल आदम ओ कुल्ल गिरो, मा कुल सुर आ वाहिद।
सारे आदमी और सब उम्मत जो कोई, है सब की राह एक है।
लुगा तरीक मा मिसलहू, कमा फास काल महंमद।।८ ।।
बोलना राह नहीं है उन जैसा, ऐसे जाहेर कह्या मुहम्मद साहेब ने।।

मुहम्मद साहब ने स्पष्ट कहा है कि सभी धर्मों के सभी आदमियों का रास्ता एक है, परन्तु उनका बोलना एक-सा नहीं है।

अल्लजी मकतूब हाकिमा, बेन कुरान कलाम।
जो कि लिख्या है ऐसा, दरम्यान कुरान के वचन।
हाला अना कएफ कलमो, लुगाद बदल इमाम।। ९ ।।
अब मैं क्यों कर कहुं, एक बोल बिना इमाम मेंहदी।।

कुरान में जो लिखा है वह वचन सत (सत्य) है, जिसे इमाम मेंहदी (श्री प्राणनाथजी) ने स्वीकार किया है। मैं वही अब बोलूंगी।

हरफ कमा मकतूब, अल्लजी हक रसूल।
सब्द जैसा कोई लिख्या है, जो सांचे रसूल अल्लाह ने।
व ला इतरो मिन्हुंम लुगा, फआल इमाम कुल्ल कबूल।। १० ।।
कदी न जावे इनमें से एक बोल, किए इमाम ने सब कबूल।।

रसूल साहब ने जैसा कुरान में लिखा वह सब सच है, और उसे इमाम मेंहदी साहब श्री प्राणनाथ जी ने स्वीकार किया।

अल्लजी इमाम अगबू, हुब हस्ना हिंद मकान।
जो इमाम मेंहेदी ने पसंद किया, प्यारी है वही हिंद की ठौर।
कुल्लू लाए जाया कलाम गैर, मिसल हिंद इलाने कफयान।। ११ ।।
कही न आवे बोली और मानिंद, हिंद के नहीं तो बस है।।

इमाम मेंहदी ने हिन्दुस्तान का ठिकाना (स्थान) पसन्द किया है। वह मुझे प्यारा है, इसलिए हिन्दुस्तान की हिन्दुस्तानी भाषा के अतिरिक्त और बोली बोलना मेरे वश की बात नहीं है।

लागिल मुस्लिम कुरब ना, अना फाआली कुंम इसहल।
खातर मुस्लिम कबीलें मेरे के, मैं कर देऊं तुम को सहल।
अना कलिम कलाम कुंम, जालिक यकून कुम दीन सुगल।।१२ ।।
मैं कहुं बोली तुम्हारी, ज्यों होवे तुम को दीन में सुख विलास।।

मेरे मुसलमानों के कबीलों के लिए इस भाषा को मैं सरल बना देती हूं, जिससे तुमको अपने दीन में (धर्म में) सुख मिले, मैं वही तुम्हारी बोली बोलूंगी।

।। प्रकरण ।। २ ।। चौपाई ।। २८ ।।

Nijanand App

हिन्दुस्तानी भाषा में चौपाई सुरु

भेख भाखा जिन रचो, रचियो माएने असल।
भई रोसन जोत रसूल की, अब खुले माएने सकल।। १ ।।

स्वामीजी कहते हैं भेष और भाषा के झगड़े में मत पड़ो। असल मायने के रस में मगन हो जाओ। रसूल साहब के ज्ञान की (कुरान की) हकीकत अब पूरी खुल गई है।

लिए माएने ऊपर के एते दिन इन जहान।
मूल माएने पाए बिना, सुध न पड़ी बिरिध हान।। २ ।।

आज दिन तक इस दुनियां के लोग कुरान के जाहिर मायने लेते थे, परन्तु मूल बातूनी मायने पाए बिना उन्हें हानि-लाभ की खबर नहीं हुई।

करना सारा एक रस, हिन्दू मुसलमान।
धोखा सबका भान के, सब का कहूंगी ग्यान।। ३ ।।

हमें हिन्दुस्तान के सब हिन्दू मुसलमानों को एक रस करना है, इसलिए मैं सबके संशय मिटाकर सबके ज्ञान को कहूंगी।

पैंडे सब देखाइए, ज्यों समझे सब कोए।
मत सबन की देखाइए, ज्यों एक रस सब होए।। ४ ।।

सब धर्मों को रास्ता दिखाना है जिससे सब कोई समझ जाए। सबके धर्मों के ज्ञान को बतलाना है जिससे सब एक रस हो जाएं।

मैं देखे सब खेल में, पंथ पैंडे दरसन।
देखी इस्क बंदगी सबकी, जैसा आकीन सबन।। ५ ।।

मैंने संसार में सबके धर्मों के रास्तों को, शास्त्रों को, सबके इश्क, बन्दगी तथा सबके विश्वास को देखा है।

एती जिमी सब छोड़के, जित आए मेंहेदी महंमद।
सो भली जिमी भाखा भली, इत हद मेट होसी बेहद।। ६ ।।

सारे संसार को छोड़कर जहां इमाम मेंहदी प्रकट हुए हैं वहां की भूमि भी अच्छी है और भाषा भी अच्छी है। यहां से ही सारे संसार को मुक्ति मिलेगी। इनके द्वारा ही कर्मकाण्ड हद का ज्ञान छोड़कर एक धनी का पूजक सारा संसार होगा।

एते दिन इन हुकमें, जुदे जुदे खेलाए।
सो ए हुकम इमाम का, अब लेत सबों मिलाए।। ७ ।।

इतने दिन श्री राजजी के हुक्म से अलग-अलग धर्म, पन्थ चलते रहे। अब इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी के हुक्म से इन सबको मिलाकर एक कर देती हूं।

।। प्रकरण ।। ३ ।। चौपाई ।। ३५ ।।

Nijanand App

सनन्ध इमाम के स्वाल जवाब की

सुनियो बानी मोमिनो, हुती जो अगम अकथ।
सो बीतक कहूं तुमको, उड़ जासी गफलत।। १ ।।

हे मोमिनो! उस वाणी को सुनो जिसे आज दिन तक किसी ने नहीं कहा और न इसकी खबर (पहचान) किसी को हुई। उसकी हकीकत मैं तुमको बताती हूं जिससे तुम्हारे संशय मिट जाएंगे।

हुकम हुआ इमाम का, उदया मूल अंकूर।
कलस होत सबन का, नूर पर नूर सिर नूर।। २ ।।

अब श्री राजजी महाराज का इमाम मेंहदी को हुक्म हुआ जिससे ज्ञान का अंकुर हम में फूटा (मूल घर का सम्बन्ध जागृत हुआ), इसलिए यह वाणी कलश के समान बेहद पार अक्षर और अक्षरातीत की पहचान कराती है।

कथियल तो कही सुनी, पर अकथ न एते दिन।
सो तो अब जाहेर हुई, जो मेंहेदी महंमद थें उतपन।। ३ ।।

अभी तक संसार के सब ग्रन्थों की कहानियां सुनीं, परन्तु हमारे घर का अकथनीय ज्ञान जिसका आज तक किसी को पता नहीं था, वह अब मुहम्मद मेंहदी श्री प्राणनाथजी की कृपा से सबमें जाहिर हुआ।

मुझे मेहेर मेहेबूबे करी, अंदर परदा खोल।
सो सुख निसबतियनसों, कहूं सो दो एक बोल।। ४ ।।

धनी ने मेरे ऊपर कृपा की और हकीकत के सब भेद खोल दिए। उनमें से थोड़ा-सा अपने सुन्दरसाथ को कहकर सुखी करूंगी।

मासूकें मोहे मिलके, करी सो दिल दे गुझ।
कहे तूं दे पड़ उत्तर, जो मैं पूछत हों तुझ।। ५ ।।

श्री राजजी महाराज मुझे श्यामजी के मन्दिर में मिले और दिल की गुझ (गुह्य) बातें बताईं और कहा कि जो मैं पूछता हूं, उसका उत्तर तुम दो।

तूं कौन आई इत क्यों कर, कहां है तेरा वतन।
नार तूं कौन खसम की, दृढ़ कर कहो वचन।। ६ ।।

तुम कौन हो? यहां क्यों आई हो? तुम्हारा घर कहां है? तुम्हारा धनी कौन है? मन में सोच समझकर बताओ।

तूं जागत है के नींद में, करके देख विचार।
बिध सारी याकी कहे, इन जिमी के प्रकार।। ७ ।।

तुम जागृत हो कि नींद में हो, विचार कर देखो। इस भवसागर की हकीकत का जो तुमने अनुभव किया है, वह मुझे बताओ।

तब मैं पियासों यों कह्या, जो तुम पूछी बात।
मैं मेरी मत माफक, कहूंगी तैसी भांत।। ८ ।।

अब श्यामाजी उत्तर देती हैं, हे पिया! आपने मुझसे जो पूछा है मैं अपनी बुद्धि के माफिक उसकी हकीकत का बयान करूंगी।

Nijanand App

सुनो पिया अब मैं कहूं, तुम पूछी सुध मंडल।
ए कहूं मैं क्यों कर, छल बल वल अकल।। ९ ।।

श्यामाजी कहती हैं, धनी! सुनो, आपने मुझसे इस संसार की हकीकत पूछी है। इसका वर्णन मैं कैसे करूं? यह सारा संसार छल के बल और क्षर बुद्धि के बल से भरा है।

मैं न पेहेचानों आपको, न सुध अपनों घर।
पिउ पेहेचान भी नींद में, मैं जागत हों या पर।। १० ।।

मुझे न अपनी पहचान है, न ही अपने घर की ही पहचान है। आपकी भी पहचान नींद में ही है। इस तरह से मैं जागी हूं (यह मेरा जागना है)।

जल जिमी तेज वाए को, अवकास कियो है इंड।
चौदे तबक चारों तरफों, प्रपंच खड़ा प्रचंड।। ११ ।।

यह संसार जल, वायु, अग्नि, पृथ्वी और आकाश से बना है। इसमें चौदह लोक हैं। इसके चारों तरफ फरेब (झूठ) का बोल-बाला है।

ए मोहोल रच्यो जो मंडप, सो अटक रह्यो अंत्रीख।
कर कर फिकर कई थके, पर पाई न काहूं रीत।। १२ ।।

यह ब्रह्माण्ड अद्धर में लटक रहा है। इसकी कई लोगों ने कई तरह से खोज की, परन्तु किसी को भी इस भेद का पता नहीं चला।

यामें खेल कई होवहीं, सो केते कहूं विचित्र।
तिमर तेज रुत रंग फिरे, ससि सूर फिरे नखत्र।। १३ ।।

इस ब्रह्माण्ड में तरह-तरह के विचित्र खेल होते हैं। उनको कहां तक कहूं? इसमें अन्धेरा, फिर उजाला होता है, फिर ऋतु बदलती है, सूर्य, चन्द्रमा और तारे घूमते हैं।

तबक चौदे इंड में, जिमी जोजन कोट पचास।
साढ़े तीन कोट ता बीच में, होत अंधेरी उजास।। १४ ।।

इस चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड में पचास करोड़ योजन जमीन है। जिसमें से केवल साढ़े तीन करोड़ योजन में ही (मृत्यु लोक) अन्धेरा और उजाला होता है।

उजास सूर को कहावहीं, सो तो अंधेरी के तिमर।
तिनथें कछू न सूझहीं, जिमी आप न घर।। १५ ।।

यहां सूर्य की रोशनी को उजाला कहते हैं वैसे तो अन्धेरा ही है। इससे कुछ पहचान तो होती नहीं। इससे न अपनी पहचान होती है न अपने घर की।

जब थें सूरज देखिए, लेत अंधेरी घेर।
जीव पसु पंखी आदमी, सब फिरें याके फेर।। १६ ।।

जैसे ही सूर्य का उदय होता है, माया का चक्कर (अन्धेरा) चालू हो जाता है। जीव, पशु, पक्षी, आदमी सब माया के लिए ही घूमते रहते हैं।

Nijanand App

काल न देखे इन फेरे, याही तिमर के फंद।
ए सूरज आंखों देखिए, पर इन फंद के बंध।। १७ ।।

इस चक्कर में पड़ने के बाद मौत कब आनी है, कोई नहीं देखता। इस तरह से सब माया के फन्दे में फंसे हैं। सूर्य को देखते ही माया के फन्दे और बंध (जाल) चालू हो जाते हैं।

वाओ बादल बीज गाजहीं, जिमी जल न समाए।
ए पांचों आप देखाए के, फेर न पैदा हो जाए।। १८ ।।

कहीं पर हवा, कहीं पर बादल, कहीं पर बिजली चमकती है और गर्जना होती है। कहीं पर इतना पानी बरसता है कि पानी समाता नहीं है। यह पांचों अपने स्वरूप दिखाकर गायब हो जाते हैं।

या बिध अनेक ब्रह्मांड में, देत देखाई दसो दिस।
ए मोहजल लेहेरां लेवही, सागर सबे एक रस।। १९ ।।

इस तरह से अनेक ब्रह्माण्डों में यही सब कुछ दिखाई देता है। चारों तरफ भवसागर की लहरें आती हैं और पूरा ही भवसागर इसी एक ही तरीके से चल रहा है।

ए कोहेड़ा काली रैन का, कोई न पावे कल मूल।
कहां कल किल्ली कुलफ, जो द्वार न पाइए सूल।। २० ।।

यहां की धुन्ध काली रात्रि के समान है। यहां से निकलने का कोई रास्ता नहीं दिखता, उसमें दरवाजा कहां है, ताला कहां है, चाबी कहां है नहीं दिखता तथा निकला कैसे जाएगा, यह ढंग पता नहीं है।

ए तीनों लोक तिमर के, लिए जो तिनहूं घेर।
ए निरखे मैं नीके कर, पर पाइए न काहूं सेर।। २१ ।।

यह तीनों लोक (पाताल, मृत्युलोक, बैकुण्ठ) अर्थात् चौदह लोक अन्धकार से घिरे है। मैंने अच्छी तरह से देखा, पर कहीं से भी निकलने का रास्ता नहीं है।

ए अंधेरी इन भांत की, काहूं सांध ना सूझे सल।
ए सुध काहूं ना परी, कई गए कर कर बल।। २२ ।।

यह इस तरह का घोर अन्धेरा है। यहां जरा-सी भी जगह रोशनी की नहीं है। कइयों ने बहुत जोर लगाया फिर भी किसी को कुछ पता नहीं चला।

ग्यान लिया कर दीपक, अंधेर आप ना गम।
इत दीपक उजाला क्या करे, ए तो चौदे तबकों तम।। २३ ।।

अगर किसी ने दीपक की तरह ज्ञान लिया भी तो घोर अन्धेरे में अपनी ही पहचान नहीं हुई। जहां चौदह लोकों में अन्धेरा ही अन्धेरा छाया हो वहां दीपक का उजाला क्या करेगा?

ए देखे ही परिए दुख में, कोई व्याध को रचियो रोग।
छुटकायो छूटे नहीं, नहीं न देखन जोग।। २४ ।।

इस संसार को देखते ही व्याधि (रोग) घेर लेते हैं और दुःखी करते हैं। यह छुड़ाने से भी नहीं छूटते हैं, इसलिए निश्चित ही देखने लायक नहीं है।

Nijanand App

टेढ़ी सकड़ी गलियां, तामें फिरे फेर फेर।
गुन पख अंग इंद्रियों, कियो अंधेरीमें अंधेर।। २५ ।।

इस संसार की टेढ़ी, संकरी गलियां (रीति-रिवाज) हैं, जिनमें भटकना पड़ता है। यहां पर गुण, पक्ष तथा अंग की इन्द्रियां सब माया में ही मस्त हैं (लगी हैं)।

तत्व पांचों जो देखिए, तो यामें ना कोई थिर।
प्रले होसी पलमें, वैराट सचराचर।। २६ ।।

यहां पांच तत्व हैं, यह सब मिट जाने वाले हैं। कोई भी स्थिर नहीं है। एक क्षण में ही चर-अचर ब्रह्माण्ड नष्ट हो जाएगा।

ए उपजे पांचो मोह थें, और मोह को तो नाहीं पार।
नेत नेत केहे निगम फिरे, आगे सुध ना परी निराकार।। २७ ।।

यह पांचों तत्व मोह से बने हैं। मोह तत्व का तो पार ही नहीं है। वेदों ने भी खूब खोजा, लेकिन 'नेति नेति' कहकर पीछे लौट आए। निराकार के आगे की सुध नहीं मिली।

मूल बिना ए मंडल, नहीं नेहेचल निरधार।
निकसन कोई न पावहीं, वार न काहूं पार।। २८ ।।

यह पूरा ब्रह्माण्ड बिना मूल के खड़ा है और निश्चित ही नाशवान है। इसके आर-पार (उस पार) कोई नहीं जा सकता।

इत पंथ पैंडे कई चलहीं, कई भेख दरसन।
ता बीच अंधेरी ग्यान की, पावे न कोई निकसन।। २९ ।।

इस संसार में कई तरह के पन्थ, पैंडे (धर्म) चलते हैं। कई प्रकार के भेष व शास्त्र हैं। इनके बीच में अज्ञान ही अज्ञान का अन्धेरा है, कहते हैं कि ज्ञान है, परन्तु कोई निकल नहीं पाता।

ग्यान संग स्यानप मिली, तित क्यों कर आवे दरद।
ना आपे ना दरद किनें, सो होए जाए सब गरद।। ३० ।।

ज्ञान के साथ चतुराई भी ले रखी है, इसलिए दर्द कैसे पैदा हो? न उनको अपनी पहचान है न पिया का दर्द होने से उनका सब ज्ञान मिट्टी के समान हो जाता है।

दरदी दरदा जानहीं, ग्यानी जाने ग्यान।
ए राह दोऊ जुदी परी, मिले न काहू तान।। ३१ ।।

दर्दी को दर्द का पता होता है और ज्ञानी को ज्ञान का, इसलिए दोनों के रास्ते अलग-अलग हैं। इन दोनों की राय (विचार) मिलती नहीं है।

दिवाना मूरख मिले, स्यानप मिले सैतान।
दरद ग्यान दोऊ जुदे, मिले न पिंड पेहेचान।। ३२ ।।

दर्दी दीवाना होकर मूर्ख के समान दिखता है। ज्ञानी चतुराई में शैतान के समान दिखाई पड़ते हैं, इसलिए दर्दी और ज्ञानी दोनों ही अलग-अलग हैं। इनके तन से इनकी पहचान नहीं होती।

Nijanand App

कबूं मूढ़ दरदे मिले, पर दरद ना कबूं सैतान।
बीज अंकूर दोऊ जुदे, वैर सदाई जान।। ३३ ।।

कभी मूर्ख को दर्द आ सकता है, परन्तु शैतान को दर्द नहीं आ सकता, इसलिए दोनों के बीज और अंकुर जुदा-जुदा हैं और इनकी सदा से ही दुश्मनी है।

ग्याने प्यारी स्यानप, दरदे सेती वैर।
दरदें प्यारी दिवानगी, स्यानप लगे जेहेर।। ३४ ।।

ज्ञानी को चतुराई पसन्द है और दर्द से दुश्मनी है। दर्दी को प्रीतम के लिए पागलपन पसन्द है और चतुराई से दुश्मनी है।

इत जुध किए कई सूरमों, पेहेन टोप सिल्हे पाखर।
वचन बड़े रण बोलके, उलट पड़े आखिर।। ३५ ।।

यहां पर संसार में कई बहादुरों (पण्डितों, विद्वानों) ने ज्ञान की उपाधियां लोहे के कवच के समान पहन रखी हैं। यह शब्दों से (डीगें तो बड़ी मारते हैं) अहंकार बहुत दिखलाते हैं पर पार के शब्दों को माया में घटाकर डूब जाते हैं।

यामें ज्यों ज्यों खोजिए, त्यों त्यों बंध पड़ते जाए।
कई उदम जो करहीं, तो भी तिमर ना छोड़े ताए।। ३६ ।।

इस संसार में जैसे-जैसे खोजा जाए, वैसे-वैसे बन्धन पड़ते जाते हैं। कई लोग उपाय करते हैं (जप, तप, ध्यान, भक्ति, आदि) पर उनका अन्धेरा (मन का विकार) नहीं छूटता।

ए सुध अजूं किन ना परी, बढ़त जात विवाद।
खेल तो है एक खिन का, पर ए जाने सदा अनाद।। ३७ ।।

यह खबर भी किसी को नहीं है कि यह संसार एक क्षण का है। यह समझते हैं कि यह सदा रहने वाला है। इस वाद-विवाद में पड़े हैं।

खेल खावंद जो त्रैगुन, जानों याथें जासी फेर।
ए निरखे मैं नीके कर, अजूं ए भी मिने अंधेर।। ३८ ।।

खेल के मालिक ब्रह्मा, विष्णु, शंकर कहलाते हैं। सोचा था यह माया के बन्धन से मुक्त होंगे, परन्तु जब अच्छी तरह से देखा तो इनको भी अन्धेरे में पाया।

ए द्वार कोई खोलके, कबहूं न निकस्या कोए।
ए बुजरक जो छल के, बैठे देखे बेसुध होए।। ३९ ।।

यहां से दरवाजा खोलकर कोई पार नहीं जा सका। इस खेल के बड़े-बड़े ज्ञानी भी बेसुधी में बैठे दिखते हैं।

ए जिन बांधे सो खोलहीं, तोलों ना छूटे बंध।
या बिध खेल खावंद की, तो औरों कहा सनंध।। ४० ।।

हे श्री राजजी महाराज! जिसने यह बन्धन बांधे हैं, वही इनको खोल सकता है। यह हकीकत खेल के मालिकों (त्रिदेवों) की है तो औरों की क्या कहूं?

Nijanand App

निज बुध आवे हुकमें, तोलों ना छूटे मोह।
आतम तो अंधेर में, सो बुध बिना बल ना होए।। ४१ ।।

आपके हुक्म से ही जागृत बुद्धि आएगी, तब यह मोह सागर छूटेगा। यहां आत्मा अन्धेरे में पड़ी हुई है। वह बिना जागृत बुद्धि के नहीं जाग सकती।

ए तो कही इन इंड की, पिया पूछ्यो जो प्रश्न।
कहूं और अजूं बोहोत है, वे भी सुनो वचन।। ४२ ।।

हे धनी! आपने जो प्रश्न पूछा उसके उत्तर में मैंने ब्रह्माण्ड की हकीकत बताई है, अभी बहुत कुछ कहना है, वह भी सुनो।

|| प्रकरण || ४ || चौपाई || ७७ ||

सनन्ध खोज की

पिया मैं विध विध तोको ढूंढ़िया, छोड़ धंधा सब और।
पूछत फिरों सोहागनी, कोई बतावे पिया ठौर।। १ ।।

हे धनी! मैंने संसार का सब काम-धन्धा छोड़कर आपको तरह-तरह से खोजा। सखियों से (हरदासजी से भोजनगर में) पूछती फिरी कि कोई प्रीतम का ठिकाना बताए।

मैं नेक बात याकी कहूं, तुम कारन खोज्या खेल।
कोई ना कहे हम देखिया, जिन नीके कर खोजेल।। २ ।।

मैं इसकी भी थोड़ी-सी बात बताती हूं। मैंने तुम्हारे लिए ही इस खेल में बहुत खोज की, परन्तु मुझे कोई ऐसा नहीं मिला जो आपकी पहचान कराए।

सास्त्र साधू जो साखियां, मैं देखी सबनकी मत।
जोलों साहेब न पाइए, तोलों कीजे कासों हेत।। ३ ।।

मैंने शास्त्रों, साधुओं तथा उनके धर्मों और उनकी गवाही वाले ग्रन्थों को देखा, परन्तु जब तक धनी की सुध न मिले तब तक किससे लगाव रखें।

छोटे बड़े जिन खोजिया, न पाया करतार।
संसा सब कोई ले चल्या, पर छूटा नहीं विकार।। ४ ।।

इस संसार में छोटे या बड़े जिसने भी परमात्मा को खोजा, किसी को भी परमात्मा नहीं मिला। उनके संशय नहीं मिटे और माया भी नहीं छूटी।

ए झूठा छल कठन, कांहूं न किसी की गम।
कहां वतन कहां खसम, कौन जिमी कौन हम।। ५ ।।

यह बड़ा ही झूठा छल का खेल है। इसमें किसी की कहीं भी पहुंच नहीं है। यहां कोई नहीं बताता कि हमारा घर कहां है? प्रीतम कहां है? जमीन कौनसी है और हम कौन हैं?

ए देखी बाजी छल की, छल की तो उलटी रीत।
इनमें सीधा दौड़ के, कोई ना निकस्या जीत।। ६ ।।

यह सारा संसार छल का ही रूप है। छल की तो चाल ही उलटी होती है। उसमें सीधा ज्ञान लेकर माया को जीतकर कोई नहीं निकला।

Nijanand App

मैं देख्या दिल विचार के, चितसों अर्थ लगाए।
इस मंडल में आतमा, चल्या न कोई जगाए।। ७ ।।

मैंने दिल से विचार कर और चित्त में मनन कर देखा कि इस ब्रह्माण्ड से कोई भी अपने जीव को जागृत करके नहीं जा सका।

मेहेनत तो बोहोतों करी, अहनिस खोज विचार।
तिन भी छल छूटा नहीं, गए हाथ पटक सिर मार।। ८ ।।

बहुतों ने मेहनत की, रात-दिन खोज की, विचार किया। वह भी हाथ पटक कर रह गए और उनसे भी यह छल नहीं छूटा।

मोहादिक के आद लों, जेती उपजी सृष्ट।
तिन सारों ने यों कह्या, जो किनहूं न देख्या दृष्ट।। ९ ।।

यह संसार मोह तत्व से बना है। मोह तत्व से जितनी सृष्टियां बनीं उन सभी ने साफ कहा है कि हमें परमात्मा नहीं मिला।

वरना वरनो खोजिया, जेती बनिआदम।
एता दृढ़ किने न किया, कहां खसम कौन हम।। १० ।।

मनुष्य तन की जितनी जातियां हैं उन सब में मैंने खोजा, किन्तु किसी ने दृढ़ता से नहीं कहा कि प्रीतम कहां है और हम कौन हैं?

आद मध्य और अबलों, सब बोले या विध।
केवल विदेही होए गए, तिन भी न कही ए सुध।। ११ ।।

शुरू से, बीच में और आज तक सब इसी प्रकार बोलते रहे हैं। केवल एक राजा जनक विदेही हो गए हैं उनको भी सुध नहीं हुई।

वेदों कथ कथ यों कथ्या, सब मिथ्या चौदे लोक।
बकते बकते यों बके, एक अनेक सब फोक।। १२ ।।

वेदों ने भी बार-बार यह कहा कि चौदह लोक झूठे हैं। उन्होंने भी यह कहा कि परब्रह्म के सिवाय और सब खोखला है।

बुध तुरिया दृष्ट श्रवना, जहां लों पोहोंचे मन।
ए होसी उतपन सब फना, जो आवे मिने वचन।। १३ ।।

बुद्धि, चित्त, दृष्टि, कान, मन और वचन जहां तक जाते हैं, वहां तक सब पैदा होते हैं और मर जाते हैं।

वेदांती भी केहे थके, द्वैत खोजी पर पर।
अद्वैत सब्द जो बोलिए, तो सिर पड़े उतर।। १४ ।।

वेदान्ती भी यह कहकर थक गए कि हमने माया को खूब खोजा। हारकर उन्होंने कहा कि हमारा सिर कट जाए पर हम अद्वैत के बारे में कुछ नहीं जानते।

Nijanand App

मन चित्त बुध श्रवना, पोहोंचे दृष्ट न सब्दा कोए।
खट प्रमान ते रहित है, सो दृढ़ कैसे होए।। १५ ।।

मन, चित्त, बुद्धि, कान, नजर और शब्द उस परब्रह्म को नहीं पहुंचते जो छः प्रमाण से रहित है। उसके लिए निश्चित रूप से कैसे बताएं?

द्वैत आड़े अद्वैत के, सब द्वैतै को विस्तार।
छोड़ द्वैत आगे वचन, किने न कियो निरधार।। १६ ।।

परब्रह्म के आड़े माया का परदा लगा है और सब जगह माया ही माया है। उस माया को छोड़कर आगे की सुध किसी ने निश्चित रूप से नहीं दी।

ए अलख किने न लखी, आदै थें अवल।
ऐसी निराकार निरंजन, व्याप रही सकल।। १७ ।।

यह माया जिसको आज दिन तक किसी ने नहीं पहचाना ऐसी कमबख्त (चाण्डालिनी) है कि न तो इसका रूप है और न ही यह आंखों से दिखती है। यह सारे संसार में शुरू से ही व्यापक है।

चेतन व्यापी व्याप में, सो फेर आवे जाए।
जड़ को चेतन ए करे, चेतन को मुरछाए।। १८ ।।

निराकार चेतन ही जीव रूप में शरीर धारण करता है और जड़ शरीर को चेतन करता है। इसके निकलने पर उसे (शरीर को) जड़ बना देता है। इस तरह से माया का चक्कर चलता रहता है।

ऊपर तले मांहें बाहेर, दसो दिसा सब एह।
छोड़ याको कोई न कहे, ठौर खसम का जेह।। १९ ।।

ऊपर-नीचे, अन्दर-बाहर दसों दिशाओं में इसी माया का विस्तार है। इसका ज्ञान सबके पास है, पर परब्रह्म का पता बताने वाला कोई नहीं है।

जो कछू कहिए वचने, सो सब मिने गफलत।
ना सरूप ना काहू वतन, तो क्यों कर जाइए तित।। २० ।।

वचनों से जो कुछ भी कहते हैं वह वचन सारे इसी माया के हैं। इसमें अखण्ड स्वरूप की और अखण्ड घर की पहचान बताने वाला कोई नहीं है, तो वहां कैसे जाया जाए?

पेड़ काली किन ना देखी, सब छायाही में रहे उरझाए।
गम छायाकी भी ना पड़ी, तो पेड़ पार क्यों लखाए।। २१ ।।

इस माया रूपी काले पेड़ को किसी ने नहीं देखा। सब इसी की छाया में उलझे पड़े हैं। दुनियां वालों को इस छाया की भी पहचान नहीं हुई तो इस माया रूपी पेड़ (ब्रह्माण्ड) के पार कैसे देख सकते हैं?

जाए ना उलंघी देखीती, ना कछु होए पेहेचान।
तो दुलहा कैसे पाइए, जाको नेक ना सुन्यो निसान।। २२ ।।

इसको देखते हुए भी कोई इसको उलंघ (पार) नहीं सकता। इसके अन्दर रहकर भी इसकी कोई पहचान नहीं होती, तो उस परब्रह्म प्रीतम को कैसे पाया जाए जिसका नाम-निशान भी नहीं सुना।

Nijanand App

खसम जो न्यारा द्वैत से, और ठौरों सब द्वैत।
किने ना कह्यो ठौर नेहेचल, तो पाइए कैसी रीत।। २३ ।।

हमारे धनी माया से अलग हैं और सब जगह पर माया का ही विस्तार है। उस अखण्ड घर की कोई नहीं कहता कि उसे किस तरीके से पाया जाए?

या विध ग्यान जो चरचहीं, सो मैं देख्या चित ल्याए।
ज्यों मनुआं सुपने मिने, बेसुध गोते खाए।। २४ ।।

श्यामाजी कहती हैं कि मैंने ध्यान से देखा कि यहां का ज्ञान सुनाने वाले माया के अन्दर का ही ज्ञान देते हैं। जैसे मन सपने में भटकता है, इसी तरह से यह ज्ञानी लोग बेसुधी में गोते खाते हैं।

खिनमें कहे सब ब्रह्म है, खिनमें बंझा पूत।
मदमाते मरकट ज्यों, करे सो अनेक रूप।। २५ ।।

यह ज्ञानी क्षण-क्षण में अपने विचार बदलते हैं। कभी कहते हैं कि ब्रह्म घट-घट व्यापी है। कभी कहते हैं कि यह बांझ के पूत (पुत्र) की तरह है। झूठ बोलते हैं। जैसे शराबी बन्दर अनेक रूप लेकर गुलाटियां भरता है उसी तरह यह ज्ञानी लोग करते हैं।

खिनमें कहे सत असत, माया कछुए कही न जाए।
यों संग संसा दृढ़ हुआ, सो धोखे रहे फिराए।। २६ ।।

एक क्षण में सत बतलाते हैं और दूसरे क्षण कहते हैं यह झूठ है। माया कुछ नहीं है। ऐसों की संगति से संशय और बढ़ गया। इस तरह से सबको धोखे में घुमा रहे हैं।

खिनमें कहे है आप में, खिनमें कहे बाहेर।
खिनमें मांहें न बाहेर, यों सब्द न कोई निरधार।। २७ ।।

एक क्षण में कहते हैं कि परमात्मा मेरे अन्दर है। उसी क्षण कहते हैं कि सबके अन्दर है। फिर दूसरे क्षण कहते हैं कि वह न अन्दर है और न बाहर है। इस तरह से उनकी कोई भी बात स्थिर नहीं है।

खिनमें कछू और कहे, खिनमें और की और।
सो बात दृढ़ क्यों होवहीं, जाको वचन ना रेहेवे ठौर।। २८ ।।

एक पल में कुछ कहते हैं, दूसरे में कुछ और का भी और कहते हैं, इसलिए जिनकी वाणी ही स्थिर नहीं है, उनसे परमात्मा की पहचान कैसे हो सकती है?

जैसे बालक बावरा, खेले हंसता रोए।
ऐसे साधू सास्त्रमें, दृढ़ न सब्दा कोए।। २९ ।।

जैसे एक बावरा बालक रोते-रोते लालच के मारे हंसने लगता है, वैसे ही लोभी ज्ञानी साधु शास्त्रों में दृढ़ता से वचन नहीं बोलते।

ए सबे सींग ससक, बंझा पूत वैराट।
फूल गगन नाम धराए के, उड़ाए देवे सब ठाट।। ३० ।।

यह सभी खरगोश (शशक, ससला) के सींग, बांझ के पूत तथा आकाश के फूल के नाम लेकर ऐसे ऐसे शब्दों से जो कि सभी झूठे हैं, कहकर सत का रूप ही बिगाड देते हैं।

Nijanand App

आप होत फूल गगन, बढ़त जात गुमान।
देखीतां छल छेतरे, हाए हाए ऐसी नार सुजान।। ३१ ।।

वह अपने ज्ञान के अहंकार में अपने आप को झूठी उपाधियां देकर आकाश के फूल की तरह वर्णन करते हैं। अपने आप को मिटा रहे हैं। हाय-हाय ऐसी इस चतुर माया ने देखते-देखते सबको ठग लिया है।

कोई न परखे छल को, जिन छलमें हैं आप।
तो न्यारा खसम जो छल थें, सो क्यों पाइए साख्यात।। ३२ ।।

जिस माया के छल में बैठे हैं, उस माया के छल को कोई नहीं पहचान पाते, तो वह परब्रह्म जो माया से अलग है, उसे किस तरह से प्राप्त कर सकते हैं?

अटक रहे सब इतहीं, आगे सब्द न पावे सेर।
ए खोजें सब द्वैत में, ओतो अद्वैत लों अंधेर।। ३३ ।।

सारे ज्ञानी लोग यहीं अटक गए हैं। आगे जाने के रास्ते का उनके पास शब्द ही नहीं है। वह सब इसी माया में खोज कर रहे हैं, जिस माया का अन्धकार बेहद की सीमा के पहले तक फैला हुआ है।

ए मत वेद वेदांत की, सास्त्र सबों ए ग्यान।
सो साधू लेकर दौड़हीं, आगे मोह न देवे जान।। ३४ ।।

वेद, वेदान्त तथा शास्त्रों का ऐसा ही ज्ञान है जिसे साधु लेकर घूमते हैं, किन्तु मोह तत्व के आगे नहीं जा सकते।

ए खेल सारा कुदरती, फिराया फिरस्तों फेर।
ऐ इंड गोलक बीच में, गिरद गफलत की अंधेर।। ३५ ।।

यह सारा खेल माया का है, उसने ब्रह्मा, विष्णु, महेश के मन को भी माया में घुमा रखा है। ऐसे ब्रह्माण्ड के चारों तरफ मोह तत्व का ही अन्धेरा है।

कुदरत को माया कही, गफलत मोह अंधेर।
या विध चौदे तबकों, कह्या फिरस्ते का मन फेर।। ३६ ।।

प्रकृति को माया कहते हैं। संशय को मोह तत्व अर्थात् अन्धेरा कहते हैं। इस तरह से चौदह लोकों में फरिश्ते (अजाजील) भगवान विष्णु का मन (नारद-अवलीस) सबके अन्दर बैठा है।

ए खेल सारा सुन्य का, फिरे मने मन फेर।
ए इंड गोलक बीच में, याके मोह तत्व चौफेर।। ३७ ।।

यह खेल सारा निराकार का है, जिसमें हर इन्सान के मन में (भगवान विष्णु का मन) नारद बैठकर घुमा रहा है (फिरा रहा है)। चौदह लोकों के इस ब्रह्माण्ड को बीच में लेकर मोह तत्व ने चारों तरफ से घेर रखा है।

सब्द जो सारे मोह लों, एक लवा ना निकस्या पार।
खोज खोज ताही सब्द को, फेर फेर पड़े अंधार।। ३८ ।।

यहां की सब वाणी मोह तत्व तक की है (बयान करती है)। इसका एक शब्द भी आगे नहीं जाता। उस परब्रह्म को इसी में खोजते-खोजते अन्धकार में डूब जाते हैं।

Nijanand App

केतेक बुजरक कहावहीं, सो याही सुन्य को चाहें।
सो गले सब इतहीं, आगे ना निकसे पाए।। ३९ ।।

यहां के कुछ ज्ञानी जन जो अपने आप को बड़े कहलाते हैं, वह निराकार की ही चाहना करते हैं। वह सब इसी निराकार में डूबते हैं और आगे नहीं निकल पाते।

फिरे जहां थें नारायन, नाम धराया निगम।
सुन्य पार ना ले सके, हटके कह्या अगम।। ४० ।।

नारायण भगवान ने भी बहुत खोज की, किन्तु वह भी शून्य के पार नहीं जा सके। तब नारायण ने परब्रह्म को 'निगम' (जिसका गम नहीं है—जहां पहुंचा नहीं जा सकता) कहा, वह फिर शून्य से वापस लौटे और कहा कि उस परब्रह्म की खबर मुझे नहीं है।

सुन्य की बिध केती कहूं, ए इंड जाके आधार।
नेत नेत केहेके फिरे, निगम को अगम अपार।। ४१ ।।

शून्य की हकीकत कहां तक कहूं? यह सारा ब्रह्माण्ड उसी में लटक रहा है। खोज करने वालों ने 'यहां नहीं है', 'यहां नहीं है' कहकर परमात्मा को निगम कहा। किसी तरह से वहां पहुंचा नहीं जा सकता, इस बात को स्वीकार किया।

अब नेक तो भी कहूं, सुन्य मंडल की सुध।
जाको कोई ना उलंघे, अगम अगाध या बिध।। ४२ ।।

अब थोड़ी-सी शून्य मण्डल (निराकार) की हकीकत कहती हूं। जिसको कोई नहीं उलंघ सका, इसलिए इसे अगम, अगाध कहा, अर्थात् इसकी खबर नहीं है, ऐसा कहा।

इत नहीं तत्व गुन निरगुन, पख नहीं परमान।
अंग ना इंद्री जान ना आवन, लख नहीं निरमान।। ४३ ।।

इस शून्य मण्डल में न कोई तत्व है, न कोई गुण है और न कोई पक्ष (चार अन्तस्करण) है, न अंग है, न इन्द्रियां हैं, न आना-जाना है और न इसके निर्माण का ही पता है।

इत आद अंत ना थिर चर, नर ना कोई नार।
अंधेर ना कछू उजाला, ना निराकार आकार।। ४४ ।।

इस शून्य मण्डल का न कोई आदि है न अन्त है। यह भी पता नहीं चलता कि यह चल है या अचल, यह स्त्री है या पुरुष, अन्धेरा है या उजाला, इसका आकार है या बिना आकार के है।

जिमी जल ना वाए अगनी, ना सब्द सोहं आसमान।
ना कछू जोति रूप रंग, नहीं नाम ठाम कोई बान।। ४५ ।।

यहां जमीन, जल, हवा, अग्नि तथा आसमान, आदि कुछ भी नहीं हैं। यहां पर न रूप है, न रंग है, न रोशनी है, न कोई बोली है और न किसी नाम का पता है।

ना जीव करम ना काल कोई, गंध नहीं बल ग्यान।
तीर्थंकर भी इत गले, जो कहावें सदा प्रवान।। ४६ ।।

न कोई यहां जीव है, न कोई कर्म है, न कोई मीत है, न कोई सुगन्ध है और न यहां कोई ज्ञान ही है। हमेशा सत कहलाने वाले तीर्थंकर भी यहां आकर नष्ट हो जाते हैं।

Nijanand App

बीज बिरिख ना कमल फल, भंग ना कछू अभंग।
मोहादिक एही सुन्य, बीच सरूप या संग।।४७।।

यहां पर न बीज है, न वृक्ष है, न फूल है, न फल है। यहां न कुछ नाश होता है और न कुछ अखण्ड है। इसी को मोह तत्व कहते हैं। इसी को शून्य कहते हैं। इस शून्य मण्डल के अन्दर माया के संग से नारायण ने संसार बनाया।

तबक चौदे ख्वाब के, याको पेड़ै नींद निदान।
नींद के पार जो खसम, सो ए क्यों कर करे पेहेचान।।४८।।

यह चौदह लोकों की दुनियां स्वप्न की है। इसका मूल नींद है। इस नींद के पार जो प्रीतम है, उसकी नींद में रहकर पहचान कैसे कर सकते हैं?

ए ख्वाबी दम सब नींद लो, दम नींदै के आधार।
जो कदी आगे बल करे, तो गले नींदै में निराकार।।४९।।

यहां के सभी जीव सपने के ही हैं। सपने तक ही इनकी पहुंच है। यदि कोई आगे जाने की कोशिश करता भी है तो वह निराकार में ही गल जाता है।

जिनहूं जैसा खोजिया, सब बोले बुध माफक।
मैं देखे सबद सबन के, सो गए जाहेर मुख बक।।५०।।

जिसने जितना खोजा, अपनी बुद्धि के अनुसार वह उतना ही बोले। मैंने सबकी वाणी को देखा और अनुभव किया कि यह सब व्यर्थ कह रहे हैं।

ए पुकार खोजी सुनके, हट रहे पीछे पाए।
पार सुध किन ना परी, सब इतहीं रहे उरझाए।।५१।।

इनकी ऐसी अनिश्चित वाणी को सुनकर दूसरे खोज करने वाले भी पीछे हट गए। किसी को भी निराकार के आगे की खबर नहीं मिली। सब इसी निराकार शून्य में उलझे रह गए।

यामें जो बुजरक हुए, सो सीतल भए इन भांत।
ना सुध छल ना पार की, यों गले सुन्य ले स्वांत।।५२।।

इस ब्रह्माण्ड में जो बड़े ज्ञानी हुए वह इसी तरह हताश (निराश) हो गए। उन्हें न माया की खबर पड़ी और न आगे की। इस तरह से निराश होकर शून्य में गल गए।

या बिध तो भई नास्त, सो नास्त जानो जिन।
सार सब्द मैं देख के, लिए सो दृढ़ कर मन।।५३।।

इस तरह से सभी ने अपनी वाणी में कहा कि वह नहीं है। अब श्यामाजी कहती हैं कि यहां के लोग उसे नहीं पा सके तो यह नहीं समझना कि परब्रह्म नहीं है। इनकी वाणी में से सार शब्द को खोजकर, 'परब्रह्म है' ऐसा मैंने मन में दृढ़ किया।

जिन जानो पाया नहीं, है पावन हार प्रवान।
सो छिपे इन छल थें, वाकी मिले न कासों तान।।५४।।

ऐ दुनियां वालो! ऐसा न समझना कि कोई परब्रह्म को पाने वाला नहीं है। परब्रह्म के पाने वाले तो हैं, परन्तु वह इस छल में छिपे हैं। उनका किसी से ताल-मेल नहीं है (विचारधारा नहीं मिलती)।

Nijanand App

सो तो प्रेमी छिप रहे, वाको होए गयो सब तुच्छ।
खेले पिया के प्रेम में, और भूल गए सब कुछ।।५५।।

ऐसे परब्रह्म के प्रेमी (आशिक) संसार में छिपे हैं। उनके लिए संसार नाचीज हो गया है। वह केवल प्रियतम के प्रेम में रंगे हैं और दुनियां का सब कुछ भूल गए हैं।

सुरत न वाकी छल में, वाही तरफ उजास।
प्रेमै में मगन भए, ताए होए गयो सब नास।।५६।।

इनकी सुरता माया में नहीं है। इनका ध्यान अखण्ड घर की तरफ उजाले में है। यह पिया के प्रेम में मस्त हैं। इनके लिए दुनियां मर गई है।

प्रेमी तो नेहेचे छिपे, उन मुख बोल्यो न जाए।
सब्द कदी जो निकसे, सो ग्यानी क्यों समझाए।।५७।।

ऐसे परब्रह्म के प्रेमी निश्चित रूप से छिपे हैं और वह दुनियां की कोई बात करते ही नहीं हैं और यदि वह कुछ पार के शब्द कहते भी हैं तो यहां के ज्ञानियों की समझ में नहीं आता।

सब्द जो सीधे प्रेम के, सास्त्र तो स्यानप छल।
या विध कोई न समझे, बात पड़ी है बल।।५८।।

उनके शब्द सीधे परमात्मा के प्रेम को बतलाते हैं। शास्त्र तो चतुराई और छल से भरे पड़े हैं। इस तरह से उनकी बात के रहस्य (मर्म) को कोई समझ नहीं पाता।

ए जो साधू सास्त्र पुकारहीं, सो तो सुनता है संसार।
पर गुझ किनहूं न पाइया, सोई सबद हैं पार।।५९।।

संसार के साधु और शास्त्र जो बोलते हैं सारा संसार उनको सुनता है, परन्तु परब्रह्म के रहस्य का जो भेद छिपा है, उसे किसी ने नहीं पाया। वही पार के शब्द हैं।

देखे सारे सास्त्र, सो तो गोरख धंध।
मूल कड़ी पाए बिना, देखीते ही अंध।।६०।।

मैंने सारे शास्त्रों को देखा कि यह तो गोरखधन्धा है। इसकी मूल कड़ी जब तक नहीं मिल जाती, तब तक देखते हुए भी अन्धे की तरह भटकना पड़ता है।

ऐसा तो कोई ना मिल्या, जो दोनों पार प्रकास।
मगन पिया के प्रेम में, भी स्यानप ग्यान उजास।।६१।।

मुझे तो ऐसा कोई नहीं मिला जो हद और बेहद दोनों के ज्ञान में प्रवीण हो, प्रीतम के प्रेम में भी मग्न हो और शास्त्रों के ज्ञान में भी सतर्क हो (होशियार हो)।

जो कोई ऐसा मिले, सो देवे सब सुध।
माएने गुझ बताए के, कहे वतन की बिध।।६२।।

यदि कोई ऐसा मिले तो वही सब पहचान करवा सकता है। वही गुझ (गुह्य) मायने खोलकर घर की हकीकत कह सकता है।

Nijanand App

सबद सारे वैराट के, बोलत अगम अगम।
कोई न कहे रसूल बिना, जो खुद पें आए हम।।६३।।

इन चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड के सारे ज्ञानियों के ज्ञान से परमात्मा को प्राप्त नहीं किया जा सकता है। वह सब अगम बताते हैं, रसूल साहब के बिना किसी ने नहीं कहा कि मैं खुदा से मिलकर आया हूं।

ए नबिएँ जाहेर कह्या, मैं पार से आया रसूल।
खुद की सुध सब ल्याइया, निद्रा न मेरा मूल।।६४।।

मुहम्मद साहब ने स्पष्ट कहा कि मैं पार से खुदा का पैगाम लेकर आया हूं। मैं अपने आप की खबर रखता हूं और यह जानता हूं कि यह माया मेरा मूल घर नहीं है।

मैं कारज खसम के, ले आया फुरमान।
आखिर इमाम आवसी, तब मैं भी संग सुभान।।६५।।

मैं अपने खसम (स्वामी) के कार्य के लिए यह फरमान लेकर आया हूं। आखिरत में परब्रह्म अल्लाह तआला खुद इमाम मेंहदी बनकर आएंगे तब मैं भी उनके साथ आऊंगा।

मैं आया हुकम हाकिम का, पर आवेगा हाकिम।
करसी कजा सबन की, तब संग आखिर हम।।६६।।

मैं हाकिम (परब्रह्म) का हुक्म लेकर आया हूं। आगे हाकिम (परब्रह्म) स्वयं आएंगे। वह सबका फैसला करेंगे तब उनके साथ मैं भी रहूंगा।

ए फुरमान तब बांचसी, इमाम आवसी जब।
लिखिया जो इसारतें, सब जाहेर होसी तब।।६७।।

इस फरमान (कुरान) के भेद तभी खुलेंगे जब इमाम मेंहदी आएंगे। कुरान में जो बातें इशारों में लिखी हैं, वह उस समय खुद इमाम मेंहदी जाहिर करेंगे।

काजी कजा कर के, देसी परदा उड़ाए।
परदा उड़े सब उड़सी, लेसी कयामत उठाए।।६८।।

काजी खुदा (परब्रह्म) सबका इन्साफ करके ब्रह्माण्ड का प्रलय कर देंगे और प्रलय के बाद सबको आठ बहिश्तों में अखण्ड कर देंगे।

खसम सुध सब देवही, गुझ बतावे कुरान।
बातें कहे वतन की, पैगंमर प्रवान।।६९।।

खुद खसम (परब्रह्म) आकर के कुरान की छिपी बातों को स्वयं बताएंगे। वह घर की बातें करेंगे और रसूल साहब की वाणी प्रमाणित करेंगे (पुष्टि करेंगे)।

ए सबद तो जाहेर कहे, पर आया न किनो आकीन।
तो लगे सब छल को, हिंदू या मुसलमीन।।७०।।

इस यथार्थ के ज्ञान की बातों पर किसी को यकीन नहीं आया और इसीलिए हिन्दू या मुसलमान सब माया को पकड़कर बैठे हैं।

Nijanand App

ए सबद मैं दृढ़ किए, पिया ना करें निरास।
रूह मेरी यों कहे, होसी दुलहेसों विलास।। ७१ ।।

इन शब्दों से मैंने निश्चय कर लिया है कि अब मेरे प्रीतम मुझे निराश नहीं करेंगे। मेरी आत्मा भी कहती है कि तुझे दूल्हा मिलेंगे।

नबी सबद मोहे मद चढ्यो, बढ्यो बल महामत।
अब एक खिन ना रहे सकूं, उड़ गई कहुंए स्वांत।। ७२ ।।

रसूल के इन शब्दों को सुनकर श्री महामतिजी कहती हैं कि वह अलमस्त हो गईं। मेरी आत्मा धनी मिलने के लिए अशान्त हो गई (तड़पने लगी)।

|| प्रकरण || ५ || चौपाई || १४९ ||

सनन्ध विरह तामस की

नोट : प्यारे सुन्दरसाथजी! यह तामस का विरह तब हुआ, जब दिल्ली में गोवर्धनदास और लालदास के बीच कुरान सुनने के बाद विचारों में अन्तर आ गया। लालदासजी ने स्वामीजी से कहा कि हमारा यकीन तो चटाई तक है। तब श्रीजी को सारा वृतान्त सुनने पर जोश आया और सब जागनी का काम छोड़कर सबको अलग-अलग भेज दिया। स्वयं अनूपशहर को चले तो रास्ते में स्वास्थ्य अधिक खराब होने पर सनन्ध ग्रन्थ उतरा। उस समय यह विरहा तामस में हुआ, उसे लिखा है।

मैं चाहत न स्वांत इन भांत,
अजू आउध अंग चले, इन नैनों दोनों नेक न आवे नीर।
दरद देहा जरद गरद रद करे, मैं क्यों धरूं धीर अस्थिर सरीर।। १ ।।

स्वामीजी तामस में हैं और अपने आप से विचार कर रहे हैं कि जागनी के काम में सुन्दरसाथ के असहयोग से मुझे निराशावादी नहीं होना चाहिए। मैं इस तरह से शान्ति नहीं चाहता। मेरे तन के सभी अंग चलते हैं और निराशा की हालत में आंखों से आंसू भी नहीं आ रहे हैं। धनी के दर्द से मेरा शरीर पीला हो गया है, लस्त हो गया है, धूल के समान मिट्टी हो गया है। अब मुझे मिट जाने वाले तन से कैसे धैर्य हो ?

कठिन निपट विकट घाटी प्रेम की, त्रबंक बंको सूरों किने न अगमाए।
धार तरवार पर सचर सिनगार कर, सामी अंग सांगा रोम रोम भराए।। २ ।।

धनी के प्रेम का रास्ता बड़ा कठिन है। इसमें कई कर्म काण्ड, उपासना काण्ड और ज्ञान काण्ड के टेढ़े रास्ते हैं, जिन पर बड़े-बड़े शूरवीर चलने वाले भी इस प्रेम मार्ग पर नहीं चल सकते। यह रास्ता तलवार की धार पर चलने के समान है। इस रास्ते में सामने से गुण, अंग, इन्द्रियों के भाले छेदते हैं, इसलिए हे मेरी आत्मा! तुम धैर्य और साहस का श्रृंगार करके चलो।

सागर नीर खारे लेहेरें मार मारे फिरे, बेटों बीच बेसुध पछाड़ खावे।
खेले मच्छ मिले गले ले उछाले, संधो संध बंधे अन्धों योंज भावे।। ३ ।।

इस सारे भवसागर में माया की लहरें थपेड़े मारती हैं। इससे यह जीव छोटे-छोटे टापुओं से टकरा कर बेसुध हो जाता है, अर्थात् कमजोर दिल वाले साथियों के असहयोग से निराशा होती है। इस भवसागर में बड़े-बड़े मगरमच्छ हैं, जो एक-दूसरे को निगल रहे हैं। बड़े-बड़े गादीपति (गद्दी धारी), महन्त, धर्माचार्य

Nijanand App

ज्ञान से साधारण मनुष्य को भटकाते हैं। इस तरह यह मनुष्य धर्मों के जटिल बन्धनों से बंधकर इसी को अच्छा समझ रहे हैं।

दाहो दसे दसो दिस सब धखे, लाल झाला चले इंड न झलाए।
फोर आसमान फिरे सिर सिखरों, ए फलंग उलंघ संग खसम मिलाए।। ४ ।।

भवसागर, दसों दिशाओं से इन बड़े लोगों को काम, क्रोध, मोह, लोभ, अहंकार, मद, मत्सर की ज्वालाओं से जलाता है। इसलिए, हे मेरी आत्मा! तुम इन सबसे बचो और क्षर ब्रह्माण्ड को ही फोड़कर धनी का ध्यान करके भवसागर को छलांग लगाकर पार कर लो। धनी तुम्हें मिल जाएंगे।

घाट अवघाट सिलपाट अति सलवली, तहां हाथ न टिके पपील पाए।
वाओ वाए बढ़े आग फैलाए चढ़े, जले पर अनल ना चले उड़ाए।। ५ ।।

इस भवसागर के घाट टूटे-फूटे हैं, अवघाट हैं तथा इनके पत्थरों पर काई (सिल की चिकनाहट) है, अर्थात् यहां साधु, महात्माओं, धर्माचार्यों, कर्मकाण्डियों, कुटम्ब की लोक-लाज में भटकने वालों को कितना ही समझाओ उनके मनों पर लोभ की चिकनी काई लगी है, इसलिए कोई असर नहीं होता। इस लोभ (चिकनी सिल) का इतना जबर्दस्त प्रभाव है कि यहां चींटी भी चलकर फिसलती है, अर्थात् साधारण जीव तो चल ही नहीं सकता। इनकी चाहनाओं की पूर्ति के लिए चारों तरफ इनके सेवक प्रचार-प्रसार में लगे हैं। लोभ की अग्नि को धधका रहे हैं, जिससे साधारण जीव के इश्क और ईमान डोल जाते हैं तथा इस कठिन रास्ते को पार नहीं कर पाते।

पेहेन पाखर गज घंट बजाए चल, पैठ सकोड़ सुई नाके समाए।
डार आकार संभार जिन ओसरे, दौड़ चढ़ पहाड़ सिर झांप खाए।। ६ ।।

अब महामतिजी अपनी आत्मा से कहते हैं, ऐसे टेढ़े रास्ते तथा स्थितियों में अपनी ही शक्ति से हाथी की चाल घण्टे बजाते चलो, अर्थात् यदि कोई निन्दा करता है या रास्ते में बाधाएं डालता है, तो उसकी तरफ ध्यान मत दो। धनी की मेहर (कृपा) का पाखर (कवच) पहनकर इश्क और ईमान के घण्टे बजाते चलो। साहस का सहारा लेकर लक्ष्य की ओर चलते रहो। संसार के मान-अपमान की तरफ से अपने को सिकोड़कर इतना छोटा बना लो कि सुई के नाके से निकल सको, अर्थात् मान-अपमान की तरफ ध्यान ही न जाने दो। हे मेरी आत्मा! तुम माया की सब चाहनाओं को ऐसे छोड़ दो जैसे शरीर छोड़ा ज़ाता है और भूलकर भी इनकी तरफ ध्यान न दो, अर्थात् जिन्होंने साथ नहीं निभाया उनके बारे में मत सोचो। तुम अपने ही बल से पहाड़ पर चढ़कर कूद जाओ, अर्थात् साहस करके इस जागनी के कार्य में लग जाओ।

बहुत बंध फंद धंध अंजू कई बीच में, सो देखे अलेखे मुख भाख न आवे।
निराकार सुन्य पार के पार पिउ वतन, इत हुकम हाकिम बिना कौन आवे।। ७ ।।

अभी भी तेरे सामने इस रास्ते में झंझटें आएंगी। वह दिखाई देंगी, पर अभी से उनका कुछ अनुमान नहीं किया जा सकता। फिर भी तू दृढ़ता के साथ ध्यान कर कि मेरे धनी निराकार शून्य के पार और अक्षर से परे परमधाम में है, जहां बिना धाम-धनी की मर्जी से कोई आ नहीं सकता।

Nijanand App

मन तन वचन लगे तिन उतपन, आस पिया पास बांध्यो विश्वास।
कहे महामती इन भांत तो रंग रती, दई पियाऐं अग्या जाग करूं विलास।। ८ ।।

हे मेरी आत्मा! इस तरह के वचनों को विचारकर अपने तन-मन को शक्तिशाली बनाकर अपने धनी में दृढ़ विश्वास रखो। इस तरह से महामतिजी कहती हैं कि धनी के प्रेम में रंग जाने पर ही धनी की आज्ञा होगी और मैं घर में जाकर धनी से आनन्द विलास करूंगी।

।। प्रकरण ।। ६ ।। चौपाई ।। १५७ ।।

सनन्ध विरह इस्क वृध की

तलफे तारुनी रे, दुलही को दिल दे।
सनमंध मूल जानके, सेज सुरंगी पर ले।। १ ।।

मैं आपकी युवा अंगना हूं और आपके वियोग में तड़प रही हूं। कृपा करके मुझ दुलहिन को अपना दिल देकर परमधाम का मूल सम्बन्ध जानकर अपने इश्क और प्यार की सेज्या पर स्वीकार करें।

सब तन विरहे खाइया, गल गया लोहू मांस।
न आवे अंदर बाहेर, या बिध सूकत स्वांस।। २ ।।

आपके वियोग ने मेरा शरीर जर्जर कर दिया है। इसमें खून भी सूख गया है। मांस भी गल गया है। अब सांस लेना भी भारी हो गया है।

हाड़ हुए सब लकड़ी, सिर श्रीफल विरह अगिन।
मांस मीज लोहू रगां, या विध होत हवन।। ३ ।।

मेरे तन की सब हड्डियां लकड़ी बन गई हैं। सिर आपके विरह की अग्नि में नारियल बन चुका है। अब मांस मज्जा, खून और नसों को अग्नि में हवन कर देती हूं।

रोम रोम सूली सुगम, खंड खंड खांडा धार।
पूछ पिया दुख तिनको, जो तेरी विरहिन नार।। ४ ।।

मेरे रोम-रोम में आपके विरह के सूए चुभ रहे हैं। तलवार की धार (आपका विरह) से अंग टुकड़े-टुकड़े हो रहे हैं। हे धनी! मैं आपके विरह में आपकी दुःखी अंगना हूं। आप कृपा करके मेरा हाल तो पूछ लो।

ए दरद जाने सोई, जिन लगे कलेजे घाए।
ना दारू इन दरद का, फेर फेर करे फैलाए।। ५ ।।

आपके विरह के दर्द को वही जानता है, जिसके कलेजे में विरह के घाव लगे होते हैं। इस कठोर दर्द की कोई दवा नहीं है। यह तो लगातार फैलता ही जाता है।

ए दरद तेरा कठिन, भूखन लगे ज्यों दाग।
हेम हीरा सेज पसमी, अंग लगावे आग।। ६ ।।

हे मेरे धनी! आपके विरह का दर्द बड़ा कठिन है। आभूषण, जला देने वाली अग्नि के समान लगते हैं। हीरे और सोने के पलंग जिन पर कोमल गद्दा बिछा होता है, वह सुख की बजाय विरह का दुःख बढ़ाते हैं।

Nijanand App

विरहिन होवे पिया की, वाको कोई न उपाए।
अंग अपने वैरी हुए, सब तन लियो है खाए।। ७ ।।

हे धनीजी! जो आपकी ऐसी विरहिणी हो उसका और कोई उपाय नहीं है। उसके अपने ही अंग उसको दुश्मन के समान लगते हैं। विरह के दुःख ने पूर्ण रूप से उसे खा लिया है।

ए लछन तेरे दरद के, ताए गृह आंगन न सोहाए।
रतन जड़ित जो मंदिर, सो उठ उठ खाने धाए।। ८ ।।

आपके विरह के दर्द की हकीकत का बयान किया है। आपकी विरहिणी को घर और आंगन अच्छा नहीं लगता है। रत्नों से जड़े हुए (सब सुख से भरे) घर लगता है कि खाने को आ रहे हैं।

ना बैठ सके विरहनी, सोए सके न रोए।
राज पृथी पांव दाब के, निकसी या बिध होए।। ९ ।।

आपकी विरहिणी को बैठने में, सोने में, किसी तरह से चैन नहीं है। पूरी घर-गृहस्थी की सुख-सामग्री का त्यागकर आपके विरह में भटकती है।

विरहा न देवे बैठने, उठने भी न दे।
लोट पोट भी न कर सके, हूक हूक स्वांस ले।। १० ।।

आपका विरह उठने-बैठने नहीं देता है और न लेटने देता है। केवल हाय धनी, हाय धनी की स्वांस चल रही है।

आठो जाम जब विरहनी, स्वांस लियो हूक हूक।
पत्थर काले ढिग हुते, सो भी हुए टूक टूक।। ११ ।।

इस तरह से हाय धनी, हाय धनी की रट दिन-रात लग गई, जिससे कठोर दिल वाले सुन्दरसाथ भी नर्म हो गए और साथ निभाने को तैयार हो गए।

ए बिध मोहे तुम दई, अपनी अंगना जान।
परदा बीच का टालने, ताथें विरहा प्रवान।। १२ ।।

हे मेरे धनी! आपने अपनी अंगना जानकर मेरे दिल में आकर साहस दिया। मैंने यह जो ऊपर के वचनों में विरह किया वह केवल आपके और मेरे बीच में तामस का परदा हो जाने से था। अब वह परदा हट गया।

॥ प्रकरण ॥ ७ ॥ चौपाई ॥ १६९ ॥

राग मेंवाड़

विरहा गत रे जाने सोई, जो मिल के बिछुरो होए।
ज्यों मीन बिछुरी जलथें, या गत जाने सोए।।मेरे दुलहा।।
तारुनी तलफे विलखे विरहनी, विरहनी विलखे कलपे कामनी।।टेक।। १ ।।

हे मेरे धनी! विरह की हकीकत वही जानता है जो मिलने के बाद अलग होता है। जैसे मछली जल से अलग होती है तो विरह का अनुभव उसे होता है। इसलिए, हे मेरे धनी! मैं आपकी युवा अंगना बिलख-बिलखकर विरह में तड़प रही हूं। मैं कामिनी आपके वियोग में कलप रही हूं।

Nijanand App

बिछुरो तेरो वल्लभा, सो क्यों सहे सोहागिन।
तुम बिना पिंड ब्रह्मांड, होए गई सब अगिन।। २ ।।

हे मेरे धनी! आपकी अंगना आपका वियोग कैसे सहन करे? आपके बिना तो यह तन और ब्रह्माण्ड आग के समान हो गया है।

विरहा जाने विरहनी, वाको आग न अंदर समाए।
सो झालें बाहेर पड़ी, तिन दियो वैराट लगाए।। ३ ।।

इस विरह के दुःख को विरहिणी ही जानती है। उसको फिर दुनियां के दुःख नहीं सताते। विरह की अग्नि की लपटों से सारा तन जल रहा है।

विरहा न छूटे वल्लभा, जो पड़े विघन अनेक।
पिंड न देखों ब्रह्मांड, देखों दुलहा अपनो एक।। ४ ।।

हे धनी! कितने भी माया के विघन आड़े आएं, आपका विरह छूटता नहीं है। मुझे तो केवल मेरे दूल्हा दिखते हैं। तन और संसार कोई दिखाई नहीं देता, अर्थात् और किसी तरफ ध्यान ही नहीं जाता।

विरहिन विरहा बीच में, कियो सो अपनो घर।
चौदे तबक की साहेबी, सो वारूं तेरे विरहा पर।। ५ ।।

हे धनी! आपकी विरहिणी ने तो अपना घर ही विरह का बना लिया है। अब चौदह लोकों की साहिबी भी मैं आपके विरह पर कुर्बान कर दूंगी।

आंधी आई विरह की, तिन दियो ब्रह्मांड उड़ाए।
विरहिन गिरी सो ना उठ सकी, रही मूल अंकूर भराए।। ६ ।।

आपका विरह आंधी की तरह आया जिससे मेरे तन की शक्ति समाप्त हो गई। आपके विरह में ऐसी सराबोर हो गई कि मुझसे उठा ही नहीं गया। अब तो केवल परमधाम का मूल अंकुर ही चित्त में रह गया।

विरहा सागर होए रह्या, बीच मीन विरहनी नार।
दौड़त हों निसवासर, कहूं बेट न पाइए पार।। ७ ।।

अब आपका यह विरह सागर के समान हो गया है, जिसमें आपकी अंगना मछली की तरह तड़प रही है। सहारे के लिए रात-दिन दौड़ती है, किन्तु विरह के सागर में कोई सहारा नहीं मिल रहा है (अर्थात् जब आप मिलें तो विरह हटे और सहारा मिले)।

|| प्रकरण || ८ || चौपाई || १७६ ||

राग मलार

इस्क बड़ा रे सबन में, न कोई इस्क समान।
एक तेरे इस्क बिना, उड़ गई सब जहान।। १ ।।

स्वामीजी कहते हैं इश्क सबसे बड़ा है। कोई और उसके समान नहीं है। एक आपके इश्क बिना सब दुनियां व्यर्थ हो गई है।

Nijanand App

चौदे तबक हिसाब में, हिसाब निरंजन सुंन।
न्यारा इस्क हिसाब थें, जिन देख्या पिउ वतन।।२।।

चौदह लोकों का, ब्रह्माण्ड, शून्य और निरंजन का किसी तरह से हिसाब किया जा सकता है, परन्तु जिस इश्क से घर और प्रीतम की पहचान हुई है, उसका हिसाब नहीं हो सकता।

लोक अलोक हिसाब में, हिसाब जो हद बेहद।
न्यारा इस्क जो पिउ का, जिन किया आद लों रद।।३।।

इस संसार के सभी लोकों का तथा हद-बेहद का हिसाब तो किसी तरह हो सकता है, परन्तु धनी के इश्क के सामने मैंने सब कुछ रद्द कर दिया है।

एक अनेक हिसाब में, और निराकार निरगुन।
न्यारा इस्क हिसाब थें, जो कछू ना देखे तुम बिन।।४।।

आदि नारायण तथा अनेक देवी-देवता और निराकार निर्गुण तक का हिसाब किया जा सकता है, परन्तु आपके वियोग में जो इश्क आता है, उसका वर्णन ही नहीं हो सकता।

और इस्क कोई जिन कथो, इस्कें न पोहोंच्या कोए।
इस्क तहां जाए पोहोंचिया, जहां सुन्य सब्द न होए।।५।।

इसलिए महामतिजी कहते हैं कि इश्क तक कोई पहुंचा ही नहीं। इश्क का नाम ही मत लेना। इसकी पहुंच बहुत ऊंची है। वहां पर शून्य के शब्द भी नहीं पहुंच सकते।

नाहीं कथनी इस्क की, और कोई कथियो जिन।
इस्क आगे चल गया, सब्द समाना सुंन।।६।।

इश्क की कोई कहानी नहीं है, इसलिए कोई कहना मत, इश्क तो शून्य मण्डल से आगे गया है और तुम्हारे शब्द शून्य तक के ही हैं और शून्य में ही समा जाते हैं।

सब्द जो सूक्या अंग में, हले नहीं हाथ पाए।
इस्क बेसुध ना करे, रही अंदर विलखाए।।७।।

इश्क के शब्द तो अंग में सूख जाते हैं और हाथ-पांव भी नहीं चलते, परन्तु जो सच्चा इश्क लेता है वह बेसुध नहीं करता। यह सुध में सदा प्रीतम की याद में अन्दर ही अन्दर विरहिणी को बिलखाता है।

पांपण पल न लेवही, दसों दिस नैन फिराए।
देह बिना दौड़े अंदर, पिया कित मिलसी कहां जाए।।८।।

ऐसी विरहिणी अपनी आंखों की पलक तक नहीं लगाती। वह दसों दिशाओं में तरसती नजर से देखती है कि पिया कहां मिलेंगे? कहां जाऊं? यह विचारधारा उसके हृदय में दौड़ती रहती है और उसे तन की सुध भी नहीं रहती।

इस्क को एह लछन, जो नैनों पलक न ले।
दौड़े फिरे न मिल सके, अंदर नजर पियामें दे।।९।।

इश्क का यह लक्षण है कि विरहिणी अपनी आंखों में पलक भी न झपके और न कहीं आए-जाए और न किसी से मिले। उसकी अन्दर की दृष्टि पिया में लगी रहती है।

Nijanand App

नजरों निमख न छूटहीं, तो नहीं लागत पल।
अंदर तो न्यारा नहीं, पर जाए न दाह बिना मिल।। १० ।।

उसकी नजर पिया से नहीं छूटती, इसलिए पलक नहीं लगती। विरहिणी को प्रीतम अन्दर से मिले होते हैं, परन्तु जब तक जाहिरी में न मिलें तब तक विरह की अग्नि नहीं बुझती।

जो दुख तुमहीं विछुरे, मोहे लाग्यो तासों प्यार।
एता सुख तेरे विरह में, तो कौन सुख होसी विहार।। ११ ।।

हे धनी! आपके बिछुड़ने से जो मुझे विरह का दुःख हुआ है वह मुझे बहुत प्यारा हो गया है, क्योंकि आप मेरे चित्त से हटते ही नहीं। जब इतना सुख आपके विरह में है तो आपके मिलन में कितना सुख होगा।

॥ प्रकरण ॥ ९ ॥ चौपाई ॥ १८७ ॥

राग धना काफी

सनमंध मूल को, मैं तो पाव पल छोड़्यो न जाए।
अब छल बल मोहे क्या करे, मोह आद थें दियो है उड़ाए।। १ ।।

हे धनी! मेरा और आपका सम्बन्ध परमधाम का है, ऐसा जानकर अब चौथाई पल के लिए भी छोड़ा नहीं जाता। आपने मेरी अज्ञानता की नींद (मोह) आदि (जड़) से उड़ा दी है। अब यह माया की ताकत मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकती।

दरद जो तेरे दुलहा, कर डास्यो सब नास।
पर आस ना छोड़े जीव को, करने तुम विलास।। २ ।।

हे मेरे धनी! आपके इस विरह के दर्द ने मेरा सब कुछ नष्ट कर दिया है, परन्तु मेरे जीव को आपके साथ मिलकर आनन्द करने की आशा लगी है।

मैं कहावत हों सोहागनी, जो विरहा न देऊं जिउ।
तो पीछे वतन जाए के, क्यों देखाऊं मुख पिउ।। ३ ।।

मैं सुहागिनी अंगना कहलाती हूं और आपके वियोग में यदि न तड़पूं तो पीछे घर में जाकर मुख कैसे दिखाऊंगी?

विरहा न छोड़े जीव को, जीव आस भी पिया मिलन।
पिया संग इन अंगे करूं, तो मैं सोहागिन।। ४ ।।

आपसे बिछुड़ने का विरह मेरे जीव को छोड़ नहीं रहा है। जीव को भी आपसे मिलने की आशा लगी है। मैं इस तन से आपसे मिलूं, तभी मैं सुहागिनी कहलाऊंगी।

लागी लड़ाई आप में, एक विरहा दूजी आस।
ए भी विरहा पिउ का, आस भी पिया विलास।। ५ ।।

मेरे अन्दर एक आपके बिछुड़ने का विरह और दूसरा आपसे मिलने की आशा, इन दोनों की आपस में लड़ाई लगी है। विरह भी आपका है और आपसे मिलकर विलास की चाह भी आपकी है।

Nijanand App

जो जीव देते सकुचों, तो क्यों रहे मेरा धरम।
विरहा आगे क्या जीव, ए कहत लगत मोहे सरम।। ६ ।।

ऐसी हालत में यदि मैं अपने जीव को कुर्बान करने में संकोच करूं तो मेरा धर्म कैसे रहेगा? विरह की आग के सामने जीव है ही क्या? ऐसा कहने में मुझे शर्म लगती है।

माया काया जीवसों, भान भूंन टूक कर।
विरहा तेरा जिन दिस, मैं वारूं तिन दिस पर।। ७ ।।

माया, शरीर और जीव को टुकड़े करके भूनकर आपकी उस दिशा पर कुर्बान कर दूं, जिस दिशा से मुझे आपका विरह मिला।

जब आह सूकी अंगमें, स्वांस भी छोड़्यो संग।
तब तुम परदा टाल के, दियो मोहे अपनो अंग।। ८ ।।

जब मेरे अंग से 'हाय धनी' की रट खत्म हो गई और सांस ने भी साथ छोड़ दिया, तब आपने मेरे शरीर का तामस हटाकर (शरीर का कष्ट हटाकर) मुझे स्वीकार किया और सनन्ध की वाणी बख्शीश मे दी।

मैं तो अपनो दे रही, पर तुमहीं राख्यो जिउ।
बल दे आप खड़ी करी, कछू कारज अपने पिउ।। ९ ।।

मैंने तो निराशा में ही अपने आपको खत्म कर दिया था, परन्तु आपने ही मुझे जीवित रखा। आपने अपने काम के लिए (ब्रह्मसृष्टि को घर ले जाने का काम) ही अपनी ताकत (सनन्ध वाणी) देकर फिर से खड़ा कर दिया।

जीवरा भी मेरा रख्या, तुम कारज भी कारन।
आस भी पूरी सोहागनी, वृध भी राख्यो विरहिन।। १० ।।

हे धनी! आपने अपने काम के वास्ते मुझे जीवित किया और मेरी चाहना भी पूरी की तथा मेरी लाज भी रखी।

तुम आए सब आइया, दुख गया सब दूर।
कहे महामती ए सुख क्यों कहूं, जो उदया मूल अंकूर।। ११ ।।

हे धनी! अब आप आ गए, तो मेरे विरह के सब दुःख भूल गए और सब कुछ मिल गया। इन सुखो का कैसे वर्णन करूं? मुझे तो ऐसे लगा जैसे परमधाम में आपके साथ रहते थे वैसे ही यहां हूं।

।। प्रकरण ।। १० ।। चौपाई ।। १९८ ।

सनन्ध विरह के प्रकास की

एह बात मैं तो कहूं, जो केहने की होए।
एह इमामें रीझ के, दया करी अति मोहे।। १ ।।

हे धनी! मुझे इतनी खुशी हो गई है कि मैं कह भी नहीं सकती। यह तो इमाम मेंहदी श्री राजजी महाराज ने खुश होकर मेरे ऊपर दया की और मुझे यह सनन्ध की वाणी बख्शीश में दी।

Nijanand App

सुनियो बानी मोमिनों, दीदार दिया हकें जब।
परदा सारा उड़ गया, हुआ उजाला सब।। २ ।।

हे मेरे मोमिनो! मेरी बात सुनो। मेरी निराश हालत में जब श्री राजजी महाराज ने दर्शन दिया और सनन्ध वाणी बख्शीश में दी तो कुरान के सारे परदे उड़ गए और सब अर्थ खुल गए।

कह्या जो नबिऐं इमाम, तिन खुद खोले द्वार।
दरवाजे सब खोल के, मोहे देखाया पार।। ३ ।।

रसूल साहब ने जो कहा था कि इमाम मेंहदी आकर कुरान के गुझ (गुह्य) रहस्य खोलेंगे, वही इमाम मेंहदी (श्री प्राणनाथजी) आ गए हैं और उन्होंने सारे रहस्यों को खोलकर मुझे अर्श अजीम (परमधाम) दिखाया।

कर पकर बैठाए के, आवेस दियो मोहे अंग।
ता दिन थें मेहेर पसरी, पल पल चढ़ते रंग।। ४ ।।

श्री राजजी महाराज ने ही मेरे जर्जर शरीर में आवेश की शक्ति देकर बिठाया और उसी दिन से दिन प्रति दिन मेहर (कृपा) बरस रही है और क्षण-क्षण में वाणी उतर रही है।

मिलाप हुआ जब मेंहेंदी से, तब कह्या महामती नाम।
अब मैं हुई जाहेर, देख्या वतन बका धाम।। ५ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि जब मेरा इमाम मेंहदी से मिलाप हुआ तब से महामति का नाम मिला और अपने अखण्ड घर को देखकर महामति के नाम से सबमें जाहिर हुई।

बात कही सब वतन की, सो निरखे मैं निसान।
नजरों सब जाहेर हुआ, उड़ गया उनमान।। ६ ।।

इमाम मेंहदी (श्री प्राणनाथजी) ने घर की बातें बताईं और घर के सब निशान जाहिर हो गए। मेरी अटकल उड़ गई और सब कुछ स्पष्ट हो गया।

आपा मैं पेहेचानिया, सनमंध हुआ सत।
ए मेहेर जुबां क्यों कर कहूं, गई मूल से गफलत।। ७ ।।

मैंने अपने आपको पहचाना। अब पता चला कि मैं परब्रह्म की अंगना हूं। इस मेहर का अब मैं कैसे वर्णन करूं? क्योंकि अब शुरू से आखिर तक सब संशय मिट गए हैं।

ए झूठी अबलों न जानती, क्या है क्यों उतपत।
सो अब सब विध समझी, यों होसी फना कुदरत।। ८ ।।

अभी तक मैं नहीं जानती थी कि यह संसार क्या है और कैसे बनता है? अब मैं सारी हकीकत को समझ गई हूं और यह भी जान गई हूं कि इस माया का प्रलय कैसे होगा।

मुझे जगाई जुगतसों, सुख दियो अंग आप।
कंठ लगाई कंठसों, या बिध कियो मिलाप।। ९ ।।

बड़े तरीके से धनी ने मुझे जगाया तथा अपना अंग देकर सुख दिया। उन्होंने मुझे गले से लगाया और बड़े प्यार से लिपटा लिया।

Nijanand App

खासी जान खेड़ी जिमी, जल सींचिया खसम।
बोया बीज वतन का, सो ऊग्या वाही रसम।। १० ।।

अब मेरी हृदय रूपी जमीन को अच्छा समझकर (खेड़ी) जोता तथा प्रीतम ने प्रेम के जल से सींचकर वतन के ज्ञान का बीज (सनन्ध वाणी) बोया। उसी ने विशाल वाणी का रूप धारण कर लिया।

बीज रूह संग निज बुध, सो ले उठिया अंकूर।
या जुबां इन अंकूर को, क्यों कर कहूं सो नूर।। ११ ।।

इस बीज को मेरे हृदय में आत्मा की जागृत बुद्धि का साथ मिला और उसी तरह से अंकुर फूटे। अब इस जबान से इसके (सनन्ध वाणी के) प्रकाश का वर्णन कैसे करूं?

नातो एह बात जो गुझ की, सो क्यों होवे जाहेर।
पर मोमिन प्यारे मुझ को, सो कर न सकूं अंतर।। १२ ।।

नहीं तो अभी तक कुरान के रहस्य छिपे हुए थे और जाहिर नहीं हो पा रहे थे, परन्तु मेरे मोमिन मुझे प्यारे हैं, इसलिए मैं उनसे कोई भी चीज छिपा नहीं सकती।

तो भी कहूं नेक नूर की, कछुक इसारत अब।
पीछे तो जाहेर होएसी, तब दुनी मिलसी सब।। १३ ।।

फिर भी इस ज्ञान के प्रकाश की कुछ बातें अब बताती हूं। पीछे तो इस वाणी के जाहिर होने से ही सारी दुनियां मिलकर आएगी।

ए जो विरहा बीतक कही, इमाम मिले जिन सूल।
अब फेर कहूं निज नूर की, जासों पाइए माएने मूल।। १४ ।।

हे मोमिनो! यह मैंने अपने विरह की तथा इमाम मेंहदी (श्री प्राणनाथजी) के मिलने की हकीकत को कहा है। अब मैं दुबारा अपनी जागृत बुद्धि से बताती हूं जिससे मूल हकीकत के मायने खुल जाएंगे।

सुनियो रूहें मोमिनों, जो इन मासूक की विरहिन।
जो चाहे मेहेंदी महंमद को, मैं ताए कहूं वचन।। १५ ।।

हे मेरी परमधाम की रूह मोमिनो! तुममें भी जो कोई मेरे प्रीतम के विरह में तड़पती है और जो मुहम्मद मेंहदी से मिलना चाहती है उसके लिए मैं यह वचन कह रही हूं।

ए विरहा लछन मैं कहे, पर नाहीं विरहा ताए।
या विध विरहा उद्दम की, जो कोई किया चाहे।। १६ ।।

यह तो मैंने विरह के लक्षण बताए हैं, पर तुम्हारे अन्दर अभी विरह नहीं है (धनी की पहचान नहीं है)। यदि तुममें से कोई विरह चाहता हो तो उसका यह उद्यम (तरीका, उपाय) है।

ज्यों ए विरहा उपज्या, ए नहीं हमारो धरम।
विरहिन कबूं न करे, यों विरहा अनूकरम।। १७ ।।

जिस तरह से यह विरह उत्पन्न हुआ, यह अपना धर्म नहीं है। विरहिणी तो वही है जो विरह की नकल नहीं करती और अपनी ही परिपाटी चलाती है।

Nijanand App

विरहा सुनते मासूक का, आह न उड़ गई जिन।
ताए वतन रूहें यों कहे, नाहीं न ए विरहिन।। १८ ।।

प्रीतम के बिछुड़ने की खबर सुनते ही विरहिणी, जिसने अपने जीव को नहीं त्यागा, उसे रूहें कहेंगी कि यह विरहिणी नहीं है।

जो होए आपे विरहनी, सो क्यों कहे विरहा सुध।
सुन विरहा जीव न रहे, तो विरहिन कहां से बुध।। १९ ।।

जो स्वयं वियोग से विरहिणी हो जाती है, वह किसी के सामने अपना दुःख नहीं बताती, क्योंकि विरह को सुनकर जीव नहीं रहता, तो विरहिणी को बुद्धि कहां से आएगी?

पतंग कहे पतंग को, कहां रह्या तूं सोए।
मैं देख्या है दीपक, चल देखाऊं तोहे।। २० ।।

यदि एक पतंगा दूसरे पतंगे को सूचना देता है कि तू कहां सोया पड़ा है? मैंने एक दीपक देखा है। चल, तुझे भी दिखाऊं।

या तो ओ दीपक नहीं, या तूं पतंग नाहें।
पतंग कहिए तिनको, जो दीपक देख झंपाए।। २१ ।।

दूसरा पतंगा जवाब देता है कि या तो वह दीपक नहीं है या तू फिर पतंगा नहीं है। पतंगा तो उसी को कहते हैं जो दीपक को देखते ही अपने आपको उसमें झोंक देता है।

पतंग और पतंग को, जो सुध दीपक दे।
तो होवे हांसी तिन पर, कहे नाहीं पतंग ए।। २२ ।।

एक पतंगा दूसरे पतंगे को यदि सूचना देता है तो उस पर हंसी होती है और सभी कहते हैं यह पतंगा नहीं है।

दीपक देख पीछा फिरे, साबित राख के अंग।
आए देवे सुध और को, ताए क्यों कहिए पतंग।। २३ ।।

दीपक को देखकर यदि वह पीछे लौटता है और अपने आपको कुर्बान नहीं करता है और दूसरों को खबर देता है, तो उसे पतंगा नहीं कहा जाता।

मैं तो बीतक तब कही, जब लई मासूकें उठाए।
जब मैं हुती विरह में, तब क्यों मुख बोल्यो जाए।। २४ ।।

श्री महामतिजी कहती हैं कि मैं पहले ही कुर्बान हो गई थी, परन्तु जब धनी ने जिन्दा कर दिया (धनी मिल गए) तब मैं यह बता रही हूं। जिस समय मैं विरह में थी तब तो मैं बोल भी नहीं सकी।

ए तो विरहा उपज्या ख्वाब में, चढ़ते चढ़ते पाए।
जब विरहा तामस बढ़्या, तब नींद दई उड़ाए।। २५ ।।

यह विरह तो सपने में धीरे-धीरे बढ़ा (या पता चला) तथा जब विरह में तामस आ गया तो अज्ञानता हट गई।

Nijanand App

विरहा नहीं ब्रह्मांड में, बिना सोहागिन नार।
सोहागिन अंग इमाम को, वतन पार के पार।। २६ ।।

इस ब्रह्माण्ड में ब्रह्मसृष्टि के अलावा और किसी को विरह आता ही नहीं है। सुहागिनी तो श्री प्राणनाथजी के अंग हैं जिनका घर बेहद के पार से परे है।

अब कहूं मोमिन की, जाए कहिए सोहागिन।
ए विरहिन ब्रह्मांड में, हुती ना एते दिन।। २७ ।।

अब मोमिनों की हकीकत कहती हूं जिनको सुहागिनी कहा जाता है। ऐसी ब्रह्म अंगनाएं जो अपने धनी की सुहागिनी हैं, पहले कभी ब्रह्माण्ड में आई ही नहीं।

सो सोहागिन जेतियां, इमाम की विरहिन।
सो अन्तर हकें पकड़ी, ना तो रहे ना तन।। २८ ।।

संसार में जितनी भी सुहागिनी (मोमिन) हैं वह इमाम मेंहदी (श्री प्राणनाथजी) से मिलने में अपने आपको कुर्बान कर देतीं, परन्तु धाम धनी ने ही उनको संसार में जीवित रखा है।

ए सुध दई इमामें, मोहे गुझ कियो प्रकास।
तो ए जाहेर होत है, गयो तिमर सब नास।। २९ ।।

इसकी खबर मुझे इमाम मेंहदी (श्री प्राणनाथजी) ने दी और इस रहस्य को बताया। तभी अन्धकार का नाश हुआ और यह हकीकत सबको जाहिर हुई।

मेहेंदी महंमद प्यारे मोमिन, सो जुबां कह्यो ना जाए।
पर हुआ है मुझे हुकम, सो कैसे कर ढंपाए।। ३० ।।

मुहम्मद मेंहदी को मोमिन बड़े प्यारे हैं। वह इस जबान से कहा नहीं जा सकता, पर मुझे हुक्म हुआ है तो इसे कैसे छिपाऊं?

अनेक करहीं बंदगी, अनेक विरहा लेत।
ए सुख तिन सुपने नहीं, जो हमको जगाए देत।। ३१ ।।

यहां के लोग कई तरह से बन्दगी करते हैं। बहुत लोग विरह भी लेते हैं। इतना करने पर भी जो सुख हमको जगाकर धनी देते हैं वह उनको सपने में भी नहीं मिलते।

छल तें मोहे छुड़ाए के, कछु दियो विरहा संग।
सो भी विरहा छुड़ाइया, देकर अपनो अंग।। ३२ ।।

धाम धनी ने सबसे पहले मुझे माया से छुड़ाया, फिर कुछ विरह दिया। फिर स्वयं अन्दर विराजमान होकर विरह भी छुड़ा दिया।

अंग नूर बुध देय के, कहे तूं प्यारी मुझ।
देने सुख सबन को, हुकम करत हूं तुझ।। ३३ ।।

मेरे अन्दर जागृत बुद्धि देकर धनी ने कहा कि तू मुझे बहुत प्यारी है। अब यह सुख सबको दो, ऐसा मैं हुक्म करता हूं।

Nijanand App

तुम दुख पाया मुझे सालहीं, अब सब सुख तुम हस्तक।
दिया तुमारा पावहीं, दुनियां चौदे तबक।। ३४ ।।

श्री राजजी महामति से कहते हैं कि तुमने जो दुःख उठाया, वह मुझे चुभता है। अब सारे सुख तुम्हारे हाथ में हैं और तुम्हारे देने से ही चौदह लोकों के जीवों को यह मिलेंगे।

दुख पावत हैं मोमिन, सो हम सह्यो न जाए।
हम भी होसी जाहेर, पेहेले सोहागनियां जगाए।। ३५ ।।

मेरे मोमिनों को यदि दुःख होता है तो मेरे से सहन नहीं होता, इसलिए सुहागिनी अंगनाओं को पहले जगाकर मैं भी जाहिर हो जाऊंगा।

सिर ले आप खड़ी रहो, कहे तूं सब सैयन।
प्रकास होसी तुझ से, दृढ़ कर देख मन।। ३६ ।।

मेरे इस ज्ञान को सिर पर धारण करो, हे महामति! तुम सब साथ को बताओ कि इस वाणी का फैलाव तुमसे होगा। मन में दृढ़ता से विचार कर देखो।

तोसों ना कछू अंतर, तूं है सोहागिन नार।
माएने गुझ बताए के, खोल दे पार द्वार।। ३७ ।।

मेरा तुझसे कोई भेद नहीं है और तू तो मेरी सुहागिनी अंगना है, इसलिए सबके सामने कुरान के सब रहस्यों को बताकर पार के दरवाजे खोल दे।

जो कबूं जाहेर ना हुई, सो ए करी तुझे सुध।
अब थें आद अनाद लों, जाहेर होसी निज बुध।। ३८ ।।

जिसकी आज तक किसी को सुध नहीं थी, वह सब जानकारी तुझे दे दी है। अभी से आदि से अन्त तक (शुरू से अन्त तक) जागृत बुद्धि से तुझे सारी जानकारी मिल जाएगी।

तोहे तो सब सुध परी, कहूं अटके नहीं निरधार।
आगे होए सोहागनी, कराओ सबों दीदार।। ३९ ।।

अब तुझे पूर्ण ज्ञान हो गया है, अब तू कहीं नहीं अटकेगी। सब सुहागिनियों के आगे होकर उनको पहचान कराकर दर्शन कराओ।

चौदे तबक कायम होएसी, सब हुकम के प्रताप।
ए सोभा तुझे सोहागनी, जिन जुदी जाने आप।। ४० ।।

तेरे हुक्म से चौदह लोकों को अखण्ड मुक्ति मिलेगी, इसलिए हे महामति! यह शोभा तुझे मिलने वाली है, इसलिए अपने को मेरे से अलग मत समझ।

जो कोई सब्द संसारमें, ना खुले माएने कब।
सो सब खातिर मोमिनों, तूं खोलसी माएने अब।। ४१ ।।

संसार में जितने भी धर्म ग्रन्थ हैं उनके भी भेद अभी तक नहीं खुले थे। अब तू मोमिनों के लिए यह सब खोलेगी।

Nijanand App

तूं देख दिल विचार के, उड़ जासी असत।
सारों के सुख कारने, तू जाहेर भई महामत।। ४२ ।।

तुम मन में विचार करके देखो यह सारा संसार उड़ जाएगा। तुम सबको सुख देने के वास्ते ही, हे महामति! तुम्हें सबके बीच जाहिर किया है।

खेल किया तुम खातिर, सो तूं कहो आगे मोमिन।
पेहेले खेल देखाए के, पीछे मूल वतन।। ४३ ।।

यह खेल तुम्हारे लिए बनाया है। इसकी सब मोमिनों को पहचान करा दो। पहले खेल दिखाना है, फिर बाद में अपने घर चलेंगे।

अंतर रूहोंसों जिन करो, जो मोमिन हैं अर्स घर।
पीछे चौदे तबक में, जाहेर होसी आखिर।। ४४ ।।

हे महामति! तू रूहों से अन्तर मत करना। यह मोमिन अपने घर के हैं। पीछे तो महाप्रलय में यह चौदह लोकों में जाहिर होना है।

बड़ा सुख आगे मोमिन, पीछे सुख संसार।
एक दीन सब होएसी, घर घर सुख अपार।। ४५ ।।

मोमिनों को पहले सब सुख मिलेंगे। उसके बाद संसार वालों को भी (जीव सृष्टि को भी) सभी सुख मिलेंगे। जब एक दीन हो जाएगा, अर्थात् परब्रह्म की पहचान हो जाएगी और एक को मान लेंगे तो घर-घर में बड़ा सुख होगा (योगमाया में)।

तें वचन कहे जो मुख थें, होसी तिनसे बड़ो प्रकास।
असत उड़सी तूल ज्यों, होसी कुफर सब नास।। ४६ ।।

हे महामति! तूने जो अपने मुख से वाणी कही है इसका बड़ा भारी प्रकाश होगा। इससे सारा झूठ का ब्रह्माण्ड आक के तूल (भूए) के समान उड़ जाएगा और सारा कुफ्र नष्ट हो जाएगा।

तूं लीजे नीके माएने, तेरे मुख के बोल।
जो साख देवे रूह अपनी, तो लीजे सिर कौल।। ४७ ।।

हे महामति! जो वाणी तेरे मुख से कही जाए उसके अच्छी तरह मायने लेना, यदि तेरी आत्मा तुझे साक्षी दे तो तू अपने किए कौल (वायदे) पूरे करना।

देत हों बल सबन को, जो हैं असलू मोमिन।
तूं पूछ देख दिल अपना, कर कारज दृढ़ मन।। ४८ ।।

जो मेरे सच्चे मोमिन हैं उन सबको मैं अपना बल दे रहा हूं। तू भी अपने दिल से पूछ और इस तरह मन में दृढ़ता लाकर काम कर।

मैं अंग इमाम को, मोमिन मेरे अंग।
बीच आए तिन वास्ते, करूं सब एक संग।। ४९ ।।

अब महामतिजी कहती हैं कि मैं इमाम मेंहदी की अंगना हूं और मोमिन मेरे अंग हैं। हमारे बीच श्री राजजी महाराज इसीलिए आए हैं। मैं सब सुन्दरसाथ को एक साथ मिलाकर इकट्ठा करूंगी।

|| प्रकरण || ११ || चौपाई || २४७ ||

Nijanand App

सनन्ध–मोमिन को ढूंढ़ने की

अब ढूंढ़ों रूहें अर्स की, जो हैं मूल अंकूर।
सो निज वतनी मोमिन, खसम अंग निज नूर।। १ ।।

श्री महामतिजी कहती हैं कि अब मैं श्री राजजी महाराज की आज्ञा से मूल निसबती (सम्बन्धी) अपने परमधाम की रूहों को ढूंढूंगी। वह मोमिन मेरे घर के साथी हैं तथा मेरे प्रीतम की अंगना हैं।

नूर पार पिउ एक खुद हैं, और न दूजा कोए।
और नार सब माया, यामें भी रूह दोए।। २ ।।

अक्षर के पार मेरे प्रीतम हैं। वहां दूसरा कोई नहीं हैं। यहां सब जगह माया ही माया है। इसमें दो तरह के जीव हैं।

इत असलू रूह विष्णु की, दूजी रूह कुफरान।
इन दोऊ से न्यारे मोमिन, सो आगे कहूंगी पेहेचान।। ३ ।।

यहां पर एक तो भगवान विष्णु का असल जीव है। दूसरे काफिर (नास्तिक) हैं, मोमिन इन दोनों से न्यारे हैं, जिनकी पहचान आगे बताऊंगी।

मोमिन सुख असल वतनी, विष्णु का सुख और।
दुनी विष्णु कायम होएसी, कजा कहूंगी तिन ठौर।। ४ ।।

मोमिन का सुख असल का है और अखण्ड परमधाम का है। भगवान विष्णु का सुख अलग तरीके का है। दुनियां और भगवान विष्णु न्याय के दिन अखण्ड हो जाएंगे।

अब लछन देखो मोमिन के, जो अरवाहें अर्स घर।
ए वतनी वचन सुन के, आवत हैं तत्पर।। ५ ।।

अब मोमिनों के लक्षण देखो जो हमारे घर परमधाम के हैं। यह हमारे घर के साथी वाणी को सुनकर तुरन्त ही आ जाते हैं।

अटक रह्या साथ आधा, जिन खेल देखन का प्यार।
ए किया मूल इन खातिर, जो हैं तामसियां नार।। ६ ।।

छः हजार जो तामसी सखियां हैं, उनकी खेल देखने की इच्छा बाकी थी। उनके वास्ते ही यह ब्रह्माण्ड बनाया है।

भूल गइयां खेल में, जो मोमिन हैं समरथ।
नूर इमाम को मुझ पे, केहे समझाऊं अर्थ।। ७ ।।

ऐसे समर्थ मोमिन खेल में आकर भूल गए हैं। इमाम मेंहदी का ज्ञान मेरे पास है। इसे समझाकर कहूंगी।

सबों को भेली करूं, दृढ़ कर देऊं मन।
खेल देखाऊं खोल के, जिन बिध ए उतपन।। ८ ।।

मैं सबको इकट्ठा करूंगी और सब संशय मिटाकर उनके हृदय में दृढ़ता लाऊंगी। सारे रहस्य, जिनसे ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति हुई है, खोलकर खेल दिखाऊंगी।

Nijanand App

ए खेल है जोरावर, बड़ो ते रचियो छल।
ए तब जाहेर होएसी, जब काढ़ देखाऊं बल।। ९ ।।

यह खेल बड़ा शक्तिशाली है। इस माया ने ऐसा छल रच रखा है। जब इसके बल को नष्ट कर दूंगी तो दुनियां को पता चलेगा कि यह माया तो कुछ भी नहीं थी।

तुम नाहीं इन छल के, और छल को जोर अमल।
सांची को झूठी लगी, ऐसो छल को बल।। १० ।।

हे मोमिनो! तुम माया के नहीं हो। माया के नशे का यहां बड़ा जोर है। सच्ची ब्रह्मसृष्टि झूठी माया पकड़कर बैठी है। छल ऐसा बल वाला है।

तुम आइयां छल देखने, भिल गैयां मांहें छल।
छल को छल न लागहीं, ओ लेहेरी ओ जल।। ११ ।।

हे मोमिनो! तुम खेल देखने के लिए आए हो और खेल में मिल गए हो (खेल बन गए हो)। माया के जीवों को इसका असर नहीं होता, क्योंकि वह इसी जल की लहरें हैं।

ए झूठी तुम को लग रही, तुम रहे झूठी लाग।
ए झूठी अब उड़ जाएसी, दे जासी झूठा दाग।। १२ ।।

इस झूठी माया ने तुम्हें पकड़ रखा है और माया को तुमने पकड़ रखा है। यह झूठी माया तो खत्म हो जाएगी, परन्तु तुम्हें दाग लग जाएगा।

हांसी होसी अति बड़ी, जिन मोहे देओ दोस।
कमी कहे मैं न करूं, पर तुम छल हुआ सिरपोस।। १३ ।।

श्री महामतिजी कहती हैं कि उस समय (परमधाम में) तुम्हारी बड़ी हांसी होगी, इसलिए मुझे दोष मत देना। मैं तो किसी तरह की कमी कहने में नहीं कर रही हूं, पर तुमने ही माया से सिर ढांप लिया है।

मांग लिया खसम पें, ए छल तुम देखन।
जो कदी भूली छल में, तो फेर न आवे ए दिन।। १४ ।।

तुमने खेल देखने की मांग धनी से की थी। अब यदि खेल में भूल गईं तो फिर से ऐसा दिन हाथ नहीं आएगा।

तुम मुख नीचा होएसी, आगूं सब मोमिन।
ए हांसी सत वतन की, कोई मोमिन कराओ जिन।। १५ ।।

सब मोमिनों के सामने तुम्हारा मुख नीचा होगा। इसलिए, हे मोमिनो! अपने अखण्ड घर परमधाम में ऐसी हांसी कोई मत्त कराना।

दुख ले चलसी इत थें, नहीं आवन दुजी बेर।
तिन क्यों मुख ऊंचा होएसी, जो खसम सों बैठी मुख फेर।। १६ ।।

अपने धनी से मुख फेरकर मत बैठो। नहीं तो परमधाम में तुम्हारा मुंह कैसे ऊंचा होगा? यहां दूसरी बार तो आना नहीं है, इसलिए धनी से मुख फेरकर मत बैठो। क्या चलते समय दु:ख साथ ले चलोगे?

तुमें सुध छल ना अपनी, ना सुध हक वतन।
बताए देऊं या बिध, ज्यों दृढ़ होवे आप मन।। १७ ।।

तुम्हें न अपनी खबर है, न माया की, न अपने घर की और न धाम धनी की, इसलिए मैं तुम्हें हर तरह से बता रही हूं, जिससे तुम्हारे मन में दृढ़ता आ जाए।

Nijanand App

ए छल पेड़ थें देखाए बिना, ना छूटे याको बल।
उड़ाए देऊं जड़ पेड़ से, ज्यों उतर जाए अमल।। १८ ।।

जब तक इस माया के ब्रह्माण्ड की असल हकीकत नहीं बता देती, तब तक इसकी ताकत का ज्ञान (पता) नहीं मिलेगा (चलेगा), इसलिए इस ब्रह्माण्ड का ही प्रलय कर देती हूं, जिससे माया का सारा नशा ही उतर जाए।

अब देखो इन छल को, जो देखन आइयां तुम।
नूर जोस देऊं अंग में, जो कोई मोमिन मुस्लिम।। १९ ।।

हे मेरे सच्चे मोमिनो! अब तुम जिस खेल को देखने आए हो उस छल के खेल को देखो। मैं तुम्हारे अंग में जागृत बुद्धि और आवेश देती हूं।

मोमिन मांग्या मोले पें, सो भूल गैयां बातें मूल।
सो खेल देखाए पीछे याद देऊं, देखाए फुरमान रसूल।। २० ।।

हे मोमिनो! तुमने इसे धनी से मांगा था। उस मूल घर की बातें यहां आकर भूल गए हो। अब खेल दिखाकर रसूल के फरमान से तुम्हें याद दिलाऊंगी।

या छल में अनेक छल हैं, सो करूं सब जाहेर।
खोलूं कमाड कल कुलफ, अंतर मांहें बाहेर।। २१ ।।

इस माया के ब्रह्माण्ड में अनेक प्रकार के छल हैं। उन्हें अब मैं जाहिर कर देती हूं। अन्दर और बाहर के दरवाजे, ताले और इसे खोलने की युक्ति बता देती हूं (खोल देती हूं)।

।। प्रकरण ।। १२ ।। चौपाई ।। २६८ ।।

सनन्ध–खेल के मोहोरों की

अब निरखो नीके कर, जो देखन आइयां तुम।
मांग्या खेल हिरस का, सो देखावें खसम।। १ ।।

हे मोमिनो! जिस खेल को तुम देखने के लिए आए हो, उसको अच्छी तरह से पहचानो। तुमने माया के खेल को देखने की चाहना की थी, उसे धनी दिखा रहे हैं।

भोम भली भरथ खंड की, जहां आई निध नेहेचल।
और सारी जिमी खारी, खारे जल मोह जल।। २ ।।

भरतखण्ड की भूमि भाग्यशाली है, जहां यह अखण्ड वाणी आई है। बाकी सारा संसार माया के मोह से भरा हुआ है।

इत बोए बिरिख होत है, ताको फल पावे सब कोए।
बीज जैसा फल तैसा, किया जो अपना सोए।। ३ ।।

भरतखण्ड की ही जमीन ऐसी है जहां बीज बोने से वृक्ष होता है, जिसका फल सभी को मिलता है। जैसा बीज होता है वैसा फल मिलता है, अर्थात् जैसी करनी वैसी भरनी।

इनमें जो ठौर अच्छी, जाको नाम नौतन।
जहां आए उदै हुई, नेहेचल बात वतन।। ४ ।।

इस सारे भरतखण्ड में जो अच्छी धरती है उसे नौतनपुरी कहते हैं। यहां पर अखण्ड मूल परमधाम की बात जाहिर हुई।

Nijanand App

तिन अच्छी थें भी ठौर अच्छी, जाए कहिए हिन्दुस्तान।
जहां मेंहेदी महंमद आए के, जाहेर किया फुरमान।।५ ।।

उससे भी अच्छा ठिकाना है जिसको हिन्दुस्तान (पद्मावती पुरी) कहते हैं। जहां मुहम्मद मेंहदी ने आकर कुरान के रहस्यों को जाहिर किया।

जोलों फुरमान ना जाहेर, तोलों मुख से ना निकसे दम।
अब इमाम के निज नूर से, देखाऊं खेल मुस्लिम।।६ ।।

जब तक कुरान के भेद जाहिर नहीं हुए तब तक कुरान के बारे में एक शब्द भी कोई नहीं बोला। अब इमाम मेंहदी के ज्ञान से अपने मोमिनों को खेल दिखाती हूं।

ए खेल तुम मांगिया, सो किया तुम कारन।
ए विध सब देखाए के, देखाऊं खसम वतन।।७ ।।

हे मोमिनो! तुमने खेल को मांगा है, इसे तुम्हारे लिए बनाया है। यह सब तुम्हें दिखाकर वतन और खसम के दर्शन कराऊंगी।

मोहोरे सब जुदे जुदे, जुदी जुदी मुख बान।
खेलें मन के भावते, सब आप अपनी तान।।८ ।।

इस खेल में सब अगुए (गुरुजन) जुदे-जुदे हैं और उनकी बोली अलग-अलग है। यह सब अपनी मनमानी भावना के अनुसार ही अपना राग अलापते हैं।

स्वांग काछे जुदे जुदे, और जुदे जुदे रूप रंग।
चले आप चित चाहते, और रहे भेले संग।।९ ।।

इसमें सब अपना-अपना भेष बनाते हैं, जिनके अलग-अलग रूप और रंग होते हैं। सभी अपनी-अपनी इच्छा के अनुसार मनमानी करते हैं और साथ में भी रहते हैं।

कई दुकान बाजार सेहेर, चौक चौवटे अनेक।
अनेक कसबी कसब करते, हाट पीठ बसेक।।१० ।।

यहां कई तरह के शहर, बाजार, दुकान, चौहट्टे और चौक हैं, जिनमें अनेक तरह के धन्धा करने वाले धंधा करते हैं और कहीं-कहीं पर हाट और बाजार भी लगते हैं, अर्थात् यहां पर धर्मों के धाम बने हैं। धर्मों के क्षेत्र हैं। गादी (पीठ) हैं, मठ हैं और उनका प्रचार कर दुनियां को ठगते हैं। यहीं पर मेलों के रूप में हाट पीठ लगते हैं, जिनमें कई तरह की चमत्कारी लीला भी करते हैं।

भेख सारे बनाए के, करें हो हो कार।
कोई मिने आहार खाए, कोई खाए अहंकार।।११ ।।

इनमें तरह-तरह के भेष बनाकर अपनी ध्वजा पताका लेकर शोर मचाते हैं, जिनके कारण कोई धर्म को पेट का साधन बनाता है, कोई अपने अहंकार को दिखाता है।

विध विध के भेख काछें, सारे जान प्रवीन।
वरन चारों खेलें चित दे, नाही न कोई मत हीन।।१२ ।।

इसमें लोग तरह-तरह के भेष बनाकर अपने को होशियार ज्ञानी के रूप में जाहिर करते हैं। चारों वर्ण के लोग बड़े चित्त से खेलते हैं, धर्म प्रचार करते हैं। कोई अपने आप को ज्ञान में कम नहीं कहता।

Nijanand App

पढ़े चारों विद्या चौदे, हुए वरन विस्तार।
आप चंगी सब दुनियां, खेलत हैं नर नार।। १३ ।।

इसमें कई चारों वेदों के ज्ञाता और चौदह विद्याओं के जानने वाले हैं। स्वयं माया में मस्त होकर दुनियां वालों को माया में मग्न कर रखा है।

वरन सारे पसरे, लगे लोभें करें उपाए।
बिना अगनी पर जले, अंग काम क्रोध न माए।। १४ ।।

चारों वर्ण वाले अपना प्रसार करते हैं और उसमें लोभ के ही उपाय करते हैं। काम और क्रोध की अग्नि में जल रहे हैं जो हकीकत में अग्नि नहीं है।

नहीं जासों पेहेचान कबहूं, तासों करे सनमंध।
सगे सहोदरे मिलके, ले देवें मन के बंध।। १५ ।।

जिसके साथ कभी पहचान नहीं उससे शादी करते हैं। सब कुटुम्बी जन (बिरादरी वाले) मिलकर माया के बन्धन में बांध देते हैं।

सनमंध करते आप में, खुसाल हाल मगन।
केसर कसूंबे पेहेर के, देखलावें लोकन।। १६ ।।

जब शादी करते हैं तो बड़ी खुशी होती है और पीले-लाल वस्त्र पहनकर जगत को दिखाते हैं (बारात निकालते हैं)।

सिनगार करके तुरी चढ़े, कोई करे छाया छत्र।
कोई आगे नाटारंभ करे, कोई बजावे बाजंत्र।। १७ ।।

दूल्हा को शृंगार कराकर घोड़े पर बिठाते हैं तथा कोई छत्र लेकर साथ में चलते हैं। कई आगे नाचते हुए बाजे बजाते चलते हैं।

कोई बांध सीढ़ी आवे सामी, करे पोक पुकार।
विरह वेदना अंग न माए, पीटे मांहें बाजार।। १८ ।।

कई सामने से मुर्दे की अर्थी लेकर हाय-हाय करते चले आते हैं। उनके अंग में दुःख नहीं समाता। बाजार में छाती पीटते हैं।

गाड़े जालें हाथ अपने, रुदन करें जल धार।
सनमंधी सब मिलके, टल वले नर नार।। १९ ।।

वह अपने ही हाथों से मुर्दे को गाड़ देते हैं या जला देते हैं। आंसुओं की धारा बहा-बहाकर रोते हैं। सगे सम्बन्धी सब मिलकर शोक मनाते हैं और दुःखी होते हैं।

जनम होवे काहू के, काहू के होए मरन।
हांसी हिरदे काहू के, काहू के सोक रुदन।। २० ।।

किसी के यहां जन्म होता है। किसी के यहां मरण हो रहा है। किसी के दिल में बड़ी खुशी है और कोई दुःख से रो रहा है।

जर खरचें खाए गफलतें, करें बड़े दिमाक।
कीरत अपनी कराए के, पीछे होवें हलाक।। २१ ।।

कोई अपने को अपनी औकात से बड़ा दिखाने के लिए धन खर्च करते हैं और अपनी थोड़ी-सी महिमा कराकर पीछे दुःखी होते हैं।

Nijanand App

कोई किरपी कोई दाता, कोई मंगन केहेलाए।
किसी के अवगुन बोलें, किसी के गुन गाए।। २२ ।।

कोई कंजूस है, कोई दानी है। इसमें कोई मांगने वाले भिखारी कहलाते हैं। वह किसी के गुण गाते हैं, किसी की निन्दा करते हैं।

कोई मिने वेहेवारिए, कोई राने राज।
कई मिने रांक रलझलें, रोते फिरें अकाज।। २३ ।।

कोई आपस में सांसारिक व्यवहार करते हैं। कोई राणा है, कोई राजा है, कोई गरीब बनकर अकारण रोता है।

कई सोवें सोने के पलंग, कई ऊपर ढोलें वाए।
रहे खड़े आगे जी जी करें, ए खेल यों सोभाए।। २४ ।।

कोई सोने के पलंग पर सोते हैं। कोई ऊपर पंखे झलते हैं। कई आगे सेवा में खड़े 'जी जी' करते हैं। इस तरह से यह खेल की शोभा है।

कई बैठें सुखपाल में, कई दौड़े उचाए।
जलेब आगे जोर चले, ए खेल यों खेलाए।। २५ ।।

कोई पालकी में बैठते हैं। कोई पालकी उठाकर चलते हैं। कोई इनकी सेना में आगे-आगे चलते हैं। यह खेल इस तरह शोभायमान है।

कोई बैठे तखतरवा, आगे तुरी गज पाएदल।
अति बड़े बाजंत्र बाजहीं, जाने राज नेहेचल।। २६ ।।

कोई रथ पर बैठते हैं। उनके आगे हाथी-घोड़े, पैदल चलते हैं। बड़े-बड़े बाजे बजवाते हैं और समझते हैं कि हमारा राज्य अखण्ड है।

साम सामी करें फौजें, लरावें लोह अंग।
जिमी खावंद नाम धरावने, कई लर मरें अभंग।। २७ ।।

कई आमने सामने फौजें खड़ी करके तलवार-भालों से लड़ते हैं। वह अपने को राजा कहलाने के लिए लड़ मरते हैं तथा हाथ-पैर तोड़ लेते हैं।

कोई मिने होए कायर, छोड़ सरम भाग जाए।
कोई मारे कोई पकरे, कोई जावे आप बचाए।। २८ ।।

उनमें कायर होकर शर्म के मारे कोई पीछे भाग जाते हैं। कोई मारता है, कोई पकड़ता है तथा कोई अपने को बचाता है।

कोई जीते कोई हारे, काहू हरख काहू सोक।
जो तरफ सारी जीत आवे, ताए कहें पृथीपत लोक।। २९ ।।

कोई जीतता है तो कोई हारता है। किसी को हर्ष होता है तो किसी को दुःख। जो चारों तरफ जीत के आता है उसे पृथ्वीपति कहते हैं।

Nijanand App

कई करत ले कैद में, बांधत उलटे बंध।
मारते अरवाह काढ़हीं, ए खेल या सनंध।। ३० ।।

किसी को कैद में डालते हैं। कई उनके बन्धन में बंध जाते हैं, जिनको मार-मारकर प्राण निकालते हैं। यह खेल इस तरह का है।

जीते हरखे पौरसे, उमंग अंग न माए।
हारे सारे सोक पावें, तोबा तोबा करें जुबांए।। ३१ ।।

कोई जीतने पर खुशी मनाता है और उसके अंग में उमंग नहीं समाती है। हारे हुए लोग शोक मनाते हैं तथा तोबा-तोबा करते हैं।

कई फिरत हैं रोगिए, कई लूले टूटे अपंग।
कई मिने आंधले, यों होत खेलमें रंग।। ३२ ।।

कई रोगी घूमते हैं। कई लूले, टूटे, अपंग हैं। कई अन्धे हैं। इस तरह से खेल में कई रंग हैं।

कई उदर कारने, फिरत होत फजीत।
पवाड़े कई बिना हिसाबें, खेल होत या रीत।। ३३ ।।

कई अपने पेट के लिए मांगते फिरते हैं और अपनी फजीहत कराते हैं। इस तरह से खेल में बिना हिसाब के झंझट हैं।

।। प्रकरण ।। १३ ।। चौपाई ।। ३०१ ।।

सनन्ध–खेल में खेल की

अब गुझ बताऊं खेल का, झूठे खेले कर सांच।
ए नीके देखो मोमिनों, ए जो रहे मजहबों रांच।। १ ।।

श्री महामतिजी कहती हैं, हे मेरे प्यारे मोमिनो! इस खेल की गुझ (छिपी) बातें बताती हूं जिसमें लोग झूठ को सत समझ रहे हैं। यह तुम अब अच्छी तरह से धर्म, पन्थ, पैंडों में देखना।

मैं बताऊं या बिध, जासों जाहेर सब होए।
नहीं पटंतर दीन पैंडे, सो जुदे कर देऊं दोए।। २ ।।

मैं इस तरह से बताती हूं जिससे सब कुछ जाहिर हो जाए। धर्मों के अन्दर देखने में भेद दिखाई नहीं देता। वह मैं अलग-अलग करके बताती हूं।

इन खेल में जो खेल है, सो केहेत न आवे पार।
इन भेखों में भेख सोभहीं, सो कहूं नेक विचार।। ३ ।।

इस खेल में जो खेल हो रहा है, वह अपार है। यह कहनी से परे है। भेषों में तरह-तरह के भेष भी दिखाई पड़ते हैं। कुछ थोड़ा-सा उनके प्रति विचार सुनो।

कई बिना हिसाबे दयोहरे, जुदे जुदे अपने मजहब।
कई भांतों कई जिनसों, करत बंदगी सब।। ४ ।।

यहां बिना हिसाब मन्दिर बने हैं और अलग-अलग मजहब हैं। कई तरह से सब बन्दगी करते हैं।

Nijanand App

खोजे कोई न पावहीं, वार न पाइए पार।
ले बुत बैठावें दयोहरे, कहें हमारा करतार।।५ ।।

कोई-कोई खोज करते हैं पर वार-पार नहीं मिलता है (भवसागर से पार परमात्मा का ज्ञान)। वह मूर्ति को मन्दिर में बिठाते हैं और कहते हैं यही हमारे भगवान हैं।

कई सराए अपासरे, कई ताल कुंड बिरबाव।
कई बिध बांधे बेरखे, कई साल पोसाल टिकाव।।६ ।।

यहां कई धर्मशालाएं हैं। कई जैनों के अपासरे (मन्दिर) हैं, कई तालाब हैं, कई कुण्ड हैं, कई बावली हैं, कई तरह के झण्डे लगे हैं, कई साधुओं के ठहरने की शालाएं हैं तथा कई औषधालय हैं, कई ठहरने के ठिकाने हैं (रैनबसेरे हैं)।

कई अंन नीर सबीले, कई करें दया दान।
कई तरपन तीरथ, कई करे नित अस्नान।।७ ।।

कई अन्न क्षेत्र खोलते हैं, कई प्याऊ बनवाते हैं, कई दया, दान करते हैं, कई तीर्थों में जाकर पिण्डों का तर्पण करते हैं (पिण्डदान) कई जाकर तीर्थों में नित्य नहाते हैं।

कई भेख जो साध कहावहीं, कई पंडित पुरान।
कई भेख जो जालिम, कई मूरख अजान।।८ ।।

कई ऐसे भेष पहनते हैं कि लोग उन्हें साधु कहते हैं। कई पुराण पढ़ने वाले पण्डितों का भेष धारण करते हैं। कई डाकुओं का भेष धारण करते हैं। कई मूर्ख, नासमझ घूमते हैं।

कई कहावें दरसनी, धरें जुदे जुदे भेख।
सुध आप न पार की, हिरदे अंधेरी विसेख।।९ ।।

कई दर्शनशास्त्री कहलाते हैं। वह अलग-अलग भेष धरते हैं। उन्हें न अपनी खबर है और न ब्रह्माण्ड के पार की खबर है। उनका हृदय अन्धेरे से भरा हुआ है।

कई लोचें कई मूड़ें, कई बढ़ावें केस।
कई काले कई उजले, कई धरें भगुए भेस।।१० ।।

कई बालों को नुचवाते हैं, कई मुंडवाते हैं, कई लोग केश रखवाते हैं। कई काले हैं, कई गोरे हैं, कई भगवा वस्त्र धारण करके घूमते हैं।

कई नेक छेदें कई न छेदें, कई बहुत फारें कान।
कई माला तिलक धोती, कई धरे बैठे ध्यान।।११ ।।

कई कान छिदवाते हैं, कई नहीं छिदवाते हैं। कई कानों को बहुत फाड़ते हैं। कई माला पहनते हैं। कई तिलक लगाते हैं। कई धोती पहनते हैं। कई ध्यानी हो बैठते हैं।

कई लंगरी बोदले, कई सेख दुरवेस।
कई इलम कई आलम, कई पढ़े हुए पेस।।१२ ।।

इनमें कई लंगरी, कई बोदले, कई शेख, कई फकीर, कई आलिम फाजिल तथा कई पढ़ाई के पेशे के लोग हैं।

Nijanand App

कई जिंदे गोस कुतब, कई मलंग मीर पीर।
कई औलिए कई अंबिए, कई मिने फकीर।। १३ ।।

कई जिन्द, कई गौस, कई कुतुब, कई मलंग, कई मीर, कई पीर, कई औलिया, कई अम्बिया और कई फकीरों के रूप में घूमते हैं।

कई पैगंमर आदम, कई फिरे फिरस्ते फेर।
तबक चौदे देखिए, किन ठौर न छोड़ी अंधेर।। १४ ।।

कई पैगम्बर, कई आदम, कई फरिश्तों के रूप बनाकर घूमते हैं। चौदह लोकों में देखें तो इनमें से किसी को भी माया ने छोड़ा नहीं है (ऊपर के सब नाम मुसलमान साधुओं के हैं)।

कई सीलवंती सती कहावहीं, कई आरजा अरधांग।
जती वरती पोसांगरी, ए अति सोभावें स्वांग।। १५ ।।

कई शीलवती, कई सती कहलाती हैं। कई पतिव्रता अर्द्धाङ्गिनी कहलाती हैं। कई यती हैं, कई व्रती हैं, कई नशा करने वाले हैं। इसी तरह से सब रूप दिखाई पड़ते हैं।

कई जुगते जोगी जंगम, कई जुगते सन्यास।
कई जुगते देह दमें, पर छूटे नहीं जम फांस।। १६ ।।

कई तरह के योगी हैं। कई तरह के संन्यासी हैं। कई तरह के देह दमन करने वाले हैं। कई चलते फिरते योगी हैं, पर किसी से यम की फांसी नहीं छूटती। सब माया में उलझे पड़े हैं।

कई सिवी कई वैष्णवी, कई साखी समरथ।
लिए जो सारे गुमाने, सब खेलें छल अनरथ।। १७ ।।

कई शिव को मानने वाले हैं। कई विष्णु के उपासक हैं। कई कविता लिखने वाले कवि सन्त हैं। यह सब अपने अहंकार में डूबे हुए माया का ही खेल खेल रहे हैं।

कई श्रीपात ब्रह्मचारी, कई वेदिए वेदांत।
कई गए पुस्तक पढ़ते, परमहंस सिधांत।। १८ ।।

कई श्रीपाद (लक्ष्मीजी के उपासक) ब्रह्मचारी, कई वेद पढ़ने वाले वेदान्ती हैं। कई पुस्तक पढ़ते-पढ़ते परमहंसों के सिद्धान्त तक पहुंचे हैं।

अनेक अवतार तीर्थंकर, कई देव दानव बड़े बल।
बुजरक नाम धराइया, पर छोड़े न काहू छल।। १९ ।।

कई विष्णु के अवतार हुए हैं। कई जैन मत के तीर्थंकर, कई देव और शक्तिशाली दानव हैं। कई बड़े बुजरक कहलाते हैं, पर किसी को माया ने नहीं छोड़ा।

कई होदी बोदी पादरी, कई चंडिका चामंड।
बिना हिसाबे खेलहीं, जाहेर छल पाखंड।। २० ।।

कई होदी हैं, कई बोदी, कई पादरी हैं (यह ईसाई मत के साधु हैं)। कई चण्डी देवी के उपासक हैं। कई चामुण्डा के उपासक हैं। इस तरह से बिना हिसाब के लोग इसमें खेलते हैं, पर है यह सब छल और पाखण्ड।

Nijanand App

कई डिंभ करामात, कई जंत्र मंत्र मसान।
कई जड़ी मूली औखदी, कई गुटका धात रसान।।२१।।

कई पाखण्डी करामाती (चमत्कारी) हैं। कई यन्त्र, मन्त्र से मसान की पूजा करते हैं। कई साधु जड़ी, मूल, औषधि की दवाई देते हैं। कई रस, धातु पदार्थों की गोलियां बांटते हैं।

कई जुगतें सिध साधक, कई व्रत धारी मुन।
कई मठ वाले पिंड पाले, कई फिरे होए नगन।।२२।।

कई सिद्ध और साधक बनकर घूमते हैं। कई व्रत धारण करके मौन रहते हैं। कई मठाधीश बनकर पिण्ड पालते हैं। कई जैन मुनि बनकर नंगे घूमते हैं।

कई खट चक्र नाड़ी पवन, कई अजपा अनहद।
कई त्रिवेनी त्रिकुटी, जोती सोहं राते सब्द।।२३।।

कई छः चक्रों से नाड़ी शोधन करते हैं। कई अजपा अनहद का जाप करते हैं। कई चित्त को त्रिकुटि में स्थिर करते हैं। कई ज्योति स्वरूप ओउम्, सोऽम् शब्दों का आनन्द लेते हैं।

कई संत जो महंत, कई देखीते दिगंमर।
पर छल ना छोड़े काहूं को, कई कापड़ी कलंदर।।२४।।

कई सन्त हैं, कई महन्त हैं, कई नंगे हैं, कई श्वेताम्बर जैन हैं, पर माया ने किसी को नहीं छोड़ा।

कई आचारी अप्रसी, कई करे कीरंतन।
यों खेलें जुदे जुदे, बस परे सब मन।।२५।।

कई आचार-विचार, छुआ-छूत को मानने वाले हैं। कई कीर्तन करने वाले हैं। यह सब लोग अलग-अलग रूप से मन के वशीभूत होकर खेलते हैं।

कई कीरंतन करें बैठे, कई जाग जगन।
कई कथें ब्रह्म ग्यान, कई तपे पंच अगिन।।२६।।

कई बैठे-बैठे कीर्तन करते हैं। कई रात्रि जागरण करते हैं। कई ब्रह्म ज्ञान का कथन करते हैं। कई पांच तरह की अग्नि में अपने को तपाते हैं।

कई इंद्री करें निग्रह, मन ल्याए कष्ट मोह।
कई ऊर्ध ठाड़ेश्वरी, कई बैठे खुद होए।।२७।।

कई इन्द्रियों को वश में करते हैं और कई लोग मोह के वश में कष्ट उठाते हैं। कई उलटे खड़े रहते हैं। कई खुद को ही ब्रह्म कहलाते हैं।

कई फिरें देस देसांतर, कई करें काओस।
कई कपाली अघोरी, कई लेवें ठंढ पाओस।।२८।।

कई देश-विदेश में घूमते हैं। कई काओस (ओस में बैठकर) उपासना करते हैं। कई कापालिक (मुर्दे की खोपड़ी लेकर घूमने वाले) अघोरी, कई म्लेच्छों का खाना खाते हैं। कई ठण्ड के मौसम में छाती तक पानी में डूबे रहते हैं।

कई पवन दूध आहारी, कई ले बैठत हैं नेम।
कई कैद ना करे कछुए, ए सब छल के चेन।।२९।।

कई हवा खाते हैं। कई दूध पीते हैं तथा नियम पालन करते हैं। कई कर्मकाण्ड करते हैं। कई कुछ नहीं करते। यह सब छल और कपट के चरित्र हैं।

Nijanand App

कई फल फूल पत्र भखी, कई आहार अलप।
कई करें काल की साधना, जिया चाहें कलप।। ३० ।।

कई फल खाते हैं। कई फूल खाते हैं। कई पत्ते खाने वाले हैं। कई थोड़ा खाने वाले हैं। कई काल की साधना करके कल्पान्त तक मरना नहीं चाहते।

कई धारा गुफा झांपा, कई जो गालें तन।
कई सूकें बिना खाए, कई करें पिंड पतन।। ३१ ।।

कई पानी की धारा के नीचे बैठे हैं। कई गुफाओं के अन्दर हैं। कई आग में अपने तन को जला रहे हैं। कई भूखे मर कर सूख रहे हैं। कई इस तरह अपने शरीर को नष्ट करने में लगे हैं।

यों वैराग जो साधना, कई जुदे जुदे उपचार।
यों चलें सब पंथ पैंडे, खेले सब संसार।। ३२ ।।

कई वैराग्य साधना करते हैं। कई तरह-तरह के उपचारों में लगे हैं (दवाई ढूंढ़ते फिरते हैं)। इसी तरह से सभी पन्थ पैंडे चल रहे हैं। इस पर चलकर सब संसार में खेल खेल रहे हैं।

खेले सब देखा देखी, ज्यों चले चींटी हार।
यों जो अंधे गफलती, बांधे जाए कतार।। ३३ ।।

यह सब चींटी की हार की तरह देखा-देखी चलते हैं। इस तरह से यह अन्धे गफलत में डूबे हुए एक पंक्ति में चले जा रहे हैं।

कोई ना चीन्हें आप को, ना सुध अपनो घर।
जिमी न पैंडा सूझे काहू, जात चले या पर।। ३४ ।।

किसी को भी न अपनी पहचान है और न अपने घर की पहचान है। किसी को भी इस भवसागर से पार जाने का रास्ता दिखता नहीं है, पर चले जा रहे हैं।

बाजीगर न्यारा रह्या, ए खेलत कबूतर।
तो कबूतर जो खेल के, सो क्यों पावें बाजीगर।। ३५ ।।

इस संसार के रचने वाले बाजीगर की पहचान नहीं है। यह सब खेल के कबूतर की तरह खेल रहे हैं। जैसे खेल के कबूतरों को बाजीगर की पहचान नहीं होती, उसी प्रकार इनको परमात्मा की पहचान नहीं है।

आपे नाम जुदे जुदे, खुदा के धरे अनेक।
अनेक रंगे संगे ढ़ंगे, बादे करे विवेक।। ३६ ।।

इन्होंने अपनी ही तरफ से परमात्मा के अनेक नाम रख लिए हैं। अनेक तरह से आपस में वाद-विवाद (शास्त्रार्थ) करते हैं।

सुध इनको तो परे, जो ए आप सांचे होए।
तो कुरान के माएने, इत खोल ना सके कोए।। ३७ ।।

इनको पारब्रह्म की पहचान तब हो जब यह स्वयं बेहद के हों, इसलिए आज दिन तक कुरान के मायने कोई खोल नहीं सका।

Nijanand App

ए देखो तुम मोमिनों, खेल बिना हिसाब।
ए खेल तुम खातिर, खसमें रचिया ख्वाब।। ३८ ।।

हे मोमिनो! देखो, यह खेल इस तरह से बेहिसाब है जो तुम्हारे लिए अपने धनी ने सपने में बनाया है।

मोमिनों के मेले मिने, कोई आए न सके रूह ख्वाब।
ए ख्वाब नीके पेहेचानियो, ज्यों होवे दीन सवाब।। ३९ ।।

मोमिनों के मेले में सपने का कोई जीव नहीं आ सकता, इसलिए इस सपने के संसार को अच्छी तरह से पहचानना जिससे तुम्हें दीन का लाभ मिले।

।। प्रकरण ।। १४ ।। चौपाई ।। ३४० ।।

सनन्ध–जुदे जुदे फिरकों की जिद

अजूं देखाऊं नीके कर, ए जो खैंचा खैंच करत।
ए झूठे झूठा राचहीं, पर सुध न काहूं परत।। १ ।।

हे मेरे मोमिनो! अब मैं तुम्हें इन सब धर्म, पन्थों की खींच-तान बताती हूं। यह सब झूठ में रंगे हैं और किसी को भी पार की सुध नहीं है।

खेल खेलें और रब्दें, मिनो मिने करें क्रोध।
जैसे मछ गलागल, छोड़े ना कोई व्रोध।। २ ।।

इस खेल में खेलते हैं और आपस में क्रोधित होकर झगड़ा करते हैं। जिस तरह से मगरमच्छ आपस की दुश्मनी नहीं छोड़ते, उसी तरह इनका हाल है।

कोई कहे दान बड़ा, कोई कहे ग्यान।
कोई कहे विग्यान बड़ा, यों लरे सब उनमान।। ३ ।।

कोई दान, कोई ज्ञान, कोई विज्ञान को बड़ा कहते हैं और अटकल लगाकर लड़ते हैं।

कोई कहे करम बड़ा, कोई केहेवे काल।
कोई कहे साधन बड़ा, यों लरें सब पंपाल।। ४ ।।

कोई कर्म को, कोई काल को तथा कोई साधन को बड़ा कहकर झूठ में लड़ते रहते हैं।

कोई कहे बड़ा तीरथ, कोई कहे बड़ा तप।
कोई कहे सील बड़ा, कोई केहेवे सत।। ५ ।।

कोई तीर्थ को, कोई तप को, कोई शील को, कोई सत को बड़ा कहता है।

कोई कहे विचार बड़ा, कोई कहे बड़ा व्रत।
कोई केहेवे मत बड़ी, या विध कई जुगत।। ६ ।।

कोई विचार को, कोई व्रत को, कोई बुद्धि को तथा कोई युक्ति को बड़ा कहते हैं।

कोई कहे बड़ी करनी, कोई कहे मुगत।
कोई कहे भाव बड़ा, कोई कहे भगत।। ७ ।।

कोई करनी, कोई मुक्ति, कोई भाव तथा कोई भक्ति को बड़ा कहते हैं।

Nijanand App

कोई कहे कीरंतन बड़ा, कोई कहे श्रवन।
कोई कहे बड़ी वंदनी, कोई कहे अरचन।। ८ ।।

कोई कीर्तन को, कोई श्रवण को, कोई वन्दना को, कोई अर्चना को बड़ा कहते हैं।

कोई कहे ध्यान बड़ा, कोई कहे धारन।
कोई कहे सेवा बड़ी, कोई कहे अरपन।। ९ ।।

कोई ध्यान को, कोई धारण को, कोई सेवा को, कोई अर्पण को बड़ा कहते हैं।

कोई कहे संगत बड़ी, कोई कहे बड़ा दास।
कोई कहे विवेक बड़ा, कोई कहे विश्वास।। १० ।।

कोई संगति, कोई दास, कोई विवेक और कोई विश्वास को बड़ा कहते हैं।

कोई कहे स्वांत बड़ी, कोई कहे तामस।
कोई कहे पन बड़ा, यों खेलें परे परवस।। ११ ।।

कोई शान्ति को, कोई तामस को, कोई प्रतिज्ञा को बड़ा कहकर बेबस होकर खेलते हैं।

कोई कहे सदा सिव बड़ा, कोई कहे आद नारायन।
कोई कहे आदे आद माता, यों करत तानों तान।। १२ ।।

कोई सदा शिव को, कोई आदि नारायण को, कोई आदि माता को बड़ा कहकर आपस में खींचातानी करते हैं।

कोई कहे आतम बड़ी, कोई कहे परआतम।
कोई कहे अहंकार बड़ा, जो आद का उतपन।। १३ ।।

कोई आत्मा को, कोई परआतम को, कोई अहंकार को जो शुरू से ही पैदा है, बड़ा कहते हैं।

कोई कहे सकल व्यापक, देखीतां सब ब्रह्म।
कोई कहे ए ना लह्या, यों करे लड़ाई भूले भरम।। १४ ।।

कोई कहते हैं ब्रह्म सबमें व्यापक है, कोई कहते हैं हमने पा लिया। कोई कहता है हमने नहीं पाया। इस तरह से संशय में डूबे हुए लड़ते हैं।

कोई कहे सुन्य बड़ी, कोई कहे निरंजन।
कोई कहे निरगुन बड़ा, यों लरें वेद वचन।। १५ ।।

कोई शून्य को, कोई निरंजन को, कोई निर्गुण को बड़ा कहकर वेद के वचनों से लड़ते हैं।

कोई कहे आकार बड़ा, कोई कहे निराकार।
कोई कहे तेज बड़ा, यों लरें लिए विकार।। १६ ।।

कोई आकार को, कोई निराकार को तथा कोई तेज को बड़ा कहकर संशय में लड़ते हैं।

कोई कहे पारब्रह्म बड़ा, कोई कहे परसोतम।
वेद के वाद अन्धकारे, करें लड़ाई धरम।। १७ ।।

कोई पारब्रह्म को, कोई पुरुषोत्तम को बड़ा कहते हैं तथा अन्धकार में वेदों पर वाद-विवाद कर धर्म में लड़ाई करते हैं।

Nijanand App

जाहेर झूठा खेलही, हिरदे अति अन्धेर।
कहे हम सांचे और झूठे, यों फिरें उलटे फेर।। १८ ।।

यह सब जाहिर में झूठे हैं तथा इनके हृदय संशय से भरे हैं। यह कहते हैं कि हम ही सच्चे हैं। बाकी सब झूठे हैं। इस तरह से उलटे चक्कर में पड़े हैं।

पंथ सारों की एह मजल, अनेक विध वैराट।
ए जो विगत खेल की, सब रच्यो छल को ठाट।। १९ ।।

सारे पन्थों की भी यही हालत है। वैराट में अनेक तरह के पन्थों की यह मंजिल है। खेल की जो हकीकत बताई, यह सब माया का ही ठाट-बाट है।

कोई हेम गले अगनी जले, भैरव करवत ले।
खसम को पावें नहीं, जो तिल तिल काटे देह।। २० ।।

कोई बर्फ में गलते हैं। कोई अग्नि में जलते हैं। कोई भैरव में झांप खाते हैं और कई काशी में जाकर करवट लेते हैं और इस तरह से अपने शरीर के टुकड़े-टुकड़े करते हैं, परन्तु पारब्रह्म की प्राप्ति नहीं होती।

भेख जुदे जुदे खेलहीं, जाने खेल अखंड।
ए देत देखाई सब फना, मूल बिना ब्रह्मांड।। २१ ।।

कई तरह-तरह के भेष बनाकर खेलते हैं और इस खेल को अखण्ड समझते हैं, जबकि यह सब जो दिख रहा है वह मिटने वाला संसार है। यह बिना जड़ के खड़ा है।

खसम एक सबन का, नाहीं दूसरा कोए।
ए विचार तो करे, जो आप सांचे होए।। २२ ।।

धनी सबका एक है, दूसरा तो कोई है नहीं। ऐसा विचार तो वही कर सकता है, जो स्वयं सच्चा हो।

खेलें सब बेसुध में, कोई बोल काढ़े विसाल।
उतपन सारी मोह की, सो होए जाए पंपाल।। २३ ।।

यह सब बेसुधी में खेलते हुए बड़े-बड़े वचन बोलते हैं, जबकि यह सारी सृष्टि मोह से पैदा हुई है और मिट जाने वाली है।

बिना दिवालें लिखिए, अनेक चित्रामन।
तो ए क्यों पावें खुद को, जाको मूल मोह सुंन।। २४ ।।

इस तरह यहां पर बिना दीवार के अनेक तरह के चित्र बना रहे हैं। ऐसे लोग संसार के हैं जिनका मूल ही शून्य निराकार है। वह पारब्रह्म को कैसे पा सकते हैं?

अनेक किव इत उपजे, वैराट सचराचर।
ए छल मोहोरे छल के, खेलत हैं सत कर।। २५ ।।

यहां पर अनेक तरह के कवि पैदा हुए जिन्होंने संसार को कभी चल कभी अचल कहा है। यह सब छल के मोहरे (अग्रसर) हैं और इसी छल को सत मानकर खेलते हैं।

।। प्रकरण ।। १५ ।। चौपाई ।। ३६५ ।।

Nijanand App

सनन्ध–वैराट की जाली

ए खेल रच्यो हम खातिर, सो देखन आइयां हम।
ए जो प्यारे मेंहेदी महंमद, जेती रूह मुस्लिम।। १ ।।

श्री महामतिजी कहती हैं कि हमारे लिए खेल बनाया गया। हम रूहें (मोमिन) अपने प्यारे इमाम मेंहदी के साथ खेल देखने आए हैं।

ए खेल को कौन देखावहीं, कौन कहे याकी सुध।
इमाम आप आए बिना, क्यों आवे वतनी बुध।। २ ।।

यह खेल कौन दिखा रहा है? कौन इसकी खबर देगा (पहचान कराएगा)? इमाम मेंहदी के आए बिना कैसे परमधाम की जागृत बुद्धि आएगी?

आई बुध वतन की, तब खुले माएने कुरान।
भी नेक बताऊं खेल या बिध, ज्यों होवे सब पेहेचान।। ३ ।।

वतन की जब जागृत बुद्धि आई, तभी कुरान के रहस्य खुले। खेल की थोड़ी हकीकत भी बता देती हूं जिससे खेल की पूरी पहचान हो जाए।

वैराट का फेर उलटा, याको मूल है आकास।
डालें पसरी पाताल में, यों कहे वेद प्रकास।। ४ ।।

इस ब्रह्माण्ड का फेरा उलटा है। इसका मूल आकाश में है और डालें पाताल में हैं। इस प्रकार वेदों का ज्ञान कहता है।

फल डाल अगोचर, आड़ी अन्तराए पाताल।
वैराट वेद दोऊ कोहेड़ा, गूंथी सो छल की जाल।। ५ ।।

इसके फल और डालियां दिखाई नहीं देतीं, यह नीचे पाताल में छिप गई हैं। वैराट और वेद दोनों धुन्ध हैं, जिन्होंने अलग-अलग अपनी जाली गूंथ रखी है।

बिध दोऊ देखिए, एक नाभ दूजा मुख।
गूंथी जालें दोऊ जुगते, मान लिए दुख सुख।। ६ ।।

दोनों की हकीकत देखिए तो वैराट की उत्पत्ति नाभि से है और वेद की उत्पत्ति मुख से है। इन दोनों की जाली गुंथी है, जिसमें सभी सुख और दुःख अनुभव करते हैं।

कोहेड़े दोऊ दो भांत के, एक वैराट दूजा वेद।
जीव जालों जाली बंधे, कोई जाने न याको भेद।। ७ ।।

वैराट तथा वेद दो तरह के धुन्ध हैं। एक वैराट दूसरा वेद, इन दोनों की जाली में ही जीव बंधे हैं, पर इसे कोई नहीं जानता।

देखलावने मोमिन को, कोहेड़े किए एह।
बताए देऊं आंकड़ी, छल बल की है जेह।। ८ ।।

मोमिनों को खेल दिखाने के लिए ही इन दोनों कोहेड़े (धुन्ध) को बनाया है। इनकी आंकड़ी (हकीकत) को मैं बता देती हूं कि यह दोनों माया के छल और शक्ति की रचना हैं।

Nijanand App

आंकड़ी एक इन भांत की, बांधी जोरसों ले।
रूह झूठी देखहीं, सांची देखे देह।। ९ ।।

एक आंकड़ी (गुत्थी) बड़ी जोर से बांधी है, जिससे आत्मा झूठी दिखती है और तन सच्चा दिखता है।

करे सगाई देहसों, नहीं रूहसों पेहेचान।
सनमंध पालें इनसों, एह लई सबों मान।। १० ।।

सारा संसार तन से रिश्ते करता है। आत्मा की पहचान होती नहीं। सारे सम्बन्ध इसी तन से ही पालते हैं। ऐसी जगत की रीति है।

न्हवाए चरचे अरगजे, प्रीते जिमावें पाक।
सनेह करके सेवहीं, पर नजर बांधी खाक।। ११ ।।

इसी तन को नहलाते हैं। सुन्दर सुगन्धित तेल लगाते हैं। बड़े प्रेम से भोजन कराते हैं। प्रेम से सेवा करते हैं। पर यह खाक है, जिससे रिश्ता गांठकर आशा लगाए बैठे हैं।

रूह गई जब अंग थें, तब अंग हाथों जालें।
सेवा जो करते सनेहसों, सो सनमंध ऐसा पालें।। १२ ।।

इसी तन से जब जीव निकल जाता है तो अपने ही हाथों से उसी तन को जला देते हैं। जो बड़े प्यार से सेवा करते थे, वह इस तरह का रिश्ता निभाते हैं।

हाथ पांव मुख नेत्र नासिका, सोई अंग के अंग।
तिन छूत लगाई घर को, प्यार था जिन संग।। १३ ।।

हाथ, पैर, मुख, नेत्र, नासिका सब अंग वही के वही रहते हैं। जिनसे आज तक बड़ा प्यार था, जीव निकल जाने के बाद वही तन अछूत हो जाता है।

अंग सारे प्यारे लगते, खिन एक रह्यो ना जाए।
चेतन चले पीछे सो अंग, उठ उठ खाने धाए।। १४ ।।

जिस तन के सभी अंग प्यारे लगते थे तथा जिनके बिना एक पल नहीं रहा जाता था, जीव निकल जाने के बाद वही दुश्मन लगता है। ऐसा लगता है कि यह हमें खा जाएगा।

सनमंधी जब चल गया, अंग वैर उपज्या ताए।
सो तबहीं जलाए के, लियो सो घर बटाए।। १५ ।।

जीव जब चला जाता है तो उसी तन से दुश्मनी हो जाती है, फिर उसे घर से निकालकर जला देते हैं, फिर घर सम्पत्ति को हिस्सों में बांट लेते हैं।

छोड़ सगाई रूह की, करें सगाई आकार।
वैराट कोहेड़ा या विध, उलटा सो कई प्रकार।। १६ ।।

आत्मा को छोड़कर तन से रिश्ता करते हैं। इस तरह का कोहेड़ा (रहस्य) कई तरह से उलटा है।

कई बिध यों उलटा, वैराट नेत्रों अंध।
चेतन बिना कहे छूत लागे, फेर तासों करे सनमंध।। १७ ।।

वैराट आंखों से अन्धा होने के कारण कई तरह से उलटा है। जब चेतन नहीं हो तो कहते हैं कि छूत लग गई और चेतन होने पर उसी से सम्बन्ध करते हैं (रिश्ता करते हैं)।

Nijanand App

एक भेख जो विप्र का, दूजा भेख चंडाल।
जाके छुए छूत लागे, ताके संग कौन हवाल।। १८ ।।

एक तन ब्राह्मण का है और दूसरा चाण्डाल का, जिसे छूने से छूत मानते हैं और उसके साथ कैसा व्यवहार करते हैं।

चंडाल हिरदे निरमल, संग खेले भगवान।
देखावे नहीं काहू को, गोप राखे नाम।। १९ ।।

यदि चाण्डाल का हृदय निर्मल हो और उस तन में भगवान हो, वह सदा ही उसी में खेलता है और किसी प्रकार का दिखावा नहीं करता और छिपकर भगवान को रिझाता है।

अंतराए नहीं खिन की, सनेह सांचो रंग।
रात दिन नजर रूह की, नहीं वजूदसों संग।। २० ।।

चाण्डाल का भगवान से एक क्षण का अन्तर नहीं पड़ता और भगवान के प्रेम में मगन रहता है। उसकी आत्म दृष्टि सदा भगवान की तरफ रहती है। तन से उसका कोई मतलब नहीं होता।

विप्र भेख बाहेर द्रष्टी, खट करम पाले वेद।
स्याम खिन सुपने नहीं, जाने नहीं ब्रह्म भेद।। २१ ।।

ब्राह्मण का तन बाहर की दृष्टि से षट कर्मों को पालने वाला होता है। परमात्मा की विचारधारा उसके सपने में भी नहीं है और न ही उसको परमात्मा के रहस्य का पता है।

उदर कुटम कारने, उतमाई देखावे अंग।
व्याकरण वाद विवाद के, अर्थ करें कई रंग।। २२ ।।

वह अपने परिवार का पेट भरने के लिए ही शरीर की स्वच्छता और उत्तमता दिखाता है और व्याकरण के वाद-विवाद में कई तरह के अर्थ करता है।

अब कहो काके छुए, अंग लागे छोत।
अधम तम विप्र अंगे, चंडाल अंग उद्दोत।। २३ ।।

अब श्री महामतिजी पूछती हैं, बताओ। इन दोनों में से किसके तन को छूने से छूत लगनी चाहिए? ब्राह्मण का तन अन्धकार से भरा नीच है और चाण्डाल का तन भगवान के अन्दर होने से पाक और साफ है।

पेहेचान सबों वजूद की, नहीं रूह की द्रष्ट।
वैराट का फेर उलटा, या विध सारी सृष्ट।। २४ ।।

संसार के सभी लोग तन को देखते हैं। आत्मा की तरफ नजर ही नहीं होती। इस तरह से सारे वैराट का फेर उलटा है।

एक देखो अचरज, चाल चले संसार।
जाहेर है ए उलटा, जो देखिए दिल विचार।। २५ ।।

एक और आश्चर्य (हैरानी) की बात देखो, जिसमें संसार चलता है। यदि दिल से विचार करके देखें तो यह जाहिरी में भी उलटा है।

Nijanand App

सांचे को झूठा कहे, झूठे को कहे सांच।
ए भी देखाऊं जाहेर, सब रहे झूठे रांच।। २६ ।।

यह सत (आत्मा) को झूठा कहते हैं और झूठे शरीर को सत माने बैठे हैं। संसार के सभी लोग झूठे शरीर में ही लिप्त हैं। इस बात को और भी जाहिर करके बताती हूं।

आकार को निराकार कहे, निराकार को आकार।
आप फिरे सब देखे फिरते, ए असत यों निरधार।। २७ ।।

यह शरीर जो मिट जाने वाला है, उसे आकार कहते हैं। आत्मा जो सदा अखण्ड है (अजर-अमर है) उसे निराकार कहते हैं। सारे जगत के जीव इसी चक्कर में घूम-फिर रहे हैं। इस तरह से यह झूठा है।

मूल बिना वैराट खड़ा, यों कहे सब संसार।
तो ख्वाब के जो दम आपे, ताए क्यों कहिए आकार।। २८ ।।

सभी संसार के लोग कहते हैं कि यह वृक्ष रूपी ब्रह्माण्ड बिना जड़ (आधार) के खड़ा है। तो इस सपने के ब्रह्माण्ड के जो जीव हैं, उन्हें आकार (साकार) कैसे कहा जाए?

आकार न कहिए तिनको, काल को जो ग्रास।
काल सो निराकार है, आकार सदा अविनास।। २९ ।।

जो जन्मता और मरता है, उसे आकार (साकार) नहीं कहना चाहिए। मरने वाले को (शरीर को) निराकार और सदा रहने वाले (आत्मा) को आकार (साकार) कहना ही ठीक है (उचित है)।

जिन रांचो मृग जल दृष्टें, जाको नाम प्रपंच।
ए छल गफलत को कियो, ऐसो रच्यो उलटो संच।। ३० ।।

श्री महामति जी कहती हैं कि इस तरह के मृग जल (मृग तृष्णा) के प्रपंच (जाल) में मत फंसो। यह पूरा संसार उलटा है और संशय से भरा है।

।। प्रकरण ।। १६ ।। चौपाई ।। ३९५ ।।

सनन्ध–वेद का कोहेड़ा

ए खेल देख्या ख्वाब का, ए जो लरे लोक विवाद।
पर लराए इनको जिने, नेक कहूं तिनकी आद।। १ ।।

श्री महामतिजी कहती हैं कि मैंने सपने का ब्रह्माण्ड देखा इसमें लोग आपस में लड़ते हैं। जो इनको लड़वाता है, मैं उसकी थोड़ी सी हकीकत बताती हूं।

जिन बंधे हुए अंधे, फिरे सो उलटे फेर।
सो नेक बताए पीछे, उड़ाए देऊं अन्धेर।। २ ।।

इनमें बंधे हुए अन्धे की तरह उलटे चल रहे हैं, इसलिए थोड़ी-सी हकीकत बताकर अज्ञान का अन्धकार मिटा देती हूं।

अब कहूं कोहेड़ा वेद का, जाकी मिहीं गूंथी जाल।
याकी भी नेक केहे के, देऊं सो आंकड़ी टाल।। ३ ।।

वेद के कोहेड़े (अन्धकार) की जाली बड़ी बारीक गूंथी है। इसकी थोड़ी-सी हकीकत कहकर संशय मिटा देती हूं।

Nijanand App

वैराट आकार ख्वाब का, ब्रह्मा सो तिनकी बुध।
मन नारद फिरे दसो दिस, वेदें बांध किए बेसुध।। ४ ।।

ब्रह्माण्ड का आकार सपने का है। इसमें बुद्धि के मालिक ब्रह्माजी हैं। मन के मालिक नारद दसों दिशाओं में घूमते हैं। इस तरह से वेदों ने सबको बांधकर बेसुध कर रखा है।

लगाए सब रब्दें, व्याकरण वाद अन्धकार।
या बुधें बेसुध हुए, विवेक खाली विचार।। ५ ।।

व्याकरण के वाद-विवाद में सबको लड़वा रखा है। इस तरह से सारा संसार वेदों की बुद्धि से (ज्ञान से) बेसुध हो गया है और अन्धकार के ज्ञान में इनका विवेक और विचार शून्य हो गया है (रहा ही नहीं)।

बंध जो बांधे या बिध, हर वस्त के बारे नाम।
सो बानी ले बड़ी कीनीं, ए सब छल के काम।। ६ ।।

इस तरह का बंध बांध दिया है कि हर अक्षर के बारह नाम रख दिए हैं और वाणी का विस्तार कर दिया है। यह सब कपट (छल) के काम हैं।

लुगे लुगे के जुदे माएने, द्वादस के प्रकार।
उरझाए मूल माएने, बांधे अटकलें अपार।। ७ ।।

एक-एक शब्द के अलग-अलग बारह तरह से माएने करते हैं। मूल भावों को उलटा कर उलझा देते हैं और अटकल से तरह-तरह के अर्थ करते हैं।

अर्थ को डालने उलटा, अनेक तरफों ताने।
मूढ़ों को समझावने, रेहेस बीच में आने।। ८ ।।

अर्थ को उलटने के लिए व्याकरण से खींचातानी करते हैं और मूर्खों को समझाने के लिए बीच में कहानियां सुनाते हैं।

ऐसी अनेक आंकड़ियों मिने, बोले बारे तरफ।
रेहेस रंचक धरे बीच में, समझाए न किने हरफ।। ९ ।।

ऐसी अनेक आंकड़ियां (धुंडियां) हैं, जिनके बारह-बारह अर्थ करते हैं। इससे किसी को भी हकीकत का पता चलता नहीं है, परन्तु उस हकीकत को छिपाने के लिए बीच में मनगढ़ंत कहानियां सुनाते हैं।

बारे तरफों बोलते, एक अखर एक मात्र।
ऐसे बांध बत्तीस श्लोक में, बड़ा छल किया यों सास्त्र।। १० ।।

एक अक्षर में बारह मात्राएं लगाकर बारह तरह से बोलते हैं। ऐसे बत्तीस अक्षर जोड़कर श्लोक बनाकर शास्त्रों ने बड़ा छल किया है।

बारे मात्र एक अखर, अखर श्लोक बत्तीस।
छल एते आड़े अर्थ के, और खोज करें जगदीस।। ११ ।।

एक अक्षर की बारह मात्राएं तथा एक श्लोक के बत्तीस अक्षर बनाकर (यानी एक अक्षर के बारह अर्थ और बत्तीस अक्षरों के तीन सौ चौरासी अर्थ हुए तो ऐसे श्लोक वाले वेदों के ज्ञान पढ़कर आप स्वयं सोचें कि क्या हकीकत में परमात्मा मिलेगा?) परमात्मा की खोज करते हैं। जहां हकीकत के अर्थ के सामने इतने ज्यादा अर्थ हों तो वहां परमात्मा कैसे मिलेगा?

Nijanand App

अर्थ आड़े कई छल किए, तिन अर्थों में कई छल।
अखरा अर्थ न होवहीं, कियो भावा अर्थ अटकल।। १२ ।।

अर्थों की आड़ में भी कई तरह घुमा-फिराकर अर्थ करते हैं और दुनियां को ठगते हैं। अक्षर का तो अर्थ आता नहीं है और भावार्थ अटकल से करते हैं।

जाको नामै संस्कृत, सो तो संसे ही की कृत।
सो हरफ दृढ़ क्यों होवहीं, जो एती तरफ फिरत।। १३ ।।

जिसका नाम संस्कृत है वह संशय से ही बनी है, क्योंकि इसके कई अर्थ निकलते हैं, तो वह एक सच्चाई कैसे पाई जाए?

सो पढ़े पंडित जुध करे, एक कांने को टुकड़े होए।
आपस में जो लड़ मरे, एक मात्र न छोड़े कोए।। १४ ।।

संस्कृत पढ़े विद्वान एक मात्रा मात्र के लिए झगड़ा करते हैं। वह एक मात्रा भी नहीं छोड़ते और आपस में लड़ मरते हैं।

ए वाद बानी सिर लेवहीं, सुध बुध जावे सान।
स्वांत त्रास न आवे सुपने, ऐसा व्याकरण ग्यान।। १५ ।।

इस वाद-विवाद में बेसुधी में जो वचन मुंह से निकल जाते हैं, उसी को पकड़ लेते हैं। व्याकरण की व्याख्या में उलझे रहते हैं। उनको सपने में भी शान्ति नहीं मिलती।

ए वानी ले बड़ी कीनी, दियो सो छल को मान।
सो खैंचा खैंच ना छुटही, लिए क्रोध गुमान।। १६ ।।

इस तरह से संस्कृत के श्लोकों की वाणी के ग्रन्थों का विस्तार किया। पण्डितों की आपस की खींच-तान नहीं छूटती है तथा वह क्रोध और बुद्धि के अहंकार में ही भटकते हैं।

ए छल पंडित पढ़हीं, ताए मान देवें मूढ़।
बड़े होए करे माएने, एह चली छल रूढ़।। १७ ।।

ऐसी छल की वाणी को पढ़ने वालों को पण्डित कहते हैं। मूर्ख लोग ही उनका मान करते हैं। यह पण्डित लोग अपने को बड़ा बताकर तरह-तरह के अर्थ करते हैं, ऐसी छल की रीति चल रही है।

सीधी इन भाखा मिने, माएने पाइए जित।
जो सब्द सब समझहीं, सो पकड़े नहीं पंडित।। १८ ।।

सीधी भाषा जिसके अर्थ भी सीधे होते हैं और सभी लोग समझते हैं, उस भाषा को पण्डित लोग कभी ग्रहण नहीं करते हैं।

एक अर्थ न कहे सीधा, ए जाहेर हिंदुस्तान।
अर्थ को डालने उलटा, जाए पढ़े छल बान।। १९ ।।

हिन्दुस्तानी भाषा में वह पण्डित एक भी सीधी बात नहीं बताते, बल्कि अर्थ को उलटने के वास्ते छल की बोली (संस्कृत) ही बोलते हैं।

ए छल देखो मोमिनों, और है सब छल।
रूह छल न छूटे छल थें, जो देखो करते बल।। २० ।।

हे मोमिनो! देखो, सब जगह छल ही छल है। छल के जीव, छल के ज्ञान (संस्कृत) से बाहर (माया से बाहर) नहीं जा सकते, चाहे कितनी ही आजमाइश (उपाय) कर लो।

Nijanand App

एक उरझन वैराट की, दूजी वेद की उरझन।
ए नेक कही मैं तुमको, पर ए छल है अति घन।। २१ ।।

एक उलझन (घुण्डी) वैराट की है। इसी तरह दूसरी वेद की है। यह तो मैंने तुम्हें समझाने के लिए थोड़ी-सी बताई है, परन्तु इस छल का तो बहुत बड़ा विस्तार है।

मुख उदर के कोहेड़े, रचे मिने सुपन।
और सुध इनों क्यों होए, ए खेलें गफलती जन।। २२ ।।

एक मुख (वेद) का, दूसरा नाभि (वैराट) का यह दोनों धुन्ध हैं, जो सपने में बनाए गए हैं, इसलिए इसके अन्दर खेलने वाले गाफिल (बेसुध) लोगों को इनकी पहचान नहीं होती।

वैराट वेदों देख के, बूझ करी सेवा एह।
देव जैसी पातरी, ए चलत दुनियां जेह।। २३ ।।

वैराट और वेद दोनों को देखकर के 'जैसा देव तैसी पूजा' के सिद्धान्त के अनुसार दुनियां चलती है और समझकर सेवा करती है।

जो बोले साधू सास्त्र, जिनकी जैसी मत।
ए मोहोरे उपजे अंधेर से, ताको ए सब सत।। २४ ।।

यहां के साधु तथा शास्त्रकारों की उत्पत्ति माया से हुई है और वह अपनी बुद्धि के अनुसार ही बोलते हैं तथा उनको यह माया का सब संसार सत लग रहा है।

तबक चौदे देखे वेदों, निराकार लो वचन।
उनमान आगे केहेके, फेर पड़े मांहें सुंन।। २५ ।।

वेदों ने चौदह लोकों को देखा और वचन से निराकार तक वर्णन किया। आगे अटकल से कहकर फिर निराकार में ही डूब गए (समा गए)।

ए देखो तुम मोमिनों, पांचो उपजे तत्व।
ए गफलत में रूह खेलहीं, सब रूहों की उतपत।। २६ ।।

हे मोमिनो! तुम देखो, यह ब्रह्माण्ड पांच तत्वों से बना है। इसमें संशय ही संशय में जीव भटकते हैं और जीव जन्मते हैं।

रूह सबों में पसरी, थावर और जंगम।
पेड़ याको जुलमत, मलकूत में खसम।। २७ ।।

सब चर-अचर ब्रह्माण्ड में जीव व्यापक है जिनकी उत्पत्ति निराकार से है तथा जिनका मालिक बैकुण्ठ में रहता है।

दसो दिसा भवसागर, देखत एह सुपन।
गिरदवाए आवरण गफलत, निराकार कहावे सुंन।। २८ ।।

दसों दिशाओं में सपने का भवसागर है, इसके चारों तरफ मोह तत्व (संशय) का आवरण है जिसे निराकार और शून्य कहते हैं।

तबक चौदे कोहेड़ा, ए सबे कुदरत।
सुर असुर कई अनेक विध, खेलें ख्वाबी दम गफलत।। २९ ।।

चौदह लोक सब धुन्ध में हैं। इन सबमें माया व्यापक है। यहां पर देव और असुर कई तरह के संशय से भरे जीवों के साथ खेलते हैं।

Nijanand App

वनस्पति पसु पंखी, आदमी जीव जंत।
मछ कछ सब सागर, रच्यो एह प्रपंच।। ३० ।।

यहां वनस्पति, पशु, पक्षी, आदमी, जीव-जन्तु, मछली, कछुआ तथा सागर सब झूठ के ही हैं।

रूह मिने जुदी जिनसों, कहियत चारों खान।
जड़ चलें पेट पांउ परे, लाख चौरासी निरमान।। ३१ ।।

इसके अन्दर जीव तरह-तरह के तनों में चार तरह से (अण्डे से, शरीर से, पसीने से तथा अग्नि से) पैदा होते हैं कई पेड़ की तरह जड़ होकर एक स्थान पर खड़े रहते हैं। कई पांव से चलते हैं और कई पेट से चलते हैं, कई पंख से, इस तरह से चौरासी लाख योनियों का निर्माण है।

कोई बैकुंठ कोई जमपुरी, कोई स्वर्ग पाताल।
खेलें सब ख्वाबी पुतले, रूह आड़ी गफलत पाल।। ३२ ।।

कोई बैकुण्ठ, कोई यमपुरी, कोई स्वर्ग, कोई पाताल में सपने के जीव खेलते हैं। इनके आगे मोह तत्व (निराकार) का परदा पड़ा है।

जो बनजारे खेल के, तिन सिर जम को दंड।
कोई दिन स्वर्ग मिने, पीछे नरक के कुंड।। ३३ ।।

इस संसार में जो भी जीव खेल रहे हैं उनको यमराज के सामने जाना पड़ता है तथा कर्मों के हिसाब से कुछ दिन स्वर्ग का सुख लेकर पीछे नरक के कुण्ड में सजा भुगतनी पड़ती है।

लाठी तेरे लोक पर, संजम पुरी सिरदार।
जो जाने नहीं जगदीस को, तिन सिर जम की मार।। ३४ ।।

तेरह लोकों के ऊपर बैकुण्ठ में भगवान विष्णु मालिक हैं। जिसने उनकी पहचान कर पूजा नहीं की उसे यमराज की मार खानी पड़ती है।

ए छल बनज छोड़ के, करें बैकुंठ को बेपार।
ए सत लोक याही को, कोई गले निराकार।। ३५ ।।

संसार में कपट का रास्ता (धन्धा) छोड़कर जो बैकुण्ठ जाने का प्रयत्न करते हैं, वह इसी बैकुण्ठ को ही सत मान बैठे हैं। यह अन्त में निराकार में गल जाते हैं।

चौदे तबक इंड में, जिमी जोजन कोट पचास।
पहाड़ कुली अष्ट जोजन, लाख चौसठ वास।। ३६ ।।

चौदह लोक इसी ब्रह्माण्ड में हैं। इसमें पचास करोड़ योजन जमीन बताई है। उसमें पहाड़ कुल आठ लाख योजन में हैं तथा चौसठ लाख योजन में बस्ती है।

पांच तत्व छठी आतमा, सास्त्र सबों ए मत।
ए निरमान बांध के, ले ख्वाब किया सत।। ३७ ।।

पांच तत्व तथा छठा जीव से बना शरीर स्वप्न का है, इसे शास्त्रों ने अपने मत में सत कहा है।

देखे सातों सागर, देखे सातों लोक।
पाताल सातों देखिए, ए गफलत उड़े सब फोक।। ३८ ।।

मैंने सातों सागरों को देखा (लवण, रस, शराब, घृत, दधि, क्षीर, मीठा पानी) तथा सातों लोकों (भूलोक, भुवर्लोक, स्वर्गलोक, महर्लोक, जनलोक, तपलोक और सतलोक) तथा सातों पातालों (अतल,

Nijanand App

वितल, सुतल, तलातल, महातल, रसातल और पाताल) को देखा, परन्तु यह सब माया के हैं। पल में प्रलय में आने वाले हैं।

ए छल बल देखिया, धखत आग को कूप।
ए नख सिख लों देखिया, बड़ा दज्जाल का रूप।। ३९ ।।

इस माया की ताकत को देखो जो आग का ही कुंआ है और पैर से सिर तक शैतान का ही रूप है।

ताए नारायन कर सेवहीं, ऐसी ए कुफरान।
पीर जैसे मुरीद तैसे, एक रस ए निरवान।। ४० ।।

यह सारे जगत के जीव नारायण को ही परमात्मा मानकर सेवा करते हैं। 'जैसा गुरु वैसा चेला' दोनों ही सारे ब्रह्माण्ड में एक रूप से रहते हैं। इस तरह यह भ्रम का ही संसार है।

ए झूठे झूठा खेलहीं, नहीं सांच की सुध।
ए पीर मुरीद देखिए, कही दोऊ की बिध।। ४१ ।।

इस संसार के झूठे जीव झूठ में खेलते हैं। इनको सत् जो पारब्रह्म है उसकी सुध नहीं है। संसार में गुरु और चेले दोनों की हकीकत मैंने बता दी है।

|| प्रकरण || १७ || चौपाई || ४३६ ||

सनन्ध—हांसी की

मोमिन यामें न रांचहीं, जाको सांचसों सनेह।
निपट ए कछुए नहीं, भी देखो नेक बिध एह।। १ ।।

हे मोमिनो! तुम्हारा सत से प्रेम है, इसलिए तुम झूठे संसार में मगन नहीं होना। निश्चित ही यह कुछ भी नहीं है। इसकी भी थोड़ी-सी हकीकत देख लो।

ए जो पीर मुरीद दोऊ कहे, कुफरान या दज्जाल।
अर्स रूहों को देखाए के, उड़ाए देसी ए ताल।। २ ।।

गुरु और चेला जो दो कहे हैं, वह दोनों ही या तो काफिर हैं या शैतान के रूप हैं। अंर्श के मोमिनों को यह खेल दिखाकर ब्रह्माण्ड समाप्त कर देंगे।

ए छल ऐसा तो रच्या, जो तुम मांग्या देखन।
जिन तुम बांधो आप को, अर्स के मोमिन।। ३ ।।

यह छल का संसार इस ढंग से बना है जैसा तुमने देखना चाहा था, इसलिए अब तुम अपने आप को इस में मत बांधो, क्योंकि आप तो अर्श के मोमिन हो।

जो कोई रूहें निसबती, ए हांसी का है ठौर।
खसम वतन आप भूल के, कहा देखत हो और।। ४ ।।

जो कोई भी यहां मेरे परमधाम के साथी मोमिन हैं, वह ध्यान रखें। यह हंसी का ठिकाना है। इसमें तुम अपने आप को, घर को तथा धनी को छोड़कर और क्या देख रहे हो?

मोमिनों तुम को उपज्या, खेल देखन का ख्याल।
जाको मूल नहीं बांधे तिन, ए तो हांसी का हवाल।। ५ ।।

हे मोमिनो! तुमको खेल देखने की चाहना उत्पन्न हुई थी। जिस माया का कोई आधार ही नहीं है, उसने तुम्हें बांध रखा है। इस तरह यह हंसी का विवरण है।

Nijanand App

मांग्या खेल खुसाली का, तिन फेरे तुमारे मन।
सो सब तुमको बिसरे, जो कहे मूल वचन।।६ ।।

खेल में आकर तुम मूल वचन जो परमधाम में कहे थे, भूल गए हो। तुमने तो खेल को खूबतर (ज्यादा अच्छा) समझकर मांगा था, परन्तु इसने तुम्हारे ईमान को ही गिरा दिया है।

गूंथो जालें दोरी बिना, आप बांधत हो अंग।
अंग बिना तलफत हो, ए ऐसे खेल के रंग।।७ ।।

बिना डोरी के जाल की जाली गूंथ रहे हो, अर्थात् बिना आधार के कुटुम्ब-परिवार में फंस रहे हो और उसी में बिना शरीर के तड़पते हो (तुम्हारा मूल शरीर अखण्ड परमधाम में है)। यह इस तरह से माया के खेल का रंग है।

आप बंधाने आप से, इन कोहेड़े अंधेर।
चढ़या अमल जानों जेहेर का, फिरत वाही के फेर।।८ ।।

इस अन्धेरी धुन्ध में अपने आपको बांधते जा रहे हो। ऐसा लगता है कि तुम्हें यहां की माया का नशा चढ़ गया है और नशे के चक्कर में घूम रहे हो।

अमल चढ़या क्यों जानिए, कोई फिसलत कोई गिरत।
कोई सावचेत होए के, हाथ पकर सीढ़ी चढ़त।।९ ।।

कैसे जाना जाए कि माया का नशा चढ़ा है? उसकी पहचान यह है कि कोई-कोई फिसलकर गिरता है, कोई सावचेत (सतर्क) होकर किसी का हाथ पकड़कर सीढ़ी चढ़ता है।

ना सीढ़ी ना पावड़ी, ए चढ़त पड़त क्यों कर।
ए देखन जैसी हांसी है, देखो मोमिनों दिल धर।।१० ।।

यहां न कोई सीढ़ी है न पांवड़ी (खड़ाऊं) है, तो गिरते-पड़ते कैसे हैं? हे मोमिनो! दिल में विचार कर देखो। यह देखने जैसा हंसी का खेल है।

एक पड़त बिना पावड़ी, वाको दूजी पकड़े कर।
सो खाए दोनों गड़थले, ए हांसी है इन पर।।११ ।।

इसी हंसी के खेल में एक बिना पांवड़ी के गिरता है, तो दूसरा उसे पकड़कर सहारा देता है। फिर दोनों ही लड़खड़ा कर गिर जाते हैं।

एक पड़ी जिमी जान के, वाको दूजी उठावन जाए।
उलट पड़ी सो उलटी, ए हांसी यों हंसाए।।१२ ।।

एक जमीन पर गिरी हुई है, उसको दूसरी उठाती है। वह दोनों ही जमीन पर गिर पड़ती हैं। इस प्रकार की हंसी का सबको हंसाने वाला यह खेल है।

ओठा लेवे जिमी बिना, पांव बिना दौड़ी जाए।
जल बिना भवसागर, तिनमें गोते यों खाए।।१३ ।।

यहां बिना जमीन के ओटा (टेक, सहारा) लेते हैं। बिना पांव के दौड़ते हैं। बिना जल के भवसागर में गोते खाते हैं।

Nijanand App

अमलक देखो खड़ियां, हाथ बिना हथियार।
नींद बड़ी है जागते, पिंड बिना आकार।। १४ ।।

यहां अधर (बीच) में सब खड़े हैं तथा बिना हाथ के हथियार बांधे हैं। गहरी नींद में सो रहे हैं, लेकिन जागते रहे हैं। शरीर है नहीं और फिर भी शरीर मान रखे हैं, अर्थात् जिसको कुछ मान रखा है वह कुछ नहीं है। माया का ही रूप है।

एक नई कोई आवत, सो कहावत आप अबूझ।
दूजी ताए समझावने, ले बैठत सब सूझ।। १५ ।।

इसमें भी कोई नया आता है तो अनजाना कहा जाता है और दूसरा उसको समझाता है तो वह जानकार (अक्लमंद) बन जाता है।

वचन करड़े कोई कहे, किनसों सहे न जाए।
पीछे कलपे दोऊ कलकले, वाको अमल यों ले जाए।। १६ ।।

कोई कठोर वचन बोलते हैं और कई सहन नहीं कर पाते हैं। बाद में दोनों ही पछताकर रोते हैं। इस तरह के नशे का यह माया का खेल है।

लर खीज रोए रोलावहीं, दुख देखे दोऊ जन।
जागे पीछे जो देखिए, तो कमी ना मांहें किन।। १७ ।।

संसार में आपस में लड़ते हैं। गुस्सा करते हैं। रोते हैं, रुलाते हैं। दोनों दुःखी होते हैं, परन्तु यदि सावचेत (सावधान) होकर देखें तो कम कोई भी नहीं है।

हांसी होसी मोमिनों, इन खेल के रस रंग।
पूर बिना बहे जात हैं, कोई खैंच निकाले अभंग।। १८ ।।

हे मोमिनो! परमधाम में जाने के बाद इसी खेल के रस-रंगों की हांसी (हंसी) होगी। तुम बिना पूर (प्रवाह) के बहे जाते हो और तुम्हें कोई खींचकर निकालना चाहता है।

ना जल ना कछू पूर है, कौन बहे कौन आड़ी होए।
ए अमल इन जिमी का, तुमें देखावत बिध दोए।। १९ ।।

यहां न जल है न पूर (प्रवाह) है। न कोई बह रहा है, न कोई रोक रहा है। यह सब इस जमीन का नशा है जो तुम्हें दो तरह से देखने में आता है।

होसी खुसाली मोमिनों, करसी मिल कलोल।
ए हांसी या बिध की, कोई नाहीं खेल या तोल।। २० ।।

हे मोमिनो! परमधाम में जागने पर हमें बड़ी खुशी होगी तथा सब मिलकर आनन्द करेंगे। यह हांसी (हंसी) इस तरह की होगी कि इसकी बराबरी में दूसरा कोई खेल नहीं होगा।

ए खेल देखो हांसी का, आसमान लों पाताल।
फल फूल पात न दरखत, काष्ट तुचा मूल न डाल।। २१ ।।

हे मोमिनो! यह हांसी (हंसी) का खेल देखो। यहां आसमान से पाताल तक न फल है, न फूल है, न पत्ता है, न वृक्ष है, न लकड़ी, न छाल, न जड़, न डाल, कुछ भी नहीं है।

Nijanand App

ए बिरिख तो या बिध का, ताको फल चाहे सब कोए।
फेर फेर लेने दौड़हीं, ए हांसी या बिध होए।। २२ ।।

यह इस तरह का वृक्ष है जिसका फल सभी चाहते हैं और बार-बार लेने को दौड़ते हैं, जिससे हांसी (हंसी) होती है।

बंध न खुले बिना बंधे, जो खोले फेर फेर।
ए बुत कुदरत देख के, गैयां आप खसम बिसर।। २३ ।।

जब बन्धन बंधे ही नहीं तो वह खुलें कैसे? फिर भी बार-बार खोलने का प्रयत्न करते हैं। इस तरह संसार के जीवों को देखकर, हे मोमिनो! तुम अपने धनी को भूल गए हो।

अब याद करो खसम को, छोड़ो नींद विकार।
पेहेचान कराए इमामसों, सुफल करूं अवतार।। २४ ।।

अब अपने खसम (पति, स्वामी) को याद करो और माया को छोड़ो। अब मैं तुम्हारी पहचान इमाम मेंहदी से करवा देती हूं और अपना आना सार्थक करती हूं।

वतन खसम देखाए के, और अपनी असल पेहेचान।
इमाम नूर रोसन करके, उड़ाए देऊं उनमान।। २५ ।।

हे मोमिनो! तुम्हें घर (परमधाम) और धनी श्री राजजी महाराज को दिखा करके अपनी असल पहचान करा देती हूं तथा इमाम मेंहदी के ज्ञान का प्रकाश करके तुम्हारी अटकल (अनुमान) समाप्त कर देती हूं।

हकें कह्या अरवाहों उतरते, हम बैठे बीच लाहूत।
तुम अर्स भूलो आप हमको, देखो नहीं बीच नासूत।। २६ ।।

परमधाम से आते समय हक (श्री राजजी महाराज) ने अपनी आत्माओं से कहा था कि मैं परमधाम में बैठा हूं। तुम खेल में जाकर अपने घर को, अपने आप को और मुझे भूल जाओगे।

हम अर्स रूहें आसिक, हक मासूक भूलें क्यों कर।
क्या चले खेल फरेब का, तुम आगूं देत हो खबर।। २७ ।।

हम परमधाम की रूहें श्री राजजी महाराज की आशिक हैं तथा श्री राजजी महाराज हमारे माशूक हैं। भला उनको क्यों भूलेंगे? हे धाम धनी! आप पहले से ही हमें सावचेत (सावधान) कर रहे हो, तो फिर झूठा खेल हमारा क्या बिगाड़ेगा?

ए जिमी हांसी देख के, मोमिन हूजो सावचेत।
इमाम को सुख महामती, तुमको जगाए के देत।। २८ ।।

हे मोमिनो! इस हांसी (हंसी) के खेल को देखकर सावचेत (सावधान) हो जाओ। इमाम मेंहदी के सुख को मैं तुम्हें जगाकर देती हूं।

।। प्रकरण ।। १८ ।। चौपाई ।। ४६४ ।।

सनन्ध–कलमें की

ए जो फरेब तुम देखिया, और देखे फरेब के मजहब।
ए तो सब तुम समझे, गुझ जाहेर करहूं अब।। १ ।।

हे मेरे मोमिनो! तुमने झूठे संसार को तथा यहां के झूठे धर्मों (मजहबों) को देखा और उनकी हकीकत तुमने समझ ली है। अब रहस्य की बातें बताती हूं।

Nijanand App

ऐसा था फरेब अंधेर का, कहूं हाथ न सूझे हाथ।
बंध पड़े नजर देखते, तामें आईं रूहें जमात।। २ ।।

यह ऐसा घोर अन्धेरा है जहां अपने हाथ को हाथ भी दिखाई नहीं देते। इसे देखते ही माया के बन्धन में पड़ जाते हैं। ऐसे खेल में हमारी रूहों की जमात आई है।

खेल देखन कारने, करी उमेद एह।
ए माप्या तुम वास्ते, कोई राखों नहीं संदेह।। ३ ।।

हे मोमिनो! तुमने खेल देखने की चाहना की और तुम्हारे लिए ही यह खेल बनाया, इसलिए तुम्हारे अन्दर इसका कोई संशय नहीं रहने दूंगी।

ए खेल किया रूहों वास्ते,ए जो मोमिन आइयां जेह।
खेल देख जाए वतन, बातें करसीं एह।। ४ ।।

यह खेल रूहों के लिए बनाया है जिसे देखने के लिए रूहें आई हैं। खेल देखकर यह अपने घर वापस जाएंगी और यहां की बातें करेंगी।

मोमिन बातें वतन की, देऊंगी आगे बताए।
पर अब कहूं नेक दीन की, जो रसूलें राह चलाए।। ५ ।।

हे मोमिनो! घर की बातें आगे बताऊंगी। अब कुछ रसूल साहब के चलाए हुए धर्म की बातें बताऊंगी।

जो अलहा किनहूं न लह्या, मैं तिनका कासद।
अर्स रूहों वास्ते आइया, मेरे हाथ कागद।। ६ ।।

रसूल साहब ने कहा था कि अल्लाह को किसी ने नहीं पहचाना। मैं उनका कासिद (पत्रवाहक, पोस्टमैन) बनकर आया हूं। मैं अर्श की रूहों के वास्ते आया हूं और मेरे हाथ में उनका पत्र है।

कह्या रसूलें जाहेर, खबर खुद की मुझ।
कोई और होवे तो पोहोंचही, अब जाहेर करहों गुझ।। ७ ।।

रसूल साहब ने स्पष्ट कहा कि मैं अल्लाह को अच्छी तरह जानता हूं। वहां का और कोई हो, तो पहुंच सकता है। अब छिपे रहस्यों को मैं जाहिर करता हूं।

जो चौदे तबकों में नहीं, वार न काहूं पार।
सो अलहा हम आवसी, खातिर सोहागिन नार।। ८ ।।

जो अल्लाह चौदह लोकों में कहीं नहीं है और जिसकी खबर (ज्ञान) किसी के पास नहीं है, वह हम रूहों (मोमिनों) के वास्ते खेल में आएगा।

ले फुरमान जो हाथ में, केहेलाया मैं रसूल।
ए देखो अरवाहें अर्स की, जिन कोई जावें भूल।। ९ ।।

मैं अल्लाह का फरमान हाथ में लेकर आया हूं, इसलिए रसूल कहलाता हूं। हे मेरे धाम के मोमिनो! अब इस बात को नहीं भूलना।

काफर मुस्लिम मोमिन की, सोई करसी पेहेचान।
हकीकत मारफत के, खोलसी द्वार कुरान।। १० ।।

जीव, ईश्वरी और ब्रह्मसृष्टि की पहचान वही करेंगे जिनके पास कुरान की हकीकत और मारफत के गुझ (गुह्य) मायने खोलने का ज्ञान होगा।

Nijanand App

अबलों बेवरा ना हुआ, कई चली गई जहान।
एक दीन जब होवहीं, तब होसी सबों पेहेचान।। ११ ।।

कई संसार बने और मिटे, परन्तु अभी तक इसका ब्योरा नहीं हुआ था (काफिर, मुस्लिम और मोमिन की हकीकत नहीं खुली थी)। जब एक दीन हो जाएगा तब सबको इस बात की पहचान हो जाएगी।

जो माएने न पाए बातून, तो हुए जुदे जुदे मांहें दीन।
फिरके हुए तिहत्तर, एक नाजीमें कह्या आकीन।। १२ ।।

बातूनी भेद न खुलने के कारण दीन के तिहत्तर फिरके (टुकड़े) हुए। जिनमें से एक मर्द मोमिनों का है जिनका ईमान पक्का है।

और बहत्तर नारी कहे, करी एक को हकें हिदायत।
कुरान माजजा नबी नबुवत, सो नाजी करसी साबित।। १३ ।।

और बहत्तर नारी फिरके कहे हैं (दोजखी)। एक को खुद हक ने हिदायत की है। यही नाजी फिरका कुरान के रहस्य को खोलेगा तथा पैगम्बर की पैगम्बरी सिद्ध करेगा (यही ब्रह्मसृष्टि की पहचान होगी)।

सो साबित तब होवहीं, जब सब होवे दीन एक।
पेहेले कह्या रसूल ने, एही उमत नाजी नेक।। १४ ।।

यह सब बातें तब सिद्ध होंगी जब सब दुनियां का धर्म एक हो जाएगा। रसूल साहब ने पहले से ही कहा था कि यही नाजी फिरका होगा जो खुदा की उम्मत होगी।

सब कोई बुजरक कहावते, आप अपने मजहब।
तिन सबों समझावहीं, एक दीन होसी तब।। १५ ।।

यही नाजी फिरका सभी धर्म के अगुओं (महाराज, महन्त, पीर, इत्यादि) को समझाएगा जो अपने-अपने धर्मों के अगुए बनकर बैठे थे। तब एक धर्म होगा।

झूठ सबे उड़ जाएसी, ना चले तिन बखत।
हक हादी के प्रताप थें, क्यों रेहेवे गफलत।। १६ ।।

उस समय सभी झूठे धर्म जो निराकार तक हैं, समाप्त हो जाएंगे। श्री राज श्यामाजी (इमाम मेंहदी) की कृपा से किसी का झूठ नहीं रह जाएगा।

तब लों रसमें लरत हैं, जब लों है उरझन।
रूहअल्ला कुंजी ल्याइया, तब जोरा न चलसी किन।। १७ ।।

कर्मकाण्ड और रस्मों रिवाज के झगड़ों की उलझनें तब तक चलेंगी, जब तक रूह अल्लाह कुंजी (तारतम ज्ञान) लाकर कुरान के रहस्यों को नहीं खोल देते। फिर किसी का जोर नहीं चलेगा।

जब सांच उठ खड़ा हुआ, तब कुफर रेहेवे क्यों कर।
जोलों कायम दिन ऊग्या नहीं, है तोलों रात कुफर।। १८ ।।

जब सत के ज्ञान का पता चल जाएगा तब झूठ कैसे टिकेगा? तारतम वाणी से जब तक उजाला नहीं हो जाता, तब तक ही यह फरेब और झूठ की रात है।

ए खेल हुआ जिन खातिर, सो गए खेल में मिल।
जब जाहेर साहेब हुआ, तब सबों नजर आवे दिल।। १९ ।।

यह खेल जिन मोमिनों के वास्ते हुआ है, वह सब खुद ही खेल में मिल गए हैं। जब तारतम वाणी से उनको अपने धनी की पहचान होगी, तब सब कुछ उनको दिखने लगेगा।

Nijanand App

महंमद पेहेलें आए के, बरसाया हक का नूर।
कई विध करी मेहेरबानगी, पर किने ना किया सहूर।। २० ।।

रसूल साहब ने पहले आकर के कुरान में हक के नूर का बयान किया और तरह-तरह की मेहरबानी की, परन्तु उस समय के मुसलमानों ने उन्हें कुछ भी नहीं समझा।

ए सहूर तो करे, जो होए अर्स अरवाहें।
जिन उमत के खातिर, आवसी इत खुदाए।। २१ ।।

यदि उस समय परमधाम की आत्माएं होतीं, तो वह उनको समझतीं। उन्हीं रूहों के वास्ते आखिर में खुदा आएगा, ऐसा रसूल साहब ने फरमाया।

जो अर्स रूहें आईं होती, तो काहे को कौल करत।
सो कह्या पीछे आवसी, ए सोई लेसी हकीकत।। २२ ।।

यदि अर्श की रूहें उस समय आई होतीं तो खुदा आने का वायदा न करते, इसलिए कहा कि रूहें पीछे आएंगी और वही इस हकीकत के ज्ञान को लेंगी।

अर्स रूहें होए सो मानियो, अंदर आन आकीन।
ए कलमा जो समझहीं, सोई महंमद दीन।। २३ ।।

जो परमधाम की रूहें हों, तो ईमान से मेरी बात को मानना। इस कलमे के जो अर्थ को समझेगा, वही सच्चा मुहम्मद के दीन को मानने वाला होगा।

ए कलमा मुख लाखों कहे, पर माएने न समझे कोए।
इन कलमें मगज सो समझहीं, जो अर्स अजीम की होए।। २४ ।।

लाखों लोग अपने मुख से कलमा कहते हैं, पर उसके अर्थ को नहीं समझते। जो अर्श अजीम का होगा, वही इस कलमे की हकीकत के मायने को समझेगा।

जो लों रेहेमान न जाहेर, रहो बंदे बाब पकर।
मैं हुकम छोड़ चलसी, फेर आवसी भेले आखिर।। २५ ।।

रसूल साहब ने कहा कि जब तक इमाम मेंहदी साहब जाहिर नहीं होते, तब तक मेरी हिदायतों के अनुसार चलो। मैं अभी इस हुकम को छोड़कर चला जाऊंगा और फिर इमाम मेंहदी साहब के साथ आऊंगा।

एक ए भी रसूलें कह्या, करी आगे की सरत।
साथ आवसी इमाम के, रूह मोमिन बड़ी मत।। २६ ।।

आगे आने के लिए एक बात रसूल साहब ने यह भी कही कि इमाम मेंहदी के साथ बड़ी अक्ल के मालिक रूह मोमिन भी आएंगे।

नूर मत जाहेर होएसी, तब जानो हुई आखिर।
तब मौला हम आवसी, इन मोमिनों की खातिर।। २७ ।।

जब तारतम ज्ञान (असराफील सूर फूकें) जाहिर हो जाए तब समझना कि आखिरत का वक्त आ गया है। उस समय मैं अल्लाह तआला के साथ मोमिनों के वास्ते आऊंगा।

Nijanand App

इत कजा जो करने बैठसी, तब हम काजी संग।
वरन बदलसी दुनियां, पर ए दीन कायम रंग।। २८ ।।

खुदा यहां सबका इन्साफ करने बैठेगा। मैं भी उनके साथ रहूंगा। सब दुनियां उस समय अपने धर्मों को छोड़कर एक खुदा के एक दीन के रंग में रंग जाएगी।

इमाम इत आवसी, सो भी मोमिनों के कारन।
देसी सुख मोमिन को, कजा होसी सबन।। २९ ।।

इमाम मेंहदी यहां मोमिनों के वास्ते आएंगे और वह मोमिनों को घर का सुख देंगे। बाकी दुनियां का इन्साफ कर बहिश्तों में अखण्ड करेंगे।

एता भी रसूलें कह्या, मोमिनों में आकीन।
बिना आकीन सब उड़सी, एक रेहेसी हमारा दीन।। ३० ।।

रसूल साहब ने यह भी कहा कि पक्का यकीन केवल मोमिनों में ही होगा। बिना यकीन वाले सब समाप्त हो जाएंगे। एक हमारा ही धर्म रहेगा।

जिन सिर लई बात रसूल की, कदम पर धरे कदम।
इन कलमें के हक से, न्यारा नहीं खसम।। ३१ ।।

जिन्होंने रसूल साहब की इस बात को माना और उनके बताए रास्ते पर चले, उनको इन कलमों के वचनों से हक की पहचान हो जाएगी। खुदा उनसे न्यारा (अलग) नहीं होगा।

जिन ए कलमा हक किया, मैं तिनका जामिन।
सो आपे अपने दिल में, साख जो देसी तिन।। ३२ ।।

जिसने इस कलमे को सच्चाई से लिया (समझा), मैं उनका जामिन (जमानतदार) हूं। उनको अपने दिल में कलमा ही गवाही देगा।

इन कलमें के माएने, लेकर भरसी पाए।
तिन मोमिन को खसम, सुख जो देसी ताए।। ३३ ।।

जो इस कलमे के अर्थ लेकर रहनी में आएगा उन मोमिनों को खुदा का सुख मिलेगा।

कहा कहूं इन कलमें की, मोमिनों में पेहेचान।
जब ए कलमा पसरया, तब साफ हुई सब जहान।। ३४ ।।

मोमिनों को इस कलमे की पूरी पहचान होगी। जब यह कलमा फैलेगा तो सारे संसार के संशय मिट जाएंगे।

जिन ए मेरा कलमा, लिया न मांहें बाहेर।
सो दुनियां आखिर दिनों, जलसी आग जाहेर।। ३५ ।।

जिसने मेरे कलमे को किसी भी तरह से नहीं लिया, ऐसे दुनियां वाले आखिरत को दोजख (पश्चाताप) की आग में जलेंगे।

तब ए होसी आजिज, और मौला तो मेहेरबान।
तब लेसी सबों को भिस्त में, देकर अपनों ईमान।। ३६ ।।

तब यह दुनियां वाले लाचार हो जाएंगे। मौला (प्राणनाथ) तो मेहरबान हैं ही, वह अपना ईमान देकर उनको भी बहिश्तों में कायम करेंगे।

Nijanand App

कछुक करके आकीन, कलमा सुनसी कान।
तिनभी सिर कजा समें, लगसी जाए आसमान।। ३७ ।।

जिन्होंने कुछ भी यकीन लेकर कलमे को कान से सुना है, उनका सिर भी कजा (इन्साफ) के दिन ऊंचा होगा।

एह बात तेहेकीक है, मोमिनों दिल साबित।
सब्द जो सारे मुझ पें, एक जरा नहीं असत।। ३८ ।।

यह बात सत्य है कि मोमिनों के दिल में पक्का यकीन होगा। जो मैं कह रहा हूं उनमें से एक शब्द भी झूठा नहीं होगा।

देखन मोमिन खातिर, रचिया खेल सुभान।
अब मोमिन क्यों भूलहीं, पाई हकीकत फुरमान।। ३९ ।।

मोमिनों को खेल दिखाने के लिए ही खेल बनाया है। अब मोमिन कुरान की हकीकत का ज्ञान पाकर क्यों भूलेंगे?

जो सबों को अगम, सो सब रसूल नजर।
तो रसूल मुसलिम को, फिरे सों फुरमाए कर।। ४० ।।

सारे संसार को जिस पारब्रह्म की पहचान नहीं है, वह रसूल साहब की नजर में हैं, इसीलिए जिनका धर्म पर ईमान है, उनको हिदायत (आदेश, हुकम) देकर वापस चले गए।

|| प्रकरण || १९ || चौपाई || ५०४ ||

सनन्ध–फुरमान की

फुरमान ल्याया जो रसूल, पर समझया नाहीं कोए।
जिन खातिर ले आइया, ए समझेगी रूह सोए।। १ ।।

रसूल साहब जो कुरान का ज्ञान लाए उसे कोई नहीं समझता। इसको परमधाम के मोमिन ही समझेंगे जिनके वास्ते कुरान आया है।

कछुक नबिऐं जाहेर किए, ए जो बंदगी सरियान।
केतेक हरफ रखे गुझ, सो करसी मेंहेदी बयान।। २ ।।

नबी (रसूल साहब) ने नब्बे हजार हरफ सुने थे। उनमें से शरीयत की बन्दगी के जाहिर किए। हकीकत के हरफ को छिपाकर रखा और कहा कि इमाम मेंहदी जब आएंगे, वही इसके मायने खोलेंगे।

और भी केतेक सुने रसूलें, पर सो चढ़े नहीं फुरमान।
सो मेंहेदी अब खोलसी, इमाम एही पेहेचान।। ३ ।।

मारफत के सुने शब्द कुरान में नहीं लिखे। उनको इमाम मेंहदी आकर खोलेंगे। यही इमाम मेंहदी की पहचान होगी।

माएने इन मुसाफ के, कोई खोल न सके और।
कह्या रसूलें इमाम थें, जाहेर होसी सब ठौर।। ४ ।।

कुरान के अर्थ दूसरा और कोई खोल नहीं सकता। रसूल साहब ने पहले से कह दिया था कि इमाम मेंहदी के द्वारा कुरान के छिपे भेदों के रहस्य सब ठिकाने (स्थान) जाहिर होंगे।

Nijanand App

मगज माएने मुसाफ के, सो होए न इमाम बिन।
सो इत बोहोतों देखिया, पर सुध ना परी काहू जन।। ५ ।।

कुरान के रहस्य इमाम मेंहदी के बिना कोई नहीं खोल सकता। बहुतों ने प्रयत्न तो किया, पर खबर नहीं पड़ी।

गुझ का गुझ कौन पावहीं, बिना मेंहेदी इमाम।
ए रूह अल्ला जानहीं, मेरे अल्ला के कलाम।। ६ ।।

कुरान गुझ (गुह्य) है उसमें भी गुझ अर्श अजीम और वाहेदत की बातें हैं इन्हें इमाम मेंहदी के अलावा और कोई नहीं जानता। यह मेरे अल्लाह की वाणी है। इसको रूह अल्लाह (श्यामा महारानी) जानती हैं।

ए क्यों उपज्या है क्या, क्यों कयामत संग सुभान।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान।। ७ ।।

यह संसार क्या है? क्यों बना है? इसकी कायमी सुभान (अल्लाह) कैसे करेंगे? यह सब भेद इमाम मेंहदी खोलेंगे और कुरान के रहस्य भी वही बताएंगे।

क्यों फरेब से न्यारे रहिए, क्यों चलिए सरियान।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान।। ८ ।।

इस झूठे संसार से अलग कैसे हो सकते हैं? कैसे शरीयत की बन्दगी करनी है? इनके भेद भी इमाम मेंहदी खोलकर बताएंगे और कुरान के मायने जाहिर करेंगे।

रूह कौन मोमिन कौन मुस्लिम, कौन रूह कुफरान।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान।। ९ ।।

संसार में जीव कौन है, ईश्वरी सृष्टि कौन है, ब्रह्मसृष्टि कौन है और काफिर कौन है? यह भेद भी इमाम मेंहदी खोलकर बताएंगे और कुरान के रहस्य खोलेंगे।

तीन रूहों की तफावत, कौन कौन ठौर निदान।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान।। १० ।।

जीव, ईश्वरी, और ब्रह्मसृष्टि में अन्तर और इनके धामों (ठिकाने) को भी इमाम मेंहदी खोलेंगे और कुरान के मायने जाहिर करेंगे।

क्यों इस्क क्यों बंदगी, क्यों गफलत गलतान।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान।। ११ ।।

मोमिन अल्लाह से इश्क कैसे करते हैं? ईश्वरी सृष्टि बन्दगी कैसे करती है? और जीव सृष्टि गफलत में कैसे पड़ती है? इसके मायने इमाम मेंहदी खोलेंगे।

क्यों पाक ना पाक क्यों, क्यों रेहेनी फुरमान।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान।। १२ ।।

संसार में पाक (पवित्र) होना किसे कहते हैं? (पारब्रह्म की पहचान तथा उसमें चित्त लगा देना) नापाक कौन हैं? तथा फरमान (कुरान) के मुताबिक कैसे संसार में रहना है? इसके भेद इमाम मेंहदी खोलेंगे।

Nijanand App

क्यों उजू निमाज क्यों, क्यों कर बांग बयान।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान।। १३ ।।

उजू कैसे करना है? निमाज कैसे पढ़नी है? तथा कलमा की आवाज किस तरह से लगानी है, इसके भेद इमाम मेंहदी खोलकर बताएंगे।

क्यों कसौटी अंग की, क्यों रोजे रमजान।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान।। १४ ।।

रमजान के महीने में रोजा रखकर शरीर को किस तरह से कसना है? यह भेद इमाम मेंहदी खोलकर बताएंगे।

क्यों सुंनत क्यों इंद्रियां, क्यों राखे कैद आन।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान।। १५ ।।

सुन्नत क्या है? इन्द्रियां क्या हैं? और इनको किस तरह से वश में रखना है, इस ज्ञान को भी इमाम मेंहदी आकर बताएंगे।

क्यों तसबी क्यों फेरनी, क्यों कर नाम लेहेलान।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान।। १६ ।।

माला क्या है? और खुदा का नाम ले लेकर कैसे उसे जपना है? यह भी इमाम मेंहदी आकर बताएंगे।

क्यों डर क्यों बेडर, क्यों खूंनी मेहेरबान।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान।। १७ ।।

किससे डरना है? किससे नहीं डरना है? किसका खून करना है? तथा किस पर मेहर (कृपा) करनी है? यह सब भेद इमाम मेंहदी आकर खोलेंगे।

क्या खाना क्या पीवना, क्या जो सुनना कान।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान।। १८ ।।

क्या खाना है? क्या पीना है? और क्या कानों से सुनना है? इसके भेद भी इमाम मेंहदी खोलेंगे।

क्या लेना क्या छोड़ना, क्या इलम क्या ग्यान।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान।। १९ ।।

क्या लेना है? क्या छोड़ना है? इलम क्या है? ज्ञान क्या है—यह सब भेद इमाम मेंहदी खोलेंगे।

क्यों भली बुरी क्यों, क्यों कर जान अजान।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान।। २० ।।

भला क्या है? बुरा क्या है? किसको जानना है? किसको नहीं जानना है? यह भेद भी इमाम मेंहदी खोलेंगे और कुरान के मायने जाहिर करेंगे।

कौन वैरी कौन सजन, क्यों कर सब समान।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान।। २१ ।।

कौन दुश्मन है? कौन सज्जन है? सब समान कैसे हैं? इन सबके मायने इमाम मेंहदी खोलेंगे।

Nijanand App

क्या हक क्या हराम, क्या नफा नुकसान।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान।। २२ ।।

हक क्या है? हराम क्या है? नफा क्या है? नुकसान क्या है? इसके भेद इमाम मेंहदी आकर खोलेंगे।

क्यों आवन क्यों गवन, क्यों कर विरहा मिलान।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान।। २३ ।।

जन्म, मरण, मिलना, बिछुड़ना इनके भेद भी इमाम मेंहदी खोलकर बताएंगे।

एक खेल दूजा देखहीं, थिर चर चारों खान।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान।। २४ ।।

खेल करने वाले कौन हैं? देखने वाले कौन हैं? चर और स्थिर जीवों में चारों तरफ की सृष्टि (अण्डे से, शरीर से, पसीने से, अग्नि से) कैसे बनी है? इसकी पहचान इमाम मेंहदी कराएंगे।

ए किया जिन खातिर, आदम और हैवान।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान।। २५ ।।

यह जिनकी खातिर ब्रह्माण्ड बनाया है, वह आदम कौन है और हैवान कौन है? यह सब भेद इमाम मेंहदी खोलेंगे।

कौन आप और कौन पर, कौन सकल जहान।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान।। २६ ।।

अपना कौन है? पराया कौन है? यह संसार क्या है? इसके भेद इमाम मेंहदी खोलेंगे।

क्यों बाहेर क्यों अंदर, क्यों अंतर के निसान।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान।। २७ ।।

बाहर क्या है? अन्दर क्या है? दूरी क्या है? इसके भेद इमाम मेंहदी खोलेंगे।

कहां भिस्त कहां दोजख, क्यों जलसी कुफरान।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान।। २८ ।।

बहिश्त कहां है? दोजख कहां है? और काफिर लोग कैसे जलेंगे? इसके मायने इमाम मेंहदी खोलेंगे।

क्यों आदम क्यों पैगंमर, क्यों फिरस्ते पेहेचान।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान।। २९ ।।

आदम कौन है? फरिश्ते कौन हैं? पैगम्बर कौन हैं? इसकी पहचान भी इमाम मेंहदी खोलेंगे।

कलमें दीन रसूल की, सुध मुस्लिम फुरमान।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान।। ३० ।।

कलमे की, दीन की, रसूल की, कुरान पर यकीन रखने वाले मुसलमान की सुध भी इमाम मेंहदी देंगे।

रसूल आए किन वास्ते, किन पर ल्याए फुरमान।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान।। ३१ ।।

रसूल किनके वास्ते आए तथा किनके लिए फरमान लाए हैं? इनके भेद भी इमाम मेंहदी खोलेंगे।

Nijanand App

क्यों हुकम क्यों कर हुआ, किनं बिध लीजे मान।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान।। ३२ ।।

संसार बनने का हुकम खुदा ने क्यों और कैसे दिया और यह कैसे मानना है? इसकी खबर भी इमाम मेंहदी देंगे।

एकों क्यों कर मानिया, क्यों लिया न दूजे मान।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान।। ३३ ।।

कुछ लोगों ने इसे किस तरह से माना तथा दूसरों ने क्यों नहीं माना? यह भेद भी इमाम मेंहदी खोलकर बताएंगे।

किन मान्या न मान्या किन, किन फेरया फुरमान।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान।। ३४ ।।

कुरान को किसने माना? किसने नहीं माना और किसने ठुकरा दिया? इसके भेद भी इमाम मेंहदी खोलेंगे।

क्यों कैद बेकैद क्यों, क्यों दोऊ दरम्यान।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान।। ३५ ।।

किस तरह से गुण, अंग, इन्द्रियों को बांधना है? कैसे इनको स्वतन्त्र छोड़ना है तथा कैसे इन दोनों के बीच में रहना है? इसके भेद इमाम मेंहदी खोलकर बताएंगे।

क्यों ए इंड खड़ा किया, क्यों करी सरत फना निदान।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान।। ३६ ।।

यह ब्रह्माण्ड क्यों बनाया? कैसे इसके नष्ट करने का वायदा किया? इसके भेद भी इमाम मेंहदी खोलकर बताएंगे।

क्यों बड़ी अकल आगे आवसी, क्यों आखिर के निसान।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान।। ३७ ।।

किस तरह से जागृत बुद्धि (असराफील) आगे आएगी तथा किस तरह से कयामत के निशान जाहिर होंगे? इसका ब्योरा इमाम मेंहदी आकर बताएंगे।

बंदगी वजूद नफसानी, नासूत बीच सरियान।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान।। ३८ ।।

नफसानी (इन्द्रियों की) बन्दगी और जिसमानी (शरीर की) बन्दगी क्या है तथा मृत्युलोक में किस तरह से शरीयत पर चलना है? यह सब भेद इमाम मेंहदी बताएंगे।

क्यों दिल की बंदगी तरीकत, मलकूत या ला-मकान।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान।। ३९ ।।

किस तरह दिल की बन्दगी (तरीकत) करके बैकुण्ठ या निराकार तक जाया जाएगा? यह सब भेद इमाम मेंहदी खोलकर बताएंगे।

नासूत मलकूत जबरूत, लाहूत चौथा आसमान।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान।। ४० ।।

मृत्युलोक, बैकुण्ठ, अक्षरधाम, परमधाम इन चारों आसमानों के भेद इमाम मेंहदी खोलकर बताएंगे।

Nijanand App

क्यों रूहें भेद छिपी हजूरी, बंदगी हादी संग आसान।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान।। ४१ ।।

किस तरह से रूहें छिपी और हजूरी (हाजिरी) बन्दगी अपने हादी (श्यामाजी महारानी) के साथ करती हैं? यह भेद इमाम मेंहदी खोलकर बताएंगे।

मलकूत ऊपर जो जुलमत, नाम बुरका ला-मकान।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान।। ४२ ।।

बैकुण्ठ के ऊपर मोह तत्व के आवरण को जिसे लामकान (निराकार) कहते हैं, इसके भेद इमाम मेंहदी के बिना कौन बताएगा?

सरियत तरीकत हकीकत, मारफत हक पेहेचान।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान।। ४३ ।।

शरीयत, तरीकत, हकीकत, और मारफत (कर्मकाण्ड, उपासना, ज्ञान और विज्ञान) की बन्दगी से हक की पहचान कैसे होगी? यह भी इमाम मेंहदी खोलकर बताएंगे।

बेचून बेचगून बेसबी, कहे बेनिमून निदान।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान।। ४४ ।।

बेचून (बेमिसाल, निरुपम), बेचगून (गुण रहित), बेशबी (जिसकी शक्ल न हो), बेनिमून (जिसकी उपमा न हो)—इनके भेद इमाम मेंहदी आकर खोलेंगे।

निराकार निरंजन सुन्य की, ब्रह्म व्यापक मांहें जहान।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान।। ४५ ।।

निराकार, निरंजन, शून्य तथा संसार में ब्रह्म कैसे व्यापक है? इसकी खबर भी इमाम मेंहदी देंगे।

पुरुख प्रकृती काल की, ईश्वर महाविष्णु उनमान।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान।। ४६ ।।

प्रकृति की, पुरुष की, काल की, ईश्वर की, महाविष्णु की जिसकी लोग अटकल लगाते हैं, उसके भेद इमाम मेंहदी आकर बताएंगे।

सदरतुल मुंतहा अर्स अजीम, नूर जमाल सूरत सुभान।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान।। ४७ ।।

अक्षरधाम, परमधाम तथा श्री राजजी महाराज के स्वरूप के भेदों को भी इमाम मेंहदी आकर खोलकर बताएंगे।

नूर पार नूर तजल्ला, पोहोंचे रसूल रूहअल्ला हजूर।
ए सब इमाम खोलसी, जो दोनों किया मजकूर।। ४८ ।।

नूर (अक्षर), नूर तजल्ला (परमधाम) जहां पर रसूल साहब अल्लाह के हजूर में पहुंचे थे, उनके भेद भी इमाम मेंहदी खोलकर बताएंगे कि उनके बीच क्या बातें हुई थीं।

क्यों नूर क्यों नूर तजल्ला, क्यों कर वतन खसम।
खोलसी माएने इमाम, खातिर मोमिनों हम।। ४९ ।।

हम मोमिनों के वास्ते नूर की, नूर तजल्ला की, वतन की और खसम की हकीकत इमाम मेंहदी खोलकर बताएंगे।

Nijanand App

चौदे तबक की बात जो, सो तो केहेसी सकल जहान।
पर लैलतकदर मेंहेदी बिना, क्यों खुले माएने कुरान।।५०।।

चौदह लोकों की बातें तो सारा संसार कहेगा पर लैलतुलकदर (इस कदर लम्बी रात जिसमें रूहें और फरिश्ते उतरे), इमाम मेंहदी के बिना इसके माएने कौन खोलेगा?

ए जो पूछे माएने, खोल दिए कदी सोए।
तो इनसे चौदे तबक में, क्यों कर कजा जो होए।।५१।।

यह जो सब सवाल पूछे हैं यदि उस समय खोल दिए गए होते, तो चौदह लोकों के जीवों की कजा कैसे होती और इनको बहिश्तों में कायम कौन करता?

लुगे लुगे के माएने, जो कोई निकसे बोल।
ए कजा तब होवहीं, जब दीजे माएने सब खोल।।५२।।

एक-एक हरफ (शब्द) के माएने जो कुरान में लिखे हैं जब खुल जाएंगे, तभी फैसला होगा और कजा तभी होगी।

ए नूर के पार के माएने, सो सारों को अगम।
एक लुगा बिना इमाम, निकसे ना मुख दम।।५३।।

अक्षर के पार अक्षरातीत का ज्ञान सारे जगत को पता नहीं था। बिना इमाम मेंहदी के एक शब्द का भी भेद कोई नहीं खोल सकता।

जब माएने खुले मुसाफ के, बैठे इमाम जाहेर होए।
तब ए दुनी जुदी जुदी, क्यों कर रहसी कोए।।५४।।

जब कुरान के भेद खुलें तो समझ लेना इमाम मेंहदी जाहिर हो गए हैं। तब यह दुनियां अलग-अलग कैसे रह सकती है?

सो इमाम जाहेर हुए, ले माएने कुरान।
नूर सबों में पसरया, एक दीन हुई सब जहान।।५५।।

अब वह इमाम मेंहदी कुरान के रहस्यों को लेकर जाहिर हो गए और उनका ज्ञान सबों में फैला तथा सारी दुनियां एक दीन में आ गई।

ए तो करी इसारत, पर बोहोत बड़ी है बात।
नूर बड़ो इमाम को, सो या मुख कह्यो न जात।।५६।।

यह तो अभी इशारे मात्र बातें लिखी हैं। इनका विस्तार बहुत बड़ा है। इमाम साहब के ज्ञान के तेज का वर्णन इस मुख से नहीं होता है।

ए नूर खुद वतनी, सो क्यों कर सह्यो जाए।
नूर मत आगे तो करी, जाने जिन कोई गोते खाए।।५७।।

यह इमाम मेंहदी खुद खुदा हैं जिनके तेज को पहचाना नहीं जा सकता, इसलिए असराफील (तारतम) (जागृत बुद्धि) को पहले भेज दिया है, ताकि किसी को पहचानने में धोखा ना हो।

इमाम आए तब जानिए, जब खुले माएने कुरान।
तब जानों आखिर हुई, सुख दिया सब जहान।।५८।।

जब कुरान के रहस्य खुल जाएं, तब समझ लेना कि इमाम मेंहदी आ गए हैं। तभी समझना कि आखिरत का समय हो गया है और सारे संसार को उन्होंने ही सुख दिया है।

Nijanand App

आद करके अबलों, परदा न खोल्या किन।
सो बरकत मेंहेदी महंमद, खुल जासी सब जन।।५९ ।।

शुरू से आज तक इस भेद को किसी ने नहीं खोला। मेंहदी मुहम्मद की कृपा से यह सब भेद सभी को खुल जाएंगे।

लोक जाने ज्यों और है, ए भी फुरमान तिन रीत।
पर दिल के अंधे न समझहीं, ए फुरमान सब्दातीत।।६० ।।

संसार वाले जानते हैं कि यह कुरान भी दूसरे धर्म ग्रन्थों की तरह है, परन्तु यह दिल के अन्धे नहीं समझते कि इस कुरान के अन्दर पार का ज्ञान है।

ए कागद नहीं फरेब का, और कागद सब छल।
अबहीं इमाम देखावहीं, रसूल किताब का बल।।६१ ।।

दुनियां के सारे धर्म ग्रन्थ माया के अन्दर के हैं और यह कुरान ग्रन्थ माया के बाहर का है। माया का नहीं है। अब इमाम मेंहदी साहब आ गए हैं और वह रसूल के कुरान की शक्ति को दिखाएंगे।

।। प्रकरण ।। २० ।। चौपाई ।। ५६५ ।।

सनन्ध–मुस्लिम की रेहेनी

सुनियो अब मोमिनों, ए केहेती हों सब तुम।
जब तोड़ी आइयां नहीं, इमाम के कदम।। १ ।।

श्री महामतिजी कहती हैं, हे मोमिनो! अब सुनना, यह सब तब तक तुमको ही कह रही हूं, जब तक तुम इमाम साहब के कदमों में नहीं आ जाते।

मैं चाहों मोमिन को, हम तुम एकै अंग।
मैं तबहीं सुख पाऊंगी, मेंहेदी महंमद मोमिन संग।। २ ।।

हे मोमिनो! मैं तुमको चाहती हूं क्योंकि हम तुम एक ही अंग हैं। मुझे तभी सुख होगा जब मोमिन, मुहम्मद और मेंहदी तीनों इकट्ठे हो जाएंगे।

आए ईसा मेंहेदी महंमद, मोमिन आवसी कदम।
हनोज लों कबूं न हुई, सो होसी नई रसम।। ३ ।।

मुहम्मद, ईसा, मेंहदी (बसरी, मलकी, हकी) आ गए हैं। अब मोमिन इनके चरणों में आएंगे। आज तक जो लीला नहीं हुई, वह नई लीला अब होगी।

बड़ा मेला इत होएसी, आए खुद खसम।
बखत भला साहेब दिया, भाग बड़े हैं तुम।। ४ ।।

खुदा खुद आया है। यहां पर बहुत बड़ा मेला होगा। हे मोमिनो! तुम्हारे बड़े नसीब हैं कि यह मौका तुमको मिला है।

नेक कहूं राह मुस्लिम की, जो देखाई रसूलें मेहेर कर।
भूले अवसर पछताइए, सो कहूं सुनो दिल धर।। ५ ।।

जो रसूल साहब ने कृपा कर मोमिनों के वास्ते रास्ता बताया है उसकी हकीकत मैं थोड़ी-सी बताती हूं। उसे दिल में बिठा लेना, नहीं तो वक्त चले जाने के बाद पछतावा होगा।

Nijanand App

पेहेले तो सब भूलियां, मैं तो कहूं तुमें हक।
देखो हाथ में नूर खुदाए का, फरेब में हुए गरक।। ६ ।।

मैं तुमको सत्य कहती हूं कि पहले तुम सब भूल गए थे और फरेब में गर्क हो गए थे। इसकी जानकारी तारतम वाणी हाथ में लेकर देखो।

कहे फुरमान इनों हाथ में, मेहेर कर दिया रसूल।
जाहेर तुमको बताइया, सो भी गैयां तुम भूल।। ७ ।।

रसूल साहब ने कृपा करके फुरमान (कुरान) तुम्हारे हाथ में दिया है और तुम्हें जाहिर बतलाया फिर भी तुम भूल गए हो।

जो जाहेर है तुम पे, माएने इन कुरान।
एते दिन न समझे, अब नेक देऊं पेहेचान।। ८ ।।

इस कुरान के माएने जो इतने दिनों से तुम्हारे पास हैं पर तुम जान नहीं सके, इनकी थोड़ी पहचान मैं तुम्हें देती हूं।

फैलाव ऊपर का न करूं, नेक देऊं मगज बताए।
ज्यों वतन की सुध परे, सब पकड़ें इमाम के पाए।। ९ ।।

मैं अधिक जाहिर नहीं करूंगी। उसका थोड़ा-सा रहस्य बताती हूं, जिससे घर की पहचान हो जाए और सब इमाम मेंहदी की शरण में आ जाएं।

ए जो तुमको रसूलें, दिए माएने खोल।
जाहेर किए न ले सके, कहूं सो दो एक बोल।। १० ।।

रसूल साहब ने माएने खोलकर बताए फिर भी तुम न ले सके। उन्होंने जाहिर भी किए, फिर भी तुम नहीं ले सके। दो एक वचन तुमको कहूंगी।

कहो कलमा हक कर, ल्यो माएने कुरान।
पाक दिल रूह पाक दम, या दीन मुसलमान।। ११ ।।

जो कलमें को सच माने, कुरान के माएने समझे, उसका दिल पाक, रूह पाक है, वही सच्चा मुसलमान है।

पांच बखत सल्ली करे, दिल दरदा आन सुभान।
सुने न कान कुफार की, या दीन मुसलमान।। १२ ।।

जो सुभान का दिल में दर्द लेकर पांच बार नमाज पढ़े और फरेब की बातों को नहीं सुने, वही सच्चा मुसलमान है।

कसनी लेवे आप सिर, साफ रोजे रमजान।
रात दिन याही जोस में, या दीन मुसलमान।। १३ ।।

जो कसनी करके रमजान में रोजे रखे और रात-दिन उसी जोश में मग्न रहे, वह दीन का सच्चा मुसलमान है।

माएने ले चीन्हें आपको, करे रसूल पेहेचान।
वतन सुध करे हक की, या दीन मुसलमान।। १४ ।।

जो रसूल की पहचान कर कुरान के माएने लेकर अपने आप की पहचान करे, घर की और खुदा की सुध रखे, वही सच्चा मुसलमान है।

Nijanand App

रसूल आए किन ठौर से, किन वास्ते जिमी हैरान।
ए सुध सारी लेवहीं, या दीन मुसलमान।। १५ ।।

रसूल किस ठिकाने से आए हैं? किन के वास्ते इस संसार में आए हैं? जो यह सब खबर रखे, वही मुसलमान है।

किन भेज्या आया कौन, ल्याया हक का फुरमान।
ए सहूर करके समझहीं, या दीन मुसलमान।। १६ ।।

रसूल को किसने भेजा है, कौन आया है जो हक का फरमान लाया है, यह विचार कर जो समझे, वही सच्चा मुसलमान है।

सारे सबद रसूल के, सिर लेवे हक जान।
नूर नबी के मगन, या दीन मुसलमान।। १७ ।।

रसूल साहब की वाणी को सत जानकर ग्रहण करे और नबी (रसूल साहब) के नूर में मग्न रहे, वही सच्चा मुसलमान है।

कलाम अल्ला कुरान में, दिल दे करे प्रवान।
अंदर आकीन उजले, या दीन मुसलमान।। १८ ।।

अल्लाह की वाणी जो कुरान में है, दिल देकर जो स्वीकार करे, साफ दिल से यकीन रखे, वही सच्चा मुसलमान है।

ए जो कुदरत गफलती, चौदे तबक की जहान।
ए फरेब नीके समझहीं, या दीन मुसलमान।। १९ ।।

यह चौदह तबकों (लोकों) का ब्रह्माण्ड माया के अन्धकार में भूला हुआ है। जो इस फरेब को अच्छी तरह समझे, वही सच्चा मुसलमान है।

ए सब खेल खसम का, बनिआदम हैवान।
एकै नजरों देखहीं, या दीन मुसलमान।। २० ।।

यह सारी दुनियां अल्लाह की बनाई हुई है। आदमी हो या जानवर, जो इनको एक नजर से देखे, वही सच्चा मुसलमान है।

न्यारा रहे सबन थें, ए जो बीच जिमी आसमान।
संग करे खुद दरदी का, या दीन मुसलमान।। २१ ।।

जमीन और आसमान के बीच की दुनियां से अलग रहे और अपने मोमिनों का संग करे, वही सच्चा मुसलमान है।

भली बुरी किनकी नहीं, डरता रहे सुभान।
सोहोबत खूनी की ना करे, या दीन मुसलमान।। २२ ।।

जो किसी की भली-बुरी में न पड़े, पारब्रह्म मालिक से डरता रहे तथा खूनी की सोहोबत (साथ) न करे, वही सच्चे मुसलमान का धर्म है।

यामें कोई न बिराना अपना, ए देखे सब समान।
यासें न्यारे जाने मोमिन, या दीन मुसलमान।। २३ ।।

इस संसार में न कोई अपना है, न बिराना (पराया) है। सबको समान देखे तथा मोमिनों को इनसे अलग समझे वही सच्चा मुसलमान है।

Nijanand App

ए जुदे नीके जानहीं, मोमिन मुस्लिम कुफरान।
पेहेचान जुदी सब रूहों की, या दीन मुसलमान।। २४ ।।

जो अच्छी तरह से जीव सृष्टि, ईश्वरी सृष्टि, ब्रह्म सृष्टि को पहचाने, वही सच्चा मुसलमान है।

मेहेर दिल मोमिन के, इस्क अंग रेहेमान।
दाग न देवे बैठने, या दीन मुसलमान।। २५ ।।

मोमिनों के दिल में मेहर है और यह अपने खुदा के लिए इश्क से भरे हैं। किसी प्रकार का दाग न लगने दे, वही सच्चा मुसलमान है।

जो रूह होवे मुस्लिम, सो संग ना करे कुफरान।
आसिक खुद खसम की, या दीन मुसलमान।। २६ ।।

जो पक्का ईमानदार हो, पक्का यकीन रखता हो और काफिरों का संग न करता हो और अपने खसम (खुदा) का आशिक हो, वही सच्चा मुसलमान है।

जो रूह भूली आप को, मुस्लिम कलमे पेहेचान।
तिनको वतन बतावहीं, या दीन मुसलमान।। २७ ।।

जो भूली हुई आत्माओं को कलमे से यकीन दिलाए और उनको घर की सुध देवे, वही सच्चा मुसलमान है।

साफ रखे सबों अंगों, ज्यों छींट ना लगे गुमान।
बांधे दिल गरीबी सों, या दीन मुसलमान।। २८ ।।

जो अपने अंगों को साफ रखता है अर्थात् अहंकार को कभी नहीं आने देता, दिल में गरीबी बांधकर रखता हो, वही सच्चा मुसलमान है।

रेहेवे निरगुन होए के, और निरगुन खान पान।
नजीक न जाए बदफैल के, या दीन मुसलमान।। २९ ।।

जो निर्गुणी हो (साधारण वेशभूषा में रहता हो) और जिसका खानपान निर्गुणी हो (सात्विक भोजन) और नीच कर्म के नजदीक न जाता हो, वही सच्चा मुसलमान है।

प्यारा नाम खुदाए का, फेरे तसबी लगाए तान।
रात दिन लहे बंदगी, या दीन मुसलमान।। ३० ।।

जो अपने प्यारे अल्लाह के नाम की माला एक चित्त से जपता है, रात-दिन बन्दगी में लगा रहता है, वही सच्चा मुसलमान है।

दरदा ले द्वारे खड़ी, खसम की गलतान।
रूह लगी रसूलसों, या दीन मुसलमान।। ३१ ।।

जिसे अपने खसम का दर्द है और जो उसी की याद में फना है, जिसकी सुरता रसूल में लगी है, वही सच्चा मुसलमान है।

हराम छोड़ हक लेवही, ए जो करी बयान।
आपा रखे आप वस, या दीन मुसलमान।। ३२ ।।

जो हराम को (झूठ को) छोड़कर हक (सच्चा) को लेता है, अपने आप को अपने वश में रखता है और जो कुछ कहा है उस पर अमल करता है, वही सच्चा मुसलमान है।

Nijanand App

साफ दिल ईमान सों, करे बावन मसले अरकान।
ए बिने जाने इसलाम की, या दीन मुसलमान।। ३३ ।।

दिल साफ रखकर ईमान से बावन मसले (शरीयत के नियम) मानता है और इसको इस्लाम
बुनियाद मानकर चलता है, वही सच्चा मुसलमान है।

मुस्लिम सारे केहेलावहीं, पर ना सुध हकीकत।
ना सुध रसूल ना खसम, ना सुध या गफलत।। ३४ ।।

मुसलमान सारे कहलाते हैं। उन्हें हकीकत के ज्ञान की सुध नहीं है। उन्हें रसूल की, खसम की
माया की सुध नहीं है।

जो अंदर झूठी बंदगी, देखलावे बाहेर।
तिनको मुस्लिम जिन कहो, वह ख्वाबी दम जाहेर।। ३५ ।।

जो झूठी बन्दगी कर ऊपर का दिखावा करते हैं, वह मुसलमान नहीं हैं। वह स्वप्न के जीव हैं

तो होए कबूल मुस्लिम, जो पोहोंचे मजल इन।
जोलों होए न हजूर बंदगी, खुले मुसाफ हकीकत बिन।। ३६ ।।

जब तक जिसे कुरान की हकीकत का पता नहीं है तब तक उसकी की गयी बन्दगी हजूरी ब
नहीं होती। जो इस मंजिल तक पहुंचे उसे ही खुदा मुसलमान मानता है।

इसलाम बड़ा मरातबा, जो करे अपनी पेहेचान।
जुलमत नूर उलंघ के, पोहोंचे नूर बिलंद मकान।। ३७ ।।

इस्लाम धर्म का इतना बड़ा दर्जा है कि उससे अपनी पहचान होती है। जो निराकार को उलं
अक्षर से परे परमधाम में पहुंचता है, वही मुसलमान है।

केहेलाए मुस्लिम पकड़े वजूद, पांउ चले राह ऊपर।
क्यों न कटाए पुलसरातें, जो रसूलें देखाई जाहेर कर।। ३८ ।।

मुसलमान कहलाते हैं मगर वजूद की राह चलते हैं। ऐसे लोग पुलसरात, जो तलवार की धा
समान है, उससे कटेंगे। ऐसा रसूल साहब ने जाहिर बताया है।

जिन दिल पर सैतान पातसाह, सो ना पाक बड़ा पलीत।
खूंन करे खिन में कई, दिल पाक होए किन रीत।। ३९ ।।

जिनके दिलों में शैतान की पातसाही (बादशाही) है, वही लोग नापाक और नीच हैं। एक क्ष
कई खून करते हैं। ऐसे लोगों के दिल किस तरह पाक होंगे?

दिल पाक जोलों होए नहीं, कहा होए वजूद ऊपर से धोए।
धोए वजूद पाक दिल, कबहूं न हुआ कोए।। ४० ।।

जब तक दिल पाक नहीं होता है, शरीर को ऊपर से धोने से क्या होगा? नहाने से किसी का
निर्मल नहीं होता।

पाक हुआ दिल जिनका, तिन वजूद जामा पाक सब।
हिरस हवा सब इंद्रियां, तिन नहीं नापाकी कब।। ४१ ।।

जिनका दिल पाक हो गया है, उनके कपड़े, शरीर, चाहना, इन्द्रियां सब पाक हैं। उनका कुछ न
नहीं, सब कुछ पाक है।

Nijanand App

६'

हलाल हलाल सब कोई कहे, पूछो हादी सिरदार।
जिन दिल हुआ अर्स हक का, तिन दुनी करी मुरदार।।४२ ।।

हम उचित ही करते हैं ऐसा सब कहते हैं, किन्तु अपने हादी जिनके दिल में हक विराजमान हैं और जिन्होंने दुनियां को नाचीज समझ कर छोड़ दिया है, से पूछकर देखो।

दिल अर्स मोमिन कह्या, तित आए हक सुभान।
सो दिल पाक औरों करे, जाए देखो मगज कुरान।।४३ ।।

मोमिनों के दिल में आप हक सुभान अर्श बनाकर बैठे हैं। वह औरों के दिल को भी पाक साफ करेंगे, ऐसा कुरान में कहा है।

पांउ तो कोई ना भर सक्या, उमेद करी सबन।
सो महंमद मेंहेदी आए के, नीयत पोहोंचाई तिन।।४४ ।।

उम्मीद में सब बैठे रहे, परन्तु अमल किसी ने नहीं किया। अब यही मुहम्मद मेंहदी ने आकर उनको उनकी रहनी के अनुसार बहिश्त दी।

ए कलमा जिन कानो सुन्या, ताए भी देसी सुख।
तो मुस्लिम का क्या केहेना, जो हक कर केहेवे मुख।।४५ ।।

जिसने कानो से कलमा सुना है उसको भी सुख मिलेगा। जो यकीन वाले मुसलमान हैं और जिन्होंने कलमे को सच्चा माना है उनका तो कहना ही क्या?

ए कलमा जिन जिमिऐं, किया होए पसार।
तिन जिमी के लोक को, जिन कोई कहो कुफार।।४६ ।।

यह कलमा (तारतम) जहां-जहां फैला, वहां के लोगों को काफिर मत कहना।

बांग आवाज कानों सुनी, कुफर कहिए क्यों ताए।
सो रूह आखिर कजा समें, औरों भी लेसी बचाए।।४७ ।।

जिसके कानों में बांग (आरती) की आवाज हुई है, अर्थात् आरती को कानों से सुना हो, उसे काफिर कैसे कहा जाए? ऐसी रूह तो कजा के समय औरों को बचा लेगी।

इन कलमें के सब्द से, सब छूटेगा संसार।
तो कहा कहूं मैं तिनको, जिन पेहेचान कह्या नर नार।।४८ ।।

इस कलमे (तारतम) के वचनों से सारे संसार को मुक्ति मिलनी है, तो जिसने पहचान कर (तारतम) ग्रहण किया उसकी मैं क्या कहूं?

ए कलमा इन दुनी का, सब दुख करसी दूर।
तिनको भी भिस्त होएसी, जिनके नहीं अंकूर।।४९ ।।

यह कलमा (तारतम) दुनियां के सब दु:खों को दूर कर देगा। सारे जीवों को जिनके अंकुर (निसबत) भी नहीं हैं उनकी यह बहिश्तें कायम करेगा।

तबक चौदे जो कोई, रूह होसी सकल।
इन कलमें की बरकतें, तिन सुख होसी नेहेचल।।५० ।।

चौदह लोकों के बीच में जहां कहीं भी रूहें होंगी, वह इस कलमे (तारतम) की बरकत से अखण्ड सुख प्राप्त करेंगी।

Nijanand App

दीन होए के चलसी, दरदी रसूल रेहेमान।
बोहोत कह्या है रसूलें, ताकी नेक करी है बयान।।५१।।

जो खुदा का दर्द गरीबी से लेकर चलेगा उनके वास्ते रसूल साहब ने बहुत कुछ कहा है। मैंने थोड़ा सा यहां इशारा किया है।

ए तो जाहेर की कही, अब गुझ कहूंगी तुम।
जो बयान रसूलें न किए, मोमिन वतन खसम।।५२।।

अब तक तुम्हें जाहिर की बातें कही हैं। अब रहस्य की बातें बताती हूं। इसका बयान रसूल साहब ने नहीं किया है। अपने घर और अपने धनी की बातें गुझ हैं। वह अब मैं बताती हूं।

गुझ माएने कौन लेवहीं, जो जाहेर लिए न जाए।
ए सब खोले रसूलें, जो मैं दिए बताए।।५३।।

जब जाहिरी बातों पर ही नहीं चला जाता, तो रहस्य वाली (गुझ) बातों पर कौन अमल करेगा, यह रसूल साहब ने लिखा है और मैंने तुमको बताया है।

कोई जाहेर न ले सके, तो गुझ होसी किन पर।
हम जो लिए जाहेर, नेक ए भी सुनो खबर।।५४।।

जो जाहिरी अर्थ नहीं समझ सका वह गुझ रहस्य के अर्थ कैसे समझेगा? हमने जो जाहिरी अर्थ लिए हैं उनकी भी थोड़ी पहचान सुनो।

॥ प्रकरण ॥ २१ ॥ चौपाई ॥ ६१९ ॥

सनन्ध–अर्स अरवाहों के लछन

गुझ तो तुमको कहूंगी, सक न राखूं किन।
पर पेहेले कहूं नेक मोमिनों, जो हमारा चलन।।१।।

श्री महामतिजी कहती हैं कि रहस्य की बातें तो तुमको कहूंगी और तुम्हारे संशय भी मिटाऊंगी, परन्तु पहले मोमिनों की बात करती हूं जो हमारी रहनी हैं।

बयान किए जो रसूलें, हम सोई लिए जाहेर।
लाख बेर कह्या रसूलें, जन जनसों लर लर।।२।।

रसूल साहब ने जो कुरान में कहा है उसे हमने जाहिरी (बाह्य अर्थ) में ग्रहण किया। रसूल साहब ने लोगों को लाखों बार लड़-लड़कर कहा।

कोट बेर जाहेर सबों, रसूलें फुरमाया जेह।
सो कलमा सिर लेए के, पांउ भरे हम एह।।३।।

रसूल साहब ने जो करोड़ों बार फरमाया था, उस कलमे को सिर पर धारण करके हमने अपनी रहनी बनाई।

बड़ा जाहेर ए माएना, कहे हक पें ल्याया फुरमान।
इन कलमे की दोस्ती, कह्या मिलसी रेहेमान।।४।।

रसूल साहब ने कहा कि यह कलमा (तारतम) बहुत बड़ी बात है। खुदा ने फरमान देकर मुझे भेजा है। इस कलमे (तारतम) को धारण करने से ही रहमान (धनी) मिलेंगे।

Nijanand App

खातिर तुम अर्स मोमिन, मैं ल्याया हक फुरमान।
कौल करत हों तेहेकीक, इत ल्याऊं बुलाए सुभान।। ५ ।।

हे मोमिन! तुम्हारे लिए मैं परवरदिगार से कुरान लेकर आया हूं और कसम खाकर कहता हूं कि उस सुभान (धाम-धनी) को मैं लेकर आऊंगा।

जो किनहूं पाया नहीं, ना कछू सुनिया कान।
तिनका जामिन होए के, मैं इत मिलाऊं आन।। ६ ।।

जिस पारब्रह्म को आज तक किसी ने वाणी से नहीं सुना और न उसको पाया है, उस पारब्रह्म को मैं यहां लाकर मिलाऊंगा। इसकी मैं जमानत देता हूं।

अब रूहें जो अर्स मोमिन, तिन कहा चाहियत है और।
रसूल कहे जानो हक, काजी कजा होसी इन ठौर।। ७ ।।

अर्श के रूह मोमिनों को इससे ज्यादा और क्या चाहिए? रसूल साहब कहते हैं कि हक को पहचान लो। वही कजा के दिन काजी (न्यायाधीश) बनकर बैठेगा।

जाहेर हक देखाइया, हम लिए माएने ए।
एही कलमा रसूल का, हम सिर चढ़ाया ले।। ८ ।।

रसूल साहब ने हमें कलमे से (तारतम से) हक की पहचान करा दी, इसीलिए हमने रसूल साहब के कलमे को सिर पर धारण किया है।

जाहेर दुलहा छोड़ के, ढूंढ़त माएने गुझ।
ए खोज तिनों की देख के, होत अचम्भा मुझ।। ९ ।।

सामने बैठे प्राणनाथ को न पहचान कर ग्रन्थों के गुझ माएनों से उसे ढूंढ़ते हो, जो अब भी खोज रहे हैं, उनको देखकर मुझे हैरानी होती है।

हम याही फुरमान के, लिए माएने जाहेर।
रूह बांधी रसूल सों, जिन हक की कही खबर।। १० ।।

हमने इस कुरान के जाहिरी अर्थ लिए और उस रसूल से सुरता बांधी जिन्होंने मात्र खबर कही है।

हाथ पकड़ देखावहीं, आप आए दरम्यान।
ए छोड़ और जो ढूंढ़हीं, तिन दिल आंख न कान।। ११ ।।

अब रसूल साहब ने आकर खुद बताया है। यह प्राणनाथ जी हैं। यह हाथ पकड़कर दिखा रहे हैं कि यही पारब्रह्म है। इनको छोड़कर जो और को ढूंढ़ते फिरते हैं उनके दिल, आंख और कान नहीं हैं, अर्थात् उन्होंने कभी भी पारब्रह्म की पहचान की वाणी नहीं सुनी और न ही दिल में भाव हैं कि उनके आने पर दर्शन कर सकें।

मोमिन थे सो समझे, ए तो सीधा कह्या महंमद।
ना मैं जिमी आसमान का, खबर जो ल्याया खुद।। १२ ।।

मुहम्मद ने स्पष्ट कहा कि मैं न जमीन का हूं, न आसमान का हूं। मैं स्वयं अल्लाह की खबर लेकर आया हूं। जो मोमिन थे उन्होंने इस बात को समझ लिया।

Nijanand App

और माएने सो ढूंढहीं, ठौर न जाको दिल।
रसूल रहीम मिलावहीं, और ढूंढे कहा बे अकल।। १३ ।।

जिनके अन्दर यकीन नहीं है वह इधर-उधर ढूंढ रहे हैं। जब रसूल ने जमानत दी है कि मैं खुदा से मिलाऊंगा, फिर जो इधर-उधर ढूंढ़ते हैं वह बेअक्ल हैं।

हम तो एही हक किया, जाहेर रसूल बोल।
ए छोड़ और न देखहीं, हम एही लिया सिर कौल।। १४ ।।

हमने तो रसूल साहब के इन वचनों को ही सत (सत्य) मानकर ग्रहण कर लिया। इसको छोड़कर हम और कहीं नहीं खोजते।

एही हमारा आकीन, हम लिया हक कर।
आकीन कह्या रसूल का, सब देखावे नजर।। १५ ।।

इसी को सच्चा मानकर हमने स्वीकार किया। रसूल साहब ने जिस यकीन के लिए कहा वह हम तुमको नजर में दिखाते हैं।

देखाया रसूल ने, सो लीजो आप चेतन।
अंकूर अपना देखिए, ज्यों याद आवे वतन।। १६ ।।

हे मोमिनो! रसूल साहब ने जो रास्ता दिखाया है उसको चित्त में धारण कर लेना और अपनी निसबत को देखना जिससे अपने घर (परमधाम) की याद आए।

जिन खातिर ए रसूल, ले आया फुरमान।
हम ले आकीन चले जिन बिध, नेक ए भी करूं बयान।। १७ ।।

जिनके वास्ते रसूल साहब फरमान लेकर आए हैं तथा हम भी जिस यकीन पर चल रहे हैं, थोड़ा-सा उसका बयान करती हूं।

अर्स अरवाहें मेरी बोहोत हैं, नेक तिनके कहूं लछन।
वतन हक आप भूलियां, तो भी मोमिन एही चलन।। १८ ।।

मेरी परमधाम की बहुत ऐसी रूहें हैं जो अपने घर और हक (धाम-धनी) को भूल बैठी हैं। फिर भी उनकी रहनी कैसी होगी, उसके लक्षणों को मैं थोड़ा बताती हूं।

अर्स अजीम की जो रूहें, तिनकी ए पेहेचान।
जो कदी भूली वतन, तो भी नजर तहां निदान।। १९ ।।

अर्श अजीम (परमधाम) के मोमिनों की पहचान यह है कि वतन को भूलने पर भी उनका यकीन वहीं पर रहता है।

आसिक खुद खसम की, कोई प्रेम कहो विरहिन।
ताए कोई दरदन कहो, ए बिध अर्स रूहन।। २० ।।

यह रूहें पारब्रह्म की खास आशिक हैं इन्हें कोई प्रेमी कहो, विरहिन कहो, दर्दी कहो इस तरह की रूहों की पहचान है।

रूह खसम की क्यों रहे, आप अपने अंग बिन।
पर हकें पकड़ी अंतर, ना तो रहे ना तन।। २१ ।।

धाम-धनी की अंगनाएं अपने मूल तन के बिना नहीं रह सकतीं। श्री राजजी महाराज ने अपना बल दे रखा है, नहीं तो यह अपना तन ही छोड़ देतीं।

Nijanand App

ऊपर काहूं न देखावहीं, जो दम न ले सके खिन।
सो आसिक जाने मासूक की, एही मोमिन विरहिन।। २२ ।।

विरहिणी मोमिन (ब्रह्मसृष्टि) ऊपर का दिखावा नहीं करती तथा अपना एक क्षण भी बरबाद नहीं करती। इसको पारब्रह्म जानते हैं या मोमिन जानते हैं। इसी को विरहिणी मोमिन कहते हैं।

मोमिन आकीन न छूटहीं, जो पड़े अनेक विघन।
आसिक मासूक वास्ते, जीव को न करे जतन।। २३ ।।

कितने भी संकट आएं मोमिन अपना यकीन नहीं छोड़ते। यह मोमिन अपने माशूक (धनी) के वास्ते जीव तक की कुर्बानी देने में पीछे नहीं हटते।

रेहेवे निरगुन होए के, और आहार भी निरगुन।
साफ दिल रूह मोमिन, कबहूं न दुखावे किन।। २४ ।।

यह निर्गुण (साधारण) होकर रहते हैं और निर्गुण (सात्विक) ही खाते हैं। मोमिन के दिल साफ रहते हैं। यह किसी को दुखाते नहीं।

मोमिन खोजे आप को, और खोजे कहां है घर।
खोजे अपने खसम को, और खोजे दिन आखिर।। २५ ।।

मोमिन वही हैं जो अपने आप की पहचान करते हैं, अपने घर की खोज करते हैं, अपने धनी की खोज करते हैं और आखिरत के दिन की खोज में रहते हैं।

खोज मोमिन न थके, जोलों पार के पारै पार।
नित खोजे चरनी चढ़ें, नए नए करे विचार।। २६ ।।

मोमिन खोज करने में तब तक नहीं थकते जब तक उन्हें हद पार बेहद, बेहद पार (अक्षर), अक्षर पार अपना घर नहीं मिल जाता। वह खुद ही आगे की खोजकर नए विचार करके सीढ़ी चढ़ते हैं।

खोज खोज और खोजहीं, आद के आद अनाद।
पल पल नूर बढ़ता, श्रवनों एही स्वाद।। २७ ।।

मोमिन लगातार आदि के बनाने वाले अनादि (अक्षरातीत) को खोजते हैं, उनका ज्ञान बढ़ता है और सुनने में वाणी का स्वाद आता है।

फुरमान हाथों न छूटहीं, जोलों पाइए हक वतन।
मासूक वतन पाए बिना, दरद न जाए निसदिन।। २८ ।।

जब तक हक और वतन नहीं मिल जाता तब तक उनके हाथ से कुरान छूटता नहीं। श्री राजजी महाराज और घर को पाए बिना दिन-रात उनका दर्द नहीं मिटता।

मोमिन अंदर उजले, खिन खिन बढ़त उजास।
देह भरोसा ना करें, इमाम मिलन की आस।। २९ ।।

मोमिनों का दिल साफ होता है। इनमें पल-पल ज्ञान की रोशनी बढ़ती है। इमाम मेंहदी से मिलने की आशा लगी रहती है। वह तन का भी विश्वास नहीं करते।

ज्यों ज्यों माएने विचारहीं, त्यों बेधे सकल संधान।
रोम रोम ताए बेधहीं, सब्द रसूल के बान।। ३० ।।

ज्यों-ज्यों वाणी का अध्ययन करते हैं त्यों-त्यों उनके अन्दर चोट लगती है तथा रसूल साहब की वाणी रोम-रोम में चुभती है।

Nijanand App

मोमिन अंग कोमल, ताए बान निकसें फूट।
गलित गात सब भीगल, सब अंगों टूक टूक।। ३१ ।।

मोमिनों के अंग कोमल हैं। दिल में वाणी के वचन बाण की तरह लगते हैं। फिर उसमें सराबोर (डूबकर) होकर धनी पर फिदा हो जाते हैं।

खिन खेलें खिन में हंसें, खिन में गावें गीत।
खिन रोवें सुध ना रहे, एही मोमिन की रीत।। ३२ ।।

मोमिन वाणी की लज्जत से पल में हंसते हैं, पल में गाते हैं, पल में रोते हैं, पल में खेलते हैं। सुध उनको रहती नहीं। यह ही उनकी रीति है (रहनी है)।

हक बातें खेलें हंसें, और गीत पिया के गाए।
रोवें उरझे पिउ की, और बातनसों मुरछाए।। ३३ ।।

हक की बातें जब वाणी में पढ़ते हैं तो खेलते हैं, हंसते हैं और धनी के गीत भी गाते हैं। उसकी वाणी से धनी से झगड़ते हैं, रोते हैं, बातें करते हैं और कभी मूर्छित भी हो जाते हैं।

मोमिन दरदा ना सहे, जब जाहेर हुए पिउ।
मोमिन अंग पिउ का, पिउ मोमिन अंग जिउ।। ३४ ।।

जब धनी वाणी से जाहिर (प्रगट) हो जाते हैं तो मोमिन का दर्द सहन नहीं करते। मोमिन ही धनी के अंग हैं और मोमिनों का जीव धनी का अंग है।

जोलों सुध ना मासूक की, मोमिन अंग में पिउ।
जब मासूक जाहेर हुए, आसिक ले खड़ी अंग जिउ।। ३५ ।।

जब तक माशूक की खबर नहीं है तभी तक धनी अंग में छिपे हैं। जब धनी जाहिर हो गए तो मोमिन अपने जीव में धनी को लेकर खड़े हो जाते हैं।

बोहोत निसानी और हैं, अर्स अरवा मोमिन।
सो इन जुबां केते कहूं, मेरे वतनी के लछन।। ३६ ।।

अर्श के मोमिनों की और भी बड़ी निशानियां हैं। इनका मैं जबान से कैसे वर्णन करूं? यह मेरे वतनी की रहनी है।

जो होवे अर्स अजीम की, सो निरखो अपने निसान।
ए लछन मोमिन वतनी, सो देखो दिल में आन।। ३७ ।।

जो मोमिन अर्श अजीम (परमधाम) के हों वह अपनी रहनी को देखें और परखें। मोमिनों के लछन (लक्षण) मैंने कहे हैं। उनको दिल में विचार कर देखो।

मोमिन रूहें अर्स की, ए समझ लीजो तुम दिल।
ठौर ठौर से आए मोमिन, सुख लेसी सब मिल।। ३८ ।।

हे अर्श की रूह मोमिनो! तुम यह बात दिल में समझ लेना। मोमिन (सुन्दरसाथ) यहां जुदी-जुदी जगहों से आए हैं और सब इकट्ठे मिलकर सुख लेंगे।

ऐ केहेती हों मोमिन को, जिन अर्स बका में तन।
सो कैसे ढांपी रहें, सुन के एह वचन।। ३९ ।।

जिन मोमिनों के मूल तन परमधाम में हैं उनके लिए ही मैं कहती हूं। इन वचनों को सुनकर वह छिपे नहीं रहेंगे।

Nijanand App

ए सब्द सुन मोमिन, रेहे न सकें पल।
तामें मूल अंकूर को, रहे न पकरयो बल।। ४० ।।

इन वचनों को सुनकर मोमिन एक पल के लिए पीछे नहीं रह सकते। इनके अन्दर मूल का अंकुर (निसबत) है। दुनियां की कोई ताकत इन्हें रोक नहीं सकती।

जब साहेब की सुध सुनी, तब जाए न रह्यो रूहन।
ओ ख्वाबी दम भी न रहें, तो क्यों रहें अर्स मोमिन।। ४१ ।।

अपने मालिक की खबर सुन संसार के जीव भी पीछे नहीं रहते तो अर्श के मोमिन धनी की खबर सुनकर पीछे कैसे रह सकते हैं?

मोमिन पाए कदम हादी के, खोल द्वार लिए हजूर।
पट खोल दिया फुरमान का, पल पल बरसत नूर।। ४२ ।।

मोमिनों को स्वयं धनी ने पार के दरवाजे खोलकर अपने चरणों में ले लिया है। जिससे कुरान के सारे भेद खुल गए हैं और उनकी मेहर पल-पल बरस रही है।

खाना पीना दीदार, रोजा निमाज दीदार।
एक दोस्ती जानें हक की, दुनी सब करी मुरदार।। ४३ ।।

मोमिनों का खाना-पीना श्री राजजी के दर्शन है। रोजा, नमाज भी दर्शन है, मोमिन केवल हक की दोस्ती जानते हैं। बाकी दुनियां को मुरदार (मरा हुआ, जड़) समझकर छोड़ देते हैं।

केतेक ठौर हैं मोमिन, तिन सब ठौरों है उजास।
पर इतथें नूर पसरया, तब ओ ले उठसी प्रकास।। ४४ ।।

जिस-जिस जगह पर सुन्दरसाथ हैं उन सब जगहों पर वाणी का प्रकाश है। जब यहां (श्री पन्नाजी) से वाणी फैलेगी तो सोई हुई आत्माएं जागृत हो जाएंगी।

कोई दिन हम छिपे रहे, सो भी मोमिनों के सुख काज।
जो होवें नेक जाहेर, तो रहे न पकरयो अवाज।। ४५ ।।

श्री प्राणनाथजी कहते हैं कि आज दिन तक हम मोमिनों के सुख के वास्ते (ताकि वह खेल देखें) छिपे रहे। यदि हम थोड़ी-सी भी खबर जाहिर होने देते तो मेरी आवाज फैल जाती और पकड़ में न रहती अर्थात् दुनियां समझ जाती।

मैं नूर अंग इमाम का, खासी रूह खसम।
सुख देऊं जगाए के, मोमिन रूहें तले कदम।। ४६ ।।

श्री महामतिजी कहती हैं कि मैं इमाम (प्राणनाथ) का स्वरूप हूं। इमाम मेंहदी की अंगना हूं। मैं सब रूहों को जगाकर श्री राजजी के चरणों में पहुंचा दूंगी।

रूहों को अर्स देखावने, उलसत मेरे अंग।
करने बात मासूक की, मावत नहीं उमंग।। ४७ ।।

श्री महामतिजी कहती हैं कि मोमिनों को परमधाम दिखाने के लिए मेरा रोम-रोम खुशी से भरा है। मुझे मोमिनों से श्री राजजी की बातें करने के लिए अंग में उमंग समाती नहीं है।

Nijanand App

नए नए रंग रूह मोमिन, आवत हैं सिरदार।
बड़ो सुख होसी कयामत, नहीं इन सुख को पार।। ४८ ।।

नए-नए रंगों के साथ में हमारे सिरदार (जागनी करने वाले) मोमिन आते हैं। आखिरत के समय में इनको बहुत सुख होगा। उन सुखों की गिनती नहीं हो सकती।

आसिक आवत मासूक की, ताको छिपो राखों उजास।
राह देखों और रूहन की, सब मिल होसी विलास।। ४९ ।।

जो रूहें वाणी के द्वारा जागृत होकर आएंगी, उनके जाहिर होने की बात मैंने छुपा रखी है, ताकि तब तक और सब भी आ जाएं। फिर सब मिलकर आनन्द करेंगे।

नूर इमाम इन भांत का, कबूं जो निकसी किरन।
तो पसरसी एक पल में, चारों तरफों सब धरन।। ५० ।।

इमाम के ज्ञान की एक किरण भी जब निकलेगी तो चौथाई पल के अन्दर उसका तेज इस ब्रह्माण्ड में चारों तरफ फैल जाएगा।

क्यों रहे प्रकास पकरयो, इमाम नूर अति जोर।
मैं राखत हों ले हुकम, न तो गई रैन भयो भोर।। ५१ ।।

श्री प्राणनाथजी की वाणी का तेज इतना अधिक है जिसे पकड़ा नहीं जा सकता। मैंने भी उनके हुक्म से ही उसे पकड़ रखा है, नहीं तो कभी का अन्धकार मिटकर सवेरा हो जाता।

नूर बड़ो इमाम को, सो क्यों ढांपूं मैं अब।
सुख लेने को या बखत, पीछे दुनी मिलसी सब।। ५२ ।।

इमाम के नूर (वाणी) को मैंने इसलिए ढांप रखा है कि पहले मोमिन इसका सुख ले लें। पीछे तो सब दुनियां को सुख मिलना ही है।

मैं तुमको चेतन करूं, एही कसौटी तुम।
या बिध अर्स अरवांहों का, तसीहा लेवें खसम।। ५३ ।।

मैं तुम्हें सावधान कर रही हूं, कि तुम इस पर यकीन लेकर खड़े हो जाओ, यही तुम्हारी कसौटी है। तुम अर्श की रूहों की परीक्षा धनी ले रहे हैं।

सबद हमारे सुन के, उठी ना अंग मरोर।
आसिक मासूक सब देखहीं, तुम इस्क का जोर।। ५४ ।।

हमारे वचनों को (वाणी को) सुनकर जो भी रूह चुस्ती के साथ नहीं उठी तो समझना कि तुम्हारे इश्क की परीक्षा, श्री राजजी के सामने हुई है, अर्थात् तुम फेल (असफल) हो गए।

ए सुन के दौड़ी नहीं, तो हांसी है तिन पर।
जैसा इस्क जिनपें, सो अब होसी जाहेर।। ५५ ।।

इन वचनों को सुनकर जो दौड़कर नहीं आंई तो उस पर हांसी (हंसी) होगी। कौन श्री राजजी से कितना प्यार करती है, वह अब जाहिर हो जाएगा।

जो इस्क ले मिलसी, सो लेसी सुख अपार।
दरद बिना दुख होएसी, सो जानो निरधार।। ५६ ।।

जो रूह यहां इश्क लेकर अपने प्राणनाथ से मिलेगी, उसे अपार सुख होगा और जिन रूहों को धनी के लिए दर्द उत्पन्न नहीं होगा, उन्हें अपार दु:ख होगा। यह बात निश्चित जानो।

Nijanand App

जो किने गफलत करी, जागी नहीं दिल दे।
सो इत दीन दुनी का, कछू ना लाहा ले।। ५७ ।।

जिसने यहां पर लापरवाही की और अपने धनी की पहचान नहीं की तो वह यहां दीन का या दुनियां का कोई भी सुख नहीं ले सकती, अर्थात् धनी की वाणी लेकर धनी पर फिदा होना तथा सुन्दरसाथ की सेवा का सुख नहीं पाएगी।

लाहा तो ना लेवही, पर सामी हांसी होए।
ए हांसी अर्स के मोमिन, जिन कराओ कोए।। ५८ ।।

संसार में तो लाभ मिलना नहीं और दूसरा घर में जाकर हंसी भी होगी, इसलिए हे मोमिनो! घर में जाकर हंसी मत कराना। यहां सावधान हो जाओ।

जिन उपजे मोमिन को, इन हांसी का भी दुख।
सो दुख बुरा रूहन को, जो याद आवे मिने सुख।। ५९ ।।

मोमिनों को इस हांसी (हंसी) का भी दुःख न हो, क्योंकि यह बहुत बुरा दुःख है जो सुख में दुःख की याद अखण्ड कर देगा।

ना तो जिन जुबां में दुख कहूं, सो ए करूं सत टूक।
तो एता रूहों खातिर, बिध बिध करतहों कूक।। ६० ।।

नहीं तो जिस जबान से मैं रूहों के दुःख की बात करती हूं, उस जबान के टुकड़े-टुकड़े कर दूं। यह तो मैंने रूह की भलाई के वास्ते तरह-तरह की आवाज में (बोली में) कहा है।

जब दुख मेरी रूहन को, तब सुख कैसा मोहे।
हम तुम अर्स अजीम के, अपने रूह नहीं दोए।। ६१ ।।

यदि मेरी रूहों को दुःख होता तो मुझे सुख कैसे हो सकता है? हम तुम दोनों ही अर्श (परमधाम) के हैं। जहां वाहेदत है (एक-दिली है), अपनी रूह जुदा-जुदा नहीं है।

पेहेले फरेब देखाइया, पीछे महंमद दीन।
कलमा जाहेर करके, देखाया आकीन।। ६२ ।।

पहले फरेब (झूठा खेल) का खेल दिखाया। पीछे घर की पहचान करवाई। फिर कलमा (तारतम) जाहिर करके हमें हमारे यकीन की पहचान कराई।

माएने जाहेर कुरान के, कही बात नेक सोए।
और गुझ भी करों जाहेर, अर्स वतनी जो कोए।। ६३ ।।

कुरान के रहस्यों को (गुझ बातों को) थोड़ा-सा हमने अभी बताया है। और भी छिपे भेद अर्श के मोमिनों के वास्ते जाहिर करती हूं।

।। प्रकरण ।। २२ ।। चौपाई ।। ६८२ ।।

सनन्ध–दिल मोमिन अर्स सुभान की

दिल हकीकी रूहें अर्स की, जामें आप आसिक हुआ सुलतान।
तो कही गिरो ए रबानी, ए दिल मोमिन अर्स सुभान।। १ ।।

रूहों के दिल में श्री राजजी महाराज आशिक होकर स्वयं बैठे हैं, इसलिए खुदा की इस जमात के दिलों को खुदा का घर कहा है।

Nijanand App

जेता कोई दिल मजाजी, चढ़ सके न नूर मकान।
दिल हकीकी पोहोंचे नूर तजल्ला, ए दिल मोमिन अर्स सुभान।।२।।

जितने झूठे दिल वाले हैं वह अक्षर तक नहीं जा सके। जिनके दिलों में खुदा खुद बैठा है वह नूर तजल्ला (परमधाम) तक पहुंचे और इन्हीं के दिल को अर्श बनाया है।

रूहें उतरी लैलत कदर में, सो उमत रबानी जान।
इनको हिदायत हक की, ए दिल मोमिन अर्स सुभान।।३।।

मोमिन लैलतुलकदर में खेल देखने आए। यह खुदा की जमात है तथा इनको प्राणनाथजी की हिदायत है। ऐसी उम्मत के दिल को अर्श कहा है।

होवे फारग दुनी के सोर से, ए दिल हकीकी निसान।
करें हजूर बातून बंदगी, ए दिल मोमिन अर्स सुभान।।४।।

जिनके दिल हकीकी हैं वह दुनियां की हाय-तोबा से छुटकारा पा जाते हैं और साक्षात् मूल मिलावे में हजूरी बन्दगी करते हैं। इन्हीं के दिल को अर्श कहा है।

हकें कौल किया जिन रूहन सों, सोई वारस हैं फुरकान।
जिन वास्ते आए हक मासूक, ए दिल मोमिन अर्स सुभान।।५।।

श्री राजजी महाराज ने जिन रूहों के लिए अपने आने का वायदा किया, वही वाणी के वारिस हैं, अर्थात् वाणी को वही समझेंगे। इन्हीं के लिए माशूक श्री राजजी महाराज आए हैं। इन्हीं के दिल को अर्श कहा है।

याही वास्ते इमाम रूह अल्ला, आए उतर चौथे आसमान।
कौल किया लाहूत में इनों से, ए दिल मोमिन अर्स सुभान।।६।।

इन्हीं के लिए ही चौथे आसमान (लाहूत), जहां इनसे आने का वायदा किया था, से इमाम (श्री प्राणनाथ जी) रूह अल्लाह (श्यामाजी) पधारे हैं। इन्हीं के दिल को ही अर्श कहा है।

ए गिरो कई बेर बचाई तोफान से, और डुबाई कुफरान।
एही उमत खास महंमदी, ए दिल मोमिन अर्स सुभान।।७।।

इसी गिरो (गिरोह, जमात, समुदाय) को कई बार तूफान (हूद-तूफान में गोवर्धन के तले बचाया और नूह-तूफान में बृज से रास पहुंचाया) से बचाया, यही श्यामा महारानी की जमात है। इन्हीं के दिल को अर्श कहा है। बाकी सब काफिरों को डुबो दिया, अर्थात् महाप्रलय हो गई।

एही नाजी फिरका तेहत्तरमा, जिनमें लुदंनी पेहेचान।
खोले हक इसारतें रमूजें, जो दिल मोमिन अर्स सुभान।।८।।

यह तिहत्तरवां नाजी फिरका है जिसे तारतम वाणी से कुरान की इशारतें रमूजें (रहस्य भरे) खोलने का ज्ञान है। इन्हीं के दिल को अर्श कहा है।

हरफ मुकता इनों वास्ते, रखे बातून मांहें फुरमान।
सो खासे करसी जाहेर, जो दिल मोमिन अर्स सुभान।।९।।

कुरान के अन्दर इन्हीं के वास्ते हरफ मुक्ता छिपाकर रखे हैं (अलिफ, लाम, मीम, इत्यादि), जिनको जाहिर यही करेंगे। इन्हीं के दिल को अर्श कहा है।

Nijanand App

हकें सिफत लिखी नामें पैगंमरों, बीच हदीसों कुरान।
सो कही सिफत सब महंमद की, ए जाने दिल अर्स सुभान।। १० ।।

कुरान और हदीसों के बीच सारी सिफत (विशेषता) इन्हीं की लिखी है इन्हीं के दिल को अर्श कहा है। वह सारी सिफत मुहम्मद (श्री प्राणनाथजी) की है।

एही भांत महंमद उमत की, कही सिफत रसूल समान।
धरे बोहोत नाम उमत के, ए जाने दिल मोमिन अर्स सुभान।। ११ ।।

मुहम्मद की उम्मत (जमात) को खुदा के समान कहा है और जिनके कुरान और हदीसों में तरह-तरह के नाम दिए हैं। इन्हीं के दिल को अर्श कहा है।

जबराईल असराफील, हक नजीकी निदान।
सो भी आए उमत वास्ते, जो दिल मोमिन अर्स सुभान।। १२ ।।

जबराईल (जिब्रील अलैहस्सलाम) और असराफील जो धनी के नजदीकी हैं, वह भी इन्हीं के वास्ते आए हैं, इसलिए इनके दिल को अर्श कहा है।

ए सब किया महंमद वास्ते, चौदे तबक की जहान।
सो महंमद आए उमत वास्ते, ए दिल मोमिन अर्स सुभान।। १३ ।।

यह चौदह तबकों (लोकों) का खेल मुहम्मद (श्यामा महारानी) के वास्ते बनाया है। वह मुहम्मद अपनी रूहों के वास्ते खेल में आई हैं, इसलिए इनके दिल को अर्श कहा है।

निसान लिखे कयामत के, फुरमान हदीसों दरम्यान।
सो भी खोले एही उमत, जो दिल मोमिन अर्स सुभान।। १४ ।।

कुरान और हदीसों में कयामत के निशान लिखे हैं। उन निशानों को भी यही जमात खोलेगी, इसलिए इनके दिल को खुदा अर्श कर बैठे हैं।

उठाई गिरो एक अदल से, कयामत बखत रेहेमान।
देसी महंमद की साहेदी, ए दिल मोमिन अर्स सुभान।। १५ ।।

कयामत के समय कजा से पहले ही इस जमात को निकाल लेंगे तथा यही जमात इस कुरान की गवाही देगी, इसलिए इनके दिल को अर्श कहा है।

कहूं बेवरा मोमिन दुनी का, जो फुरमाया फुरमान।
सक सुभे इनमें नहीं, जो दिल मोमिन अर्स सुभान।। १६ ।।

कुरान में जैसी हकीकत दुनियां और मोमिन की लिखी है, उसको मैं कहती हूं। मोमिनों को जरा भी शक नहीं होगा क्योंकि इनके दिल में खुदा विराजमान हैं।

दिल मजाजी दुनी सरियत, सो सके न पुल हद भान।
याको तोड़ उलंघे ले हकीकत, जो दिल मोमिन अर्स सुभान।। १७ ।।

जिनके दिल पर शैतान अबलीस (नारद) बैठा है वह झूठे हैं और वह निराकार के पार नहीं जा सकेंगे। निराकार के पार हकीकत की वाणी लेकर मोमिन ही जाएंगे क्योंकि इन्हीं का दिल अर्श कहा गया है।

Nijanand App

दिल मुरदा मजाजी जुलमत से, पैदा कुंन केहेते कुफरान।
क्यों होए सरभर मोमिनों, जो दिल मोमिन अर्स सुभान।। १८ ।।

जो जीव कुंन से पैदा हुए हैं उनके दिल मजाजी हैं यह उन मोमिनों की बराबरी नहीं कर सकते जिनके दिल में हक की बैठक है।

ए जो कही गिरो मलकूती, पैदा जुलमत से दुनी फान।
रूहें फिरस्ते उतरे अर्स से, ए दिल मोमिन अर्स सुभान।। १९ ।।

जीव सृष्टि की जमात निराकार से पैदा हुई है। रूहें, फरिश्ते (ब्रह्मसृष्टि और ईश्वरी) अपने-अपने अर्श से उतरी हैं। इन्हीं के दिल को अर्श कहा है।

दिल मजाजी गोस्त टुकड़ा, किया रसूलें मुख बयान।
सो क्यों उलंघे जुलमत को, बिना दिल मोमिन अर्स सुभान।। २० ।।

रसूल साहब ने जीव सृष्टि के दिल को झूठे गोश्त का टुकड़ा कहा है। वह निराकार को कैसे लांघ सकती हैं, क्योंकि उनका दिल अर्श नहीं है।

जो उतरे होवें अर्स से, रूहें तौहीद के दरम्यान।
सो लेसी अर्स अजीम को, जो दिल मोमिन अर्स सुभान।। २१ ।।

जो अर्श से रूहें उतरी हैं, वह रूहें तौहीद (एक खुदा ही के सामने झुकने वाली) की ही, अर्श अजीम (परमधाम) का सुख लेंगी। इन्हीं के दिल को अर्श कहा है।

जो मुरदार करी दुनी मोमिनों, सो दिल मजाजी खान पान।
नूर बिलंद पोहोंचे पाक होए के, ए दिल मोमिन अर्स सुभान।। २२ ।।

मोमिनों ने जिस दुनियां को नाचीज (मरा हुआ) समझकर छोड़ दिया है उसको दुनियां वालों ने अपने व्यवहार में लिया है। मोमिन ही पाक होकर नूर बिलंद (परमधाम) पहुंचेंगे। इन्हीं के दिल को अर्श कहा है।

कह्या पर जले जबराईल, चढ़ सकया न चौथे आसमान।
रूहें बसें तिन लाहूत में, जो दिल मोमिन अर्स सुभान।। २३ ।।

चौथे आसमान (लाहूत परमधाम) में जहां रूहें रहती हैं और जहां जबराईल नहीं जा सकता और कहता है कि मेरे पर (पंख) जलते हैं, इसलिए इन्हीं के दिल को अर्श कहा है।

मुरग अंदर बैठा खाक ले चोंच में, ना जबराईल तिन समान।
ए माएने मेयराज रूहें जानहीं, जो दिल मोमिन अर्स सुभान।। २४ ।।

हुक्म रूपी दरख्त के ऊपर श्यामा महारानी की सूरत रूपी मुर्ग चोंच में खाक (मिट्टी का तन) लेकर बैठे हैं। जबराईल उनके झूठे तनों के समान भी नहीं है। यह भेद रूहें बताएंगी। इन्हीं के दिल को अर्श कहा है।

पोहोंचे महंमद मेयराजमें, दो गोसे फरक कमान।
इत रूहें रहें दरगाह मिने, जो दिल मोमिन अर्स सुभान।। २५ ।।

मुहम्मद साहब दर्शन करने खुदा के सामने पहुंचे। इनके बीच में एक कमान के दोनों किनारों जितना फासला रहा। यह वह पवित्र स्थान है जहां रूहें रहती हैं। इन्हीं के दिल को अर्श कहा है।

नोट : कमान के दो किनारे—एक तन श्यामाजी का और दूसरा तन श्री प्राणनाथजी का।

Nijanand App

नब्बे हजार हरफ कहे नबी को, तामें कछू गुझ रखाए रेहेमान।
सो माएने जाहेर किए, जो दिल मोमिन अर्स सुभान।। २६ ।।

रसूल साहब को नब्बे हजार हरफ खुदा ने कहे। उसमें से कुछ गुझ (गुह्य) रखवाए। उनके भेद भी यह मोमिन जिनके दिल को अर्श कहा है, बताएंगे।

किए आपसमें रूहें गवाही, हकें अपनी जुबान।
याको जाने दिल हकीकी, जो दिल मोमिन अर्स सुभान।। २७ ।।

इश्क रब्द में श्री राजजी महाराज ने अपनी जबान से कहा था कि रूहो! तुम आपस में गवाह रहना। इसको हकीकी दिल वाले ही जानते हैं, इसलिए इनके दिल को अर्श कहा है।

दिया जवाब रूहों हक को, ए सुकन दिल बीच आन।
ए रूहें रहें हक हजूर, जो दिल मोमिन अर्स सुभान।। २८ ।।

रूहों ने हक को खिलवत में जवाब दिया था। यह बातें भी उन्हीं को याद हैं जो हक के सामने रहती हैं, इसलिए इनके दिल को अर्श कहा है।

कह्या मोतिन के मोंहों कुलफ, ए माएने तोड़त पढ़ों गुमान।
ए अर्स तन रूहें जानहीं, जो दिल मोमिन अर्स सुभान।। २९ ।।

मेयराजनामा में मोतियों (रूहों) के मुंह पर कुफ्ल (ताला) लगा कहा है। यहां के काजी लोग अहंकार में उल्टे अर्थ करते हैं। इसके अर्थ को रूहें ही जानती हैं, इसलिए इनके दिल को अर्श कहा है।

पोहोंच्या मेयराज में गुनाह मोमिनों, ए सुन उरझे मुसलमान।
ठौर गुन्हे न पोहोंच्या जबराईल, ए जाने दिल मोमिन अर्स सुभान।। ३० ।।

मेयराजनामा में लिखा है मोमिनों को गुनाह लगा। यह वचन सुनकर दुनियां के मुसलमान उलझन में पड़े हैं। जहां जबराईल नहीं पहुंच सका उस घर में गुनाह कैसा? इस भेद को मोमिन ही जानते हैं। इन्हीं के दिल को अर्श कहा है।

नोट : गुनाह जो लिखा है इश्क हमारा बड़ा है कहने का और खेल मांगने का गुनाह है।

हकें हाथ हिसाब लिया मोमिनों, तोड़या गुमान दे नुकसान।
तित बैठे अपना अर्स कर, ए दिल मोमिन अर्स सुभान।। ३१ ।।

श्री राजजी महाराज ने मोमिनों का हिसाब अपने हाथ में लिया तथा अर्श का गुमान, कि इश्क हमारा बड़ा है, को तोड़कर खेल में भेज दिया (अर्श छीनकर माया दी, यह नुकसान दिया)। खेल में भी आकर मोमिन के दिल को अपना अर्श कर बैठे, इसलिए इन्हीं के दिल को अर्श कहा है।

पोहोंची तकसीर रूहें अर्स में, हके फुरमाया फुरमान।
तित दूजा कोई न पोहोंचिया, बिना दिल मोमिन अर्स सुभान।। ३२ ।।

हक ने कुरान में फरमाया है कि रूहों को उस अर्श में जहां आज दिन तक मोमिनों के सिवाय कोई पहुंचा नहीं, गुनाह लगा, इसलिए इनके दिल को अर्श कहा है।

आसिक नाचे अर्स अजीम में, दूजा नाच न सके इन तान।
और राहै में जलें आवते, बिना दिल मोमिन अर्स सुभान।। ३३ ।।

ऐसे आशिक मोमिन अर्श में नाचते हैं तथा उनके सिवाय और कोई नाच नहीं सकता। बिना मोमिन के बाकी सब रास्ते में ही जल जाएंगे, इसलिए इनके दिल को अर्श कहा है।

Nijanand App

जो गिरो भाई कहे महंमद के, ताको इस्कै में गुजरान।
वाको एही फैल एही बंदगी, जो दिल मोमिन अर्स सुभान।। ३४ ।।

जिस जमात को मुहम्मद ने अपना भाई कहा है, वह खुदा के इश्क में ही मग्न रहते हैं। उनकी यही रहनी, यही बन्दगी है, जिनके दिल को अर्श कहा है।

एही खासलखास गिरो महंमदी, जाकी बंदगी इस्क ईमान।
इनों फैल ऊपर का ना रहे, जो दिल मोमिन अर्स सुभान।। ३५ ।।

यही मुहम्मद (श्री श्यामाजी) की खासल खास जमात है जिनकी बन्दगी इश्क और ईमान है। वह ऊपर का दिखावा नहीं करते। उन्हीं मोमिनों का दिल सुभान का अर्श है।

दूजा जले इन राह में, ए वाहेदत का मैदान।
तीन सूरत महंमद या रूहें, ए एकै दिल मोमिन अर्स सुभान।। ३६ ।।

दूसरा इस रास्ते में ही जल जाएगा। यही खुदा की रूहों की एकदिली का घर है। जहां पर बसरी, मलकी और हकी मुहम्मद की तीनों सूरत और रूहें एक दिल होकर रहती हैं। यही सुभान का अर्श है।

महंमद क्यों ल्याए खासी उमत, इन बीच जिमी हैवान।
ए उमत जाने इन स्वाल को, जो दिल मोमिन अर्स सुभान।। ३७ ।।

मुहम्मद (श्यामा महारानी) ऐसी जमात को इस पशुओं (जो धर्मविहीन लोग हैं) की धरती पर क्यों लाए? इस सवाल का जवाब भी मोमिन जानते हैं, जिनके दिल को अर्श किया है।

गलित गात अंग भीगल, ए दिल हकीकी गलतान।
ए वाहेदत हक हादी रूहें, जो दिल मोमिन अर्स सुभान।। ३८ ।।

यह हकीकी दिल वाले मोमिन जो खुदा के प्रेम में सराबोर होकर मग्न रहते हैं, वही श्री राजजी, श्यामाजी और रूहें एक तन हैं। इनके दिलों को अर्श कहा है।

बका तरफ कोई न जानत, पढ़े ढूंढ़ ढूंढ़ हुए हैरान।
सो बका हदें सब बेवरा किया, जो दिल मोमिन अर्स सुभान।। ३९ ।।

परमधाम कहां है कोई नहीं जानता था। पढ़े लिखे ढूंढ़-ढूंढ़कर हैरान हो गए। उस परमधाम के कुल पच्चीस पक्षों का वर्णन (ब्योरा) वही बता सकते हैं जिन मोमिनों का दिल अर्श है।

अर्स बका के बयान की, हुती न काहू सुध सान।
सो जरे जरा जाहेर करी, ए दिल मोमिन अर्स सुभान।। ४० ।।

अखण्ड परमधाम के वर्णन की किसी को सुध नहीं थी। वहां की गली-गली का वर्णन मोमिनों ने अब कर दिया। उनका दिल अर्श कहा है।

लिखी हकें इसारतें रमूजें, सो किन खोली न फिरस्ते इंसान।
सो दुनी सब बेसक हुई, ए दिल मोमिन अर्स सुभान।। ४१ ।।

हक ने जो इसारतें (इशारे) और रमूजें (रहस्य) कुरान में लिखी हैं उनको कोई भी इन्सान या देवी-देवता खोल नहीं सका। अब उनके मोमिनों की कृपा से दुनियां को सब जानकारी मिली। उनका दिल अर्श कहा है।

Nijanand App

रूह अल्ला की किल्ली से, खुले बका द्वार देहेलान।
ए तीन सूरत कही महंमद की, जो दिल मोमिन अर्स सुभान।।४२ ।।

श्यामा महारानी की चाबी (तारतम ज्ञान) से मुहम्मद की तीन सूरतों—बसरी, मलकी और हकी ने अखण्ड द्वार खोले हैं। मोमिनों का दिल अर्श है।

तो हुई दुनी सब हैयाती, जो उड़ाए दिया उनमान।
पट खोले महंमद भिस्त के, जो दिल मोमिन अर्स सुभान।।४३ ।।

जब दुनियां के अटकली ज्ञान को मिटाकर आखिरी मुहम्मद (श्री प्राणनाथजी) ने बहिश्त के दरवाजे खोल दिए तब सब दुनियां अखण्ड हुई। मामिनों के दिल में खुदा (पारब्रह्म) विराजमान हैं।

सब जिमी पर सिजदा, किया फिरस्ते घस पेसान।
पर होए न हकीकीं दिल बिना, ए दिल मोमिन अर्स सुभान।।४४ ।।

अजाजील (भगवान विष्णु) ने सारी दुनियां पर माथा रगड़-रगड़कर सिजदा बजाया, परन्तु हकीकी दिल वाले मोमिनों के समान अजाजील नहीं हो सका, क्योंकि मोमिनों का दिल अर्श है।

कलमा निमाज रोजा दिल से, दे जगात आप कुरबान।
करे हज बका हमेसगी, ए दिल मोमिन अर्स सुभान।।४५ ।।

कलमा (तारतम), नमाज (आरती), रोजा (समर्पण), जकात (सेवा में धन खर्चना) तथा अखण्ड परमधाम का चितवन करना—यह सब सच्चे दिल से करने वाले ही अर्श दिल मोमिन हैं।

जिन चांद नूर देख्या महंमदी, सोई जाने रोजे रमजान।
न जाने दिल मुरदा मजाजी, ए जाने दिल मोमिन अर्स सुभान।।४६ ।।

जिन्होंने मुहम्मदी चांद के नूर (श्यामा महारानी-देवचन्द्रजी) से तारतम ज्ञान पा लिया, वही रोजा रमजान समझते हैं। झूठे दिल वाले इसे नहीं समझते। इसको मोमिन ही जानते हैं जिनका दिल अर्श है।

सुध ना रोजे रमजान की, ना चांद सूरज पेहेचान।
करें सरीकी गिरो रबानी, जो दिल मोमिन अर्स सुभान।।४७ ।।

दुनियां के लोगों को रमजान के रोजे (धनी पर समर्पण होना) की खबर नहीं है और न उन्हें चन्द्रमा के समान देवचन्द्रजी (श्यामा महारानीजी) तथा सूर्य के समान श्री प्राणनाथजी के स्वरूप की पहचान है। वह उन मोमिनों, जिनके दिल को अर्श कहा है, की बराबरी करते हैं।

जब ले उठसी रूहें लुदंनी, तब होसी सब पेहेचान।
दई हैयाती सबन को, जो दिल मोमिन अर्स सुभान।।४८ ।।

जब तारतम वाणी से रूहें जागृत होकर उठ बैठेंगी तब सबको पहचान हो जाएगी। यह सारे संसार को अखण्ड करेगी। यही मोमिन हैं जिनके दिल को अर्श कहा है।

ईसे आब हैयाती पिलाइया, काढ़या कुफर जिमी आसमान।
दीन एक किया सब इसलाम, ए दिल मोमिन अर्स सुभान।।४९ ।।

श्री देवचन्द्रजी (श्यामा महारानी) ने अखण्ड तारतम ज्ञान लाकर दुनियां (चौदह तबक) का कुफर (अन्धकार) मिटाया और सबको एक पारब्रह्म पर सिजदा कराया। यही मोमिन हैं जिनके दिल को अर्श कर सुभान बैठे हैं।

Nijanand App

सेहेरग से हक नजीक, कह्या खासलखास मकान।
इत हिसाब इत कयामत, जो दिल मोमिन अर्स सुभान।।५०।।

इन्हीं मोमिनों की शहेरग (सांस वाली नाड़ी) से भी नजदीक पारब्रह्म है। यही खासल खास परमधाम के रहने वाले हैं। यही सबका हिसाब करके बहिश्तों में अखण्ड करेंगे, इसलिए इन मोमिनों के दिल को ही हक ने अर्श बनाया है।

कहे महंमद सिफत उमत की, करें अपने मुख मेहेरबान।
सोई जाने जामें हक इलम, ए दिल मोमिन अर्स सुभान।।५१।।

रसूल मुहम्मद कहते हैं कि खुदा परवरदिगार अपने मुखारबिन्द से इन मोमिनों की जमात की सिफत (प्रशंसा) करते हैं। इस बात को वही जानते हैं जिनके पास हक का इलम है और इन्हीं के दिल को अर्श कर खुदा बैठे हैं।

।। प्रकरण ।। २३ ।। चौपाई ।। ७३३ ।।

सनंध–रसूल साहेब की पेहेचान बातूनी

केहेती हों मोमिन को, सुनसी सब जहान।
माएने गुझ या जाहेर, कोई ले न सक्या फुरमान।।१।।

श्री महामतिजी कहती है कि मैं मोमिनों को कहती हूं पर सारा संसार सुनेगा। इस कुरान के जाहिरी या छिपे रहस्य को आज दिन तक कोई नहीं ले सका।

जाहेर माएने कलमें के, रसूलें कहे समझाए।
सो भी कोई न ले सक्या, तो क्यों देऊं बातून बताए।।२।।

रसूल साहब ने कलमे के जाहिरी अर्थ भी बताए। पर उसे भी कोई नहीं ले सका तो मैं उसके गूढ़ रहस्य कैसे बता दूं।

नेक तो भी कहूं जाहेर, मेरे मोमिनो के कारन।
अंतर मैं ना कर सकों, अर्स रूहें मेरे तन।।३।।

मोमिनों के वास्ते फिर भी थोड़ी-सी पहचान कराती हूं। मैं मोमिन से अन्तर नहीं कर सकती, क्योंकि मोमिन मेरे परमधाम के तन हैं।

जाहेर कह्या सो देखाइया, बातून जाहेर कर देऊं तुम।
आगूं अर्स रूहें मेले मिने, देखाऊं बका वतन खसम।।४।।

पहले कुरान के अर्थ जाहिर कर दिए हैं। अब बातूनी (बातिन) अर्थ भी जाहिर कर देती हूं। आगे अर्श की रूहों का मेला होगा जिसमें अखण्ड घर की और खसम की पहचान करा दूंगी।

जिन जानो बिना कारने, खेल जो रचिया एह।
ए माएने गुझ फुरमान के, समझ लीजो दिल दे।।५।।

यह न समझना कि किसी कारण के बिना यह खेल बनाया है। यही कुरान का गूढ़ रहस्य है। दिल देकर समझ लेना।

नूर पार थें रसूल आवहीं, ए देखो हकीकत।
हक भेजे अपना फुरमान, आगे आलम तो गफलत।।६।।

अक्षर पार अक्षरातीत अपने परमधाम से रसूल भेजेंगे। इस हकीकत को समझो उसके हाथ रूहों के लिए अपना फरमान भेजेंगे। यह दुनियां तो फानी है।

Nijanand App

दूसरा तो कोई है नहीं, ए ख्वाबी दम सब जहान।
तो रसूल आया किन वास्ते, हक पे ले फुरमान।। ७ ।।

यह सारी दुनियां तो फानी है और दूसरा कोई है नहीं, तो रसूल किसके लिए धनी से फरमान लेकर आए?

ए न आवे ख्वाबी दम पर, अपना नूरी जेह।
देखो आंखें दिल खोलके, कोई मतलब बड़ा है ऐह।। ८ ।।

यह नूरी फरिश्ते, संसार के जीवों के लिए नहीं आएंगे। दिल की आंखों को खोलकर इस हकीकत को देखो। इसमें बड़ा राज (रहस्य) छिपा है।

दुनियां कहे ए हम पर, ल्याया है किताब।
ऐसे रसूल को तो कहें, जो बोलत मिने ख्वाब।। ९ ।।

मुसलमान जाहिरी कहते हैं कि रसूल साहब हमारे वास्ते कुरान लेकर आए हैं। यह रसूल साहब को ऐसा इसलिए कहते हैं कि कहने वाले फानी दुनियां के बन्दे हैं।

क्यों मुख ऐसा बोलहीं, जो समझे होंए कागद।
ना सुध रसूल ना फुरमान, तो यों कहें सब्द।। १० ।।

यदि उन्होंने कुरान को समझा होता तो वह अपने मुंह से ऐसा न बोलते। उन्हें तो न रसूल की पहचान है न कुरान की, इसलिए ऐसे शब्द बोलते हैं।

आसमान जिमी के लोक को, अर्स बका नाहीं खबर।
तो तिनका कासिद महंमद, होए अर्स से आवे क्यों कर।। ११ ।।

इस चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड को अखण्ड घर की खबर नहीं है, तो उनके वास्ते कासिद (डाकिया) बनकर घर (परमधाम) से रसूल साहब क्यों आएंगे?

बेसहूर ऐसी दुनियां, माहें अबलीस आदम नसल।
तो कहे महंमद को कासिद, जो लानत ऊपर अकल।। १२ ।।

दुनियां बड़ी नासमझ है क्योंकि आदम (नारायण) की औलाद है। इनके दिलों पर शैतान (नारद) बैठा है, इसलिए मुहम्मद को कासिद (डाकिया) कहते हैं। इनकी अक्ल को धिक्कार है।

सो घर कह्या दुनी का, जो फुरमाने कह्या मुरदार।
तो आदम काढ्या भिस्त से, ए दादा आदमियों सिरदार।। १३ ।।

जिसको कुरान में नाचीज कहा है (फानी कहा है) वही दुनियां का घर है। इसी वास्ते आदम को बहिश्त से निकालकर दुनियां में भेज दिया है। यही (नारायण) दुनियां वालों का दादा है।

मोर सांप जिद ले निकस्या, और भिस्त सेंती सैतान।
हिरस हवा साथ आदम, लोक ताए कहें मुसलमान।। १४ ।।

मोर और सांप चौकीदारों को धोखा देकर शैतान ने बाबा आदम को बहिश्त से बाहर निकलवा दिया। अब यही बाबा आदम अपनी चाहनाओं में गर्क हैं। संसार वाले लोग बाबा आदम को ही यकीन वाला मुसलमान कहते हैं।

Nijanand App

इन आदम की औलाद, मारी अजाजीलें लानत ले।
तिन सब दिलों पातसाह, हुआ अजाजील ए।। १५ ।।

इस बाबा आदम की औलाद (नारायण के जगत के इन्सान) को अजाजील फरिश्ता (भगवान विष्णु) आगे बढ़ने नहीं देता, क्योंकि उसे लानत लगी है, इसलिए दुनियां के दिलों पर शैतान अबलीस की बादशाही (अधिकार) है।

मोमिन उतरे नूर बिलंद से, जो कहे भाई महंमद के।
महंमद आया इनों पर, खेल किया इनों वास्ते।। १६ ।।

मोमिन जो मुहम्मद के भाई कहलाते हैं वह परमधाम से उतरकर खेल में आए हैं। इनके वास्ते ही यह खेल बना है और इन भाइयों के वास्ते ही मुहम्मद रसूल बनकर आए हैं।

महंमद कहे मैं उनों से, ओ मुझ से जानो तुम।
मुरदार करी जिनों दुनियां, करे बंदगी हजूर कदम।। १७ ।।

मुहम्मद कहते हैं कि मैं मोमिनों में से ही हूं और वह मेरे में से हैं, यह तुम जान लो। उन्हीं मोमिनों ने दुनियां को नाचीज समझकर छोड़ दिया है और पारब्रह्म के चरणों में बन्दगी करते हैं।

महंमद आया वास्ते मोमिन, ले हक पे फुरमान।
सब दुनियां करी एक दीन, भिस्त दई सब जहान।। १८ ।।

इन्हीं मोमिनों के लिए हक से मुहम्मद कुरान लेकर आए हैं। इनके द्वारा सारी दुनियां को एक खुदा का पूजक बनाकर बहिश्तों में अखण्ड करना है।

ए जो खेल कबूतर, कहे अर्स से आया रसूल।
सो कहे हमारा रसूल, दोजख में जले इन भूल।। १९ ।।

यह माया के जीव खेल के कबूतर की तरह हैं। जो अर्श से आए रसूल को अपना कहते हैं और इसी कारण वह दोजख की आग में जलेंगे।

पढ़े कलाम अल्लाह को, ले माएने अपनी अकल।
जो कही मुसाफें मुरदार, ताए छोड़े न दुनी एक पल।। २० ।।

यह दुनियां के जीव अल्लाह के कलाम को (कुरान को) अपनी अक्ल से पढ़ रहे हैं। जिस चीज को कुरान ने नाचीज समझकर छोड़ने को कहा उसे यह लोग एक पल के लिए भी नहीं छोड़ते।

किस्सा लिख्या अजाजील का, किया सिजदा सब जिमी पर।
तिन मारी राह सब दुनी की, इन ए फल पाया क्यों कर।। २१ ।।

एक प्रश्न है? जिस अजाजील ने सारी जमीन पर खुदा के नाम का सिजदा किया, उसने सिजदे के बदले में सारी दुनियां की राह को क्यों बन्द किया? उसे यह दण्ड क्यों मिला?

कोई केहेसी ए फल गया गुमाने, पर सो दोजख जले गुमान।
फल एता बड़ा बंदगी का, खोवे नहीं मेहेरबान।। २२ ।।

कोई शायद यह कहे कि अहंकार के गुनाह के कारण यह दण्ड मिला है तो गुमान के लिए तो उसे दोजख में जलना चाहिए। बन्दगी का इतना बड़ा फल मेहरबान खुदा किसी का गंवा नहीं सकते।

Nijanand App

दो अंगुल जिमी छोड़ी नहीं, इन सकसे सिजदे बिगर।
एती एके बंदगी क्यों होवहीं, तुम क्यों न देखो दिल धर।। २३ ।।

फरिश्ते ने सिजदे के बिना दो अंगुल भी जमीन नहीं छोड़ी। इतनी बड़ी दुनियां पर एक आदमी सिजदा कैसे बजा सकता है? तुम इस बात को दिल में विचार करके क्यों नहीं देखते?

ए बंदगी न होए कई करोरों, ऐसी हक पर करी बेसुमार।
तिन बंदगी बदला ए पाया, राह देत सबों की मार।। २४ ।।

ऐसे सिजदे तो करोड़ों लोग भी मिलकर नहीं कर सकते जैसे इसने हक पर बेशुमार किए हैं। इस सिजदे के बदले में यह फल पाया कि अजाजील सबका रास्ता रोक बैठे हैं।

ऐसी बंदगी खोए के, हक क्यों दे फल नुकसान।
ए माएने जाहेर तो कहे, जो अजाजीलसों नहीं पेहेचान।। २५ ।।

ऐसी बेशुमार बन्दगी करने वाले को खुदा नुकसान वाला फल क्यों देंगे? यह माएने तो जाहिर इसलिए कहे हैं कि दुनियां अजाजील को नहीं पहचानती।

ना पेहेचानें आपको, ना पेहेचानें हादी हक।
ना देखें अजाजील दिल पर, जो डालसी बीच दोजक।। २६ ।।

दुनियां न अपने आपको पहचानती है, न हादी (श्यामाजी) को और न हक को। न यह जानती है कि उनके दिलों पर अजाजील बैठा है जो उन्हें दोजख में डालेगा।

अजाजील जीव दुनी का, ए जो कह्या माहें सब।
किया भूल पत्थर पर सिजदा, कहे हम किया ऊपर रब।। २७ ।।

अजाजील दुनियां का जीव है जो सबके अन्दर बैठा है। दुनियां पत्थर पर सिजदा करती है और भूल से कहती है कि हमने खुदा पर सिजदा किया है।

बाहेर देखावें अबलीस, वह कह्या बैठा दिल पर।
कहे दोजख जलसी अबलीस, आप पाक होत यों कर।। २८ ।।

दुनियां समझती है कि शैतान बाहर से आएगा। वह तो दिल पर बैठा है। दुनियां अपने को पाक समझती है और कहती है कि शैतान को दोजख में जलना होगा।

अब सुध होसी सबन को, खुली बातून हकीकत।
इमाम रूहों पे लुदंनी, जित अर्स हक मारफत।। २९ ।।

अब कुरान के हकीकत के भेद खुले हैं। इमाम और रूहों के पास हकीकी ज्ञान है जिससे उनको घर की तथा हक की पहचान हुई है।

दिल अर्स न होए बिना मोमिन, जो पढ़े चौदे किताब।
सब जिमिऐं करे सिजदा, दिल पावें न अर्स खिताब।। ३० ।।

मोमिनों के दिल के बिना और किसी का दिल खुदा का अर्श नहीं हो सकता। चाहे चौदह तबकों के लोग कुरान पढ़ें और सारी जमीन पर सिजदा करें, तो भी अर्श दिल का खिताब नहीं पा सकते।

हक हादी ना चीन्ह सके, ना कछू चीन्हे मोमिन।
भूले मोमिन का सिजदा, तो हुई दस बिध दोजख तिन।। ३१ ।।

जाहिरी मुसलमान हादी की, हक की और मोमिनों की पहचान नहीं कर सके। वह मोमिनों का सिजदा भी भूल गए, तो उनको दस तरह की दोजख की अग्नि में जलना पड़ा।

Nijanand App

नोट : दस तरह की दोजख का वर्णन कयामतनामा प्रकरण २२, चौपाई २४ से ३० तक में है।

फैल हाल न देखें अपने, कहें अजाजीलें फेरया फुरमान।
अपनी दोजख देवें औरों को, पर हक पे सब पेहेचान।। ३२ ।।

यह जाहिरी मुसलमान अपनी करनी और रहनी को भी नहीं देखते। अपने गुनाहों का फल और के मत्थे लगाते हैं और कहते हैं कि अजाजील ने फरमान फेरा था। इस प्रकार धोखा करते हैं, पर खुदा सबकी हकीकत जानता है।

ज्यों फरेब देवें दुनी को, त्यों हक को देने चाहें।
पर हक की आग जो दोजख, फैल माफक चुन ले ताए।। ३३ ।।

जिस तरह से दुनियां को धोखा देते हैं उसी तरह से खुदा को भी धोखा देना चाहते हैं, पर हक के पास इस तरह के गुनाहों की सजा है। उनकी करनी के माफिक उनको सजा मिलेगी।

कहें हक को सूरत नहीं, तो फुरमान भेज्या किन।
दुनी सुध नहीं भेज्या किन पर, करसी कौन रोसन।। ३४ ।।

जाहिरी मुसलमान कहते हैं कि हक की सूरत नहीं है, तो फिर फरमान किसने भेजा था? यह फरमान किनके लिए भेजा और कुरान को कौन जाहिर करेगा?

एती सुध न हमको, खोलसी कौन हकीकत।
कौन करसी कयामत जाहेर, कौन केहेसी हक मारफत।। ३५ ।।

इतनी भी सुध हमको नहीं है तो हकीकत के भेद कौन खोलेगा? फिर कयामत को जाहिर कौन करेगा और हक के मारफत ज्ञान की पहचान कौन कराएगा?

माएने न पावें सब्द के, बड़े सब्द रसूल।
पर दम न समझें ख्वाब के, जाको जुलमत मूल।। ३६ ।।

रसूल साहब के एक शब्द के माएने नहीं जानते। कुरान में तो बड़ी बातें कहीं हैं, पर इस फानी दुनियां के जाहिरी मुसलमान उनके अर्थ नहीं जानते हैं, क्योंकि उनका मूल निराकार है और सपने की दुनियां है।

ए माएने सो लेवे सब्द के, जो रूह अर्स की होए।
एक रसूल आया नूर पार से, और ख्वाब दुनी सब कोए।। ३७ ।।

इस कुरान के शब्दों के माएने वही समझेंगे जो रूहें परमधाम की होंगी। एक रसूल साहब ही अक्षर के पार परमधाम से आए हैं। बाकी दुनियां तो सब सपने की है।

क्यों कर आवे झूठ पर, जो अर्स बका का होए।
ए गुझ माएने मोमिन बिना, क्यों लेवे हवा दम सोए।। ३८ ।।

सपने की दुनियां वालों पर अखण्ड परमधाम से रसूल क्यों आएंगे? इसकी हकीकत को भी अर्श के मोमिन के बिना यह फानी दुनियां के लोग नहीं समझ सकते।

दुनियां कही सब ख्वाब की, सो नाहीं झूठ सब्द।
तबक चौदे हद के, हक बका पार बेहद।। ३९ ।।

यह सारी दुनियां सपने की है। इसमें कोई शक की बात नहीं है। चौदह तबक (लोक) निराकार के अन्दर हैं, फानी हैं, परन्तु हक का घर बेहद के परे अखण्ड परमधाम में है।

Nijanand App

चौदे तबक कहे फरेब के, काहूं न किसी की गम।
ना गम रसूल फुरमान, कहां हक कौन हम।।४०।।

चौदह तबकों की दुनियां फानी है। यहां कोई भी किसी को पहचानता नहीं। रसूल साहब के कुरान की पहचान नहीं है। यह नहीं जानते हैं कि कहां खुदा और कहां हम फानी लोग?

पैगंमर यों पुकारिया, मैं अल्ला का रसूल।
संग मेरे सो चले, जो चीन्हे सब्द घर मूल।।४१।।

रसूल साहब ने पुकार कर कहा कि मैं अल्लाह का पैगम्बर हूं। मेरे साथ वही चलेगा जो अपने निज घर परमधाम की वाणी को पहचानता है।

मेरा वतन नूर के पार है, हवा से ख्वाबी दम।
इनों को मेरी खातिर, देसी भिस्त खसम।।४२।।

रसूल साहब कहते हैं कि मेरा घर अक्षर के पार है। सारी दुनियां निराकार (फानी) से है। मेरे वास्ते ही फानी दुनियां के लोगों को खुदा बहिश्त में कायम करेगा।

ए छल मोहोरे झूठ के, तिन पर क्यों आवे नूर जात।
ए दिल के फूटे यों तो कहें, जो पाई न नबी की बात।।४३।।

यह छल के मोहोरे (मोहरे) ब्रह्मा, विष्णु, महेश भी झूठ के हैं, तो इनके लिए नूरी रसूल क्यों आएगा? दिल के अन्धे अज्ञानी ऐसा इसलिए कहते हैं, क्योंकि इन्होंने रसूल साहब के कुरान को समझा नहीं है।

नूरी हक का तिन पर भेजिए, जो कोई नूरी हक का होए।
पर झूठे ख्वाबी दम पर, नूर पार थें न आवे कोए।।४४।।

नूरी फरिश्ता तो वहीं भेजा जाता है, जहां पर नूरी लोग रहते हों, पर इस संसार के झूठे जीवों के लिए परमधाम से कोई नहीं आता।

ए न आवे ख्वाबी बुत पर, जाको नहीं हक सों अन्तर।
पर जिन आंख कान न अकल, सोए समझे क्यों कर।।४५।।

रसूल साहब और खुदा में कोई अन्तर नहीं है, इसलिए यह संसार के जीवों के लिए नहीं आएंगे पर जिनकी आंख, कान और अक्ल नहीं है, वह इस बात को कैसे समझेंगे?

ऐसा हलका कहे रसूल को, सो सुन होत मोहे ताब।
पर दोस देऊं मैं किनको, आगे तो दुनियां ख्वाब।।४६।।

श्री महामतिजी कहती हैं कि यह सपने के लोग रसूल साहब को इतना छोटा समझ बैठे हैं। ऐसा सुनकर मुझे गुस्सा आता है, पर मैं दोष किसको दूं? आगे तो दुनियां सपने की है।

और जो टेढ़ा कहे रसूल को, मैं तिनका निकालूं बल।
पर गुस्सा करूं मैं किन पर, आगे तो सब मृग जल।।४७।।

जो कोई रसूल साहब को उलटे शब्द कहता है, मैं उनकी अकड़ को सीधी कर दूंगा, पर गुस्सा करूं तो किस पर? आगे तो दुनियां मृग जल के समान है। कुछ है ही नहीं।

Nijanand App

ए अपना नूरी तहां भेजिए, जो होवे अर्स मोमिन।
सो ए रूहें हम मोमिन, हक मासूक के तन।। ४८ ।।

अपना नूरी फरिश्ता तो वहीं भेजना चाहिए जहां अपनी नूरी रूहें (मोमिन) हों। वह रूह मोमिन हम ही हैं और हम ही अपने प्यारे माशूक हक श्री राजजी महाराज के तन हैं, अर्थात् रसूल साहब हमारे वास्ते आए हैं।

सो भी इत जाहेर कह्या, पैगंमर पुकार।
रूहें अर्स से उतरी, रस इस्क लिए सिरदार।। ४९ ।।

रसूल साहब ने पुकार कर यहां यह भी कहा कि रूहें परमधाम से उतरी हैं और इनके मालिक जामे इश्क लेकर आए हैं।

ए माएने सो समझहीं, जो नूरजमाल से होए।
ए वतनी रूहें मोमिन, और ख्वाबी दम सब कोए।। ५० ।।

इन बातों के माएने वही समझेंगे जो नूरजमाल (श्री राजजी महाराज) के अंग होंगे। इनके अंग ही घर की रूहें (मोमिन) हैं और बाकी सब दुनियां सपने की है।

मोमिन उतरे नूर बिलंद से, जाको एतो बड़ो मरातब।
करसी पाक सब जिमी को, ताकी सरभर न होए किन कब।। ५१ ।।

मोमिन नूर बिलन्द (परमधाम) से उतरे हैं, इसीलिए इनका बहुत बड़ा दर्जा है। यह सारी दुनियां को निर्मल बनाएंगे। इनकी बराबरी कोई नहीं कर सकता।

दुनी दिल कह्या सैतान, दिल मोमिन अर्स हक।
सो सरभर क्यों इनकी करे, जाए आगे पीछे दोजक।। ५२ ।।

दुनियां के दिलों में शैतान (नारद) की बैठक है और मोमिनों के दिल में हक की बैठक है, इसलिए दुनियां वाले जिनके चारों तरफ गुनाहों की दोजख है, वह मोमिनों की बराबरी नहीं कर सकते।

बड़ी बड़ाई मोमिनों, जाके बड़े अंकूर।
तो इन पर रसूल भेजिया, अपना अंगी नूर।। ५३ ।।

मोमिनों की महिमा बहुत बड़ी है। इनकी निसबत (मूल सम्बन्ध) परमधाम (हक) से है, इसलिए उस खुदा ने (श्री राजजी महाराज) ने इनके वास्ते ही अपने अंग रसूल साहब को भेजा।

सो आए अब रूह मोमिन, जाको अर्स वतन।
ए फुरमान आया इनका, क्यों खुले माएने या बिन।। ५४ ।।

अब वह रूहें, जिनका घर परमधाम में है, खेल में आ गई हैं। यह कुरान इन्हीं के वास्ते ही आया है, इसलिए इस कुरान के अर्थ इनके बगैर कोई नहीं खोल सकेगा।

खेल किया जिन खातिर, सो आइयां देखन अब।
ए खेल अर्स रूहें देखहीं, और खेल है सब।। ५५ ।।

यह खेल जिनके लिए बनाया है वह रूहें देखने के वास्ते आ गई हैं। यह अर्श के मोमिन ही खेल देख रहे हैं। बाकी सब तो खेल है।

Nijanand App

कोई केहेसी खेल कदीम का, सो अब आइयां क्यों कर।
ए माएने गुझ वतन के, सो भी सब देऊं खबर।।५६ ।।

कोई यदि यह कहे कि यह खेल दुनियां तो हमेशा से है, परन्तु रूहें अब क्यों आईं? इस रहस्य के भेद भी तुम्हें सब बताती हूं।

खेल रचे खिन ना हुई, सो भी कहूं तुमें समझाए।
ए वतन के पाव पल में, कई पैदा फना हो जाए।।५७ ।।

इस खेल को बने हुए एक क्षण भी नहीं हुआ है। वह भी तुम्हें समझा देती हूं। उस परमधाम के चौथाई पल में ऐसे कई ब्रह्माण्ड बनकर मिट जाते हैं।

करी बाजी चौदे तबकों, रूहों देखलावने खसम।
सो रूहें तब न हुती, पेहेले तो न हुआ हुकम।।५८ ।।

रूहों को खेल दिखाने के लिए ही यह चौदह तबकों (लोकों) की दुनियां बनी है। जब रूहें यहां नहीं थीं तो उस समय इस ब्रह्माण्ड को भी बनाने का हुकम नहीं हुआ था।

कोई केहेसी रसूलें ना खोले, बिना हुकम माएने कुरान।
सो तो आप नबी खुद हुकम, याकी हम रूहों पें पेहेचान।।५९ ।।

कोई यह भी कहेगा कि रसूल साहब ने खुदा के हुकम के बिना कुरान के अर्थ नहीं खोले। रसूल साहब खुद हुकम के स्वरूप हैं। इसे हम रूहें जानती हैं।

जिन कोई कहे रसूल को, परदा खुद दरम्यान।
आसिक ए मासूक कह्या, सो बिन देखे मिले क्यों तान।।६० ।।

ऐसा कोई मत कहना कि रसूल और खुदा के बीच में कोई परदा है। श्री राजजी महाराजजी ने रसूल साहब को माशूक कहा है, यदि यह दोनों एक स्वरूप नहीं हैं तो एक जैसी बात कैसे बोलते हैं?

इन कुरान के माएने, जो खोलत रसूल तब।
तो इत आखिर इमाम, काहे को आवत अब।।६१ ।।

यदि इस कुरान के माएने रसूल साहब उस समय खोल देते तो इमाम मेंहदी साहब अब किस लिए आते?

जो खोलत रसूल माएने, तो खेल रेहेत क्यों कर।
जो अर्स अजीम करते जाहेर, तो तबहीं होती आखिर।।६२ ।।

यदि रसूल साहब उसी समय माएने खोल देते, तो यह खेल कैसे खड़ा रहता। यदि अर्श अजीम (परमधाम) को जाहिर कर देते तो उसी समय आखिरत हो जाती।

ताथें गुझ नबी न राखहीं, पर सुनने वाला न कोए।
तिन बखत ना रूहें बका की, तो गुझ अर्स जाहेर क्यों होए।।६३ ।।

यदि उस समय कोई सुनने वाला होता तो रसूल साहब कुरान के माएने खोल देते। उस समय अखण्ड परमधाम की रूहें यहां नहीं थीं तो कुरान की गुझ (गुह्य) बातें कैसे जाहिर होतीं।

एता भी रसूलें कह्या, रूहें मेरे न कोई संग।
एक हुकम अली बिना, ना मोमिन वतनी अंग।।६४ ।।

एक बात यह भी रसूल साहब ने कही कि मेरे साथ अर्श की रूहें नहीं हैं। केवल एक हुकम का स्वरूप अली ही (जोश धनी का) मेरे साथ है। परमधाम का कोई अंग (मोमिन) मेरे साथ नहीं है।

Nijanand App

तो मोहोलत कर पीछे फिरे, हम आवेंगे आखिर।
महंमद मेंहेदी रूह अल्ला, इन मोमिनों की खातिर।। ६५ ।।

तो रसूल साहब समय की मोहलत देकर वापस परमधाम चले गए और वायदा कर गए कि मैं आखिरत में मुहम्मद मेंहदी और रूह अल्लाह के साथ मोमिनों के वास्ते आऊंगा।

तो ए माएने ना खुले, रसूल मुख फुरमान।
चौदे तबक की दुनियां, सो इत हुई हैरान।। ६६ ।।

इसलिए रसूल साहब से उस समय कुरान के अर्थ नहीं खोले गए, इसलिए चौदह तबकों की दुनियां हैरान हुई कि रसूल साहब ने कुरान के भेद क्यों नहीं खोले।

नूर पार अर्स मोमिन, हुते ना तिन बखत।
तो महंमद मेंहेदी मोमिन, आए अर्स से आखिरत।। ६७ ।।

उस समय जब रसूल साहब आए थे, तो सारी रूहें जो अक्षर पार परमधाम में रहने वाली हैं, खेल में नहीं उतरी थीं, इसलिए आखिरत में जब मोमिन आए तो उनके लिए मुहम्मद (श्यामाजी) मेंहदी (श्री प्राणनाथजी) आए।

बात बड़ी मोमिन की, जिनके अर्स में तन।
ए रूहें दरगाह की, जिनको अर्स वतन।। ६८ ।।

मोमिन जिनके तन परमधाम में हैं, उनकी बहुत बड़ी बात है। यह रूह उस पाक दरगाह (पूज्य स्थान) की है और इनका घर परमधाम है।

अर्स खावंद एक मासूक, दूसरा नाहीं कोए।
और खेल सब नूरियों किया, यामें भी विध दोए।। ६९ ।।

अर्श में एक श्री राजजी महाराज, श्यामा जी, रूहें हैं और दूसरा कोई नहीं है। इस संसार की रचना नूरी फरिश्तों ने की है, जिसमें दो तरह के जीव हैं।

यामें अजाजील रूह असलू, दूजी रूह कुफरान।
तीसरा दम देखन का, ना कछूए हैवान।। ७० ।।

इसमें एक तो नारायण की रूह असल है, दूसरे सारा जगत विष्णु के पूजक, काफिर हैं और तीसरे जिनसे खेल चल रहा है, सब जगत के जीव पशु के समान हैं।

हैवान ना कछू तो कहे, जो उनको ना कछु बुध।
जो जाने ना वेद कतेब को, सो उसी दाखिल बेसुध।। ७१ ।।

उनको हैवान इसलिए कहा है कि वह बुद्धि हीन हैं। इन्हें वेद-कतेब का कुछ ज्ञान नहीं है, इसीलिए इनको बेसुध कहा है।

जो रूह अर्स अजीम की, सो मिले नहीं कुफरान।
ए बेवरा इमाम बिना, करे सो कौन बयान।। ७२ ।।

जो रूहें परमधाम की हैं उनका काफिरों से मेल नहीं हो सकता। इसकी हकीकत इमाम मेंहदी के बिना कौन बताएगा?

Nijanand App

सांचे सुख मोमिन के, अजाजील और सुख।
पर जो सुख मोमिन के, सो कहे न जाए या मुख।।७३ ।।

मोमिनों के सुख अखण्ड हैं। अजाजील का सुख बैकुण्ठ का है। जो मोमिनों के सुख हैं उनका बयान इस मुख से नहीं हो सकता।

अजाजील और काफर, तिनों भी सुख नेहेचल।
बरकत इन मोमिन की, साफ किए सब दिल।।७४ ।।

अजाजील (भगवान विष्णु) तथा काफिरों (भगवान विष्णु के पूजक) को भी अखण्ड सुख मिलेंगे। मोमिनों की कृपा से ही इनके दिल के संशय मिटेंगे।

करके साफ सबन को, भिस्त देसी सबन।
पर रूहों सुख हमेसगी, जहां मौला महंमद मोमिन।।७५ ।।

इन सबके दिलों को साफ करके सभी को अखण्ड बहिश्त में कायम करेंगे, परन्तु रूहों के सुख तो अखण्ड हैं, जहां श्री राजजी, श्यामाजी और मोमिन मिलकर सुख लेते हैं।

नूर सरूपें रसूल, हक आगे खड़ा हुकम।
मूल मेला महंमद रूहों का, सब बैठियां तले कदम।।७६ ।।

रसूल साहब नूर का स्वरूप धारण कर परमधाम में हक के सामने खड़े हैं। वहां श्यामाजी और सखियों, का मूल मेला है जहां सब सखियां श्री राजजी के चरणों के तले बैठी हैं।

नूर के एक पल में, इत इंड चले कई जाए।
ए भी मोमिनों खेल देखाए के, देसी सबे उड़ाए।।७७ ।।

अक्षर ब्रह्म के एक पल में यहां कई ब्रह्माण्ड बनकर मिट जाते हैं। इस ब्रह्माण्ड को भी मोमिनों को खेल दिखाकर उड़ा देंगे।

रूहें फरिस्ते वास्ते, खेल किया चौदे तबक।
दुनी सक लिए खेलत, किन तरफ न पाई बका हक।।७८ ।।

रूहों और फरिश्तों (ईश्वरी सृष्टि) के वास्ते चौदह लोकों का ब्रह्माण्ड बनाया है। इसमें जगत के जीव संशय में ही खेल रहे हैं और उनको अखण्ड परमधाम और श्री राजजी महाराज की खबर तक नहीं है।

सो सक भानी सब दुनी की, महंमद मेंहेदी ईसा आए।
अर्स कायम सूर हुआ रोसन, दिया काफरों कुफर उड़ाए।।७९ ।।

मुहम्मद मेंहदी और ईसा ने आकर सबके संशय मिटा दिए जिससे अखण्ड घर के ज्ञान (तारतम वाणी) के सूर्य का उजाला हुआ। इसने काफिरों के कुफ्र को मिटा दिया।

काफर रूह भी पाक होएसी, अंदर आग जलाए।
मोमिनों मुस्लिम खातिर, भिस्त जो देसी ताए।।८० ।।

काफिरों के जीव भी पश्चाताप की अग्नि से पाक साफ हो जाएंगे और मोमिनों के आने के कारण इनको भी अखण्ड बहिश्तों में कायमी दी जाएगी।

Nijanand App

बड़े नसीब रूहें अर्स की, जिन जावे खेल में भूल।
मोमिन वास्ते अर्स से, आए इमाम ईसा रसूल।।८१।।

रूहों के बड़े नसीब हैं यह खेल में भूल न जाएं, इसलिए इन मोमिनों के वास्ते ही परमधाम से इमाम मेंहदी, ईसा और रसूल साहब आए हैं। [(इमाम मेंहदी (श्री प्राणनाथजी) ईसा (श्री श्यामा महारानी) रसूल साहब (मुहम्मद)।]

ए सब हुआ मोमिनों खातिर, पेहेले भेज्या कागद।
ए तमासा देखाए के, उड़ाए देसी ज्यों गरद।।८२।।

यह सब खेल मोमिनों के लिए ही हुआ है। पहले कुरान को भेजा फिर खेल का तमाशा दिखलाकर इसे मिट्टी के समान मिटा दिया जाएगा।

जैसा खेल अव्वल का, ए जो रूहों देख्या ब्रह्मांड।
बरकत इन मोमिन की, सब दुनियां करी अखंड।।८३।।

यह पहला ब्रह्माण्ड ऐसा है जिसे रूहों ने देखा है। इन रूहों (मोमिनों) की कृपा से ही सब दुनियां अखण्ड होगी।

इन जुबां मैं क्यों कहूं, मोमिन अर्स अंकूर।
आया इमाम सबन का, किया जो परदा दूर।।८४।।

मोमिनों की निसबत (मूल सम्बन्ध) की महिमा मैं इस जबान से कैसे कहूं? यह अर्श के अंकुर हैं। अब सब के स्वामी इमाम मेंहदी आ गए हैं। यह सबके संशय मिटा देंगे।

ए जो नसीब मोमिन का, सो लिख्या मिने फुरमान।
पर जहान में गुझ जाहेर हुई, अब मोमिनों की पेहेचान।।८५।।

मोमिनों के ऐसे बड़े मरातबे (पद, गरिमा, महिमा) का वर्णन कुरान में है, परन्तु मोमिन कौन हैं, इसकी पहचान संसार में अब हुई है।

गिरो मोमिन नाम अनेक हैं, जुदे जुदे कहे नाम।
बोहोत नामों बुजरकियां, लिखी मांहें अल्ला कलाम।।८६।।

मोमिनों की जमात के बहुत सारे नाम और महिमा कुरान में अनेक तरह से लिखी हैं।

तारीफ ईसा मेंहेदी की, सो इन जुबां कही न जाए।
पेहेचान रसूल खुदाए की, अर्स वतन दिया बताए।।८७।।

ईसा (श्यामाजी) और इमाम मेंहदी (श्री प्राणनाथजी) की महिमा इस जबान से नहीं की जाती। इन्होंने रसूल के घर की तथा खुदा की सारी पहचान करा दी है।

तारीफ काजी कजाए की, क्यों कहूं या मुख।
नाबूद को कायम किए, दिए रूहों कायम सुख।।८८।।

इमाम मेंहदी जो कजा के दिन इन्साफ करेंगे उनकी तारीफ को इस मुख से कैसे वर्णन करूं? उस दिन फानी दुनियां को अखण्ड करेंगे तथा रूहों को परमधाम का अखण्ड सुख देंगे।

माएनें इन कुरान के, गुझ रही थी बात।
सो अर्स रूहें जाहेर हुई, सब जन में फैलात।।८९।।

कुरान के यह रहस्य आज दिन तक छिपे थे। अब परमधाम के मोमिन जाहिर हो गए हैं, इसलिए इसका ज्ञान अब सब संसार में फैल जाएगा।

Nijanand App

नाहीं तुम बराबरी, सो इन जुबां कही न जाए।
पर मुझे सुख तब होएसी, जब देऊं नैनों सब देखाए।। ९० ।।

हे सुन्दरसाथजी! तुम्हारी बराबरी कोई कर नहीं सकता और न उसके लिए कुछ कह सकता है, पर मुझे चैन तभी पड़ेगा जब सब दुनियां को तुम्हारा मरातबा (दर्जा) क्या है, आंखों से दिखा दूं।

ए किया तुम खातिर, समझ लीजो दिल मांहें।
रूहें मोमिन कदम तले, तित दूजा कोई नांहें।। ९१ ।।

हे मोमिनो! यह खेल तुम्हारे वास्ते किया। यह दिल में अच्छी तरह समझ लो। तुम तो श्री राजजी के चरणों तले मूल मिलावे में बैठे हो जहां दूसरा और कोई नहीं है।

।। प्रकरण ।। २४ ।। चौपाई ।। ८२४ ।।

सनन्ध–नबी नारायण की

कही कजा जो रसूलें, सो नेक सुनाई हम।
पर कहे कोई न समझया, अब कर देखाऊं तुम।। १ ।।

रसूल साहब ने जो कजा के दिन (इन्साफ के दिन) की बात कही थी उसे हमने थोड़ा सा बताया है, पर कहने से कोई समझ नहीं सका, इसलिए अब करके दिखाती हूं।

महंमद दीन देखाइया, और देखाया छल।
भी देखाऊं जाहेर, ज्यों छूट जाए सब बल।। २ ।।

मुहम्मद साहब ने कुरान में दीन को तथा इस छल रूपी संसार को कहा है। अब तुमको मैं जाहिर कर देती हूं जिससे सब संशय मिट जाएं।

अब छल को बल क्या करे, जब देखाऊं बका वतन।
निकाल देऊं जड़ पेड़ से, ल्याए नूर अर्स रोसन।। ३ ।।

जब मैं अखण्ड परमधाम की वाणी को जाहिर कर दूंगी तब माया की कुछ भी शक्ति नहीं चलेगी। मैं इसको जड़ से उखाड़ कर फेंक दूंगी। परमधाम की तारतम वाणी को जाहिर करूंगी।

फरेब की तो तुम सुनी, थिर चर चौदे तबक।
खेल खावंद जो त्रैगुन, सब सब्द बान पुस्तक।। ४ ।।

चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड के चर और अचर के छल की बात तुमने सुनी है। इस खेल के मालिक ब्रह्मा, विष्णु, महेश की सभी ग्रन्थों में महिमा गाई गई है।

बैकुंठ से पाताल लों, बनि आदम हैवान।
इन बीच की सब कही, ब्रह्मा रुद्र नारायन।। ५ ।।

बैकुण्ठ से पाताल तक जितने भी आदमी या जीव हैं इन सबकी हकीकत बताई है जिनमें ब्रह्माजी, शंकरजी और नारायण भगवान भी शामिल हैं।

अब सुनियो तुम मोमिनों, ए खेल तो कछुए नांहें।
पर कछुक तो देखत हो, जिन रहे संसे दिल मांहें।। ६ ।।

हे मोमिनो! अब तुम सुनो, यह खेल कुछ भी नहीं है, पर देखने में कुछ तो दिख रहा है। इस संशय को भी तुम्हारे दिल से निकाल देती हूं।

Nijanand App

जब जाग अर्स हक देखिए, ए नहीं खेल कछू तब।
पर जोलों हुकमें है खड़ा, तोलों क्यों होए झूठा अब।।७ ।।

जब जागकर अपने घर और श्री राजजी को देखें तो खेल कुछ भी नहीं है, परन्तु जब तक श्री राजजी के हुकम से यह खड़ा है तब तक इसे झूठा कैसे कहा जाए?

ए खेल झूठा जो देखहीं, सो तो सांचे हैं साबित।
तो कहा बड़ों की बुजरकी, जो झूठ न करहीं सत।।८ ।।

इस झूठे खेल को जो देख रहे हैं वह सच्चे तो हैं। फिर बड़ों का (मोमिनों का) बड़प्पन ही क्या रह गया जो इन झूठे जीवों को भी अखण्ड न करें।

जो सांचे सांचा देवहीं, तो कहा बड़ाई बुजरक।
पर खाकी बुत सत होवहीं, तो जानियों महंमद बरहक।।९ ।।

सच्चे मोमिनों को उनके सच्चे घर पहुंचाना कोई बड़प्पन (महानता) नहीं है। यदि इन जीवों को अखण्ड कर देंगे तो मुहम्मद की बातों को सत्य मानना।

महंमद आया नूर पार से, याही खेल के मांहें।
पर इन खेल में का नहीं, सो भी सक राखों नांहें।।१० ।।

मुहम्मद अक्षर के पार अक्षरातीत धाम से इस खेल में आए हैं, परन्तु वह इस खेल के नहीं हैं। यह भी संशय मिटा देती हूं।

नबी और नारायन की, कछुक कहूं पटंतर।
रसूल कहे नूरजमाल की, नहीं नारायन गम अछर।।११ ।।

रसूल साहब और नारायण में क्या अन्तर है? वह मैं बताती हूं। रसूल नूरजमाल की (अक्षरातीत की) बातें बताते हैं, जबकि नारायण को अक्षर तक की सुध (पहचान) नहीं है।

सो तेता ही बोलिया, जो गया जहां लों चल।
अपने अपने मुख से, जाहेर करें मजल।।१२ ।।

जिसकी पहुंच जहां तक है वह वहीं तक बोलते हैं। उन्होंने स्वयं अपने मुख से अपने ठिकाने को जाहिर कर दिया है।

सो सब्द लिखे हैं कागदों, आपे अपनी साख।
जो किन पाई दमड़ी, या किन लाखों लाख।।१३ ।।

शास्त्रों में जो शब्द लिखे हैं उनमें उनकी अपनी ही महिमा है। जिसने जैसा पाया है वैसा ही लिखा है।

मैं न किसी की कम कहूं, न किसी की कहूं बढ़ाए।
जो जैसा तैसा तिन, दोऊ कहूं दृढ़ाए।।१४ ।।

श्री महामतिजी कहती हैं कि मैं किसी की कम या ज्यादा नहीं कहती हूं। जो जैसा है, ठीक वैसे ही उसकी पहचान कराकर आपको दृढ़ कर देती हूं।

एते दिन ढांपे हते, सब्द सत असत।
सो अब जाहेर हुए, आई सबों की सरत।।१५ ।।

इतने दिन तक सच और झूठ की वाणी छिपी हुई थी। अब सबके जाहिर होने का समय आ गया है, अतः सब जाहिर हो गया।

Nijanand App

हकीकत हिंदुअन की, सो देखो चित ल्याए।
और जो मुस्लिम की, सो भी देऊं बताए।। १६ ।।

हिन्दू, मुसलमानों की हकीकत ध्यान से देखो। मैं दोनों की हकीक़त बताती हूं।

हिंदू जोड़ू जब करें, ले देवें मन के बंध।
जिन कोई छोड़े किनको, यों पड़ें गफलत फंद।। १७ ।।

हिन्दू जब शादी करते हैं तो दोनों के मनों के बन्धन बांधते हैं कि कोई किसी को छोड़ेगा नहीं। इस तरह से अन्धकार के फंद में फंसे रहते हैं।

मुस्लिम जोड़ू जब करें, मिल पेहेले बांधे सरत।
जिन कोई किनसों दिल बांधे, यों न्यारे रहें गफलत।। १८ ।।

मुस्लिम जब शादी करते हैं तो पहले मेहर (सम्पत्ति) की शर्त बांध लेते हैं। उनमें एक-दूसरे के दिल के बन्धन नहीं होते, इसलिए अन्धकार से दूर रहते हैं।

भी हिंदू मुस्लिम की, कहूं तफावत तुम।
हिंदू हिसाब जमपुरी, मुस्लिम हाथ खसम।। १९ ।।

हिन्दू और मुसलमान का और फर्क बताती हूं। हिन्दू कहते हैं कि मरने के बाद यमराज के पास जाकर हिसाब देना होगा। मुसलमान कहते हैं कि हमारा हाथ खुदा ने पकड़ रखा है।

हिंदुओं ए दृढ़ कर लिया, इत जो करसी करम।
सो जाए आपे अपना, दें हिसाब आगे राए धरम।। २० ।।

हिन्दुओं ने यह निश्चय किया है कि यहां जैसा कर्म करेंगे वैसा ही उन सबका धर्मराज के सामने हिसाब देना होगा।

सो हिसाब दिए पीछे, देह धरें चौरासी लाख।
मन वाचा करम बांध के, कहें हम होत हलाक।। २१ ।।

हिसाब देने के बाद कर्मों के हिसाब से चौरासी लाख योनियों में जन्म की बात हिन्दू मानते हैं। मन, वचन और कर्म से बंधकर मरते हैं।

हिंदू मुए जलावहीं, खाक भी देवें उड़ाए।
जो डंड जम का छूटहीं, तो भी दिल सुन्य को चाहे।। २२ ।।

हिन्दू मुर्दे को जलाकर खाक (राख) उड़ा देते हैं। यमराज के दण्ड के बाद भी उनकी चाहना निराकार तक ही रहती है।

हिसाब मुस्लिम कहावहीं, ए किया दृढ़ दिल।
खुद काजी हस्तक नबी, हम देसी सब मिल।। २३ ।।

मुस्लिम के हिसाब में यह दृढ़ किया जाता है कि हम अपना हिसाब रसूल साहब के द्वारा खुदा से कराएंगे।

दूजा देह धरन का, रसूलें किया नहीं हुकम।
ताए दूजा देह क्यों होवही, जाको हिसाब हाथ खसम।। २४ ।।

रसूल साहब ने दुबारा जन्म होने की बात नहीं कही है। यह ठीक भी है, क्योंकि जिसका हिसाब खुद खुदा करेगा, उसका जन्म दुबारा क्यों होगा?

Nijanand App

मुस्लिम मुए गाड़हीं, बांध उमेद खसम।
तेहेकीक हक उठावहीं, यों सोवें पकड़ कदम।। २५ ।।

मुसलमान इस उम्मीद के साथ मुर्दे को गाड़ देते हैं कि आखिरत के समय खुदा इनको आकर उठाएगा। इस तरह से खुदा के कदम पकड़कर कब्र में सो जाते हैं।

मन के हारे हारिए, मन के जीते जीत।
मनहीं देवे सत साहेबी, मनहीं करे फजीत।। २६ ।।

मन की मान्यता से ही हार-जीत होती है। मन ही परमात्मा से मिलाता है और मन ही अपमानित कराता है।

चल देखाया बड़कों, सब चले जाएं तिन लार।
अब सो क्यों ए ना छूटहीं, जो बांध दई कतार।। २७ ।।

बड़े लोगों ने जो रास्ता चलकर बताया है सब उसी राह से चले जाते हैं और कहते हैं कि यह बन्धन जो बड़ों ने बांधे हैं वह हम नहीं छोड़ सकते।

कोई हिंदू जो बैकुंठ जावहीं, सो भी खेल के मांहें।
ए फना आखिर कहावहीं, पर कायम भिस्त तो नांहें।। २८ ।।

यदि कोई हिन्दू बैकुण्ठ जाता भी है तो वह खेल के अन्दर ही रहता है। आखिर के समय यह नष्ट हो जाता है, क्योंकि बैकुण्ठ अखण्ड नहीं है।

बैकुंठ मिने नारायन जी, जिन मुख स्वांसा वेद।
ए खावंद है खेल का, सो भी कहूं नेक भेद।। २९ ।।

बैकुण्ठ में नारायण भगवान विराजमान हैं। जिनकी सांस से चार वेद निकले हैं। यही नारायण इस खेल के मालिक हैं। इनकी भी थोड़ी हकीकत बताती हूं।

नारायन कहावें निगम, कहें मोहे खबर नहीं खुद।
नबी हक रसूल कहावहीं, कहे मैं ल्याया कागद।। ३० ।।

नारायण अपने को निगम कहकर कहते हैं कि मुझे परमात्मा की खबर नहीं है। रसूल साहब कहते है कि मैं खुदा का कासिद हूं। उनका पैगाम लेकर आया हूं।

ए नबिऐं जाहेर कह्या, मैं हक पे आया रसूल।
दीन मुस्लिम जो होएसी, सो लेसी सब्द घर मूल।। ३१ ।।

रसूल साहब कहते हैं कि मैं खुदा से पैगाम लेकर आया हूं कि जो दीन में पक्के ईमान वाले होंगे वह इसकी हकीकत पहचान लेंगे।

मेरा घर नूर के पार है, और हवा से ख्वाबी दम।
याको मेरी खातिर, भिस्त देसी खसम।। ३२ ।।

रसूल साहब कहते हैं कि मेरा घर अक्षर के पार है और दुनियां सपने की है, यह निराकार से पैदा हुई है। इस दुनियां को मेरे वास्ते खुदा बहिश्त में कायमी देंगे।

कलाम अल्ला ल्याया रसूल, इन मुस्लिम में आकीन।
हुकम सिर चढ़ाइया, जो सबसे बड़ा दीन।। ३३ ।।

अल्लाह की वाणी को रसूल साहब लाए हैं। इसे मुसलमानों ने दृढ़ता से अपने सिर चढ़ाया। यही सबसे बड़ा धर्म है।

Nijanand App

रसूलें खुद को देख के, हुकम लिया दृढ़ाए।
जिन खुद को ना देखिया, तिन सिर करम चढ़ाए।। ३४ ।।

रसूल साहब कहते हैं कि मैंने खुदा को देखा है और उनके हुकम को दृढ़ता से माना है, परन्तु जिन्होंने खुदा को देखा ही नहीं, उन्होंने अपने को कर्मकाण्ड के बन्धन में बांध लिया।

हिंदू और मुस्लिम के, बीच पड्यो है भरम।
रसूलं कहे सब हुकमें, और निगमें दृढ़ाए करम।। ३५ ।।

इसलिए हिन्दू और मुसलमानों के बीच बड़ी भ्रान्ति फैली है। रसूल साहब कहते हैं कि सब खुदा के हुकम से होता है और हिन्दू कहते हैं कि यह सब हमारे कर्मों का फल है।

रसूल हक हुकम बिना, और न काढ़े बोल।
करम दृढ़ाए निगमें दिए, हिंदुओं सिर डमडोल।। ३६ ।।

रसूल साहब हक के हुकम के बिना और कुछ नहीं बोलते, जबकि कर्म के बन्धनों से बंधकर हिन्दू स्थिर नहीं हैं।

हुए जो ग्यानी अगुए, जिन लिए माएने वेद।
सो ग्यान हिंदुओं आड़ा पड़या, हुआ बड़ा छल भेद।। ३७ ।।

जिन्होंने वेदों को पढ़ा है वह ज्ञानी कहलाए हैं। वेदों का ज्ञान ही हिन्दुओं और परमात्मा के बीच आड़ा (अवरोध) है, इसलिए हिन्दू लोग वेदों के छल से ठगे गए।

तिन अगुओं बांधी दुनियां, किया जोर जब्द।
वैर लगाया या विध, कोई सुने न काहू को सब्द।। ३८ ।।

इन अगुओं ने जबरदस्ती दुनियां को बन्धन में बांध रखा है। इस तरह की दुश्मनी करा दी है कि कोई किसी की सुनता ही नहीं।

तो सत सब्द के माएने, ले न सक्या कोए।
डूबे हिन्दू स्यानपें, सो गए प्यारी उमर खोए।। ३९ ।।

इसलिए सत शब्द (अक्षरातीत की पहचान कराने वाली वाणी) को न ले सकने के कारण हिन्दू लोगों ने अपनी चतुराई में डूबकर अपनी सारी उम्र गंवा दी।

जिन सुध ख्वाब न पार की, सो क्यों समझे ए बात।
और सबों को अटकल, रसूलें देखी हक जात।। ४० ।।

जिन हिन्दुओं को सपने की तथा बेहद की खबर ही नहीं है, वह इस बात को कैसे समझेंगे? हिन्दू सब जगह अनुमान लगाकर बात करते हैं, जबकि रसूल साहब कहते हैं कि मैंने हकजात (मोमिनों) को अर्श में देखा है।

तारी अरवाहें सबन की, चौदे तबक की सृष्ट।
अवतार तीर्थंकर हो गए, किन तारे ना गछ इष्ट।। ४१ ।।

रसूल साहब ने चौदह तबकों (लोकों) की दुनियां को बहिश्तों में अखण्ड कराया, जबकि हिन्दुओं के बड़े-बड़े अवतार और तीर्थंकरों ने किसी एक को भी नहीं तारा (आवागमन से मुक्ति नहीं दी) और इष्ट तक के पास भी नहीं पहुंचाया।

Nijanand App

कोई ऐसा न हुआ इन जहान में, जो तारे अपनी आतम।
यों सब सास्त्र बोलहीं, कहे पुकार निगम।।४२ ।।

संसार में ऐसा कोई नहीं हुआ जिसने अपने आत्मा को भवसागर से पार निकाला हो, ऐसा सब शास्त्र और वेद कहते हैं।

सो वैराट चौदे तबकों, थावर और जंगम।
सब तारे सचराचर, प्रकास रसूल नूर हुकम।।४३ ।।

रसूल साहब ने तारतम वाणी के उजाले तथा धनी के हुकम से चौदह लोकों के चर और अचर जीवों की बहिश्त में कायमी कराई।

खेल रसूल हुकमें हुआ, बीच ल्याए रसूल फुरमान।
आखिर भी रसूल आए के, भिस्त दई सब जहान।।४४ ।।

यह खेल राजजी के हुकम से बना जिसमें रसूल साहब कुरान लेकर आए। आखिरत में भी रसूल साहब इमाम मेंहदी के साथ आकर सारी दुनियां को बहिश्तों में कायम करेंगे।

भिस्त चौदे तबक, देसी दुनियां दीन।
देसी ब्रह्मा रुद्र नारायन को, आखिर दे आकीन।।४५ ।।

चौदह तबकों के लोगों को बहिश्तों में कायम करेंगे तथा बाद में ब्रह्माजी, शंकरजी और नारायणजी को भी पहचान कराके, यकीन दिलाकर अखण्ड करेंगे।

ए अव्वल का हुकम, आखिर होसी जाहेर।
करसी साफ सबन को, अंतर मांहें बाहेर।।४६ ।।

यह खुदा का पहले का ही हुकम है जो अब आखिरत में जाहिर होगा। इससे सारी दुनियां अन्दर और बाहर से पाक साफ हो जाएगी।

।। प्रकरण ।। २५ ।। चौपाई ।। ८७० ।।

सनन्ध–दोजख की

नेक कहूं दोजख की, ए जलसी ज्यों कुफरान।
ए जो सब्द रसूल के, अंदर दिल में आन।।१ ।।

दोजख की अग्नि में काफिर लोग कैसे जलेंगे? रसूल साहब के वचनों के अनुसार इसको थोड़ा-सा बताती हूं। इसे तुम दिल में धारण करना।

कुफर चौदे तबक का, इन सब्दों होसी नास।
पर कहा कहूं तिन अगुओं, जिन किए घात विश्वास।।२ ।।

इस वाणी से चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड का कुफ्र मिट जाएगा, किन्तु मैं उन अगुओं (धर्माचार्यों) को क्या कहूं जिन्होंने संसार के साथ विश्वासघात किया है (जिन्होंने धनी का सीधा रास्ता नहीं बताया)।

कुफर सारा काढ़सी, एक पलक में धोए।
खारे जल पछाड़सी, याको धूप जो देसी दोए।।३ ।।

सारी दुनियां का कुफ्र एक पलक में धुल जाएगा। कुफर और अज्ञानता को तारतम के ज्ञान से निर्मल कर ईमान और इश्क की धूप में निर्विकार बना देंगे।

Nijanand App

याही दोजख अगनी जलें, और जलें दुनी के दम।
आप जलें अपनी मिने, कहें हाए हाए भूले हम।।४।।

संसार के अगुए इस तरह से दोजख की आग में जलेंगे। दुनियां की हाय तोबा इनको खाएगी। अपनी करनी भी इनको खाएगी। तब पश्चाताप करेंगे कि हम भूले थे।

खुदा न देवे दुख किन को, पर मारत है तकसीर।
पटक पटक सिर पीटहीं, रोसी राने राए फकीर।।५।।

धनी किसी को भी दु:ख नहीं देते। हर कोई अपने कर्मो से ही मरते हैं। कजा के दिन ऐसे लोग सिर पीट-पीटकर रोएंगे। चाहे वह राणा हो, राजा हो या फकीर हों।

खुद काजी कजाए का, रसूलें किया अति सोर।
सो सोर याद जो आवहीं, हाए हाए झालें बढ़े त्यों जोर।।६।।

रसूल साहब ने आकर खूब पुकारा कि कजा के वास्ते खुदा खुद आकर काजी बनेगा। रसूल साहब की इस वाणी को याद कर उनकी आग की लपटें और बढ़ जाती हैं।

जलसी खुद देखे पीछे, ऐसा बड़ा खसम।
कलमा रसूल का सुन के, हाए हाए पकड़े नहीं कदम।।७।।

पश्चाताप की अग्नि में जलने के बाद उनको खुदा की पहचान होगी और फिर रसूल का कलमा (तारतम वाणी) सुनकर कहेंगे कि हाय-हाय हमने बड़ी भूल की जो इनके कहने पर रहनी में नहीं आए।

ज्यों ज्यों दुलहा देखहीं, त्यों त्यों उपजे दुख।
ऐसे मौले मेहेबूबसों, हाए हाए हुए नहीं सनमुख।।८।।

जैसे-जैसे दूल्हा (स्वामी) श्री प्राणनाथजी की पहचान होगी, वैसे-वैसे वह दु:खी होंगे। ऐसे मेहरबान श्री प्राणनाथजी के सामने जाकर हमने दर्शन क्यों नहीं किए।

खुद की सुध दई रसूलें, पर आया नहीं आकीन।
अंग मरोर जिमी परे, हाए हाए जिन रसूल को न चीन।।९।।

रसूल साहब ने खुदा के आने की खबर बताई थी, पर किसी को यकीन नहीं आया। अब मत्थे को (सिर को) जमीन पर मार-मार कर कहेंगे कि हमसे बड़ी भूल हुई जो हमने वाणी से पहचान नहीं की।

एता मासूक पुकारिया, पर तो भी न छूटा फंद।
दंत बीच जुबां काटहीं, हाए हाए हुए बड़े अंध।।१०।।

रसूल साहब ने इतना पुकार-पुकारकर कहा, फिर भी माया का फन्द नहीं छूटा। अब जबान को दांतों के बीच काटकर कहेंगे कि हाय-हाय हम अन्धे हो गए थे।

जाए जाए समसेर लेवहीं, अब कीजे आप घात।
दिल दे कबहूं ना सुनी, हाए हाए पैगंमर की बात।।११।।

तब अपने आपको मारने के लिए तलवार उठाएंगे और कहेंगे हाय-हाय हमने पैगम्बर रसूल साहब की बात नहीं सुनी (वाणी कभी नहीं पढ़ी)।

ले ले छुरी पेट डारहीं, आकीन न आया अंग।
कही बात नबिऐं खुद की, हाए हाए लग्या न तासों रंग।।१२।।

छुरी लेकर पेट काटेंगे और कहेंगे कि हमें कभी यकीन नहीं आया। नबी (रसूल) ने तो अपनी पहचान कराई, पर फिर भी हमने उनको नहीं पहचाना।

Nijanand App

बात न सुनी रसूल की, तिन सीखां लगियां कान।
इस्क हक का छोड़ के, हाए हाए डूबे जाए ग्यान।। १३ ।।

जिन्होंने श्री प्राणनाथजी की वाणी नहीं सुनी उनके कानों में गरम सलाखें डाली जाएंगी। वह पश्चाताप करेंगे कि हमने अपने ज्ञान की चतुराई में हक के इश्क को छोड़ दिया।

बातां सुनियां दूर से, पर लई न जाए के सुध।
सो गुन अंग इन्द्री जलो, हाए हाए जलो सो बुध।। १४ ।।

जिन्होंने श्री प्राणनाथजी की वाणी को लापरवाही से सुना, वह पश्चाताप करेंगे कि हमारी गुण, अंग, इन्द्रियां और बुद्धि भी जल जाएं।

आकीन जिन आया नहीं, सुनके महंमद बैन।
और विचार सबे जलो, हाए हाए जलो सो चातुरी चैन।। १५ ।।

जिनको श्री प्राणनाथजी की वाणी सुनकर यकीन नहीं आया, वह पश्चाताप करके अपने विचारों और चतुराई को हाय-हाय करके ज़लाएंगे।

धिक धिक ग्याता ग्यान को, जिन उलटी फिराई मत।
सो अगुए जलो आग में, हाए हाए करी बड़ी हरकत।। १६ ।।

ऐसे गुरुओं को धिक्कारेंगे जिन्होंने उलटा ज्ञान सुनाकर बुद्धि को उलटा दिया था। ऐसे अगुओं को पहचान कर हाय-हाय करके सभी धिक्कारेंगे।

बिना आकीने इस्क, कबहूं न उपज्या किन।
स्यानों ग्यान विचारिया, हाए हाए करी खराबी तिन।। १७ ।।

बिना यकीन के किसी को भी इश्क नहीं आता है। सयानों (ज्ञानियों, गुरुओं) के ज्ञान की चतुराई की हाय-हाय करके उनको धिक्कारेंगे कि इन्होंने ही सारी खराबी की है (इन्होंने ही बेड़ा गर्क किया है)।

मैलाई न छूटी मन की, ऊपर भए उज्जल।
न आया आकीन रसूल पर, हाए हाए छेतरे छल।। १८ ।।

इनके मन की मैल नहीं छूटी। ऊपर के नहाने से क्या होता है? इनको श्री प्राणनाथजी पर यकीन नहीं आया, इसलिए यह भी इस माया के संसार में ठगे गए। यह हाय-हाय करके पश्चाताप करेंगे।

हराम न छूट्या दिल से, छल दृष्ट हुई बाहेर।
राह भूले मुस्लिम की, हाए हाए बुरी हुई जाहेर।। १९ ।।

इनके दिल से कपट नहीं छूटा और बाहरी नजर भी माया से भरी है, इसलिए यह मोमिनों की रहनी को भूल गए। फिर हाय-हाय करके पश्चाताप करेंगे कि हमसे बुरा हुआ।

ख्वाब के सुख कारने, किया आपसों छल।
सब्द ना सुने रसूल के, हाए हाए खाएं गोते बिना जल।। २० ।।

सपने के सुख के लिए हमने अपने आप से कपट किया। हमने श्री प्राणनाथजी की वाणी को नहीं सुना, इसलिए बिना जल के भवसागर में गोते खाएंगे।

सब्द जो अगुओं सुन के, भूले मुस्लिम की राह।
इन दीन कलमें आखिर, आवसी इत खुदाए।। २१ ।।

इन अगुओं (गुरुओं, ज्ञानियों, धर्माचार्यों) के वचन सुनकर जो मोमिनों की रहनी भूल गए और इन वचनों को भी भूल गए कि आखिरत को खुदा खुद आएगा।

Nijanand App

कुरान जिनों न विचारिया, जलो सो तिनकी मत।
जो न जागी रसूल हुकमें, हाए हाए आग परो गफलत।। २२ ।।

जिन्होंने श्री प्राणनाथजी की वाणी को नहीं सुना उनकी बुद्धि को धिक्कार है। जो उनके हुकम से जागृत नहीं हुआ, आग लगे उनकी लापरवाही को।

बैठे उठे न पर सके, सके न रोए विकल।
आखिर जाहेर हुए पीछे, आग हुए जल बल।। २३ ।।

आखिरत में (प्राणनाथजी के जाहिर होने के बाद में) वह लोग न उठ सकेंगे न बैठ सकेंगे, न लेट सकेंगे, उनको पश्चाताप की अग्नि में ही जलना होगा।

जिमी सकल जहान जो, हिंदू या मुसल्मीन।
हाथ काट पेट कूटहीं, हाए हाए जिन रसूल को न चीन।। २४ ।।

जिन्होंने श्री प्राणनाथजी को नहीं पहचाना, चाहे वह हिन्दू हो या मुसलमान या संसार का कोई भी हो, वह हाथ काटेंगे, छाती पीटकर कहेंगे कि हाय-हाय हमने बड़ी भूल की।

सुध सीधी रसूलें दई, पर समझे नहीं चंडाल।
तिन अंग आग जो धखहीं, हाए हाए झंपे न क्यों ए झाल।। २५ ।।

श्री प्राणनाथजी ने तो सीधा रास्ता बताया, परन्तु दुनियां के मूर्ख नहीं समझ सके। अब उनके अंग में पश्चाताप की आग लगेगी और हाय-हाय करके रोएंगे।

खसम के आगे अब, क्यों उठावें सिर।
सब अंग आग जो हो रही, हाए हाए झालें उठें फेर फेर।। २६ ।।

अब वह श्री प्राणनाथजी के आगे सिर उठाकर कैसे देखेंगे? क्योंकि उस समय उनके सारे अंग पश्चाताप की अग्नि में जल रहे होंगे और वह हाय-हाय कर रहे होंगे।

देह काफर जले जो आग में, सो तो अचरज कछुए नांहें।
पर जो जले जान बूझ के, हाए हाए तिन आग लगी दिल मांहें।। २७ ।।

काफिर लोग (अज्ञानी) यदि आग में जलते हैं तो बड़ी बात नहीं पर तारतम वाणी समझ आ जाने पर भी जो भूल करेंगे, हाय-हाय वह अन्दर ही अन्दर अपने दिल में जलेंगे।

कुरान को पढ़ पढ़ गए, पर पाई न हकीकत किन।
तो मासूक प्यारा न लग्या, हाए हाए जिमी हुई अगिन।। २८ ।।

जिन्होंने वाणी को बार-बार पढ़ा और उसकी हकीकत को नहीं जाना और उनको धनी प्यारे नहीं लगे, उनको यह जमीन आग के समान लगेगी।

कई महंमद के कहावहीं, पर पूरे न लगे दिल दे।
तो मुसाफ न पाया मगज, हाए हाए जान बूझ जले ए।। २९ ।।

जो श्री प्राणनाथजी के साथी कहलाते हैं और दिल से उनकी पहचान नहीं की तथा वाणी के रहस्य को नहीं समझा, हाय हाय यह जान बूझकर आग में जलेंगे।

कलाम अल्ला आया हाथ में, पर मारफत न पाई किन।
सो भी आग छोड़े नहीं, हाए हाए तांबा जिमी हुई तिन।। ३० ।।

अक्षरातीत की वाणी मिली थी, पर मारफत, (वाहेदत और खिलवत) को प्राप्त नहीं किया। उनको भी यह आग नहीं छोड़ेगी। यह जमीन उनको गर्म लोहे की तरह जलाएगी (लगेगी)।

Nijanand App

जान बूझ के जो भूले, चले न फुरमाए पर।
सो लटके सूली आग की, हाए हाए जो हुए बेडर।। ३१ ।।

जो जान बूझकर भूल करते हैं और धनी के वचनों पर नहीं चलते, उनको आग के ऊपर सूली पर उल्टा चढ़ाया जाएगा। तब हाय-हाय करके रोएंगे कि हम धनी से क्यों नहीं डरे?

दुस्मन बैठा दिल पर, सो तो जलाया चाहे।
सो जाहेर फरेब देत है, हाए हाए कोई न चीन्हे ताए।। ३२ ।।

सबके दिल पर बैठा शैतान (अबलीस, नारद) तो सबको जलाना ही चाहता है। वह जाहिरी रूप से फरेब (छल) करके धोखा देता है। पर हाय, उसे कोई पहचानता नहीं।

पीछे पछतावा क्या करे, जब लगी दोजख आए।
इसी वास्ते पुकारे रसूल, मेहेर दिल में ल्याए।। ३३ ।।

जब दोजख की आग लग जाएगी तब पीछे पछताने से क्या होगा? इस वास्ते श्री प्राणनाथजी कृपा करके पहले से ही सावचेत (सावधान) कर रहे हैं।

यों आखिर आए सबन को, प्रगट भई पेहेचान।
तब कहें ए सुध सुनी हती, पर आया नहीं ईमान।। ३४ ।।

इस तरह आखिरत के समय में श्री प्राणनाथजी की पहचान हो जाएगी और तब सब कहेंगे कि हमने वाणी सुनी तो थी, परन्तु हमको ईमान नहीं आया।

सत असत इन खेल में, रहे थे दोऊ मिल।
सो दोऊ जाहेर किए, सांचा दीन झूठा छल।। ३५ ।।

इस संसार में सच्चे (ब्रह्मसृष्टि) और झूठे (माया के जीव) दोनों मिल गए थे। अब दोनों को जाहिर कर दिया कि सच्चा (सुन्दरसाथ) और झूठा छल (माया का जीव) क्या हैं।

|| प्रकरण || २६ || चौपाई || ९०५ ||

सनन्ध–अगुओं ग्यानी की

अब नींद उड़ी सबन की, आई जो हिरदे बुध।
समझे सब कुरान को, भई रसूल की सुध।। १ ।।

श्री महामतिजी कहती हैं कि अब संसार के सब ज्ञानी और अगुओं को ज्ञान मिल गया है। उनकी अज्ञान की नींद उड़ गई है। अब सभी कुरान को समझेंगे, क्योंकि श्री प्राणनाथजी की पहचान हो गई है।

अब नबी प्यारा लग्या, लगे प्यारे सब्द रसूल।
इमाम हुए जाहेर, कदमों सब सनकूल।। २ ।।

अब नबी (रसूल) और कुरान के शब्द सबको प्यारे लगने लगे हैं, क्योंकि अब इमाम मेंहदी (श्री प्राणनाथजी) जाहिर हो गए हैं। सब आकर उनके चरणों में सिजदा करो।

अब रसूल की सुध परी, और सुध परी फुरमान।
ए सबे सुध तब परी, जब आए बैठे सुलतान।। ३ ।।

जब पारब्रह्म श्री प्राणनाथजी स्वयं आकर बैठ गए तो रसूल साहब की और कुरान की सब हकीकत का ज्ञान मिल गया।

Nijanand App

बलिहारी महंमद की, बलिहारी मुसाफ।
बलि बलि जाऊं काजी की, जिन आए किया इंसाफ।। ४ ।।

मुहम्मद (रसूल) पर तथा कुरान पर और काजी (श्री प्राणनाथजी) पर वारी-वारी (बलिहारी) जाऊं जिसने आकर यह फैसला कर दिया।

ताथें इन बीच अगुओं, जिन करी बड़ी हरकत।
ए जुलम किन विध कहूं, जिन या विध फेरी मत।। ५ ।।

रसूल मुहम्मद से श्री प्राणनाथजी के बीच एक हजार नब्बे वर्ष के बीच में जो ज्ञानी और अगुए हुए, उन्होंने अपनी हरकतों से जो जुल्म किया और लोगों की बुद्धि को उलटा किया, उसका कैसे वर्णन किया जाए ?

पढ़ों पढ़ाई दुनियां, अगुओं उलटी गत।
ए होसी सब जरदरूं, अबहीं इन आखिरत।। ६ ।।

ज्ञानियों (आलिम फाजिलों) ने दुनियां को उलटा पढ़ाया और अगुओं ने उलटा रास्ता दिखाया। अब इस आखिरत के समय से सभी शर्मसार (लज्जित) होंगे।

जब काफर देखे अगुओं, तब जाने काले नाग।
करी दुनी को जरदरू, इनहूं लगाई आग।। ७ ।।

आखिरत के समय में जब काफिर लोग इन अगुओं को देखेंगे तो इनको काले नागों की तरह समझेंगे, क्योंकि इन अगुओं ने ही आग लगाई, जिसके कारण दुनियां को लज्जित होना पड़ रहा है।

दुनियां अगुओं देखहीं, तब जाने जैसे जेहेर।
यों दुनियां बीच अगुओं, बड़ा जो पड़सी वैर।। ८ ।।

दुनियां वाले अगुओं को जहर के समान देखेंगे और इस तरह से दुनियां और अगुओं में दुश्मनी बढ़ जाएगी।

ज्यों घायल सांप को चींटियां, लगियां बिना हिसाब।
त्यों अगुओं को दुनियां, मिल कर देसी ताब।। ९ ।।

जैसे घायल सांप को चींटियां चिपटकर काटती हैं, वैसे ही यह सब दुनियां मिलकर अगुओं को काटेगी।

आग दुनी को एक है, अगुओं को आग दोए।
एक आग दुनी की, दूजे अपने दुख को रोए।। १० ।।

दुनियां वालों को तो अपनी ही भूल के कारण पश्चाताप करना है, परन्तु अगुओं को दो तरह की आग में जलना है। एक उनकी खुद के भूलने और दूसरी दुनियां को भुलाने के कारण यह रोएंगे।

और आग सब सोहेली, पर ए आग सही न जाए।
अब देखोगे आपहीं, रेहेसी सब तलफाए।। ११ ।।

और सब आग आसान हैं, पर यह पश्चाताप की अग्नि सहन नहीं होगी। अब तुम खुद इन अगुओं को तड़पता देखोगे।

आग सबों को विरह की, देकर करसी साफ।
जिन जैसी तैसी तिनों, आखिर ए इंसाफ।। १२ ।।

इन सबको विरह की अग्नि से निर्मल करके जिसने जैसी करनी की है उसको वैसा ही फल देकर सबका फैसला होगा।

Nijanand App

विकार सारे अंग के, काम क्रोध दिमाक।
सो बिना विरहा ना जलें, होए नहीं दिल पाक।। १३ ।।

काम, क्रोध और अहंकार शरीर के विकार हैं जो विरह की अग्नि के बिना जलते नहीं और तब तक उनके दिल पाक नहीं होते।

आखिर भी इस्क बिना, हुआ न काहूं सुख।
सो इस्क क्यों छोड़िए, जो रसूलें कह्या आप मुख।। १४ ।।

अन्त समय में भी बिना इश्क के सुख मिलने वाला नहीं है। श्री प्राणनाथजी ने अब अपने मुख से इश्क का रास्ता बताया है, उसको अब क्यों छोड़ें?

अव्वल जो रसूलें कह्या, आखिर सोई प्रवान।
इस्क सांचा हक का, और आग सब जान।। १५ ।।

शुरू से जो रसूल साहब ने कहा था वही आखिर में श्री प्राणनाथजी ने कहा कि हक के इश्क का मार्ग ही सच्चा है और बाकी सब आग के समान है।

जब खसम काजी हुआ, तब नाहीं दुखिया कोए।
महंमद मेहेर करावहीं, सब पाक हुए दिल धोए।। १६ ।।

जब मेरे खसम (श्री प्राणनाथजी) काजी बने, तब कोई दु:खी नहीं रहा, उन्हीं की मेहर (कृपा) से सबके दिल निर्मल हो गए।

रसूल बड़ा सबन में, जिन हक की दई खबर।
कह्या मासूक का सब हुआ, आई कजा आखिर।। १७ ।।

रसूल साहब सब पैगम्बरों में बड़े हैं। इन्होंने खुदा की खबर दी है। हमारे माशूक (श्री राजजी महाराज) ने कहा था उनके कहने के अनुसार अब आखिरत का (न्याय का) दिन आ गया।

तारीफ रसूल की तो करूं, जो इन जिमी का होए।
या ठौर बात जो नूर पार की, कबहूं न बोल्या कोए।। १८ ।।

रसूल साहब इस जमीन के हों, तो उनकी प्रशंसा की जाए। इस संसार में उनके सिवाय अक्षर के पार अक्षरातीत की खबर कोई नहीं बोला।

या सुध पार के पार की, किन मुख न निकसे दम।
बुजरकी महंमद की, करत जाहेर खसम।। १९ ।।

यह खबर जो बेहद के पार के भी पार की है इसके बारे में रसूल साहब के बिना किसी ने भी एक शब्द कभी नहीं कहा। इसलिए श्री प्राणनाथजी रसूल साहब की प्रशंसा करते हैं।

महंमद दीन की पेहेचान, काहूं हुती न एते दिन।
न पेहेचान कुरान की, नातो देख थके कई जन।। २० ।।

इतने दिन तक किसी ने मुसलमान धर्म की पहचान नहीं की और न ही कुरान की पहचान की। लोग कुरान पढ़-पढ़कर थक गए।

पेहेले ए सस्ती हती, मुस्लिम दीन कुरान।
पीछे अति पछताएसी, पर क्या जाने कुफरान।। २१ ।।

पहले कुरान और मुस्लिम धर्म को लोग हलका समझते थे। पीछे सब काफिर लोग इसकी हकीकत को जानकर पछताएंगे।

Nijanand App

सो पेहेचान अब होएसी, करसी साफ दुनी दिल।
किताब याही रसूल की, सुख लेसी सब मिल।। २२ ।।

अब इमाम मेंहदी की सनन्ध किताब से कुरान के सारे रहस्य खुल जाएंगे और दुनियां के दिलों के सारे संशय मिट जाएंगे। तब सब दुनियां मिलकर इस वाणी का सुख लेगी।

सब्द रसूल के पसरसी, तिन फिरसी वैराट।
अकस सबों का भान के, सब चलसी एक बाट।। २३ ।।

श्री प्राणनाथजी की वाणी सारे ब्रह्माण्ड में फैलेगी। यह सबके धार्मिक झगड़ों को मिटाकर एक पारब्रह्म के पूजक बनाएगी।

छोड़ गुमान सब मिलसी, ए जो देखत हो जहान।
जात पांत न भांत कोई, एक खान पान एक गान।। २४ ।।

तब सब दुनियां के लोग अपने अहंकार को छोड़कर अपनी जाति-पाति और खान-पान के भेद भूलकर एक रास्ते पर आ जाएंगे।

एही सब्द सुन जागसी, बड़ी बुध होसी विचार।
याही सदी आखिर की, हक सुख देसी पार।। २५ ।।

इस वाणी को सुन करके सब जागृत बुद्धि (असराफील) के बारे में सोचेंगे। यही सदी (शताब्दी) आखिरी होगी जिसमें श्री राजजी महाराज सबको बेहद का सुख देंगे।

नूर सबों में पसरया, सो कहूं सब सनंध।
याही सब्दों बीच का, उड़ जासी बंध फंद।। २६ ।।

सारे संसार में इस वाणी का प्रकाश फैल जाएगा और इसी सनन्ध की वाणी से सब धर्मों के बन्धन उड़ जाएंगे।

।। प्रकरण ।। २७ ।। चौपाई ।। ९३१ ।।

सनन्ध–बिना एक महंमद की

इत आए करी जो रसूलें, सो नेक कहूं प्रकास।
तबक चौदे उजाला, किया तिमर सब नास।। १ ।।

श्री महामतिजी कहती हैं कि श्री प्राणनाथजी (नूरी रसूल) ने यहां आकर चौदह लोकों (ब्रह्माण्ड) का अन्धकार मिटाकर वाणी का प्रकाश किया। उसका थोड़ा-सा वर्णन करती हूं।

प्रताप बड़ा महंमद का, जिन दिया सबों को सुख।
चौदे तबक की दुनी के, दूर किए सब दुख।। २ ।।

श्री प्राणनाथजी के प्रताप की महिमा भारी है। इन्होंने सारे संसार के चौदह लोकों के दुःख को दूर करके सबको सुख दिया।

इमाम मोमिन इस्क, सब मुख एही सब्द।
सब्द ना कोई दूसरा, बिना एक महंमद।। ३ ।।

संसार के ग्रन्थों में इमाम साहब, मोमिन और इश्क की ही बातें हैं। संसार की जबान बिना एक श्री प्राणनाथजी (महंमद) के और कोई शब्द ही नहीं है।

Nijanand App

आलम सब अल्लाह की, तामें छोड़ी न काहूं हद।
दौड़ के कोई न पोहोंचिया, बिना एक महंमद।। ४ ।।

रसूल साहब के अलावा अल्लाह के पास कोई नहीं पहुंचा। यह सारा संसार हद 'क्षर' में ही टिका रहा।

कई जातें दौड़ी जहान में, पर आया न काहूं दरद।
तो किनहूं न पाइया, बिना एक महंमद।। ५ ।।

इस संसार में बहुत से धर्म एवं जातियों ने दौड़ की, पर किसी को खुदा के पाने का दर्द नहीं लगा। वह दर्द रसूल साहब के बिना किसी को नहीं हुआ।

पंथ पैंडे दीन मजहब, कर कर गए रब्द।
पर हुआ न कोई काम का, बिना एक महंमद।। ६ ।।

दुनियां के दीन (धर्म) आपस में लड़ते रहे, पर कोई भी श्री प्राणनाथजी के बिना पारब्रह्म की पहचान नहीं करा सका।

बड़े बड़े ग्यानी गुनी मुनी, पर पाया न काहूं हारद।
कथ कथ सब खाली गए, बिना एक महंमद।। ७ ।।

यहां बड़े-बड़े ज्ञानी, मुनि, जिन्होंने अपनी कविताओं में ग्रन्थ-रचनाएं कीं, हुए पर रसूल मुहम्मद के बिना किसी को पारब्रह्म की प्राप्ति नहीं हुई।

कई पोथी पढ़ पढ़ पढ़हीं, पर न सुध हद बेहद।
मेहेनत सीधी न हुई, बिना एक महंमद।। ८ ।।

संसार में लोग अनेक ग्रन्थों को पढ़ते रहे, परन्तु उनको हद, बेहद का भी पता नहीं लगा और किसी की मेहनत सफल नहीं हुई। रसूल साहब के बिना पारब्रह्म तक पहुंचने की किसी ने सुध नहीं दी।

कई जुदी जुदी जिनसों खोजिया, सबों आप अपने मद।
तिनसे कछुए न सरया, बिना एक महंमद।। ९ ।।

कइयों ने अपने ज्ञान के अहंकार से परमात्मा की तरह-तरह से खोज की, परन्तु बिना एक रसूल मुहम्मद के किसी का काम सिद्ध नहीं हुआ।

कई पढ़े किताबें सहीफे, पर हुआ न काहूं मकसद।
बका तरफ किन पाई नहीं, बिना एक महंमद।। १० ।।

कइयों ने बड़े-बड़े ग्रन्थ तथा छोटी-छोटी सन्त वाणी पढ़ी, पर पारब्रह्म की प्राप्ति करने का लक्ष्य किसी का सिद्ध नहीं हुआ। रसूल मुहम्मद के बिना अखण्ड परमधाम तक का रास्ता कोई भी न पा सका।

कई बंदे एक हादी के, जुदे पड़े कर जिद।
पर हक किने न पाइया, बिना एक महंमद।। ११ ।।

बड़े-बड़े गुरुओं के चेले आपस में लड़ झगड़कर अलग हो गए, परन्तु पारब्रह्म की प्राप्ति मुहम्मद के बिना नहीं हो सकी।

कई पेहेलवान कहावें दुनी में, ढूंढ़ ढूंढ़ हुए सरद।
सुन्य सुरिया पार न ले सके, बिना एक महंमद।। १२ ।।

दुनियां में बड़े-बड़े देवता, तीर्थंकर पारब्रह्म को ढूंढ़कर थक गए, किन्तु बिना एक रसूल मुहम्मद के कोई भी सात शून्य (तुरिया सितारा) के आगे नहीं जा सका।

Nijanand App

कई नाम इमाम धर धर गए, बोल बोल गए बेरद।
ठौर कायम किने न पाइया, बिना एक महंमद।। १३ ।।

कईयों ने अपने आपको इमाम के नाम से घोषित किया और बड़े-बड़े वचन बोले, पर वह व्यर्थ गए। बिना एक रसूल मुहम्मद के अखण्ड ठिकाने का ज्ञान किसी को नहीं मिला।

बड़े बड़े सुभट सूरमें, पर हुआ न कोई मरद।
जो सुध ल्यावे नूर पार की, बिना एक महंमद।। १४ ।।

इस संसार में बड़े-बड़े पैगम्बर, मठाधीश हुए, किन्तु बिना एक रसूल मुहम्मद के अक्षर के पार की सुध देने वाला कोई नहीं हुआ।

केतेक पर सिर बांध के, कर कर गए जब्द।
सो सारे बेसुध गए, बिना एक महंमद।। १५ ।।

तप और साधना से कईयों ने बड़ी-बड़ी मान्यताएं प्राप्त कीं, पर बिना एक रसूल मुहम्मद के सभी बेसुध होकर अज्ञान में ही पड़े रहे।

अंग मार जार उड़ावहीं, जो हते जोर जलद।
पर ए सुध काहू न परी, बिना एक महंमद।। १६ ।।

संयम और हठ योग से तपस्या करने वाले योगियों ने अपने अंगों को बहुत कष्ट दिया, परन्तु परमधाम की खबर सिवाय रसूल मुहम्मद के किसी को नहीं हुई।

कोई रोते फिरे रात दिन, पर हुआ न दीदार खुद।
कौन सुख देवे तिनको, बिना एक महंमद।। १७ ।।

कई भक्तजन रात-दिन पारब्रह्म के दर्शन के लिए रोते फिरते रहे, परन्तु मलकी मुहम्मद (श्री देवचन्द्रजी) के बिना न तो किसी को साक्षात् दर्शन हुआ और न कोई पारब्रह्म के मिलने का सुख ही दे सका।

कई लालै लाल कहावते, सो हो गए सब जरद।
और लाल कोई न हुआ, बिना एक महंमद।। १८ ।।

अक्षर की पांच वासनाओं ने तथा और कई साधक तपस्वियों ने पारब्रह्म की प्राप्ति का दावा तो किया, पर सब फीके पड़ गए। एक रसूल मुहम्मद ही पारब्रह्म की सुध देकर 'लाल' कहलाए।

ए खेल खावंद जो त्रैगुन, कहें हम ही हैं परमपद।
और खावंद कोई न हुआ, बिना एक महंमद।। १९ ।।

ब्रह्मा, विष्णु, महेश, जो इस ब्रह्माण्ड के मालिक हैं, वह स्वयं को खुदा बताते हैं, पर इमाम मेंहदी स्वरूप श्री प्राणनाथजी के बिना कोई भी पारब्रह्म नहीं है।

कई वली पैगंमर आदम, ए कहावें सब मुरसद।
और मुरसद कोई ना हुआ, बिना एक महंमद।। २० ।।

संसार में कई बड़े-बड़े वली, कई आलम तथा धर्मगुरु हुए, परन्तु (श्री देवचन्द्रजी) मलकी मुहम्मद के बिना कोई सतगुरु नहीं हुआ।

औलिए अंबिए फरिस्ते, जेता कोई पैद।
पर अलहा किनहूं ना लह्या, बिना एक महंमद।। २१ ।।

कई औलिए हुए, कई अंबिए, कई फरिश्ते तथा कई भविष्यवाणी करने वाले हुए, परन्तु रसूल मुहम्मद के बिना अल्लाह को किसी ने नहीं पाया।

Nijanand App

आद मध और अबलों, कोई न पोहोंच्या कद।
खुद खबर किन ना दई, बिना एक महंमद।। २२ ।।

सृष्टि के शुरू से, बीच में और अब तक पारब्रह्म के घर तक कोई पहुंच नहीं पाया। बिना एक रसूल मुहम्मद के किसी ने भी परमात्मा की खबर नहीं दी।

चौदे तबक की दुनी के, मैं देखे सब कागद।
सो सारे ही बंद हुए, बिना एक महंमद।। २३ ।।

चौदह तबकों (लोकों) की दुनियां के समस्त धर्म ग्रन्थों को हमने देखा, वह सब बेहद का ज्ञान न होने के कारण चुप हो गए (बन्द हो गए), केवल एक मुहम्मद साहब के कुरान ने ही बेहद से पार अक्षर और अक्षरातीत की खबर दी।

ऊपर तले मांहें बाहेर, ए उड़ जासी ज्यों गरद।
सो फेर कायम कौन करावहीं, बिना एक महंमद।। २४ ।।

ऊपर-नीचे, अन्दर-बाहर जो कुछ भी है आखिरत में धूल की तरह उड़ जाएगा। फिर इन सबको नूरी मुहम्मद (श्री प्राणनाथजी) के बिना बहिश्तों में कायम (अखण्ड) कौन करेगा?

जो दुनियां खाकें रल गई, सबों कर डारी रद।
सो फेर कौन उठावहीं, बिना एक महंमद।। २५ ।।

जो लोग कब्रों में पड़े हैं और मिट्टी में मिल गए हैं, इमाम मेंहदी (श्री प्राणनाथजी) के बिना उन्हें कब्र से कौन उठाएगा?

तबक चौदे ख्वाब के, ए खेल झूठा है सब।
सो बका कौन करावहीं, बिना एक महंमद।। २६ ।।

चौदह लोकों का ब्रह्माण्ड सपने का है और झूठा है। इसे नूरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी के बिना कौन अखण्ड करेगा?

तत्व सबन को नास है, जाको मूल मोह मद।
सो नेहेचल कौन करावहीं, बिना एक महंमद।। २७ ।।

संसार के सभी तत्व जिनका मूल मोह तत्व है, अहंकार है, नाशवान हैं। उनको नूरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी के बिना कौन अखण्ड करेगा?

ऐसा हुआ न कोई होएसी, जो जावे छोड़ सरहद।
फुरमान ल्यावे नूर पार का, बिना एक महंमद।। २८ ।।

ऐसा न कोई हुआ है और न कोई होगा जो क्षर को पार कर अक्षर के पार का ज्ञान बिना एक रसूल मुहम्मद के ला सके?

पांच चीज जीव सब उड़ गए, मसा बका से ल्याए औखद।
सो खिलाए जिवाए कोई ना सक्या, बिना एक महंमद।। २९ ।।

इस संसार के पांच तत्व और जीव सभी नाशवान हैं, परन्तु श्री देवचन्द्रजी की तारतम वाणी रूपी अखण्ड औषधि को बिना नूरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी के कोई खिलाकर जीवित नहीं कर सका।

Nijanand App

सो रसूल तुम खातिर, होए आया कासद।
ए सब मासूक के हुकमें, हुआ जाहेर महंमद।। ३० ।।

रसूल मुहम्मद तुम्हारे वास्ते कासिद बनकर आए। वही श्री राजजी महाराज के हुकम से आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी के रूप में प्रगट हुए।

मोमिन तुम सूते क्या करो, ए कागद ए कासद।
काजी कजा पर आइया, दे मुबारकी महंमद।। ३१ ।।

हे मोमिनो! अब तुम सोकर क्या करोगे। इस कुरान और मुहम्मद (श्री प्राणनाथजी) की पहचान तुम्हें हो गई है। यह काजी बनकर न्याय करने बैठे हैं। अतः जिस रसूल मुहम्मद ने खुदा के आने की भविष्य-वाणी की थी, उनको बधाई दो।

उठके आप खड़ी रहो, ल्यो अंग में आनंद।
इस्क देखाओ अपना, मासूक करो परसंद।। ३२ ।।

हे मोमिनो! अब उठकर खड़े हो जाओ और अंग में बड़ी खुशी मनाओ। अब आपके बीच साक्षात् पारब्रह्म स्वरूप श्री प्राणनाथजी आए हैं। अपने माशूक श्री प्राणनाथजी को इश्क (अंगना भाव) से रिझाओ।

।। प्रकरण ।। २८ ।। चौपाई ।। ९६३ ।।

सनन्ध–अब सो कहां है महंमद

अब सो कहां है महंमद, तुम उठ क्यों न देखो जाग।
कह्या कौल सो आए मिल्या, अब नहीं नींद को लाग।। १ ।।

श्री महामतिजी कहती हैं, हे मोमिनो! अब तुम उठकर खड़े हो जाओ और देखो। रसूल साहब ने खुदा के आने का जो वायदा किया था वह समय अब आ गया है, इसलिए अब सोने का समय नहीं है।

तुम जो अरवाहें अर्स की, पर छलें किए हैरान।
बाहेर देखना छोड़ के, तुम अंतर करो पेहेचान।। २ ।।

तुम अर्श के मोमिन हो। तुम्हें माया ने भटका रखा था। अब तुम बाहरी वजूद को देखना छोड़कर ज्ञान से उनकी पहचान करो।

हकें लिख्या फुरमान में, मेरा अर्स मोमिन कलूब।
क्यों न जागो देख ए सुकन, दिल में अपना मेहेबूब।। ३ ।।

हक (श्री राजजी महाराज ने) कुरान में लिखा है कि मेरा अर्श (ठिकाना) मोमिनों का दिल है। इन वचनों को सुनकर क्यों सावचेत (सतर्क) नहीं होते हो और जागकर क्यों नहीं अपने दिल में बैठे धनी को पहचानते हो।

ए छल झूठा देख के, तुम लई जो तिनकी बुध।
तो नजर बाहेर पड़ गई, जो भूले अर्स की सुध।। ४ ।।

इस झूठे संसार को देखकर तुमने माया की बुद्धि ले रखी है, इसलिए घर की सुध भूलकर बाहर की दृष्टि से देखने लगे हो।

जात भेख ऊपर के, ए सब छल की जहान।
जो न्यारा मांहें बाहेर से, तुम तासों करो पेहेचान।। ५ ।।

यह जाति और भेष सब छल वाली दुनियां के हैं। वह पारब्रह्म जो अन्दर और बाहर से न्यारा है, तुम उसकी पहचान करो कि वह कौन है।

Nijanand App

काजी कजा जो करसी, तब कह्या रसूलें संग हम।
ए सोई दिन आइया, अब क्यों भूलें कदम।।६ ।।

अक्षरातीत जब सबका न्याय करने आएंगे, रसूल साहब ने कहा था कि मैं भी तब उनके साथ आऊंगा। अब वह दिन आ गया है तो फिर हम उनके चरणों को क्यों छोड़ें?

कह्या रसूलें आवसी, आखिर ए मेहेरबान।
नजर जाहेरी क्यों देखोगे, जोलों बातून नहीं पेहेचान।।७ ।।

रसूल साहब ने यह भी कहा था कि आखिर में वह मेहरबान पारब्रह्म जब आएंगे तो तुम जाहिर वजूद की नजर से पहचान नहीं कर सकोगे, जब तक उनके ज्ञान के बातूनी अर्थ को नहीं समझोगे।

पेहेले क्यों थे रसूल हक पें, क्यों ल्याए फुरमान।
अब कौन सरूपें आखिर, ए सब करो पेहेचान।।८ ।।

पहले रसूल साहब खुदा के पास क्यों गए थे और कुरान क्यों लाए? अब आखिर में यह श्री प्राणनाथजी कौन हैं? इन स्वरूप की (श्री प्राणनाथजी की) पहचान करो।

वजूद आवे जो ख्वाब में, सो सब ख्वाब के जान।
ख्वाब देखे जो पार थें, तुम तासों करो पेहेचान।।९ ।।

संसार में जो तन धारण किये जाते हैं वह सब सपने के मिटने वाले होते हैं। परमधाम में बैठकर जो मूलतन सपने को देख रहा है तुम उससे पहचान करो।

जो हक सूरत देखिए इनमें, तो ख्वाब देवें सब भान।
ले माएने देखो बातून, ज्यों होवे सब पेहेचान।।१० ।।

मेहराज ठाकुर के तन में यदि तुम श्री राजजी महाराज को देखो तो तुम्हारा यह सपना समाप्त हो जाएगा। इसके बातूनी अर्थ को देखो जिससे तुम्हें श्री प्राणनाथजी की पूरी पहचान हो जाए।

ए तो आगे थें कई उड़हीं, नूरै की नजर।
तो नूर-तजल्ला की नजरों, ए रेहेसी क्यों कर।।११ ।।

ऐसे सपने के ब्रह्माण्ड अक्षर के एक पल में कई बनकर उड़ते रहे हैं। जब अक्षर की नजर में कई ब्रह्माण्ड उड़ जाते हैं तो पारब्रह्म की नजर में यह कैसे टिकेगा?

हक नजर या पर पड़े, तो उड़े जिमी आसमान।
नूर आगे अंधेरी ना रहे, तुम दिल दे करो पेहेचान।।१२ ।।

अक्षरातीत की नजर पड़ते ही यहां की जमीन आसमान सब समाप्त हो जाएंगे जैसे उजाले के सामने अन्धेरा नहीं रहता, इसलिए तुम दिल देकर पहचान करो।

अब बताऊं या बिध, देखो दिल में आन।
जाहेर मैं देखाऊंगी, मेरे इमाम की पेहेचान।।१३ ।।

अब मैं इस तरह से अपने इमाम की पहचान कराती हूं और उनको जाहिर में भी दिखाऊंगी। तुम भी सावचेत होकर दिल से देखो।

आवे अर्स से हुकम, तिन हुकमें चले हुकम।
फिरे सो मतलब करके, जाए मिले खसम।।१४ ।।

यदि परमधाम से पारब्रह्म का हुकम आता है तो उस हुकम के हुकम से सारा संसार चलता है। वही हुकम अपना काम करके वापस परमधाम जाकर पारब्रह्म में मिल जाता है।

Nijanand App

भी तितथें रूह आवहीं, आवें नूर से जोस कूवत।
सो फुरमाया सब करे, पकड़ के सूरत।। १५ ।।

उसी अर्श अजीम से (परमधाम से) अक्षर की आत्मा के साथ जबराईल फरिश्ता आता है और यहां माया का तन धारण कर पारब्रह्म के हुकम के अनुसार सब करता है।

नूर मकान से फरिस्ता, आवे असराफील।
सब उड़ावे सूर बजाए के, पलक न होवे ढील।। १६ ।।

असराफील (जागृत बुद्धि का फरिश्ता) अक्षर-धाम से आकर वाणी की गुंजार करता है और सारे ब्रह्माण्ड को मिटाने में एक पल भी नहीं लगाता, ऐसी शक्ति का फरिश्ता है।

भी इत अर्स अजीम से, मसी ल्यावें कुंजी रोसन।
सो तोड़ कुफर आलम का, साफ करें सबन।। १७ ।।

इसी परमधाम से श्यामा महारानी तारतम ज्ञान की कुंजी लेकर आए हैं। वह तारतम ज्ञान से सारे संसार का कुफ्र (कपट) समाप्त कर सबके संशय मिटाएंगे।

जब इमाम इत आइया, तब ए सारे संग।
सरूप मेंहेदी याही को, यामें देखोगे कई रंग।। १८ ।।

जब इमाम साहब (श्री प्राणनाथजी) यहां आ गए, तो यह सब [हुकम के स्वरूप, (जबराईल) असराफील और श्यामा महारानी] इनके साथ एक तन में होंगे, इसलिए इनको मेंहदी का स्वरूप कहा है। इनके अन्दर इतनी शक्तियां होने के कारण से कई प्रकार की लीला देखोगे।

याही साथ मिलावा मोमिनों, सबों खास बंदों सोहोबत।
बंदगी जाहेर या बातून, सब बेवरा होसी इत।। १९ ।।

इन्हीं के साथ ही मोमिनों का मिलावा होगा और सभी खास बंदे (ईश्वरी सृष्टि) भी इनकी सोहोबत में आएंगी। यही स्वामी श्री प्राणनाथजी जाहिरी और बातूनी बन्दगी की हकीकत खोलकर बताएंगे।

औलिए अंबिए आसिक, जो खास बंदे सिरदार।
हक बिना कछू न रखें, इनों दुनी करी मुरदार।। २० ।।

यही मोमिन औलिया-अंबिया हैं और यही खुदा के दोस्त हैं। यही मोमिन श्री प्राणनाथजी की पहचान कर उनके चरणों को पकड़ेंगे और मुरदार (जड़) दुनियां को छोड़ देंगे।

ए माएने ले रसूलें, आए केता किया पुकार।
ए सो किन खातिर किया, रूहें अजूं न करें विचार।। २१ ।।

इसी बात को लेकर रसूल साहब ने पहले से कहा था। यह किसके वास्ते कहा था? हे मोमिनो! अभी भी तुम इस स्वरूप की पहचान नहीं करते।

ए किन भेज्या कौन आइया, ए सो कौन कारन।
अब कहे कौन कासों कहे, तुम उठ देखो वतन।। २२ ।।

यह (स्वामी श्री प्राणनाथजी) कौन हैं? इनको किसने, किस कारण भेजा है? यह कहने वाला कौन है? किससे कह रहे हैं? हे मोमिनो! तुम इनकी पहचान कर अपने धाम को देखो।

Nijanand App

तुमें सूती कौन जगावहीं, केहे केहे मगज कुरान।
सुध देवे काजी कजाए की, ले माएने करो पेहेचान।। २३ ।।

हे मोमिनो! तुम भूले हुओं को कुरान के रहस्य बता-बताकर कौन रास्ता दिखा रहे हैं। आखिरत में पारब्रह्म ही आकर न्याय करेंगे, इसके माएने लेकर इस स्वरूप की पहचान करो।

पेहेले ओलखो आपको, पीछे करो मोसों पेहेचान।
देखो अपने अर्स को, याद करो निसान।। २४ ।।

श्री प्राणनाथजी कह रहे हैं कि पहले अपने को पहचानो कि आप किस सृष्टि में से हो फिर मेरी पहचान करो। फिर अपने घर के निशान (पच्चीस पक्ष) याद करो।

यामें रूह कई भांत के, लेत लज्जत खान पान।
अंदर बैठा ताए देखहीं, तुम सब बिध करो पेहेचान।। २५ ।।

इस संसार में कई प्रकार की सृष्टियां हैं जो केवल खाने-पीने में ही मग्न रहती हैं। वह धनी अन्दर बैठकर देख रहा है। तुम उस धनी की हर तरह से पहचान करो।

कहां इनों की असल, दृढ़ करो सोई निसान।
पार अर्स जो कायम, तुम तासों करो पेहेचान।। २६ ।।

हे मोमिनो! इन सृष्टियों का मूल ठिकाना कहां है? वह तुम दृढ़ कर लो। अक्षर के पार जो अपना परमधाम है, जहां से ब्रह्मसृष्टि आई है, तुम उस घर की पहचान करो।

रूहें फरिस्ते पैगंमर, सुध होवे नूर मकान।
सो नूर छोड़ आगे चले, तब होवे पेहेचान।। २७ ।।

श्री प्राणनाथजी की तारतम वाणी से ब्रह्मसृष्टि की, ईश्वरी सृष्टि की, पैगम्बरों की, अक्षर धाम की सुध होती है तथा इस अक्षर धाम को छोड़कर जब मोमिन आगे चलेंगे तब उनको अपने घर की पहचान होगी।

ए सुध सब विध ल्याइया, रसूल हाथ फुरमान।
काजी कजा भिस्त पार की, ले माएने करो पेहेचान।। २८ ।।

इन सब बातों की हकीकत रसूल साहब के कुरान में लिखी है कि पारब्रह्म सबका इन्साफ करके बहिश्तों में अखण्ड करेंगे। इस तरह कुरान के अर्थों को समझकर श्री प्राणनाथजी के स्वरूप की पहचान करो।

बात रसूल की जो सुने, ताको तअजुब बड़ा होए।
हक बका सुध देवहीं, सो कहे न दूजा कोए।। २९ ।।

जब रसूल साहब की बातें, जो कुरान में उन्होंने कही हैं, उनके रहस्यों की चर्चा श्री प्राणनाथजी के मुख से जो भी सुनता है उसे बड़ी हैरानी होती है कि यह कुरान से पारब्रह्म की और अखण्ड परमधाम की पहचान कराते हैं जिसे आज दिन तक किसी ने नहीं कहा।

एक पैंडे चले दुनियां, रसूल सामी बल।
नबी नजर देखे चलें, दुनियां चले अटकल।। ३० ।।

दुनियां के सब धर्मों का एक ही रास्ता है कि वह सब अटकल से चलते हैं, जबकि रसूल साहब ने अपने बल से साक्षात् नजर से देखकर रास्ता बताया है।

Nijanand App

दुनियां जो छाया मिने, सो करे अटकलें अनेक।
छाया सूर न देखहीं, पीछे कहे ताए रूप न रेख।। ३१ ।।

दुनियां के जीव माया की छाया में अनेक तरह की अटकलों से चलते हैं। अन्धेरे में चलने वाला सूर्य को नहीं देख सकता, अर्थात् दुनियां के जीव जो अन्धकार में हैं वह पारब्रह्म की पहचान कैसे करेंगे? वह तो पारब्रह्म को निराकार मान बैठे हैं।

क्यों सब्द आगे चले, तुम कर देखो विचार।
छाया पार किरना रहें, सूरज किरनों पार।। ३२ ।।

इसलिए माया के जीवों की वाणी निराकार से आगे कैसे जाए, इसका तुम विचार करो। माया के पार बेहद भूमि है और पारब्रह्म उससे भी पार है।

पैदास जुलमत काल की, सो तो है सब नास।
खेलें काल के मुख में, ताए अबहीं करेगो ग्रास।। ३३ ।।

जो सृष्टि निराकार से पैदा हुई है वह सब नाशवान है। वह सब काल के मुख में ही है। इसे महाप्रलय नाश कर देगा।

हक सूरत नूर के पार है, तहां सब्द न पोहोंचे बुध।
चौदे तबक छाया मिने, इनें नहीं सूर की सुध।। ३४ ।।

अक्षर के पार पारब्रह्म रहते हैं। वहां के लिए यहां के शब्द और बुद्धि नहीं पहुंचती, क्योंकि चौदह लोकों का ब्रह्माण्ड माया के अन्धेरे में है और इसलिए इनको पारब्रह्म के स्वरूप की पहचान नहीं हो सकती।

कोई ना उलंघे काल को, निराकार हवा ला सुंन।
याको कोई ना उलंघ सके, ए ग्रासे सब उतपन।। ३५ ।।

इस काल का किसी ने पार नहीं पाया। इसका विस्तार निराकार (ला, हवा, शून्य) है जिसे कोई पार नहीं कर सका। इस तरह से यह पूरा ब्रह्माण्ड काल के लिए एक ग्रास के समान है।

बात बड़ी है काल की, ऐसे कई ब्रह्मांड उपाए।
काल भी आखिर ना रहे, पर ए पेहेले सब को खाए।। ३६ ।।

काल की बड़ी भारी महिमा है। वह ऐसे कई ब्रह्माण्डों को बनाता है और आखिर में समाप्त कर देता है। अन्त में काल स्वयं समाप्त हो जाता है (यहां काल से अर्थ नारायण से है)।

रसूल बिना इन काल को, किने न उलंघ्यो जाए।
ए सब्द काल के पार हैं, सो क्यों औरों समझाए।। ३७ ।।

रसूल साहब के बिना किसी ने भी नारायण के पार का ज्ञान नहीं दिया। यह शब्द अर्थात् वाणी काल (क्षर) के पार की है, इसलिए इस भेद को दूसरे नहीं समझ सकते।

छाया की जो दुनियां, ताए अचरज होए सबन।
काल के पार जो पोहोंचहीं, सो क्यों कर रेहेवे तन।। ३८ ।।

इस संसार के लोग जो निराकार से पैदा हैं, उन्हें पार की वाणी (बेहद की वाणी) सुनने से हैरानी होती है। जो क्षर ब्रह्माण्ड के पार के हैं उन्हें अपने घर की पहचान होने पर वह कैसे यहां रह सकते हैं?

Nijanand App

हक की खबर जो ल्यावहीं, सो तेहेकीक न रहे आकार।
जो कदी रहे तो बेहोस, पर कर ना सके पुकार।। ३९ ।।

जो पारब्रह्म की खबर लेकर आए हैं उनके मिटने वाले शरीर नहीं रह सकते। यदि वह पारब्रह्म के हुकम से जीवित रहते भी हैं तो वह संसार की ओर से बेहोश रहेंगे और अपने आप में मग्न रहेंगे।

जिन कोई सक तुमे रहे, मैं सब विध देऊं समझाए।
माएने इन रसूल के, भांत भांत देऊं बताए।। ४० ।।

श्री प्राणनाथजी कहते हैं कि तुमको कोई संशय न रह जाए, इसलिए मैं तुमको सारी हकीकत बता देता हूं तथा रसूल साहब द्वारा लाए कुरान के छिपे भेदों को भी तरह-तरह से बता देता हूं।

सत छाया जीव पर पड़े, सो तबहीं मुरछाए।
ख्वाब न देखे सांच को, वह देखत ही मिट जाए।। ४१ ।।

यदि पारब्रह्म की आत्मा किसी जीव पर आकर बैठती है तो उसका रूप खत्म हो जाता है, क्योंकि सपने का जीव सत को देखते ही मिट जाएगा।

पर अंधे यों न समझहीं, जो इनका नाम रसूल।
सो तो पार से आया हक पे, याको जुलमत ना मूल।। ४२ ।।

पर अज्ञानी लोग यह नहीं समझते कि रसूल निराकार के अन्दर के नहीं है। यह तो परमधाम से श्री राजजी महाराज के पास से ही आए हैं।

बात मासूक की सो करे, आगे आसिक अरधंग।
कहे कुरान पुकार के, रसूल न छाया संग।। ४३ ।।

मोमिनों के आगे श्री राजजी महाराज की बात वही कर सकता है जो पार का होगा। कुरान में स्पष्ट लिखा है कि रसूल माया के जीव नहीं हैं।

सो बात करे मेहेबूब की, वाको अंग न कोई उरझाए।
ज्यों किरने सूरज देखहीं, त्यों त्यों जोत चढ़ाए।। ४४ ।।

जो पारब्रह्म की पहचान कराते हैं उनको माया में कोई उलझन नहीं आएगी। वह जैसे-जैसे वाणी को पढ़ेंगे, वैसे-वैसे ही उनके अन्दर धनी की शक्ति आती जाएगी।

सो जाने सुध पार की, हक मिलिया जिन।
किरना सूरज ना अंतर, यों मासूक आसिक तन।। ४५ ।।

वही पार की सुध देगा जिसे धनी मिल गए हैं। जिस प्रकार सूर्य और किरणों में अन्तर नहीं होता, उसी प्रकार माशूक और आशिक एक ही स्वरूप होते हैं, अर्थात् मोमिन और पारब्रह्म दोनों एक ही हैं।

सीधे सब्द रसूल के, पर ए समझे कछू और।
जोलों सब्द ना चीनहीं, तोलों न पाइए ठौर।। ४६ ।।

रसूल साहब के कुरान की बातें तो सीधी हैं, किन्तु दुनियां वाले इसको कुछ और ही समझते हैं। जब तक कुरान के शब्दों के रहस्य को न समझेंगे तब तक पारब्रह्म तथा घर (परमधाम) की पहचान नहीं होगी।

|| प्रकरण || २९ || चौपाई || १००९ ||

Nijanand App

सनन्ध–इमाम रसूल की

खातिर प्यारी रूहें मोमिन, मैं कहूं अर्स सब्द।
बका सब्द कहे बिना, उड़े ना सरियत हद।। १ ।।

श्री प्राणनाथजी कहते हैं कि मैं अपने मोमिनों के लिए अर्श से वाणी लाया हूं। बिना अखण्ड वाणी के संसार के कर्मकाण्ड (शरीयत) नहीं मिटेंगे।

सुध दुनी हद ना बेहद, कौन रसूल कौन हम।
कागद ल्याया किनका, कहां सो अर्स खसम।। २ ।।

यहां पर दुनियां को क्षर और अक्षर की पहचान नहीं है। कौन रसूल है, कौन मैं हूं, रसूल साहब किनका पैगाम लाए हैं, खावंद और घर कहां हैं, की पहचान नहीं है।

ए सुध किन पाई नहीं, जो लिखी मांहें कागद।
ए सब खेलें ख्वाब में, कोई न छोड़े हद।। ३ ।।

यह ज्ञान जो कुरान में लिखा है किसी को नहीं मिला। यह सब संसार के जीव सपने में ही भटक रहे हैं। संसार छोड़कर कोई आगे की बात नहीं करता।

हद की बांधी सब दुनियां, हक तरफ न करे नजर।
पीठ दे हद बेहद को, यों हादी हक देवें खबर।। ४ ।।

यह सब दुनियां निराकार में बंधी है और हक की तरफ इनकी नजर ही नहीं जाती। अब हादी श्री प्राणनाथजी महाराज आए हैं, जो क्षर तथा अक्षर को छोड़कर पारब्रह्म अक्षरातीत की खबर देते हैं।

हाए हाए किनें न पेहेचानिया, ए जो रसूल रेहेमान।
कहे किताबें जाहेर, सब पर ए मेहेरबान।। ५ ।।

ऐसे दयालु (रहम वाले) श्री प्राणनाथजी को किसी ने पहचाना नहीं, जबकि सभी धर्म ग्रन्थों में साफ लिखा है कि श्री प्राणनाथजी सभी पर कृपा करने वाले हैं।

सब्द रसूल क्यों चीनहीं, ए जो चाम के दाम।
ख्वाबी दम क्यों समझहीं, ए जो अल्ला के कलाम।। ६ ।।

रसूल साहब की वाणी (कुरान) को दुनियां के जीव कैसे समझेंगे? क्योंकि कुरान में पारब्रह्म के वचन हैं और जीव तो सपने का है, इसलिए समझने का सवाल ही नहीं है।

जो दम होवें ख्वाब के, तिन क्यों उपजे विचार।
ए सब ढूंढ़ें ख्वाब में, माएने हवा नूर पार।। ७ ।।

जो सपने के जीव हैं उनके चित्त में कभी पार की बात आ ही नहीं सकती। यह सब जीव पारब्रह्म को सपने में ही ढूंढ़ते हैं, जबकि वह निराकार के पार अक्षर और अक्षर के पार परमधाम के हैं।

ए सांचा नूरी सांई का, इनके सब्द अगम।
फरिस्ते आदम जो मिलो, किन निकसे ना मुख दम।। ८ ।।

यह मुहम्मद साहब पारब्रह्म के सच्चे नूरी फरिश्ते हैं। इनकी वाणी भी पार की है, इसलिए आदमी हो या फरिश्ता, किसी के मुख से कुरान के भेद नहीं खुल सकते।

Nijanand App

आप रसूल नहीं हद का, इनों अर्स अजीम असल।
दुनी सुरिया उलंघ ना सके, पूरी हद की भी नहीं अकल।। ९ ।।

आप रसूल साहब इस संसार के नहीं हैं। इनका घर अर्श अजीम है। दुनियां वाले निराकार को पार नहीं कर सकते और निराकार के अन्दर की भी पूरी खबर इनको नहीं है।

ए सब्द पार बेहद के, ताके माएने करसी सोए।
सब्द महंमद जानें मेंहेदी, दूजा हद का न जाने कोए।। १० ।।

कुरान की वाणी बेहद के पार की है। इसके माएने इमाम मेंहदी (श्री प्राणनाथजी महाराज) जानते हैं। कोई दूसरा हद (क्षर ब्रह्माण्ड) में रहने वाला नहीं जानता।

हद बेहद दोऊ जुदे, मेंहेदी महंमद बिना न होए।
अब देखो जाहेर हुए, रह्या सब्द न हद का कोए।। ११ ।।

हद (क्षर) का ब्रह्माण्ड तथा बेहद (योगमाया) का ब्रह्माण्ड, अक्षर, अक्षरातीत को अलग-अलग ब्योरे वार मुहम्मद मेंहदी के बिना और कोई बता नहीं पाएगा। अब देखो, मुहम्मद जाहिर हो गए हैं और इसलिए संसार का ज्ञान अब नहीं चलेगा।

एही किताब बोहोतन पे, पर माएने न पाए किन।
अब देखो आलम में, इन किताब नूर रोसन।। १२ ।।

यह कुरान बहुतों के पास है, पर किसी ने उसके अर्थ को नहीं समझा। अब सारे संसार में कुरान के रहस्यों का भी भेद फैलने लगा है।

जो दम होवें ख्वाब के, सो क्यों करसी पेहेचान।
चीन्ह्या नहीं रसूल को, किन हिंदू न मुसलमान।। १३ ।।

जो सपने के जीव हैं, वह कुरान की वाणी को कैसे समझेंगे? संसार के जीवों में से हिन्दू या मुसलमानों में से किसी ने रसूल साहब को नहीं पहचाना।

केतेक संग रसूल के, रेहेते रात दिन मांहें।
नातो ओ बुजरक हुते, पर कछू अली बिन चीन्ह्या नांहें।। १४ ।।

रसूल साहब के साथ में रात-दिन इनके दोस्त (अली, अबूबक्र, उमर, उसमान) रहते थे, यह ज्ञानी तो थे परन्तु उनके स्वरूप को केवल अली ही पहचान पाए।

तबक चौदे हद के, चौगिरद निराकार।
ए सब्द हदी क्यों समझहीं, जो निराकार के पार।। १५ ।।

चौदह तबकों (लोकों) का ब्रह्माण्ड नाशवान है। इसके चारों तरफ निराकार का आवरण है, इसलिए निराकार के पार के शब्दों को हद के जीव कैसे समझ पाएंगे?

बेहद को सब्द न पोहोंचही, ए हद में करें विचार।
कोई इत बुजरक कहावहीं, सो केहेवे निराकार।। १६ ।।

यहां चौदह लोकों का ज्ञान बेहद का वर्णन नहीं कर सकता और यहां के ज्ञानी हद (चौदह लोकों) के अन्दर ही पारब्रह्म को खोजते हैं, इसलिए वह निराकार तक ही कहते हैं।

Nijanand App

फेर इनों को पूछिए, क्या बेचून बेचगून।
क्या है सुन्य निरंजन, कछू खबर न दई इन।। १७ ।।

इन संसार के जीवों से पूछो कि बेचून, बेचगून (निराकार, निर्गुण) क्या है या शून्य-निरंजन क्या है? ऐसी कुछ भी खबर इनको नहीं है।

निराकार आकारों ना सुध, ना सुध आप खसम।
ना सुध छल ना वतन ए बुजरकों बड़ी गम।। १८ ।।

परन्तु निराकार (संसार के जीव) की और आकार वाले (मोमिन) की इनको खबर नहीं है। इन्हें अपने आपकी और पारब्रह्म की खबर नहीं है। इनको न माया की खबर है और न घर की खबर है। यह यहां के ज्ञानियों का ज्ञान है।

खासा नूरी खुदाए का, ए बोल्या सब्दातीत।
सब मिल सब्द विचारहीं, पर पावें ना वे रीत।। १९ ।।

रसूल साहब खुदा के नूरी स्वरूप हैं और उन्होंने पार की वाणी बोली, जिसे संसार के लोग मिलकर विचारते हैं, पर उनके भेदों को नहीं पहचान पाते।

आदम मिलो कई औलिए, अंबिए बड़े आकीन।
नूरी कहावें फरिस्ते, पर किन रसूल को ना चीन।। २० ।।

संसार के आदमी, ज्ञानी, औलिए, अंबिए, यकीन वाले, नूरी फरिश्ते, ब्रह्मा, विष्णु, महेश, आदि भी रसूल साहब को नहीं पहचान सके।

सिफत बड़ी रसूल की, निराकार के पार अखंड।
ऐसा कोई न हुआ, ना तो हुए कई ब्रह्मांड।। २१ ।।

रसूल साहब की बड़ी महिमा है कि यह निराकार के पार अखण्ड परमधाम के रहने वाले हैं। कई ब्रह्माण्ड बनकर मिट गए पर इनके समान अभी तक दूसरा कोई नहीं हुआ।

दीन दरसन फिरके मजहब, और मिलो कई जात।
पढ़ पढ़ सिर बांधे पर, पर पाई ना नबी की बात।। २२ ।।

दुनियां के सभी धर्म शास्त्र, सम्प्रदाय तथा और भी अन्य लोगों ने अध्ययन कर उपाधियां ले लीं। पर किसी ने रसूल साहब के ज्ञान को नहीं पाया।

चौदे तबक की रूह में, ऐसा ना कोई समर्थ।
सब्द महंमद मेंहेदी बिना, करे सो कौन अर्थ।। २३ ।।

चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड में ऐसा कोई नहीं हुआ जो कुरान की वाणी को समझ सके। इन शब्दों के रहस्य को मुहम्मद मेंहदी के बिना और कोई नहीं खोल सकता।

ए माएने इमाम बिना, कोई कर ना सके और।
अब देखोगे इन माएनों, सुख लेसी सब ठौर।। २४ ।।

इमाम मेंहदी के बिना इस कुरान के माएने कोई नहीं खोल सका था जो उन्होंने अब खोल दिए हैं अब सभी लोग उसका सुख लेंगे।

Nijanand App

नूर बड़ा इन सब्द में, सो देख थके सब कोए।
इमाम बिना इन नूर को, रोसन क्यों कर होए।। २५ ।।

कुरान के शब्दों में नूरी ज्ञान (अखण्ड ज्ञान) भरा है। जिसे देख, पढ़कर सब लोग थक गए थे, पर इमाम मेंहदी के बिना इस ज्ञान के रहस्य को दूसरा कैसे जाहिर कर सकता था।

इन जुबां मैं क्यों कहूं, मुसाफ मगज नूर।
कुफर चौदे तबक का, किया इमामें दूर।। २६ ।।

संसार की जबान से कुरान के भेदों का प्रकाश कैसे करूं? चौदह तबकों (लोकों) के जीवों का अन्धकार अब इमाम साहब ने आकर दूर कर दिया है।

फुरमान नूर के पार का, सो क्यों कर इनों समझाए।
ए माएने रोसन तब होवहीं, जब बैठे इमाम इत आए।। २७ ।।

यह कुरान नूर के पार परमधाम का ज्ञान देता है। वह इन संसार के जीवों की समझ में कैसे आए? इसके भेद तो तब खुलेंगे जब इमाम मेंहदी यहां आकर बैठ जाएंगे।

ल्याए खजाना वतनी, करसी आए इंसाफ।
देसी सुख कायम, आवसी सो असराफ।। २८ ।।

कुरान में लिखा था कि इमाम मेंहदी (श्री प्राणनाथजी महाराज) तारतम वाणी लेकर आएंगे और संसार का न्याय करके सबको बहिश्तों में कायम करेंगे। ऐसा सर्वश्रेष्ठ न्यायाधीश आएगा।

ए रसूलें पेहेले कह्या, खोलसी माएने इमाम।
उमेदां मोमिन दुनी की, होसी जाहेर हुए कलाम।। २९ ।।

रसूल साहब ने पहले ही कह दिया था कि इस कुरान के माएने इमाम मेंहदी आकर खोलेंगे और सब दुनियां की चाहनाएं इन वचनों के जाहिर होने से पूरी होंगी।

मोमिन कारन आवसी, आखिर करी सरत।
हम भी फेर तब आवसी, सुख देसी कर सिफायत।। ३० ।।

रसूल साहब ने वायदा कर रखा है कि जब इमाम मेंहदी मोमिनों के वास्ते आएंगे तो मैं भी उनके साथ में आऊंगा और अपनी जमात की सिफायत (सिफारिश) करके सुख दूंगा।

जो सुख देसी इमाम, सो या जुबां कह्यो न जाए।
उमेदां मोमिन की, पूरी ईसा इमामें आए।। ३१ ।।

इमाम मेंहदी आकर जो सुख देंगे वह इस जबान से वर्णन करने में नहीं आते हैं, ऐसा कुरान में लिखा है। अब ईसा और इमाम मेंहदी ने आकर के मोमिनों की सब इच्छाओं को पूरा कर दिया।

नूर बड़ो इन माएनों, सो अब हुआ रोसन।
तबक चौदे गरजिया, बरस्या नूर वतन।। ३२ ।।

तारतम वाणी के ज्ञान से कुरान के सारे भेद खुल गए और अब उसका तेज चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड में फैला। परमधाम का ज्ञान (तारतम वाणी) सब जगह फैला।

कह्या जो इमाम आवसी, सो सरत हुई सत।
आगे इन इमाम के, जाहेर होसी बड़ी मत।। ३३ ।।

मुहम्मद साहब ने जो इमाम मेंहदी के आने के लिए कहा वह वायदा सत्य हो गया। अब इन इमाम साहब की जागृत बुद्धि का प्रकाश फैलेगा।

Nijanand App

एक लुगा झूठ ना होवहीं, जो बोले हजरत।
आगे ही थें सब कह्या, पर क्यों समझे रूह गफलत।। ३४ ।।

हजरत रसूल साहब ने जो पहले से कह रखा है उसका एक शब्द भी झूठा नहीं होगा। उन्होंने आगे आने वाली सब बातों को पहले से ही बतला दिया था, परन्तु माया के गफलती जीवों को समझ में कैसे आए?

अब सो इमाम आइया, याही दिन आखिर।
सब्द रसूल के जाहेर, फिरवलसी सब पर।। ३५ ।।

रसूल साहब ने आखिरत में आने के लिए जिसके वास्ते कहा था, वही इमाम मेंहदी आ गए हैं और इसलिए सभी लोग रसूल की बातों पर भरोसा करेंगे।

पैंडा बताया रसूलें, पर कोई न समझया तब।
तिन राह सब चलसी, राजी हो हो अब।। ३६ ।।

रसूल साहब ने पार का रास्ता बतलाया था, परन्तु तब कोई नहीं समझ सका था। अब सब राजी खुशी इसी रास्ते पर चलेंगे।

धंन रसूल धंन फुरमान, धंन आया जिन खातिर।
धंन मेंहेदी महंमद रूहअल्ला, धंन धंन ए आखिर।। ३७ ।।

रसूल साहब, जिनके लिए कुरान लाए हैं, वह, रूह अल्लाह तथा इमाम मेंहदी धन्य हैं। यह आखिरत का समय भी धन्य है।

अब सब में जाहेर हुए, बड़े रसूल के सब्द।
इमाम आए फजर हुई, उड़ गई अंधेरी हद।। ३८ ।।

अब इमाम मेंहदी के आने से ज्ञान का सवेरा हो गया और अज्ञानता का अन्धकार मिट गया। अब सारे जगत में रसूल साहब के कुरान की वाणी जाहिर हो गई।

एते दिन ढांपे हते, मगज माएने बातन।
आए इमाम बखत बदल्या, सैतान मारया सबन।। ३९ ।।

आज तक कुरान के बातूनी भेद छिपे थे। अब इमाम साहब के आने से समय बदल गया और सबकी कुबुद्धि हट गई।

जाहेर साहेब हुए पीछे, चले न दूजी बाट।
पंथ पैंडे मजहब सब उड़ गए, सब हुआ एकै ठाट।। ४० ।।

इमाम मेंहदी के जाहिर होने के बाद दूसरे सभी धर्मों के रास्ते बन्द हो गए तथा सभी पन्थ, पैंडे, मजहब समाप्त हो गए। सबका एक रास्ता हो गया।

आया सबका खसम, सब सब्दों का उस्ताद।
महंमद मेंहेदी आए बिना, कौन मिटावे वाद।। ४१ ।।

सारे जगत के मालिक श्री प्राणनाथजी आए हैं, जो सब धर्म शास्त्रों के ज्ञाता हैं। इमाम मेंहदी के आए बिना इन सब झगड़ों को कौन मिटा सकता था?

Nijanand App

घर घर होसी सादियां, उड़ गई गफलत।
जो कह्या सो सब हुआ, आई ए आखिरत।। ४२ ।।

घर-घर में अब बड़ी खुशियां मनाई जाएंगी। सबकी अज्ञानता मिट गई। जो मुहम्मद साहब ने आखिरत के लिए पहले कहा था, वह सब पूरा हुआ।

तारीफ महंमद मेहेंदी की, ऐसी सुनी न कोई क्यांहें।
कई हुए कई होएसी, पर किन ब्रह्मांडो नांहें।। ४३ ।।

आज दिन तक कई ब्रह्माण्ड हो गए, पर किसी ब्रह्माण्ड में इमाम मेंहदी की शोभा (प्रशंसा) हुई है, ऐसी कहीं भी किसी ब्रह्माण्ड में नहीं सुना।

|| प्रकरण || ३० || चौपाई || १०५२ ||

सनन्ध–दज्जाल की

जिन मोमिन के कारने, रचिया एह मंडल।
तिनकी उमेदां पूरने, मेहेदी महंमद आए मिल।। १ ।।

जिन मोमिनों के लिए यह ब्रह्माण्ड बनाया गया है, उनकी चाहना पूरी करने के लिए ही मेंहदी मुहम्मद यहां आए हैं।

अब नेक कहूं आखिर की, जो होसी सब जाहेर।
बांधे दज्जालें मोमिन, अंतर मांहें बाहेर।। २ ।।

अब थोड़ी-सी बात आखिरत के समय की बताती हूं जो सब में जाहिर होगी। दज्जाल ने मोमिनों को अन्दर (अबलीस), बाहर और अंतर (अजाजील) से बांध रखा है।

आया इमाम आलम का, तब कुफर रेहेवे कित।
पर कहूं मोमिन दज्जाल की, नेक हुई लड़ाई इत।। ३ ।।

सारे संसार के मालिक आएं हैं, तब इनके सामने कुफ्र कैसे रह सकता है? मोमिनों और दज्जाल की जो लड़ाई हुई है उसकी थोड़ी-सी हकीकत बताती हूं।

क्यों कहूं बल दज्जाल का, जाहेर बड़ा पलीत।
जोर न चले काहू का, लिए जो सारे जीत।। ४ ।।

दज्जाल की ताकत का कहां तक वर्णन करूं? यह बड़ा नीच है। इसने सारे जगत को जीत रखा है, किसी का कोई बल नहीं चलता।

अंग जो बांधे या बिध, पेहेले पेड़ से फिराई बुध।
उलटाए सबों या बिध, परी न काहूं सुध।। ५ ।।

इसने अंग-अंग में तरह-तरह के बन्धन बांध रखे हैं। शुरू से ही (जड़ से ही) बुद्धि को बांध रखा है। इसने सभी को उलटा कर उलटे रास्ते लगा दिया है। इसकी सुध किसी को नहीं है।

दज्जाल नजरों न आवहीं, सब में किया दखल।
जाने दोस्त को दुस्मन, कोई ऐसी फिराई कल।। ६ ।।

दज्जाल नजर से दिखाई नहीं देता पर सबके अन्दर यह बैठा है। जिससे दोस्त दुश्मन की तरह दिखाई पड़ते हैं। बुद्धि को इसने ऐसा उलटा रखा है।

Nijanand App

अंदर जो बांधे या बिध, कही न जाए करामत।
सत असत कर देखहीं, असत लग्या होए सत॥ ७ ॥

इसने अन्दर जो बन्धन बांधे हैं उस करामात का कहना अति कठिन है। इससे सत झूठा और झूठा सत लगने लगा है।

मन चित बुध अहंकार, काम क्रोध गफलत।
आउध ए दज्जाल के, स्यानप ग्यान असत॥ ८ ॥

मन, चित्त, बुद्धि, अहंकार, काम, क्रोध, भ्रम, चतुराई तथा झूठा ज्ञान, आदि सभी दज्जाल के हथियार हैं।

भी आउध अमृत रूप रस, छल बल वल अकल।
कोमल कुटिल अंग सीतल, चंचल चतुर चपल॥ ९ ॥

अमृत, रूप, रस, छल, बल, दांव-पेंच, अक्ल, कोमलता, कुटिलता, शीतलता, चंचलता और चतुराई तथा चपलता, आदि भी इसके हथियार हैं।

जाकी अग्याएं अगनी चले, चले जिमी और जल।
वाउ भी हुकम पर खड़ा, ऐसा दज्जाल का बल॥ १० ॥

इसकी आज्ञा से अग्नि जलती है। जमीन और जल चलते हैं। हवा भी इसके हुकम पर खड़ी है। इतनी बड़ी दज्जाल की शक्ति है।

ए दज्जाल बड़ा जोरावर, मूल गफलत याके साथ।
मनसा वाचा करमना, ए सब इनके हाथ॥ ११ ॥

यह दज्जाल (शैतान-अबलीस) बड़ी ताकत वाला है। शुरू से ही मन, वचन और कर्म से संशय इसके साथ हैं।

जुध बड़ा दज्जाल का, लिए जो सारे जीत।
भागे भी ना छूटहीं, कोई ऐसा बड़ा पलीत॥ १२ ॥

दज्जाल की लड़ाई के सामने कोई भागकर भी नहीं छूट सकता। यह ऐसा नीच है। इसने सबको जीत रखा है।

सूर बड़े इन जहान में, जिन किए सामें बल।
ताबे अपने कर लिए, बाए गले सांकल॥ १३ ॥

इस संसार में बड़े-बड़े लोगों (योगी, तपस्वी, ज्ञानी, ध्यानी, इत्यादि) ने लड़ाई लड़ी, किन्तु माया ने उनके गले में फंदे डालकर उन्हें अपने वश में कर लिया।

छीन लिए बल सबन के, जो सूरमें बड़े केहेलाए।
बांध्या जो कोई बल करे, तो बड़े जो गोते खाए॥ १४ ॥

इस तरह से इन बड़े-बड़े शूरवीरों की ताकत को छीन लिया। इसके वश में आकर भी जिसने बल दिखाया, उसे माया के और अधिक कष्ट उठाने पड़े।

जो बुजरक बड़े कहावहीं, तिन जुध किए मिल मिल।
सो फरिस्ते उलटाए के, ले डारे गफलत दिल॥ १५ ॥

बड़े-बड़े बुजुर्गों (ज्ञानियों) ने मिलकर दज्जाल से लड़ाई मोल ली, फिर भी इस दज्जाल ने सबको उलटकर माया के लालच में डाल दिया।

Nijanand App

ए जुध करे सबनसों, आप नजर न आवे किन।
दज्जाल जोर करामात, सब किए आप से तन।। १६ ।।

यह सबसे युद्ध करता है, परन्तु किसी को दिखाई नहीं देता, क्योंकि इसने सबको अपने जैसे तन दे रखे हैं, अर्थात् यह मन का रूप है जो सबके अन्दर है।

कोई न छोड़्या दज्जालें, जीत लिए सकल।
ऐसे अंधे कर लिए, कोई सके न काहूं चल।। १७ ।।

इस दज्जाल ने सभी को जीत लिया है। किसी को नहीं छोड़ा। माया के मोह में ऐसा अन्धा बना दिया है कि कोई चल भी नहीं सकता, अर्थात् कोई माया छोड़ नहीं सकता।

सब अंग बांधी दुनियां, सारे हुए बेअकल।
अबलों किन देख्या नहीं, कुफर करामात कल।। १८ ।।

सारी दुनियां इस प्रकार माया के बन्धनों में बंधकर नासमझ हो गई है। अभी तक इस शैतान के झूठे कारनामे को कोई नहीं देख सका।

या बिध बांधी दुनियां, खोल ना सके कोई बंध।
राह हक की छुड़ाए के, ले डारे गफलत फंद।। १९ ।।

इसने दुनियां के जीवों पर बड़े जबर्दस्त बन्धन डाले हैं जिसे कोई खोल नहीं पाया। जीवों ने अज्ञान के अन्धकार में डूबकर पारब्रह्म का रास्ता ही छोड़ दिया।

दुनियां बाहेर देखहीं, अजूं आया नहीं दज्जाल।
बंदगी करते आवसी, तब लड़सी तिन नाल।। २० ।।

दुनियां के लोग समझते हैं कि बन्दगी के समय जाहिरी में दज्जाल आएगा और वह उस समय दज्जाल से लड़ेंगे, परन्तु दज्जाल अभी तक रूप धारण करके आया नहीं।

खाए गया सबन को, अजूं देखत नाहीं ताए।
तिनसे लड़ने बाहेर, बांध बांध कमरें जाए।। २१ ।।

उस दज्जाल ने सबको खा लिया (अपने अधीन कर लिया)। दुनियां अभी भी उसको समझ नहीं पा रही है। बन्दगी के समय दज्जाल से लड़ने के लिए जाहिरी तलवारें बांधकर जाते हैं।

जुध याको जाहेर कह्या, देसी बंदगी छुड़ाए।
आप अंदर से उठसी, जीत्यो न काहू जाए।। २२ ।।

दज्जाल के युद्ध का जाहिरी अर्थ है कि वह बन्दगी नहीं करने देगा। वह अन्दर से ही मन में उलझनें पैदा कर देगा और बन्दगी छुड़ा देगा, इसलिए उसे कोई जीत नहीं सकता।

जाहेर कहे जो माएने, ए तित भी रहे उरझाए।
लिखियां जो इसारतें, सो इनों क्यों समझाए।। २३ ।।

जो जाहिरी रूप से कुरान में लड़ाई के किस्से लिखे हैं उनको भी यह नहीं समझ पाए, तो कुरान के बातूनी अर्थ जो इशारतों में लिखे हैं, उसे कैसे समझेंगे?

Nijanand App

तो कह्या नबिऐं इमन को, ला बारकला मुसल्मीन।
दई बारकला हिंद मुस्लिम, लिए सिर कलाम आकीन।। २४ ।।

रसूल साहब टीले पर खड़े होकर खुदा से हिन्द के मुसलमानों के लिए रहमत मांगते हैं। इमन (अरब, ईराक, इरान और फारस) के मुसलमानों से बरकत उठाकर हिन्द के मुसलमानों को दे दी, क्योंकि हिन्द के मुसलमानों ने ही दीन को अच्छी तरह से समझा।

कहा कहूं बल दज्जाल को, जोर बड़ा जालिम।
पेहेले पढ़े सब लिए, पीछे छोड्या न कोई आलम।। २५ ।।

दज्जाल की ताकत बड़ी है और वह जालिम भी है। इसने पहले पढ़े-लिखे विद्वान अगुओं के दिल में अहंकार पैदा करके अपने वश में किया और फिर पीछे संसार में किसी को नहीं छोड़ा।

नाम इमाम धरावहीं, पर फुरमान की ना सुध।
बरकत कलमें रसूल के, साफ होसी सब बिध।। २६ ।।

नाम तो अपना इमाम धराकर आगे चलते हैं, परन्तु उनको कुरान की सुध नहीं होती। अब स्वामी श्री प्राणनाथजी की वाणी के ज्ञान से सबके संशय समाप्त हो जाएंगे।

नजरों काहू न आवहीं, करत गैब की मार।
कोई छूट्या मोमिन भाग के, और कर लिए सब कुफार।। २७ ।।

यह शैतान मन, किसी को नजर नहीं आता और अन्दर ही अन्दर मार करता है। इससे कोई-कोई मोमिन ही बचकर निकले। बाकी सबको इसने अपने अधीन कर रखा है।

फरिस्ता चौदे तबकों, फिरवल्या सब पर।
हुकम चलाया अपना, कोई रह्या न ताबे बिगर।। २८ ।।

इस अजाजील फरिश्ते ने (दज्जाल ने) चौदह लोकों के ऊपर अपनी सत्ता जमा ली है और अपने ही अधीन सबको करके अपना हुकम चलाता है।

ओ जाने हम सीधा चलें, इन बिध राह मारत।
तो कही पुल-सरात, तरवार धार है इत।। २९ ।।

दुनियां वाले समझते हैं हम कर्मकाण्ड करके (शरीयत पर चलकर) खुदा के रास्ते पर सीधा चल रहे हैं। पर वह सबको राह से गुमराह कर रहा है। इसलिए शरीयत (कर्म-काण्ड) को तलवार की धार के समान कहा है (कर्मकाण्ड से कोई पार नहीं हुआ)।

ए आदम औलाद सब जानत, इन बदला मांग लिया हक पें।
क्यों छूटे बंध दुस्मन के, तो किन चल्या ना इनसें।। ३० ।।

यह आदम की सब औलाद आदमी हैं। वह यह जानते हैं कि अजाजील से हमारी दुश्मनी है। इसने खुदा से हमारे अन्दर बैठकर गुनाह करवाने की शक्ति मांग रखी है, इसलिए कोई भी आदमी इस अजाजील के बन्धन से छूट नहीं पाता और किसी की इसके सामने ताकत नहीं चलती है।

क्यों करें जंग दज्जाल से, काफर या मुसलमान।
औलाद आदम सब ताबीन, पातसाह दिलों सैतान।। ३१ ।।

किसी भी काफिर और मुसलमान के पास दज्जाल से लड़ने की ताकत नहीं है, क्योंकि आदम की औलाद के दिलों पर इसकी बादशाही (अधिकार) है।

Nijanand App

तो क्या चले बंदन का, जिन दिल पर ए पातसाह।
सब जानें दुस्मन मारसी, हक तरफ चलते राह।। ३२ ।।

जिनके दिलों पर इसकी बादशाही है वह भक्त जन भी क्या करें? यह सभी जानते हैं कि धर्म की राह पर चलने में यह दुश्मन हमको मारेगा।

दिल मोमिन हक अर्स कह्या, तो इन दुनियां करी हराम।
पीठ दई मुरदार को, जिन दिलों अर्स आराम।। ३३ ।।

मोमिनों के दिलों में हक की बैठक है। यही इस दुनियां को हराम समझकर छोड़ सके। इन्होंने सारी दुनियां को पीठ दे दी, जिनके दिल में श्री राजजी की बैठक है।

जो दिल कह्या अर्स हक का, तिन तरफ जले काफर।
मार न सके राह मोमिनों, सब बंधे इनों बिगर।। ३४ ।।

जिनके दिलों में हक की बैठक है, उनके रास्ते पर काफिर लोग नहीं चल सकते। शैतान मोमिनों के रास्ते पर रोक नहीं लगा सकता। बाकी सबको अपने बन्धन में इसने बांध रखा है।

मोमिन उतरे नूर बिलंद से, तो कह्या अर्स कलूब।
तिन तरफ क्यों आए सके, जिनका हक मेहेबूब।। ३५ ।।

मोमिन परमधाम से उतरे हैं, इसलिए इनके दिल को हक का अर्श कहा है, इसलिए उन मोमिनों की तरफ यह दज्जाल आ ही नहीं सकता, क्योंकि यह पारब्रह्म के प्यारे हैं (इनका पति पारब्रह्म है)।

सब साफ किए दिल मोमिन, जब इत आए इमाम।
जिन दिल पातसाह सैतान, किए पाक जलाए तमाम।। ३६ ।।

जब यहां श्री प्राणनाथजी आए तो उन्होंने मोमिनों के दिलों के संशय मिटा दिए और जिनके दिलों पर शैतान की बादशाही है उन्हें पश्चाताप की अग्नि में जलाकर पाक (पवित्र) किया।

खबर न पाई काहूं ने, जो दिल ऊपर सैतान।
साफ किए सबन को, जाहेर कर हुकम सुभान।। ३७ ।।

आज दिन तक कोई नहीं जान पाया था कि शैतान दिल के अन्दर ही बैठा है। श्री राजजी महाराज के हुकम ने इसे जाहिर कर सबके दिल साफ कर दिए।

जाहेर काहूं न हुआ, छिप कर लिए सब।
इमाम आए जाहेर हुआ, ए जो दज्जाल न देख्या किन कब।। ३८ ।।

पहले यह किसी को पता नहीं था कि शैतान अन्दर बैठा है। यह समझते थे कि बन्दगी के समय वह छिपकर आएगा। इमाम मेंहदी (श्री प्राणनाथजी) जाहिर हुए तो उन्होंने दज्जाल के भेद को बताया कि यह सबके अन्दर बैठा है और किसी ने इसको देखा नहीं है।

जब इमाम इत आए, तब क्यों रहे ढांप्या चोर।
मोमिन पेहेले छुड़ाए के, दिए दुनी के बंध तोर।। ३९ ।।

जब श्री प्राणनाथजी (इमाम मेंहदी) यहां पर आए तब चोर छिपकर कैसे रह सकता है? उन्होंने पहले मोमिनों को बन्ध से छुड़ाया। पीछे दुनियां को दज्जाल के बन्धन से मुक्त किया।

Nijanand App

ए जो जीती दज्जालें दुनियां, कर लई थी निरबल।
सो बल सबको देय के, दिए सुख नेहेचल।।४०।।

दज्जाल ने सब दुनियां को जीतकर उसे कमजोर बना दिया था, अर्थात् किसी को ईमान पर खड़े नहीं रहने देता था। प्राणनाथजी ने सबको तारतम वाणी की ताकत दी और बहिश्तों के अखण्ड सुख दिए।

लिख्या है फुरमान में, मेंहेदी आवेगा आखिर।
उड़ाए मारसी दज्जाल को, राह देसी सीधी कर।।४१।।

कुरान में लिखा है कि आखिरत में इमाम मेंहदी आएंगे। वह दज्जाल को मारकर दुनियां को सीधा रास्ता बताएंगे, अर्थात् कर्मकाण्ड का रास्ता समाप्त कर प्रेम-मार्ग पर चलाएंगे।

अब हुए सब जाहेर, कुफर करामात कल।
महंमद मेंहेदी के प्रताप से, जासी बंध सब जल।।४२।।

अब दज्जाल के झूठे कारनामे जाहिर हो गए हैं और अब वह मुहम्मद मेंहदी के प्रताप से जलकर समाप्त हो जाएगा।

कुदरत रूप दज्जाल को, किनहूं न जान्या जाए।
तब सबों को सुध परी, जब ईसे दिया उड़ाए।।४३।।

यह माया ही दज्जाल का रूप है, यह किसी ने नहीं जाना। इसकी पहचान सभी को तब मिली जब ईसा श्री श्यामा महारानी (श्री देवचन्द्रजी) ने इसको समाप्त कर दिया।

इमाम तो मारे इनको, जो ए आपे होए वजूद।
इमाम के आवाज से, होए गया नाबूद।।४४।।

दज्जाल का कोई रूप होता तो प्राणनाथजी उसको मारते। प्राणनाथजी की वाणी से ही यह मिट गया।

जब इमाम जाहेर हुए, तब क्यों रेहेवे अंधेर।
अपनी तरफ सबन के, लिए दुनी दिल फेर।।४५।।

जब इमाम साहब (श्री प्राणनाथजी महाराज) प्रगट हो गए तो अज्ञान का अन्धेरा कैसे रह सकता है? इन्होंने अपनी जागृत बुद्धि से दुनियां के दिलों को अपनी तरफ मोड़ लिया।

जो कबहूं प्रगटे होते, तो होत कुफर को नास।
जब इमाम जाहेर हुए, तब नूर हुआ उजास।।४६।।

इससे पहले यदि इमाम मेंहदी (श्री प्राणनाथजी) जाहिर हुए होते तो तभी यह कुफ्र मिट जाता। अब जब इमाम मेंहदी जाहिर हो गए हैं तो इनकी वाणी से उजाला हुआ।

मेंहेदी महंमद ढांपे ना रहें, जासों झूठ भी सांच होए।
ऐसा खसम जोरावर, यासें सुख पावे सब कोए।।४७।।

मुहम्मद मेंहदी किसी के ढांपने से छिप नहीं सकते, क्योंकि इनकी कृपा से नाशवान जगत भी अखण्ड होना है। ऐसी शक्ति के मालिक श्री प्राणनाथजी आ गए हैं, इसलिए सबको सुख मिलेगा।

॥ प्रकरण ॥ ३१ ॥ चौपाई ॥ १०९९ ॥

Nijanand App

सनन्ध-इमाम के प्रताप की

प्रताप इमाम कहा कहूं, इन जुबां कह्यो न जाए।
तो भी नेक रोसन करूं, तुम लीजो चित ल्याए।।१।।

हे मोमिनो! इमाम साहब (श्री प्राणनाथजी) जी की महिमा का कहां तक वर्णन करूं? यह इस जबान से कहने में नहीं आती, तो भी थोड़ा सा जाहिर करती हूं। तुम इसे चित्त में रख लेना।

ए नेक करूं इसारत, तुम सुनियो आखिर दिन।
पेहेले मिलसी रूह मोमिन, पीछे तो सब जन।।२।।

मैं आखिरत के दिन की थोड़ी-सी हकीकत कहती हूं। सबसे पहले मोमिनों को उनका सुख मिलेगा। पीछे सारे संसार को सुख मिलेगा।

ए सरत सोई जो आगे करी, हक इल्म होसी जाहेर।
लिख्या है कुरान में, आया सो आखिर।।३।।

मुहम्मद साहब ने पहले से ही वायदा किया था कि आखिरत में हक का इल्म जाहिर होगा। उसी के अनुसार जो कुरान में लिखा है, वह आखिरत का समय आ गया है।

सब्द गुझ पुकारहीं, सब में सचराचर।
सो सारे कदमों तले, जब आए इमाम आखिर।।४।।

अब इमाम साहब के आने पर कुरान के सब भेद खुल गए और सबने जान लिया। पहचान कर सब इमाम मेंहदी के चरणों में आ गए।

खेल पाया इसदाए से, आप असल बका घर।
सब सुध हुई प्रताप तें, जब आए इमाम आखिर।।५।।

खेल का कारण जिससे संसार बना और इश्क रब्द जो परमधाम में हुआ, उन सबकी खबर इमाम मेंहदी के आने पर मिल गई।

ए जो खेल था कुदरती, काहूं खोल न देखी नजर।
सो उड़ाए दई पेड़ जुलमत, जब आए इमाम आखिर।।६।।

यह झूठा खेल माया का था। इसे किसी ने आंख खोलकर पहचाना नहीं था। उसे जड़ (मूल) से उखाड़कर इमाम मेंहदी ने नष्ट कर दिया।

त्रिगुन त्रैलोकी मोह की, कहां तें हुई किन पर।
सो संसे न रह्या किन का, जब आए इमाम आखिर।।७।।

ब्रह्मा, विष्णु, महेश, चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड और मोह तत्व की उत्पत्ति कहां से हुई और किसके लिए हुई, इमाम मेंहदी के आने से सबके संशय मिट गए।

निरंजन निराकार तें, खेल रच्यो नारी नर।
ए सुध हुई सबन को, जब आए इमाम आखिर।।८।।

निराकार और निरंजन से प्रकृति पुरुष ने खेल बनाया। उसकी खबर इमाम साहब के आने से सबको मिल गई।

Nijanand App

ए जो फरिस्ते नूर से, खेल तिने किया पसर।
ए गुझ सारों ने पाइया, जब आए इमाम आखिर।। ९ ।।

अक्षर के तीनों नूरी फरिश्तों (मैकाईल, अजाजील और अजराईल अर्थात् ब्रह्मा, विष्णु, शंकर) ने ही इस खेल को बनाया है। इस गुझ रहस्य का भी पता इमाम मेंहदी के आने से सबको लग गया।

काल सुन्य जड़ चेतन, ए सब हुए जाहेर।
ए धोखा किन का न रह्या, जब आए इमाम आखिर।। १० ।।

काल, निरंजन शक्ति, निराकार, शून्य, जड़ और चेतन सबकी पहचान जाहिर हो गई। इमाम मेंहदी के आने से सबके धोखे मिट गए।

वेद कतेब के माएने, सब दृढ़ हुए दिल धर।
किए मगज माएने जाहेर, जब आए इमाम आखिर।। ११ ।।

वेद, कतेब के अर्थ जो दुनियां नहीं जानती थी उन सबका पता चल गया। इमाम साहब ने आकर इनके छिपे रहस्यों को जाहिर कर दिया।

इलम ले ले अपना, सब जुदे हुए झगर।
सो सारे एक दीन हुए, जब आए इमाम आखिर।। १२ ।।

सब लोग अपने-अपने ज्ञान से आपस में झगड़ रहे थे। अब वह इमाम साहब के आने से एक दीन (धर्म) में आ गए।

गैबी मार दज्जाल का, सब में गया पसर।
सो साफ हुई सब दुनियां, जब आए इमाम आखिर।। १३ ।।

दज्जाल जो सबके अन्दर बैठकर गुप्त मार मार रहा था, इमाम साहब के आने से दुनियां को उससे मुक्ति मिली।

आग बिना सब दुनियां, अगिन हुई जर बर।
सो सारे ठंढ़े किए, जब आए इमाम आखिर।। १४ ।।

बिना आग के दुनियां जलकर राख (बेइमान) हो चुकी थी। इमाम साहब के आने से ठण्डक मिली, अर्थात् सबको ईमान देकर सुख दिया।

दुनियां गोते खावहीं, बिन जल भवसागर।
सो सारे ही थिर किए, जब आए इमाम आखिर।। १५ ।।

भवसागर में बिना पानी के दुनियां डूब रही थी। उसको इमाम साहब ने आकर ज्ञान दे दिया, अर्थात् उसके संकल्प, विकल्प मिट गए।

क्यों पैदा क्यों होसी फना, ए ना काहू को खबर।
सो सारों को सुध हुई, जब आए इमाम आखिर।। १६ ।।

यह संसार कैसे पैदा हुआ और कैसे मिटेगा, यह खबर किसी को नहीं थी। इमाम साहब के आने से यह खबर सबको मिल गई।

Nijanand App

छिपिया सांच सबन से, झूठ गया पसर।
सो सारे सत ले खड़े, जब आए इमाम आखिर।। १७ ।।

सत जो पारब्रह्म है, उसकी पहचान किसी को नहीं थी। सारे संसार में झूठ ही फैला था, अर्थात् लोग निराकार के पूजक थे। अब इमाम साहब के आने से सब सत पारब्रह्म को जान गए और उसी रास्ते पर चलने लगे।

काम क्रोध दिमाग में, सब धखे निस वासर।
सो सारे ठंढ़े हुए, जब आए इमाम आखिर।। १८ ।।

दुनियां काम, क्रोध, अहंकार की अग्नि में रात-दिन जलती थी। इमाम साहब ने आकर सबको शान्त कर दिया।

सब्द न लगे काहू को, ऐसे हिरदे भए बजर।
सो गलित गात हुए निरमल, जब आए इमाम आखिर।। १९ ।।

दुनियां के दिल इतने कठोर हो गए थे कि किसी को शब्दों की चोट नहीं लगती थी। अब इमाम साहब के आने से सब नर्म और निर्मल हो गए।

मुस्लिम को मुस्लिम की, हिंदुओं हिंदुओं की तर।
ए समझे सब अपनी मिने, जब आए इमाम आखिर।। २० ।।

मुसलमानों को मुसलमानों के ग्रन्थों से और हिन्दुओं को हिन्दुओं के ग्रन्थों से, इमाम साहब ने हर एक को उनके ही ग्रन्थों से समझाया।

मने फिराई दुनियां, रेहे ना सक्या कोई थिर।
सो मन सारे थिर किए, जब आए इमाम आखिर।। २१ ।।

मन ने सारी दुनियां को वश में करके माया के चक्कर में डाल रखा था। इमाम साहब ने आकर सबके मनों के संशय मिटाकर पारब्रह्म के रास्ते में लगाकर स्थिर कर दिया।

अलख जो अगम कहावहीं, ताकी कर कर थके फिकर।
सो सक सुभे सब उड़ गई,, जब आए इमाम आखिर।। २२ ।।

पारब्रह्म जिसको किसी ने देखा नहीं, जहां कोई पहुंचा नहीं तथा जिसे सब खोज-खोजकर थक गए, इमाम साहब ने आकर सबके संशय मिटा दिए।

सुध आतम परआतमा, सक्या ना कोई कर।
सो सारे धोखे मिटे, जब आए इमाम आखिर।। २३ ।।

संसार में आत्मा और परआतम की पहचान कोई नहीं करा सका था। आखिरी इमाम साहब के आने से सबके धोखे मिट गए और पहचान हो गई।

हद बेहद के पार की, सब देख थके फेर फेर।
सो सारों ने देखिया, जब आए इमाम आखिर।। २४ ।।

हद और बेहद के पार परमधाम की खोज करके सब थक गए थे। आखिरी इमाम साहब ने वह सब जाहेर करके बता दिया।

Nijanand App

पार सुध किन ना हती, बाहेर अंदर अंतर।
सो सारे संसे गए, जब आए इमाम आखिर।। २५ ।।

पारब्रह्म पिण्ड में है या ब्रह्माण्ड में है या इससे भी परे बेहद में है, इसकी खबर किसी को नहीं थी। इमाम साहब ने आकर सबके संशय मिटा दिए।

ढूंढ़ ढूंढ़ के सब थके, ए जो लैलत कदर।
ए दरवाजा खोलिया, जब आए इमाम आखिर।। २६ ।।

सभी मुसलमान लैल-तुल-कद्र की रात को ढूंढ़-ढूंढ़कर थक गए, पर यह किसी को मिली नहीं। अब इमाम साहब ने आकर इसके भेद बता दिए।

नोट : यह रात्रि हजार महीने से बेहतर सम्वत् १६३८ से १७३५ तक की है।

कहांतें नूर-तजल्ला की, जो नूर की भी नहीं खबर।
सो परदे उड़े सबन के, जब आए इमाम आखिर।। २७ ।।

संसार को अक्षर ब्रह्म की ही खबर नहीं थी तो अक्षरातीत की पहचान कैसे होती? अब इमाम साहब ने आकर क्षर, अक्षर और अक्षरातीत सभी के भेद खोल दिए।

कहांतें अछरातीत की, जो सुध न अछर छर।
सो सारे जाहेर हुए, जब आए इमाम आखिर।। २८ ।।

जिनको क्षर और अक्षर की सुध नहीं थी, उनको अक्षरातीत की सुध कहां से होती? अब इमाम साहब आ गए हैं और उन्होंने इन सबकी पहचान करा दी।

इस्क खसम बतावहीं, उड़ाए दिया सब डर।
कायम सुख सब लेवहीं, जब आए इमाम आखिर।। २९ ।।

पारब्रह्म से तथा जन्म-मरण के चक्कर से डरने वाले लोगों को अनन्य प्रेम लक्षणा भक्ति का रास्ता बताकर सबका डर दूर किया। अब इमाम साहब के आने से सब अखण्ड सुख लेंगे।

मोमिन पीछे न रहें, ताए सके न कोई पकर।
उमेदां पूरी सबन की, जब आए इमाम आखिर।। ३० ।।

इस अखण्ड सुख के लेने के लिए मोमिन कभी पीछे नहीं रहेंगे। उन्हें कोई पकड़ नहीं सकेगा। इमाम साहब ने आकर सबकी मुराद पूरी की।

बड़े सुख मोमिन लेवहीं, रस इस्क पिएं भर भर।
औरों को भी पिलावहीं, जब आए इमाम आखिर।। ३१ ।।

मोमिन पारब्रह्म के इश्क के रस को जी भर के पीते हैं और बड़ा सुख अनुभव करते हैं। अब इमाम मेंहदी के आने से यह सुख मोमिनों ने औरों को भी देना शुरू कर दिया।

ए सुख कह्यो न जावहीं, रह्यो न कछू अंतर।
मोमिन रूहें जाहेर हुए, जब आए इमाम आखिर।। ३२ ।।

मोमिनों के इश्क के सुख की बात कही नहीं जाती। अब मोमिनों और पारब्रह्म के बीच कोई अन्तर नहीं रह गया। इमाम मेंहदी के आने से इन मोमिनों की पहचान सारे जगत को हुई।

Nijanand App

सुख आसिकों क्यों कहूं, जो लेवें मासूक अंदर।
सुन मोमिन टूक होवहीं, जब आए इमाम आखिर।। ३३ ।।

ऐसे मोमिन जो पारब्रह्म के आशिक हैं तथा जिन्होंने पारब्रह्म को अपने अन्दर बिठा रखा है, उनके सुख का वर्णन कैसे करूं? जब इमाम साहब आए तो मोमिनों ने अपने आपको उन पर समर्पित कर दिया।

पीछे जहान इन दुनी की, दौड़ी आवे एक दर।
तब तो सुख सागर हुआ, जब आए इमाम आखिर।। ३४ ।।

मोमिनों के सुख को देखकर यह सारी दुनियां मोमिनों के पीछे ही रास्ते पर दौड़ी आ रही है। जब इमाम साहब आए तो सुख सागर की तरह लहरें लेने लगे।

चौदे तबक हुई कजा, एक जरा न रह्यो कुफर।
सो साफ किए सबन को, जब आए इमाम आखिर।। ३५ ।।

चौहद तबकों के जीवों का न्याय हो गया। जरा भी झूठ नहीं रहा। इमाम साहब ने आकर सबको पाक साफ कर दिया।

ए जो काजी कजा करी, सो भी मोमिनों की खातिर।
औरों पाया मोमिन बरकतें, जब आए इमाम आखिर।। ३६ ।।

पारब्रह्म ने मोमिनों के लिए आकर कजा की है (न्याय किया है), जब इमाम साहब आए तो मोमिनों की कृपा से सबको अखण्ड बहिश्त मिली।

बेचून बेचगून बेसबी, है बेनिमून क्यों कर।
सो जाहेर हुआ सबन को, जब आए इमाम आखिर।। ३७ ।।

पारब्रह्म को किसी ने बनाया नहीं। उसके अन्दर कोई गुण नहीं। उसके जैसा कोई रूप नहीं। उस जैसा कोई नमूना नहीं। इस रहस्य को भी इमाम साहब ने आकर जाहिर किया।

सेहेरग से हक नजीक, ए खोली न किन नजर।
सो पट उड़ाए जाहेर किए, जब आए इमाम आखिर।। ३८ ।।

पारब्रह्म शहेरग से नजदीक किस तरह से हैं, यह कोई नहीं जान सका था। आखिरी इमाम ने आकर इस भेद को खोल दिया (अर्थात् यह बताया कि वह मोमिनों के दिल में ही बैठे हैं)।

कई आलम पल में पैदा फना, करें हक कादर।
सो देखाए दुनी कायम करी, जब आए इमाम आखिर।। ३९ ।।

अक्षर ब्रह्म के हुकम से एक पल में कई ब्रह्माण्ड पैदा और फना होते हैं। आखिरी इमाम साहब ने आकर अक्षर की पहचान कराई और दुनियां को अखण्ड कर दिया।

थी उरझन चौदे तबक में, सब जाते थे मर मर।
दई हैयाती सबन को, जब आए इमाम आखिर।। ४० ।।

चौदह तबकों के ब्रह्माण्ड में बड़ी उलझनें थीं कि सब बार-बार जन्मते और मरते थे। आखिरी इमाम साहब ने आकर सबको अखण्ड कर दिया और जन्म-मरण की उलझन मिटा दी।

किन पाया न मगज मुसाफ का, जो ल्याया आखिरी पैगंमर।
किया जाहेर यासों हक बका, जब आए इमाम आखिर।। ४१ ।।

कुरान, जिसे मुहम्मद साहब लाए थे, के छिपे भेदों को कोई नहीं जान पाया था। जब आखिरी इमाम श्री प्राणनाथजी आए तो उन्होंने पारब्रह्म और अखण्ड घर के सारे भेद खोल दिए।

Nijanand App

लेवे खिताब इमाम का, बातून खुले न इन बिगर।
सो खोल के भिस्त दई सबों, जब आए इमाम आखिर॥ ४२ ॥

कइयों ने यहां इमाम होने का दावा किया, परन्तु कुरान के बातूनी अर्थ आखिरी इमाम श्री प्राणनाथ जी के बिना कोई खोल नहीं सका और न कोई दुनियां को अखण्ड बहिश्तों में कायम कर सका।

थी रात अंधेरी सबन में, बका दिन देखाए करी फजर।
मकसूद किया सबन का, जब आए इमाम आखिर॥ ४३ ॥

सबके अन्दर (मन में) अज्ञानता का अन्धकार भरा हुआ था। आखिरी इमाम श्री प्राणनाथजी ने अखण्ड ज्ञान जाहिर कर उजाला कर दिया। इससे सबको परमधाम की पहचान कराकर सबकी मनोकामना पूरी की।

इलम लदुन्नी काहूं न हुता, कर जाहेर मिटावे कुफर।
दिया सुख कायम सब को, जब आए इमाम आखिर॥ ४४ ॥

किसी के पास जागृत बुद्धि का ज्ञान (तारतम वाणी) नहीं था, जिससे सारे संसार के संशय मिटते। जब आखिरी इमाम श्री प्राणनाथजी आए तो सबको अखण्ड सुख प्राप्त हुआ।

कोई बेसक दुनी में न हता, गई दुनियां एती उमर।
सो दृढ़ कर दई हक सूरत, जब आए इमाम आखिर॥ ४५ ॥

इस संसार में आज दिन तक किसी के संशय मिटे नहीं थे। अब आखिरी इमाम श्री प्राणनाथजी ने आकर सबके दिलों में पारब्रह्म की पहचान कराकर उनके हृदय में पारब्रह्म के स्वरूप की दृढ़ता करा दी।

इमाम नूर है अति बड़ो, पर सो अब कह्यो न जाए।
मेला होसी जब मोमिनों, तब देऊंगी नीके बताए॥ ४६ ॥

आखिरी इमाम श्री प्राणनाथजी के स्वरूप का तेज अत्यन्त अधिक है जो अभी कहा नहीं जाता। जब मोमिनों का मेला होगा, तब मैं उसको अच्छी तरह से बताऊंगी।

॥ प्रकरण ॥ ३२ ॥ चौपाई ॥ ११४५ ॥

सनन्ध–कजा की

सुनियो दुनियां आखिरी, भाग बड़े हैं तुम।
जो कबूं कानों न सुनी, सो करो दीदार खसम॥ १ ॥

हे आखिरी दुनियां के लोगो! सुनो, तुम्हारे बड़े भाग्य हैं। जिस पारब्रह्म के बारे में कभी तुमने सुना भी नहीं था, उसी अक्षरातीत पारब्रह्म श्री प्राणनाथजी के, जो सबके खसम (स्वामी) हैं, आकर दर्शन करो।

कई राए राने पातसाह, छत्रपति चक्रवर्त।
ताए हक सुपने नहीं, सो गए लिए गफलत॥ २ ॥

कई राजा, राणा, बादशाह, छत्रपति, चक्रवर्ती हो गए, पर उनको सपने में भी पारब्रह्म का पता नहीं चला। इसी संशय के साथ वह चले गए।

कई देव दानव हो गए, कई तीर्थंकर अवतार।
किन सुपने न श्रवनों, सो इत मिल्या नर नार॥ ३ ॥

कई देवता, दानव, तीर्थंकर, अवतार हुए। उन्होंने सपने में भी पारब्रह्म के विषय में नहीं सुना था। अब इस दुनियां के लोगों को यहां पारब्रह्म साक्षात् मिले हैं।

Nijanand App

करी अनेकों बंदगी, इस्क लिया कई जन।
तिन काहूं ना नजीक, सो इत मिल्या सबन।।४।।

दुनियां में अनेक लोगो ने बन्दगी की, कई लोगों ने प्रेम मार्ग से भी भक्ति की। उनमें से भी किसी को भी पारब्रह्म की प्राप्ति नहीं हुई। वही पारब्रह्म यहां सबके लिए आ गए हैं।

चौदे तबक के खावंद, कर कर गए उपाए।
तित परदा सबन पर, सो इत दिया उड़ाए।।५।।

चौदह लोकों के मालिकों (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) ने भी कई उपाय किए, परन्तु उनके सामने भी परदा पड़ा रहा। अब उनके भी संशय मिट गए।

तुम जानते थे मलकूत को, हम सिर एही बुजरक।
तिनको न बका ख्वाब में, सो इत पाया सबों हक।।६।।

तुम सब यही जानते थे कि बैकुण्ठ ही सबसे बड़ा स्थान है। उस बैकुण्ठ के मालिक भगवान विष्णु को भी कभी सपने में भी पारब्रह्म की प्राप्ति नहीं हुई। वह पारब्रह्म अब यहां सबके लिए आ गए हैं।

मारता था राह दुनी की, सबका था दुस्मन।
जित हिदायत एक हादी की, तित भी मारे तिन।।७।।

यह अजाजील फरिश्ता सबका दुश्मन बनकर रास्ता रोकता था। श्री श्यामाजी महारानी (सतगुरु श्री देवचन्द्रजी महाराज) पारब्रह्म का रास्ता बताते थे। उनके मानने वालों को भी इसने परेशान किया।

एक राह थी अव्वल, तित भी दिए फिराए।
कई इलम देखाए जुदे डारे, बल सैतान कह्यो न जाए।।८।।

सतगुरु श्री देवचन्द्रजी ने सबको पारब्रह्म का एक ही रास्ता बताया था। इस शैतान ने उनके मानने वालों के मन फिरा कर एक रास्ते से भटका दिया। इस शैतान ने कई प्रकार के ज्ञान ग्रन्थ दिखाकर अलग-अलग भटका दिया। ऐसे शैतान की ताकत का वर्णन कैसे करूं?

बैठ दुनी के दिल पर, चलाया हुकम।
हक राह छुड़ाए डारे उलटे, ए दुस्मने किया जुलम।।९।।

इस दुश्मन ने ऐसा जुल्म किया कि दुनियां के दिलों पर बैठकर अपनी हुकूमत चलाई तथा पारब्रह्म का रास्ता छुड़ाकर उलटा दुनियां में भटका दिया।

ए दुस्मन देखाया रसूलें, पर इनसों चल्या न किन।
आप जैसा होए के, राह मारी सबन।।१०।।

रसूल साहब ने भी इस अजाजील जो दुश्मन बनकर बैठा है, उससे सबको सावचेत (सर्तक) कराया, परन्तु उसके सामने किसी की ताकत नहीं चली। इस शैतान ने जीवों के अन्दर ही बैठकर सबको रास्ते से भटका दिया।

सो काफर उड़ाए दिया, जिन मारी थी सबकी राह।
सो जानिए हता नहीं, जब आया हक पातसाह।।११।।

ऐसे काफिर को जिसने सबका रास्ता रोक रखा था, श्री प्राणनाथजी ने जड़ से ही उखाड़ दिया। मानो वह कभी था ही नहीं।

Nijanand App

मैं बड़ भागी तुमें तो कहे, जो आए इन आखिर।
तो कहूं जो दूर होवही, अब देखोगे नजर।। १२ ।।

श्री महामतिजी कहती हैं, हे दुनियां वालो! मैंने तुम्हें भाग्यशाली इसलिए कहा है कि तुमने दुनियां में उस आखिरत के समय तन धारण किया है। अब पारब्रह्म के आने का समय दूर नहीं है, तुम उनके साक्षात् दर्शन करोगे।

यामें बड़े रूह मोमिन, सो जुबां कह्यो न जाए।
अबहीं इमाम के कदमों, देखोगे सब आए।। १३ ।।

इस दुनियां में सबसे बड़े मोमिन हैं, जिनकी सिफत (गुण, प्रशंसा) इस जबान से नहीं की जाती। तुम शीघ्र ही उन मोमिनों के दर्शन श्री प्राणनाथजी के चरणों में आकर करोगे।

ए कह्या रसूलें अव्वल, ए जो चौदे तबक।
इनमें काजी आखिर दिनों, इत कजा जो करसी हक।। १४ ।।

रसूल साहब ने पहले से यही कहा था कि चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड में पारब्रह्म आखिर में आकर सबका न्याय करेंगे।

रसूलें इत आए के, पेहेलें किया पुकार।
आवसी रब आलम का, तब हूजो खबरदार।। १५ ।।

रसूल साहब ने पहले से ही आकर सबको सावचेत (सावधान) किया कि आखिरत के समय सारी दुनियां का मालिक आएगा। उस समय तुम सावचेत (सतर्क) रहना।

लिख्या आगम कदीम का, सो आए मिल्या दिन।
याही सदी आखिर की, पुकार करे सब जन।। १६ ।।

पहले से ही न्याय के दिन की बात लिखी थी, वह दिन अब आ गया है। यही वह आखिर की सदी (शताब्दी) है, जिसके लिए संसार के सब ग्रन्थों ने भविष्यवाणी कर रखी थी।

नूर अकल ले लदुन्नी, हुकमें किया पसार।
महंमद मेंहेदी ईसा आवसी, आगे चेतावें नर नार।। १७ ।।

रसूल साहब ने भी जागृत बुद्धि के कलमे से संसार में सबको बताकर सावचेत कर दिया कि आखिरत को मुहम्मद मेंहदी और ईसा रूह अल्लाह आएंगे।

आप इमाम अजूं गोप है, होत आगे रोसन नूर।
रात अंधेरी क्यों रहे, जब ऊग्या कायम सूर।। १८ ।।

इमाम साहब के आने से पहले ही सारे संसार को उनके ग्रन्थों से आने की जानकारी हो गई थी। अब जब श्री प्राणनाथजी जाहिर हो गए हैं तो अब दुनियां में अज्ञानता कैसे रहेगी?

सांच झूठ तफावत, जैसे दिन और रात।
सांच सूर जब देखहीं, तब कुफर रात मिट जात।। १९ ।।

सत और झूठ में दिन और रात जितना फर्क है। जब सच्चे ज्ञान के सूर्य को देखेंगे, तो अज्ञानता हट जाएगी।

Nijanand App

जो लों थे परदे मिने, दुनियां उरझी तब।
सो परदा अब खोलिया, दिया मन चाह्या सुख सब।। २० ।।

जब तक पारब्रह्म परदे में थे तब तक उनकी पहचान किसी ने नहीं की थी। तब तक दुनियां उलझन में थी। अब वह सारे संशय मिट गए हैं और सबको मनचाहा सुख दे रहे हैं।

जो लों जाहेर हक ना हुए, तो लों मारे दिमाक।
हक प्रगटे कुफर मिट गया, सब दुनियां हुई पाक।। २१ ।।

जब तक पारब्रह्म जाहिर नहीं हुए थे तब तक सब अपने-अपने अहंकार में डूबे थे। पारब्रह्म के प्रगट होने से सबके संशय मिट गए और सब दुनियां पाक हो गई।

जब कुफर कछू ना रह्या, तब दुनियां हुई एक दीन।
ए नूर कजा का झिल मिल्या, आया सबों आकीन।। २२ ।।

जब श्री प्राणनाथजी की तारतम वाणी का प्रकाश संसार में जगमगाएगा, तो सभी झूठ की पूजा बन्द कर एक पारब्रह्म पर यकीन लाकर एक दीन में आ जाएंगे।

दुनियां टेढ़ी मूल की, ताको गयो पेड़ से बल।
पाक किए सब इमामें, कुफर गया निकल।। २३ ।।

दुनियां शुरू से ही टेढ़ी है। संकल्प-विकल्प में पड़ी है। वह संशय श्री प्राणनाथ जी ने मिटाकर टेढ़ापन हटा दिया और सीधा रास्ता बता दिया।

पुकार कह्या वेद कतेबों, पर बस न किया काहूं दिल।
कर कर मेहेनत कई थके, पर हुआ न कोई निरमल।। २४ ।।

वेद और कतेबों ने पारब्रह्म के लिए तरह-तरह का ज्ञान दिया, पर किसी के संशय मिटाकर किसी के दिल को जीत नहीं सके। कई धर्माचार्य गुरुओं ने इन ग्रन्थों के ज्ञान से मेहनत तो की, पर किसी का संशय मिटा नहीं।

ना तो कई बुजरक हुए, कैयों करियां नसीहत।
ओ मुरीद विचारे क्या करें, किनें पीर न पाई मारफत।। २५ ।।

दुनियां में बड़े-बड़े ज्ञानी अगुवे हो गए हैं जिन्होंने अपने चेलों को सिखापन (शिक्षा) तो दी, पर वह चेले भी बेचारे क्या करें जब उनके गुरुओं को ही पारब्रह्म की पहचान नहीं हुई।

सो इमामें इत किए, सब जन के मन बस।
होए ना किन इमाम को, इन जुबां ए जस।। २६ ।।

अब इमाम साहब श्री प्राणनाथजी ने आकर सबको पारब्रह्म की पहचान कराकर अपने चरणों में ले लिया (वश में कर लिया), इसलिए ऐसे इमाम साहब की साहेबी का वर्णन इस जबान से नहीं होता।

सो इमाम इत आइया, इन जिमी हिन्दुस्तान।
सब तलबें याही दिसा, चौदे तबक की जहान।। २७ ।।

वह इमाम साहब (स्वामी श्री प्राणनाथजी महाराज) अब इस हिन्दुस्तान की धरती पर आए हैं। जिनके वास्ते सारी दुनियां वाले इन्तजार में थे तथा चाह लेकर बैठे थे।

Nijanand App

पर मुझे प्यारी बरारब, जिन जिमी आए रसूल।
मेहेर नजर महंमद की, पर काफर गए सब भूल।। २८ ।।

श्री प्राणनाथजी कहते हैं कि मुझे तो अरब की जमीन प्यारी है। जहां पर रसूल साहब सबसे पहले आए और उन्होंने अपनी नजरे-करम से खुदाई ज्ञान फैलाया। काफिर लोग सब भूल गए।

पीछे केहेर नजर करी, सो भी वास्ते मेहेर।
पर काफर जो उलटे, सो देखे सब जेहेर।। २९ ।।

अब आखिरत के समय में इमाम साहब श्री प्राणनाथजी ने ऐसे काफिरों पर अपनी कड़ी नजर की, वह भी उनको सीधे रास्ते पर लाने के लिए, परन्तु काफिर लोग उलटा ही सोचते हैं और इमाम मेंहदी (श्री प्राणनाथजी) से दुश्मनी करते हैं।

नोट : यह प्रसंग दिल्ली का है, जहां कहर नजर कर औरगंजेब को कुरसी से गिराया था।

केहेर नजर देखाए के, फेर लिए मेहेर मांहें।
मुस्लिम नाम धराए के, बैठे मुस्लिम की छांहें।। ३० ।।

कड़ी नजर दिखाकर फिर अपनी नजरे-करम से उनको चरणों में ले लिया। अपना नाम भी मुसलमानों का रखकर (सैयद मुहम्मद इबन इस्लाम) उनके अन्दर बैठ गए।

अब तो लगे सब बंदगी, आया भला आकीन।
नर नारी हक कलमें, कायम खड़े हैं दीन।। ३१ ।।

अब सबको यकीन आ गया और सब बन्दगी करने लगे। अब सब नर-नारी हक की कलमे (तारतम) को सच्चा मानकर एक दीन (निजानन्द धर्म) में आ गए।

पेहेले बीतक रसूलसों, सो भी सुनो नेक बोल।
आरब समझें आरबी, दोए कहूं लुगे दिल खोल।। ३२ ।।

पहले रसूल साहब की थोड़ी सी हकीकत बताता हूं जिनके वचनों को सुनो, क्योंकि अरब के रहने वाले अरबी भाषा में ही समझेंगे, इसलिए दो-चार शब्द दिल खोलकर अरब वालों के लिए कहता हूं।

।। प्रकरण ।। ३३ ।। चौपाई ।। ११७७ ।।

सनन्ध–आरबी की

सम्मेन कलिम्म कलामी, नास कुरब अना कसीर।
नेक मैं कहुं बोली मेरी, आदमी कबीले मेरे बहुत हैं।
अना हाकी हकाइयां कलूब अना, लिसान इस्म कबीर।। १ ।।
मैं कहुं बातें दिल मेरे की, साथ मेरे नाम बड़े हैं।।

श्री प्राणनाथजी कहते हैं कि अब मैं अरब की बोली में बोलता हूं। अरब में मेरे मानने वाले बहुत हैं। मैं अपने दिल की बात कहता हूं। मैं कई नामों से जाना जाता हूं।

Nijanand App

फआल नफस इस्म इमाम, बाद कलिम कुल्ल नास।
धरया अपना नाम इमाम, पीछे कहेंगे सब आदमी।
बला किन ला अरफ कुरान, अना मिन्हुम कुल्ल लिरास।। २ ।।
ए पर नहीं समझें कुरान, मैं इनमें से सब लिए साथ सिरके।।

पहले मैंने अपना नाम इमाम रखा। फिर पीछे मुझे सब इमाम मेंहदी कहेंगे। इतने पर भी लोग कुरान को नहीं समझेंगे कि मैं इन सबके लिए आया हूं।

अल्लजी हकाइयां कलूब अना, मा खफी मिन्कुम।
जो बातें दिल मेरे की हैं, ना छिपाऊं तुम से।
कुम्यकून कुरब अना, अल्लजी रूह मुस्लिम।। ३ ।।
तुम हो कबीले मेरे के, जो कोई रूहें मुस्लिम हैं।।

जो मेरे दिल की बातें है वह मैं तुमसे नहीं छिपाऊंगा, क्योंकि जितने भी मोमिन यकीन वाले हैं वह सब मेरे साथी हैं।

लेस खबर मा कुम कमा, अल्लजी बरारब।
नहीं है खबर तुमको ऐसी, जैसी कछू जिमी अरब की।
हाजा मुस्लिम कुल्ल हुंम, फआल अली मिन्जरब।। ४ ।।
ए मुसलमान सारे जो हैं, किए अली ने मोहों मार के।।

अरब के रहने वाले मुसलमानों को यकीन नहीं था। अली साहब ने उन्हें मार-मारकर सीधा किया।

व ला लहुमा ऐयून, खारज व ला दखल।
और नहीं हैं इनको आंखें, बाहेर की और नहीं है अन्दर की।
व लहुम लेस इगनू, व लहुम लेस अकल।। ५ ।।
और इनोंके नहीं हैं कान, और इनोंको नहीं है अकल।।

अरब के मुसलमानों के न बाहर की आंखें हैं और न अन्दर से ही विवेक है। इनके कान नहीं हैं और न ही इनको अक्ल है।

जरब अना वज्हे मिन्सेफ, फआल अना मुसलमीन।
मारे मैं मोहों समसेर के से, किए मैंने मुसलमान।
लाकिन जाहिल इमन, व ला ए जाआ यकीन।। ६ ।।
पर मूरख जो हैं इमनके, और नहीं इनोंको आया आकींन।।

ऐसे जाहिल लोगों को तलवार के जोर से मुसलमान बनाया। फिर भी इमन (अरब, ईरान, इराक, और फारस के मुसलमान) के मूर्खों को यकीन नहीं आया।

लिहाजा कमा काल इमन, ला बारकला मुसलमीन।
इस वास्ते ऐसा कह्या इमनको, नहीं हैं बरकत इन मुसलमानों को।
बारकला धन्य ला बारकला धृक

Nijanand App

कुलू बारकला हिन्द मुस्लिम, खुजू रास कलाम यकीन।।७।।

कही बरकत हिन्द के मुसलमानों को, लिए सिर कलाम आकीन करके।।

इस वास्ते इमन के मुसलमानों को बरकत नहीं है, क्योंकि उनका यकीन उठ गया। हिन्दुस्तान के मुसलमानों को यकीन होने से हिन्द में बरकत आ गई।

हाजा फास खबर इन्द कुंम, यज्लिस हिन्द सुब्हान।

ए जाहेर खबर पास तुमारे है, बैठेंगे हिन्द में खावंद।

कमा अवल काल रसूल, अना हस्ना हिन्द मकान।।८।।

ऐसा पहले कह्या रसूल ने, मेरा नेक है हिंद स्थान।।

हे हिन्द के मुसलमानो! तुम्हें पहले से ही खबर है कि खुदा तुम्हारे पास हिन्द में आकर बैठेंगे। रसूल साहब ने यही पहले से कहा कि आखिरत के समय में मैं हिन्दुस्तान आऊंगा।

व ला लेतनी मौला रदो, अल्लजी हाकीयतो महंमद।

और न कदी खावन्द रद्द करे, जो कछू कह्या है महंमद ने।

लागिल मुस्लिम इमाम, जा आ हिंदल अर्जा।।९।।

वास्ते इन मुसलमानों के इमाम मेंहदी, आया हिन्द की जिमी।।

मुहम्मद साहब ने जो कुरान में कहा है, उसे खुदा रद्द नहीं करेगा, इसलिए हिन्द के मुसलमानों के वास्ते ही इमाम मेंहदी हिन्द में आए।

कुंम अल्लजी मुस्लिम, रसूल कुल्लहो कलिम।

तुम जो कोई मुस्लिम हो, रसूल ने सबको कहा है।

यजाआ यकीनल्कुम, खैर तल्बो हिन्द मुस्लिम।।१०।।

आवेगा यकीन तुमारे तांई, पनाह मांगो हिन्द के मुसलमानों से।।

मुहम्मद साहब ने सारी दुनियां के मुसलमानों को कहा कि तुम्हें यकीन तभी आएगा जब तुम हिन्द के मुसलमानों की पनाह में जाओगे।

यब्सरो हाजा कलमा, दाखल कलूब कुम्म।

देखो एह वचन, बीच दिल तुमारे के।

सैयबो विलाद कुल्हुम, खैर तलबो हिन्द मुस्लिम।।११।।

छोड़ो विलायत सबकी, बखसीस मांगो हिंद के मुसलमानों पें।।

इन वचनों को अपने दिल में विचार कर देखो और सारी दुनियां के हज छोड़कर हिन्द के मुसलमानों से बख्शीश मांगो।

अल्लजी कलिमा रसूलना, खुजू मुहब्ब कलाम।

जिन किनों ने वचन रसूल मेरे के, लिए प्यारसों बोल।

Nijanand App

लागिल हिन्द मुस्लिम, हुबहुम जाआ इमाम।। १२ ।।
वास्ते हिन्द के मुसलमानों के, प्यार कर इनों पर आये इमाम मेंहदी।।

जिस किसी ने भी मेरे रसूल साहब के इन वचनों को प्यार से ग्रहण किया, वह समझेंगे कि हिन्द के मुसलमानों को प्यार करके इमाम मेंहदी हिन्द में आए हैं।

अल्लजी रसूल सैयबो, ऐया अना फआली हुम।
जो रसूल ने छोड़ दई, क्या मैं करूं उसको।
खला अना अर्ज आरब, जाआ अना इन्द कुम।। १३ ।।
छोड़ी हम जिमी अरब की, आए हम पास तुमारे।।

जिस अरब की जमीन को रसूल साहब ने ही छोड़ दिया है उसको अब मैं क्या करूं? इसलिए हे दुनियां के मुसलमानो! तुम भी अरब की जमीन छोड़कर हिन्द में इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी के पास आकर कहो कि हम तुम्हारी शरण में आए हैं।

इस्मयो हिन्द मुस्लिम, अनी कलिम सिदक।
सुनो हिन्द के मुसलमानों, मेरे कहना है सांच।
यकीन कान इन्द कुम, व कायमुल्कलमे हक।। १४ ।।
अकीन है पास तुमारे, और कायम हो साथ कलमे हक के।।

हिन्द में आकर तुम हिन्द के मुसलमानों को कहो कि मैं सच कहता हूं कि यकीन भी तुम्हारे पास है और हक का कलमा भी तुम्हारे पास है।

अवल स्वाल रसूल ना, व लाए आरफ अहद।
पहले बोल रसूल मेरे के, और नहीं समझया कोई आदमी।
दलहिन कुल्ल य आरिफो, जाआ कलिम महंमद।। १५ ।।
अब सब यह समझेंगे, आया वचन महम्मद साहेब का।।

पहले मेरे रसूल साहब के इन वचनों को कोई नहीं समझा था। अब इमाम मेंहदी आ गए हैं तो सबको यकीन आ जाएगा कि रसूल साहब के वचन सच्चे थे।

अल्लजी जाआ कुम मुस्लिम, हाजा लागिल कुम फआल सुगल।
जो आए हो तुम मुस्लिम, यह खातिर तुमारे किया है खेल।
इब्सर सुगल अना यरजा, अल्लजी मुस्लिम कुल्ल।। १६ ।।
देख खेल हम फिरेंगे, जो कोई है मुस्लिम सो सब।।

हे हिन्द के मुसलमानो (सुन्दरसाथ)! यह खेल तुम्हारे लिए ही बनाया है और तुम ही यहां आए हो। अब खेल देख करके हम सभी मुसलमान (सुन्दरसाथ) घर वापस जाएंगे।

अनी कुल्ल मुस्लिम वाहेद, अस्लू वाहिद मकानी।
हम सब मुस्लिम एक हैं, असल एक है ठौर हमारा।

Nijanand App

कांन हक वाहिद अना, गैर मुस्लिम लेस सांनी।। १७ ।।

है खसम एक हमारा, बिना मुस्लिम नहीं कोई दूसरा।।

हम सब मुसलमान (सुन्दरसाथ) एक हैं। हमारा घर एक है। हमारा खसम एक है। मुसलमानों (सुन्दरसाथ रूहों) के सिवाय वहां दूसरा कोई नहीं है।

अनी हबो कुल्ल मुस्लिम, लाकिन जायद सिंध।

मेरे प्यारे तमाम मुस्लिम, लेकिन अधिक हैं सिन्ध के।

हाल अना कलिमे सिंध मुस्लिम, बाद कलिम अना हिन्द।। १८ ।।

अब मैं कहत हूं सिंध के मुसलमानों को,
पीछे कहूंगी मैं हिन्द के मुसलमानों को।।

मुझे सारे मुसलमान (सुन्दरसाथ) प्यारे हैं, पर सिन्ध के मुसलमान खासकर प्यारे हैं, इसलिए सिन्ध के मुसलमानों (सुन्दरसाथ) को कहती हूं। पीछे हिन्द के मुसलमानों को कहूंगी।

|| प्रकरण || ३४ || चौपाई || ११९५ ||

सनन्ध–सिन्धी भाखा

कारण अरवा अर्सजी, चुआं सिन्ध गालाए।
जिन कलमें रसूल जे, सचो आकीन आए।। १ ।।

अर्स की रूहों के वास्ते सिन्ध की बोली में बोलती हूं। जिससे रसूल के कलमे पर तुम्हें सच्चा यकीन आ जाए।

मोमिन बलहा महंमद, जे सदाई जाण।
थियो सुहाग सभ केई, मेहेबूब अचो पाण।। २ ।।

मुहम्मद (श्यामाजी रूह अल्लाह) को मोमिन सदा से ही प्यारे हैं। उन सब मोमिनों को अब खुशी हुई, क्योंकि उनके लाडले खसम (प्रीतम) आए हैं।

चुआं कुजाडो हिंद के, सांई वडो डिंन्यो सुहाग।
आयो रब आलम जो, सभनी उघड़्यो भाग।। ३ ।।

हिन्द के लोगों को क्या कहूं? खुदा ने इनको बड़ा सौभाग्य (सुख) दिया है जो सारी दुनियां के मालिक हिन्द में आए हैं और सबके भाग्य खुल गए हैं।

अदयूं रसूल पांहिजो, कोठे आयो इमाम।
आलम सभे उलट्यो, अची करे सलाम।। ४ ।।

हे बहन! अपने रसूल और इमाम मेंहदी बुलाने आए हैं। सारी दुनियां का यकीन इन पर आ गया है और सब आकर इनके चरणों में प्रणाम कर रहे हैं।

सिंधडी थियूं वधाइयूं, मीर पीर फकीर।
पुन्यूं उमेदूं सभनी, खिल्ली थेयां सभ खीर।। ५ ।।

सिन्ध की रहने वाली इन्द्रावती को सब ज्ञानी, अगुए, मीर, पीर और फकीर आ-आकर बधाइयां दे रहे हैं। सबकी चाहना पूरी हो गई और सब बड़े प्रसन्न होकर हंसते हैं।

Nijanand App

अची विठो हिंद में, त्रूठो चोडे तबक।
थेयूं सुहाग सिंधडी, जिन कलमें यकीन हक।। ६ ।।

इमाम मेंहदी (श्री प्राणनाथजी महाराज) हिन्दुस्तान में आकर बैठ गए हैं और चौदह तबकों के लोग इन पर फिदा हैं। इन्द्रावती सुहागिनी हो गई है। इनके वचन से सभी को पारब्रह्म पर यकीन आया है।

ई अरब रसूलजी, बलही सिंध सुजाण।
यकीने पण अगरी, इस्क सिंधी खांण।। ७ ।।

जिस तरह से अरब वालों को रसूल साहब प्यारे हैं, उसी तरह से सिन्ध वालों को इन्द्रावती प्यारी हैं। इनका यकीन भी ऊंचा है। ज्ञान भी बड़ा है। इश्क (प्रेम) की तो खान हैं, अर्थात् प्रेम के ही स्वरूप हैं।

आऊं जोए इमाम जी, सिंधाणी सिरदार।
डिन्यो धणी सभ पांहिजो, मूंही हथ मुदार।। ८ ।।

सिन्ध की सिरदार (प्रधान) सखी इन्द्रावती कहती है कि मैं इमाम मेंहदी (श्री प्राणनाथजी) की अंगना हूं और धनी ने अपना सब मुद्दा (काम) मेरे हाथ में दे दिया है।

आयो मिठडो मेहेबूब, आऊं पण पिरन सांण।
अची बिठासी हिंद में, डिजां सिंधडी जांण।। ९ ।।

मेरे प्यारे लाडले मेहबूब आए हैं। मैं भी प्रीतम के साथ में हूं। अब वह हिन्दुस्तान (पन्नाजी) में जाकर बैठेंगे और इन्द्रावती को अपना कुल ज्ञान देंगे।

डिजां संडेहो सिंधडी, तूं घणूं बलही इमाम।
सिंध हिंद माधा थेई, पोरया जेदां रूम स्याम।। १० ।।

हे सिंधड़ी इन्द्रावती! तू इमाम मेंहदी को बड़ी प्यारी है। अब तू ही सबको तारतम वाणी का ज्ञान दे। सिन्ध की सखी इन्द्रावती हिन्द की सखी सुन्दरबाई से आगे हो गई। अब (रोम, श्याम) बिहारीजी के अनुयायी चाकला वाले मन्दिर के सभी लोग पीछे आवेंगे।

हांणे चुआं सचो सांईजी, जे अची बिठो हिंद।
ईसे मांधा अची करे, भगो दज्जाल जो कंध।। ११ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं अब मैं सच्चे धनी की पहचान कराती हूं जो हिन्दुस्तान में (पन्नाजी) में आकर बैठे हैं। ईसा रुहअल्लाह (श्यामा महारानी) भी आगे से इनके तन में बैठी हैं। जो दज्जाल सबके सिर चढ़ा था, वह भाग गया।

दीन कियाऊं हिकडो, भनी सभे कुफरान।
अर्स बका केयाऊं जाहेर, जित हक बिठो पांण।। १२ ।।

सब धर्मों को एक कर दिया है और सबके संशय मिटा दिए। अखण्ड घर परमधाम जहां पारब्रह्म स्वयं बैठे हैं, की पहचान सबको दी।

आसमान जिमी जे विचमें, व्यो कोए न चाए हक।
से हंद सभे उडी वेयां, जे सिजदा कंदी हुई खलक।। १३ ।।

अभी तक आसमान और जमीन के बीच में किसी को पारब्रह्म की पहचान नहीं थी। जहां सब संसार सिजदा बजाता था, वह सारे हंद (ठिकाने, धर्म स्थान) उड़ गए।

Nijanand App

सचो सांईं जडे आइयो, तडे व्यो पुजाए केर।
सुज कायम उगी थ्यो जाहेर, तडे उडी वेई सभे अंधेर।। १४ ।।

सच्चे मालिक (धनी, प्रीतम, खुदा) जब आ गए तो दूसरे (झूठे की) की पूजा कैसे हो? अखण्ड ज्ञान का सूर्य उदय हो गया तो अज्ञानता का सब अंधेरा उड़ गया।

धणी जमाने जो आइयो, तडे छुटी वेई तांणों बांण।
तित मोमिन उथी ऊभा थेयां, दोजख थेई कुफरान।। १५ ।।

आखिरी जमाने का मालिक आ गया तो सब धर्मों की खींचातानी छूट गई। मोमिन उठकर खड़े हो गए और काफिरों को दोजख मिली।

हित के के बुजरक आइया, जे नजीकी हक जा।
ए वडा दीन दुनी में, रूहें चाईन पातसा।। १६ ।।

यहां कोई-कोई ऐसे भी बड़े राजा हैं (शाकुण्डल-शाकुमार) जो पारब्रह्म के नजदीकी हैं। यह दीन और दुनियां में बड़े हैं और बादशाह कहलाते हैं।

सेर सरे मके मुलक, आई तेहां पुकार।
रह्या ईमान से सतजणां, व्या काफरे मार केयां कुफार।। १७ ।।

शरीयत के सिर मक्के से खबर आई कि ईमान पर सात लोग ही खड़े रहे। दूसरे को दज्जाल ने बेईमान बनाकर काफिर बना दिया।

नोट : कुरान का किस्सा है कि एक समय अरब में लोग नमाज पढ़ रहे थे, खुदा ने इम्तेहान (परीक्षा) के लिए, उसी समय सोने की मोहरों की वर्षा कर दी तो केवल सात जने नमाज पढ़ते रहे, बाकी सब मोहरें बटोरनें चले गए। नमाज के बाद सभी मोहरें कोयला बन गईं, ना दीन मिला न दुनियां।

सिंधमें अदियूं पांहिंज्यूं, हे खबर डिजां तिन।
असां गाल सुणी दम ना रहे, जा हुंदी रूह मोमिन।। १८ ।।

हे बहन! अपनी सिन्ध की सखी (इन्द्रावती) ने यह खबर दी है। हम इस बात को सुनकर जो भी रूह (मोमिन) होंगी, वे एक पल भी नहीं रुकेंगी।

सुख बका अर्स हिन जिमी, हिए गिनणजी वेर।
पोए आलम जडे उलट्यो, तडे लखे पूछे चोए केर।। १९ ।।

इस समय अखण्ड घर के सुख इस जमीन पर लेने का मौका है। पीछे तो सारा आलम (संसार) ही उमड़ कर आ जाएगा। तब लाखों में कौन पूछेगा और कौन कहेगा?

निसबती अची गडवी, पण ही सुख फजर कित।
सुख बका अर्स केर गिंनी सगे, जे नूर जमाल बुठडो हित।। २० ।।

अपनी निसबती (शाकुमार) मिली। पर इसे फजर (ज्ञान का) सुख नहीं है। वह अखण्ड घर के सुख को कैसे ले, जो साक्षात् बैठे नूर जमाल को नहीं पहचानती।

हे सुख मोमिन हमेसगी, अर्स में सभे गिनन।
पण जे सुख अर्सजा हिन जिमी, से व्या रे न्हाए रूहन।। २१ ।।

यह सुख मोमिनों को अर्श में हमेशा मिलते हैं, परन्तु अर्श के सुखों की जो लज्जत इस जमीन पर है, वह रूहों को कहीं नहीं मिलेगी।

Nijanand App

हकें डिंना सुख आलम में, त्रभेरका पांणके।
से सुख गिडां रात निद्रमें, के भत चुआं सुख ए।। २२ ।।

इस संसार में श्री राजजी महाराज ने हमें तीसरी बार सुख दिया है। उन सुखों को हमने रात की नींद में लिया, उनकी हकीकत कैसे कहूं?

जीं सुख सोणेंमें गिंनजे, तीं सुख गिडां रात।
डींहें सुख गिनजे जागंदे, ही आए रेहेमानी दात।। २३ ।।

जिस तरह से सपने के सुख होते हैं, उसी तरह से हमने रात्रि में ब्रज, रास के (घर की पहचान नहीं थी) सुख लिए। अब दिन के सुख जागृत होकर लीजिए। यहां मेहर के दाता श्री प्राणनाथजी ने खुदाई खजाना दिया है।

जे सुख डिंना हकें रातजा, तेजी पण हित लज्जत।
अर्सजा पण सुख हिंनमें, गिडां कई कोडी भत।। २४ ।।

धनी ने रात्रि (ब्रज, रास) में जो सुख दिए उनकी यहां लज्जत तो है, परन्तु अब अर्श के सुख इस जमीन पर कई करोड़ों तरह से लिए।

ए सिफत न जिभ चई सगे, सोई जांणे गिडां जिन।
सुख कीं चुआं हिन भूंअ जा, सुख डिंना महें बका वतन।। २५ ।।

जिसने यह सुख लिए हैं वही जानते हैं। इनकी सिफत (विशेषता) जबान से नहीं कही जा सकती। इस जमीन के सुखों को कैसे कहूं जो अखण्ड घर परमधाम में हमको जागृत होने पर मिलेंगे।

बरकत हिन रूहनजी, सुख गिडां सभनी मुलक।
सिफत न थिए हिन सुखजी, हे जा पेराई सभे खलक।। २६ ।।

रूहों की बरकत से सारी दुनियां के लोगों को सुख मिला। इसकी महिमा चौदह लोकों में पसर जाएगी।

कागर केयां सभ पधरो, खोल्या हकजा गंज।
सुख डिंनाऊं सभ बका, जिंनी रात डींहें हुआ डुख रंज।। २७ ।।

कुरान के सारे रहस्य खोल दिए। सबको पारब्रह्म की पहचान कराई। अखण्ड घर के सुख उन सबको दिए जो रात-दिन दुःख में ही डूबे पड़े थे।

कारैं सदीमें कयामत, लिखी मंझ कुरान।
से सभ केयांऊं पधरा, जे गुझ हुंदा निसान।। २८ ।।

कुरान में ग्यारहवीं सदी में कयामत होगी, लिखा है। उस कयामत के सब छिपे भेद (सातों बड़े निशान) खोल दिए।

सदी बारैं बी खलक, जिमी या आसमान।
आखिर थेई सभनी, समझे जा सुजान।। २९ ।।

बारहवीं सदी में जमीन या आसमान के सभी खलक की सब जहान को खबर हो जाएगी (फजर हो जाएगी)।

Nijanand App

कायम सदी तेरहीं, उथींदा निरवाण।
महामत जोए इमामजी, जाहेर क्याऊं फुरमान।। ३० ।।

तेरहवीं सदी में उठकर खड़े हो जाएंगे। श्री महामतिजी कहती हैं कि मैं इमाम मेंहदी की बीबी हूं और कुरान के छिपे भेद (रहस्य) जाहिर करती हूं।

।। प्रकरण ।। ३५ ।। चौपाई ।। १२२५ ।।

सनन्ध–ईसा इमाम के कजा की

इत ईसा मसी आए के, पेहेले किया सरंजाम।
काटे आउध दज्जाल के, पीछे आए रसूल इमाम।। १ ।।

यहां ईसा मसीह (श्यामा महारानी) ने आकर सब इन्तजाम पहले से कर दिया और दज्जाल के हाथ काट डाले। उनके बाद में हकी स्वरूप इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी आए।

अब सब्दातीतकी सब्द में, सोभा बरनी न जाए।
जो कछू कहूं सो सब्द में, बोलूं कौन जुबांए।। २ ।।

अब ऐसे शब्दातीत की शोभा का वर्णन करना सम्भव नहीं है। जो कुछ मैं कहती हूं वह माया के ही शब्द हैं। उनकी महिमा इस जबान से नहीं हो सकती।

खूबी तखत न केहे सकूं, इन जुबां के जोर।
जांनूं रात कुफर की मिट गई, हुआ दिन जाहेर भोर।। ३ ।।

जिस तख्त पर बैठकर कजा करेंगे उस तख्त की शोभा इस जबान से नहीं कह सकती। लगता है अन्धकार और संशय की रात मिट गई है। ज्ञान का सवेरा हो गया है।

हिसाब नहीं उजास को, आगे ले खड़ा लदुन्नी नूर।
जाए न बरन्यो इन जुबां, खड़ी अर्स अरवा हजूर।। ४ ।।

इस उजाले का भी हिसाब नहीं है। यह तारतम वाणी का नूरी उजाला है जिसका वर्णन इस जबान से नहीं होता। इस ज्ञान से हम पारब्रह्म की अंगनाएं उनके सामने खड़ी हैं।

आगे खड़ा असराफील, और जबराईल हुकम।
जोस सब रूहन पर, वतन बका खसम।। ५ ।।

उनके सामने जागृत बुद्धि का फरिश्ता असराफील खड़ा है और हुकम का स्वरूप तथा जबराईल खड़ा है। रूहों को घर का और प्रीतम का जोश चढ़ा है।

यों बैठे तखत इमाम, सिर छत्र कई चंवर।
रसूल अली आए मिले, हुई बधाइयां घर घर।। ६ ।।

इस तरह न्याय के तख्त पर इमाम (श्री प्राणनाथजी) बैठे हैं। उनके सिर पर छत्र शोभा दे रहा है। कई चंवर दुलाए जा रहे हैं। रसूल साहब तथा अली (महाराजा छत्रसाल) आकर मिले तो घर-घर में बधाई बजी।

गुझ थे मोमिन अर्स के, ताकी जाहेर हुई खबर।
सो बैठे घेर इमाम को, हुई बधाइयां घर घर।। ७ ।।

परमधाम के मोमिनों को संसार में कोई नहीं जानता था। वही अब इमाम साहब को घेर कर बैठे हैं, इसलिए सबको पहचान हो गई और घर-घर खुशियां हुईं।

Nijanand App

कई औलिए कई अंबिए, कई फरिस्ते पैगंमर।
सो सब आगे आए खड़े, हुई बधाइयां घर घर।। ८ ।।

कई औलिया, अंबिया, फरिश्ते और पैगम्बर आगे आकर खड़े हो गए। इमाम साहब के आने की घर-घर में खुशियां होने लगीं।

आइयां किताबें जिन पर, बुजरक जो मेहेत्तर।
मुसलमान आए संग, हुई बधाइयां घर घर।। ९ ।।

वह महान् रसूल साहब जिन पर कुरान आई, उनके साथ मुसलमान आए और घर-घर में बधाइयां हुईं।

मुसलमान कई भेखसों, पीर मरद फकर।
पीछा कोई न रेहेवहीं, हुई बधाइयां घर घर।। १० ।।

मीर, मुरीद और फकीर कई भेषों के मुसलमान आए। पीछे कोई नहीं रहा, घर-घर में बधाइयां हुईं।

जुदी जुदी जातें जहान में, सब आवत हैं मिल कर।
होत दीदार सबन को, हुई बधाइयां घर घर।। ११ ।।

संसार की सब जातियां मिल-मिलकर आ रही हैं और सबको दर्शन हो रहा है। घर-घर में खुशियां हुईं।

दुनियां चारों खूंट की, सब आवत हैं एक दर।
मंगल गावें सब कोई, हुई बधाइयां घर घर।। १२ ।।

चारों खूंटों (ओर) से दुनियां के लोग मंगल गीत गाते हुए इस एक दरवाजे पर इकट्ठे हो रहे हैं। घर-घर बधाइयां हुईं।

जिन्होने कबूं कानों ना सुनी, जात बरन भेख धर।
आवत सब उछरंग में, हुई बधाइयां घर घर।। १३ ।।

जिन्होंने कभी कानों से भी नहीं सुना था, ऐसे वर्ण, जाति के लोग भी भेष धर के उमंग में आ रहे हैं और घर-घर बधाइयां हो रही हैं।

बिना हिसाबें आलम, वैराट सचराचर।
दौड़त सब दीदार को, हुई बधाइयां घर घर।। १४ ।।

चौदह लोकों का वैराट चल और अचल सभी दर्शन के लिए दौड़ते आ रहे हैं और इस तरह से सारा ब्रह्माण्ड उमड़ पड़ा है तथा घर-घर में बधाई हो रही है।

अरवा चौदे तबकों, जो कोई नारी नर।
इन तखत इमाम के कदमों, हुई सारों की नजर।। १५ ।।

चौदह लोकों के नर-नारियों का ध्यान इस तख्त पर बैठे इमाम मेंहदी के चरणों में लगा है।

जब आया रब आलमीन, तब आया सबों आकीन।
और मजहब सब उड़ गए, एक खड़ा महंमद दीन।। १६ ।।

जब सब ब्रह्माण्डों का खुदा आया, तब सबको यकीन आया। बाकी सब धर्म समाप्त हो गए। एक निजानन्द धर्म, जो एक धनी का पूजक है, खड़ा रहा।

Nijanand App

जात एक खसम की, और न कोई जात।
एक खसम एक दुनियां, और उड़ गई दूजी बात।। १७ ।।

तब सब दुनियां के जाति-पाति के भेद मिट जाएंगे। सबकी एक जात हो जाएगी। सब दुनियां देवी देवताओं की पूजा छोड़कर पारब्रह्म की पूजक बन जाएगी।

करने दीदार हक का, आए मिली सब जहान।
साफ हुए दिल सबन के, उड़ गई कुफरान।। १८ ।।

हक परवरदिगार श्री प्राणनाथजी के दर्शन के लिए सब जहान (संसार) आ रहा है। सबके दिल के संशय मिट गए हैं और कुफ्र मिट गया है।

खाए पिऐं सब मिलके, बंदगी एक खसम।
नाम न्यारे सब टल गए, हुई नई एक रसम।। १९ ।।

तब सब संसार एक साथ मिलकर खाते-पीते हैं और एक प्रीतम की बन्दगी करते हैं। इन सबकी जाति-पाति खत्म हो गई और एक नई रस्म निजानन्द धर्म में आ गए।

मेला अति बड़ा हुआ, पसर गई पेहेचान।
सेहेदाने सबों घरों, चारों खूंटों बजे निसान।। २० ।।

यहां सबसे बड़ा दुनियां का मेला हुआ और सब जगह पहचान फैल गई। सबके घरों में आनन्द मंगल के बाजे बजे जिससे दुनियां में चारों खूंटों (तरफ) पर गूंज उठी।

आए इमाम बाजे बजे, सो केते कहूं विचित्र।
बिना हिसाबें बाजहीं, हिसाब बिना बाजंत्र।। २१ ।।

इमाम साहब श्री प्राणनाथजी के आने पर लोगों ने बड़े अजब ढंग के बेहिसाब बाजे बजाए और बेहिसाब खुशियां मनाईं।

कजा हुई तब जानिए, जब खुले माएने कुरान।
तब आगे तें उड़ गई, जाने हती नहीं कुफरान।। २२ ।।

जब कुरान के रहस्य खुलें तो समझ लेना न्याय का दिन आ गया। तब सबके संशय मिट जाएंगे। ऐसा लगा कि दुनियां में कुफ्र था ही नहीं।

मगज माएने किन ना खुले, अव्वल बीच और अब।
ए कजा तब होवहीं, जब खुले माएने सब।। २३ ।।

रसूल साहब से लेकर अब तक किसी ने भी कुरान के रहस्यों को नहीं समझा। वह सब रहस्य जाहिर हो जाएं तब न्याय होगा।

कछुक रखे रसूलें, माएने सब थें गुझ।
सो इमाम मुख खोलाए के, करत काजीकी सुझ।। २४ ।।

कुरान के बीच रसूल साहब ने कुछ भेद (शब्दे मुक्तात) छिपा रखे हैं। अब श्री प्राणनाथजी के मुख से वर्णन करवाकर काजी (न्यायाधीश) की पहचान करवा रहे हैं।

Nijanand App

गुझका गुझ और जो सुन्या, सो लिख्या न रसूले कुरान।
जांने काजी जुबां केहेलाए के, कर देऊं काजीकी पेहेचान।। २५ ।।

रसूल साहब ने और भी गुझ का गुझ (अर्श की मारफत की बातें) सुनी थीं। वह कुरान में नहीं लिखीं। यह जानकर न्यायाधीश वह छुपे रहस्य अपने मुख से बताएंगे जिससे उनके न्यायाधीश होने की पहचान हो जाएगी।

याही वास्ते गुझ रख्या, ए बात दिल में आन।
कसनी सेती परखिए, काजी कसौटी कुरान।। २६ ।।

इसलिए कुरान में इन बातों को गुझ (गुह्य) रखा है। अब कुरान की कसौटी से ही काजी की पहचान होगी।

मोमिनो सो असल का, महंमद सदा सनेह।
सो आखिर लों फुरमान, लिए खड़ा है एह।। २७ ।।

मोमिनों से मुहम्मद (श्यामा महारानी) का सदा से प्यार है, इसलिए वह आखिर तक खुदा का हुकम लेकर मोमिनों के साथ खड़े हैं।

महंमद बिना मेंहेदीय की, करदे कौन पेहेचान।
इन विध माएने तो लिखे, जो निसबत अव्वल की जान।। २८ ।।

रसूल मुहम्मद के बिना श्री प्राणनाथजी की पहचान कौन कराएगा? क्योंकि इन दोनों का परमधाम से ही सम्बन्ध है, इसलिए यह भेद छिपा रखा है।

एही कलाम अल्लाह के, अपनी देत खबर।
काजी ईसा मेंहेदी महंमद, ए जुदे होंए क्यों कर।। २९ ।।

यह अल्लाह की वाणी है जो अपनी खबर देती है। काजी, ईसा, मुहम्मद मेंहदी तीनों एक हैं। इनको अलग नहीं किया जा सकता।

केहेनी अकथ इमाम की, खसमें कथाई हम।
इन कुरान के माएने, ना होवे बिना खसम।। ३० ।।

श्री महामतिजी कहती हैं कि श्री राजजी महाराज ने मुहम्मद इमाम की गुझ (गुह्य) बातें मेरे से कहलवाई हैं, क्योंकि इस कुरान के भेद अल्लाह के सिवाय कोई नहीं खोल सकता।

कलाम अल्ला के माएने, कबूं ना खोले किन।
एही कलाम यों केहेवहीं, ना खुले मेंहेदी बिन।। ३१ ।।

अल्लाह के वचनों को आज दिन तक किसी ने नहीं खोला। उन वचनों में भी कहा है कि कुरान के भेद श्री प्राणनाथजी के बिना और कोई नहीं खोल सकेगा।

सो खसमें खोलाए मुझपे, यों कर किया हुकम।
कहे तूं आगे रूहें फरिस्ते, जिन प्यारे हक कदम।। ३२ ।।

श्री महामतिजी कहती हैं कि राजजी महाराज ने हुकम करके मेरे से सब रहस्य की बातें खुलवाई और कहा कि ब्रह्मसृष्टि और ईश्वरी सृष्टि, जिसको हक के कदमों से प्यार है, यह सब उनको जाहिर करो।

Nijanand App

हरफ हरफ के माएने, तामें गुझ मता अनेक।
खोल तूं आगे अर्स रूहें, जो प्यारी मुझे विसेक।। ३३ ।।

कुरान के शब्द-शब्द में बहुत गुझ (गुप्त) भेद छिपे हैं। उनको मेरी अर्श की रूहें जो मुझे बहुत प्यारी हैं, उनके आगे खोल दो।

अब तुम सुनियों मोमिनो, सुनते होइयो श्रवन।
पीछे विचार होए विचारियो, तब मगज पाइए वचन।। ३४ ।।

हे मोमिनो! तुम सुनो और सुनकर उन पर ध्यान से विचार करो। तब तुम्हें इन वचनों के भेद समझ में आएंगे।

सनंधे सनंधे साखियां. तिन साखी साखी पाव।
तिन पाव पाव के हरफ का, तुम लीजो दिल दे भाव।। ३५ ।।

एक-एक प्रकरण, फिर प्रकरण की चौपाई, फिर चौपाई के चौथाई भाग के एक चरण को भी दिल में भाव से ग्रहण करना।

नूर हक के अंग का, होवे एकै ठौर।
इत थें दूजे पसरे, पर न होवे काहूं और।। ३६ ।।

हक श्री राजजी महाराज की शक्ति एक ही तन (ठिकाने) में होती है। उनसे ही वह दूसरों में फैलती है। पर किसी दूसरे ठिकाने (तन में) नहीं होती।

ईसा महंमद मेंहेदीय की, जो लों न पेहेचान तुम।
तो लों तुममें कजाए का, क्योंकर चलसी हुकम।। ३७ ।।

ईसा, मुहम्मद और मेंहदी की जब तक तुम्हें पहचान नहीं होगी, तब तक तुम्हारे हाथ से लोगों को बहिश्तों में कायमी कैसे मिलेगी?

सुध नाहीं फरिस्तन की, न पेहेचान रूहन।
न पेहेचान मुतकी की, न पेहेचान मोमिन।। ३८ ।।

अभी तक ब्रह्मसृष्टि की, ईश्वरी सृष्टि की, मोमिनों की और फरिश्तों की पहचान किसी को नहीं थी।

सुध ना उतरने पुल-सरात, ना सुध सरा तरीकत।
ना पेहेचान हकीकत की, न पेहेचान हक मारफत।। ३९ ।।

अब तक किसी को कर्मकाण्ड की तलवार की धार को पार करने की सुध नहीं थी और न किसी के पास तरीकत, हकीकत और मारफत की ही पहचान थी।

पेहेचान आप ना नासूत की, ना पेहेचान मलकूत।
ना सुध बका जबरूत की, ना सुध अर्स लाहूत।। ४० ।।

न अपने घर की पहचान थी और न मृत्यु लोक की। बैकुण्ठ की, अखण्ड अक्षर और अक्षरातीत के धाम की सुध नहीं थी।

ए पेहेचान काहूं ना परी, क्या बेचून बेचगून।
ना पेहेचान ला मकान की, ना बेसबी बेनिमून।। ४१ ।।

यह पहचान भी किसी को नहीं हुई कि पारब्रह्म को किसी ने बनाया नहीं। वह गुण-तत्वों से रहित है, उस जैसी किसी की शक्ल नहीं है। उसके जैसा कोई नमूना नहीं है। क्षर ब्रह्माण्ड की भी किसी को खबर न थी।

Nijanand App

ना पेहेचान हवाए की, जामें चौदे तबक झूलत।
जिन से आए काफर, न सुध तिन जुलमत।।४२।।

न किसी को मोह तत्व (निराकार) की खबर थी, जिसमें चौदह तबक झूले की तरह झूलते हैं और न यह खबर ही थी कि जीवों की उत्पत्ति निराकार से है।

ना सुध खासी गिरोह की, जो कहावत है बुजरक।
जिन को हिदायत हक की, तिन सोहोबतें पाइए हक।।४३।।

खासल खास गिरोह (ब्रह्मसृष्टि) जो सबसे बुजरक कहलाती है तथा जिनको हक की हिदायत है और जिनकी सोहोबत से पारब्रह्म की प्राप्ति की जा सकती है, उसकी सुध नहीं थी।

ना सुध निराकार की, ना सुध निरगुन सुंन।
ना सुध ब्रह्म क्यों व्यापक, कैसी सूरत निरंजन।।४४।।

न निराकार की, न निर्गुण की, न शून्य की, न ब्रह्म सबमें व्यापक कैसे है और निरंजन की शक्ल कैसी है, इसकी सुध नहीं थी।

ना सुध ब्रह्मसृष्ट की, सुध सृष्ट न ईश्वरी।
हिन्दु जो जीव सृष्ट के, तिन ए सुध ना परी।।४५।।

हिन्दू जो सब जीव सृष्टि हैं उन्हें न तो ब्रह्मसृष्टि की पहचान है और न ही ईश्वरी सृष्टि की पहचान है।

विजिया अभिनंदन बुध जी, और निहकलंक अवतार।
वेदों कह्या आखिर जमाने, एही है सिरदार।।४६।।

विजिया अभिनंदन बुद्ध निष्कलंक अवतार ही आखिरत में सबके मालिक होंगे, ऐसा वेदों ने भी कहा है।

इनमें लिखी आखिर, सो सुध ना परी काहू जन।
पढ़ पढ़ गए कई वेद को, पर उनों पाया न कयामत दिन।।४७।।

वेदों ने भी आखिरत के समय महाप्रलय की बात लिखी है, बहुतेरों ने वेदों को पढ़ा, पर महाप्रलय व कायमी कब होगी, किसी ने नहीं बताया।

करनी कजा चौदे तबक, देना सबों आकीन।
कुरान माजजा नबी नबुवत, होए साबित हुए एक दीन।।४८।।

चौदह तबकों का न्याय करना है और अक्षरातीत पर यकीन दिलाना है। तभी कुरान के भेद खुलेंगे और रसूल पारब्रह्म के नबी बनकर आए हैं, यह साबित होगा, तब सभी निजानन्द धर्म में आ जाएंगे।

कहां अर्स कहां हक बका, कहां है नूर मकान।
क्यों पावे महंमद तीन सूरत, जो लों न ए पेहेचान।।४९।।

अखण्ड घर कहां है, राजजी कहां हैं, अक्षरधाम कहां है, इनकी पहचान तब तक नहीं होगी जब तक मुहम्मद की तीनों सूरतों की पहचान (बसरी, मलकी और हकी) नहीं हो जाएगी।

पेहेले माएने हक कलमें के, सुध हक इमाम रसूल।
और कजा सब होएसी, पर बड़ी कजा ए मूल।।५०।।

सबसे पहले हक के कलमे (तारतम) की पहचान होगी। फिर हक की, इमाम की और रसूल की पहचान होगी। यही सबसे बड़ा न्याय है। बहिश्तों की कायमी का बाकी न्याय बाद में होगा।

Nijanand App

आसिक मासूक दो लिखे, दोऊ एक केहेलाए।
दो कहे कुफर होत है, अब काजी क्या फुरमाए।। ५१ ।।

आशिक-माशूक को दो लिखा है, परन्तु यह दोनों एक ही हैं। इनको दो कहना गलत है, क्योंकि यह दोनों एक दूसरे में गर्क रहते हैं। अब देखो न्यायाधीश क्या कहते हैं?

एक भी कहे ना बने, दो भी कहे ना जाए।
ना भेले ना जुदे कहे, अब फुरमान क्या फुरमाए।। ५२ ।।

दोनों को एक भी नहीं कहा जा सकता और दो भी नहीं कहा जा सकता, क्योंकि दोनों इकट्ठे भी नहीं हैं और दोनों अलग भी नहीं हैं। अब देखो कुरान में इसकी बाबत क्या लिखा है।

सिरदार न होवे एकला, ज्यों हुकम हाकिम संग।
त्यों महंमद मेंहेदी हक से, ए दोऊ एकै अंग।। ५३ ।।

सिरदार (प्रधान) कभी भी अकेला नहीं होता। हाकिम के साथ हुकम सदा रहता है। इस तरह से यहां मुहम्मद मेंहेदी और हक श्री राजजी दोनों एक ही अंग हैं।

जो कछू कहूं महंमद को, तामें अली जान।
हुकम छोड़ हाकिम फिरया, सो हाकिम हुकम सुभान।। ५४ ।।

रसूल मुहम्मद के साथ अली सदा रहते हैं। हाकिम हुकम को छोड़कर वापस गया था, तो हुकम ही हाकिम बन गया।

जाहेर कीजे माएने, काजी एह कजाए।
पेहेचान आसिक मासूक की, भी नीके देऊं बताए।। ५५ ।।

यही न्यायाधीश का फैसला है। इसके माएने जाहिर करो (समझो)। यह आशिक-माशूक की पहचान का दृष्टान्त है। इसको और भी अच्छी तरह से बतलाती हूं।

जिन कोई कहे पट बीच में, मासूक और आसिक।
कबूं आसिक परदा ना करे, यों कह्या मासूक हक।। ५६ ।।

आशिक और माशूक के बीच कोई परदा मत समझना। आशिक कभी भी माशूक से परदा नहीं करता। इस तरह माशूक राजजी महाराज ने कहा है।

परदा आड़ा मासूक, कबूं आसिक करे ना कोए।
आसिक मासूक तब कहिए, एक अंग जब होए।। ५७ ।।

अपने माशूक के आगे आशिक कभी परदा नहीं करते। आशिक माशूक तब कहे जाते हैं जब दोनों एक अंग होते हैं।

ना न्यारा आसिक मासूक, ए तो एकै किया प्रवान।
तो बीच कह्या क्यों फरिस्ता, जो जाए आवे दरम्यान।। ५८ ।।

जब आशिक माशूक अलग नहीं हैं जैसा कि ऊपर प्रमाण दिया है, तो दोनों के बीच जबराईल फरिश्ता कैसे आता जाता है?

कह्या हक सेहेरग से नजीक, सब हैवान या खलक।
तो रसूल जुदागी क्यों हुई, जो बीच भेज्या जबराईल हक।। ५९ ।।

यदि खुदा शहेरग से नजदीक है और सबके अन्दर है तो रसूल साहब के पास जबराईल के भेजने की जरूरत क्यों हुई?

Nijanand App

जो लों ए सक ना मिटे, तो लों होए ना पेहेचान हक।
ए भी कीजे जाहेर, सब मोमिन करूं बेसक।। ६० ।।

जब तक यह संशय नहीं मिट जाएगा तब तक हक की पहचान कैसे होगी? इस भेद को भी खोल कर मोमिनों के संशय दूर कर देता हूं।

एक सुरत दो बीच में, ए जो फिरे दरम्यान।
तिनको कहिए फरिस्ता, नूर जोस अंग का जान।। ६१ ।।

रसूल और हक (पारब्रह्म) के बीच में जो यह सुरता घूमती है, यही अक्षर के जोश के अंग का फरिश्ता जबराईल है।

रसूल आया हुकमें, तब नाम धराया गैन।
हुकम बजाए पीछा फिरया, तब सोई ऐन का ऐन।। ६२ ।।

रसूल साहब राजजी का हुकम (कुरान) लेकर जब संसार में आए तो उनका नाम गैन (ं) धराया और वही रसूल साहब जब राजजी का हुकम बजाकर वापस गए तो फिर वही ऐन के ऐन (ε) हो गए।

सब सकें दूर कीजिए, साफ कीजे समझाए।
मासूक क्यों महंमद कह्या, क्यों होए आसिक अल्लाह।। ६३ ।।

इस तरह से समझाकर मोमिनों के सब संशय दूर कर दो। खेल में आने के कारण मुहम्मद को माशूक और अल्लाह को आशिक कहा गया।

तो कहया मासूक महंमद, आसिक अपना नाम।
बांध्या आप हुकम का, केहेवत यों कलाम।। ६४ ।।

कुरान की वाणी कहती है कि रसूल साहब हक के हुकम से बंधे होने के कारण जब तक वह खेल में हैं, मुहम्मद माशूक हैं और अल्लाह आशिक हैं।

वली पैगंमर फरिस्ते, आए मिले सब संग।
ज्यों गुन इंद्री जुदे जुदे, उठ खड़े सब अंग।। ६५ ।।

जैसे गुण, अंग, इन्द्रियां एक साथ जागृत हो जाती हैं, उसी तरह इमाम मेंहदी के आने से सभी ब्रह्मसृष्टि ईश्वरी सृष्टि और फरिश्ते सब इकट्ठे होकर श्री प्राणनाथजी के चरणों में आ गए।

जब ईसा मेंहेदी महंमद मिले, तब मिले सब आए।
फेर पीछा क्या देखहीं, परदा दिया उड़ाए।। ६६ ।।

जब ईसा, मेंहदी और मुहम्मद अर्थात् बसरी, मलकी और हकी तीनों सूरत मिल गईं तो सभी मिल गए, तब पीछे क्या देखना। सब संशय मिट गए।

हक जो नूर के पार है, तिन खुद खोले द्वार।
बका द्वार तब पाइया, जब खोल देखाया पार।। ६७ ।।

श्री राजजी महाराज जो अक्षर के पार परमधाम में रहते हैं, उन्हीं ने स्वयं पार के दरवाजे खोले हैं। अखण्ड परमधाम की पहचान तभी मिली जब श्री राजजी महाराज ने क्षर के बाहर का ज्ञान दिया।

पेहेचान मेंहेदी महंमद, और ईसा अली मोमिन।
ए कजा दिल भीतर, निसां हुई हम सबन।। ६८ ।।

मेंहदी, मुहम्मद, ईसा, अली और मोमिन सबकी पहचान हो गई। यही न्याय मिलने से (इनकी पहचान मिलने से) हम सबकी सन्तुष्टि हो-गई।

Nijanand App

अब कहो क्यों फरिस्ते, क्यों फना आखिरत।
भिस्त क्यों कर होएसी, क्यों होसी कयामत।। ६९ ।।

अब मोमिन कहते हैं कि फरिश्तों का बयान और आखिरत में ब्रह्माण्ड कैसे लय होगा? बहिश्तें कैसे मिलेंगी? कयामत कैसे होगी? बतलाओ।

ए सबे समझाए के, पाक करो हम दिल।
पीछे बात वतन की, हम पूछसी मोमिन मिल।। ७० ।।

यह सब बातें समझा करके हमारे दिल को पाक करो (संशय मिटाओ) इसके बाद हम सब मोमिन मिलकर घर की बातें पूछेंगे।

।। प्रकरण ।। ३६ ।। चौपाई ।। १२९५ ।।

सनन्ध–फरिस्ते फना आखिरत भिस्त कयामत की

अब कहूं बिध नूरियों, जो जहां जिन ठौर।
ए माएने इमाम बिना, कोई करे जो होवे और।। १ ।।

अब नूरी फरिश्तों की बात करती हूं और उनके ठिकाने बताती हूं। इमाम साहब के बिना इसका भेद कोई नहीं बता सकता।

पांच फरिस्ते नूर से, खड़े मिने हुकम।
पाव पल में पैदा करे, ऐसे कई इंड आलम।। २ ।।

अक्षर के हुकम के नीचे पांच फरिश्ते हैं। यह एक क्षण में कई ऐसे ब्रह्माण्ड बनाते हैं (असराफील जबराईल, अज़ाजील, अजराईल, मेकाईल)।

यामें एक रसूल संग, ए जो जबराईल।
सो नूर से आवत रूहन पर, हकें भेज्या रोसन वकील।। ३ ।।

इसमें एक रसूल साहब के साथ जबराईल फरिश्ता है जो अक्षर धाम से राजजी का सन्देश लेकर रूहों के पास आता है।

ए जो ले खड़े खेल को, और कहे जो चार।
ए असल कतरा नूर का, जिनको एह विस्तार।। ४ ।।

और बाकी जो चार फरिश्ते खेल के लिए खड़े हैं वह अक्षर के ही अंश हैं, जिन्होंने इतना बड़ा विस्तार बना रखा है।

यामें एक फरिस्ता, तिन से उपजे सब।
सरत आखिर असराफील, नूर से आया अब।। ५ ।।

इन चारों में एक फरिश्ता (अजाजील) है जिससे सारी सृष्टि की उत्पत्ति हुई है। एक जागृत बुद्धि का फरिश्ता असराफील है जो अक्षर से अपने समय पर आया है।

अजाजील असराफील, इन दोऊ की असल एक।
पैदा अजाजील से, सो भी कहूं विवेक।। ६ ।।

अजाजील और असराफील दोनों एक धाम के हैं। अजाजील से सारी पृथ्वी की उत्पत्ति हुई है। उसका भी थोड़ा वर्णन करती हूं।

Nijanand App

कतरे से पैदा हुआ, इन से उपजे दोए।
तामें एक सबों को पालहीं, एक करत कबज रूह सोए।। ७ ।।

अजाजील के कतरे (बूंद) से दो फरिश्ते पैदा हुए (एक मैकाईल दूसरा अजराईल)। इनमें से एक सबको बनाता है, दूसरा सबको नष्ट करता है।

ए दोऊ जो पैदा हुए, सो ले खड़े सब छल।
नूर की नजरों चढ़े, तिनों आया सबों बल।। ८ ।।

जो यह दोनों पैदा हुए हैं, यही छल के बड़े मालिक हैं और अक्षर की नजर होने के कारण बड़े बलवान हैं।

यों चारों पैदा हुए, खड़े रहे जिन खातिर।
सोई काम सोई जाएगा, ए भी दोऊ देऊं खबर।। ९ ।।

यह चारों जो पैदा हुए हैं तथा जिनके लिए खड़े हुए हैं, उनके काम की और ठिकाने की थोड़ी-सी खबर देती हूं।

एक पैदा कर वजूद खेलावहीं, दूजा पाले तिन।
तीसरा किन किन लेवहीं, चौथा उड़ावे सबन।। १० ।।

एक पैदा कर खेल खिलाता है, दूसरा उनको पालता है और तीसरा उनको चुन-चुनकर ले जाता है (यह ब्रह्मा, विष्णु और शंकर हैं)। चौथा असराफील सारे ब्रह्माण्ड को समाप्त कर देता है।

यों नूर नजर चारों पर, इन विध हुई पैदास।
फेर कहूं बेवरा इन का, ए जो खेलें खेल लिबास।। ११ ।।

इस तरह से इन चारों की पैदाइश अक्षर की नजर से हुई। अब इनका ब्योरा फिर से बताती हूं कि यह खेल में कैसा तन धारण करते हैं।

या विध उपजे नूर से, इन से सब विस्तार।
थिर चर चौदे तबकों, हुआ खेल कुफार।। १२ ।।

अक्षर के नूर से इस तरह से यह पैदा हुए और इनसे ही सारी सृष्टि का स्थावर जंगम (थिरचर) सब चौदह लोकों का झूठा खेल बना।

अजाजील को गफलतें, हुकमें दिया उलटाए।
ले तखत बैठाया छल के, सब फरेब जुगत बनाए।। १३ ।।

अजाजील को संशय होने के कारण हुकम ने उसे नीचे गिरा दिया और उसे इस माया के तख्त पर बैठा दिया। इसी से इसने सारे झूठे खेल बनाए।

अजाजील से फरिस्ते, उपजे बिना हिसाब।
सो दम सबों में इनका, ए जो खेलें मिने ख्वाब।। १४ ।।

अजाजील से ही बिना हिसाब सृष्टि पैदा हुई, इसलिए इस सपने के जीवों में अजाजील का अंश समाया है।

परदा इन सिरदार पर, ए जो कही जुलमत।
पीछा हटाया हुकमें, ताए कुफर सेवें कर सत।। १५ ।।

यहां के सिरदार नारायण पर निराकार का परदा है, इसीलिए दुनियां वाले इसे सत्य मानकर सेवा कर रहे थे। श्री राजजी के हुकम ने इस अज्ञानता के परदे को हटा दिया, ताकि जीव सत की पहचान कर सके।

Nijanand App

ले बैठा हुकमें साहेबी, जाकी असल कतरा नूर।
सो सरमाए के पीछा हट्या, अपना देख अंकूर।। १६ ।।

यह अजाजील फरिश्ता जो अक्षर के नूर से पैदा है, श्री राजजी के हुकम से ब्रह्माण्ड के ऊपर साहब बनकर बैठा है। उसने अब अपने मूल अंकूर (अक्षर) को पहचाना और शर्मिन्दा होकर पीछे हट गया।

इनसेती जो उपजे, तिन सिर दिया भार।
आप तिन से न्यारा रख्या, ए दोए भए सिरदार।। १७ ।।

इस अजाजील फरिश्ते से जो दो सिरदार (प्रधान) पैदा हुए, मैकाईल, अजराईल (ब्रह्मा, महादेव) उनके जिम्मे सारा कार्यभार सौंपकर स्वयं उनसे अलग हो गया।

एक दाना पानी घास सबको, मेकाईल बुध बल।
ठौर बैठा आप देवहीं, कर पसारा अकल।। १८ ।।

अब सबको दाना, पानी और घास देने का काम बुद्धि स्वरूप ब्रह्माजी पर आया जो अपने घर में बैठे-बैठे अपनी बुद्धि का ही खेल खिला रहे हैं।

जोर जालिम अजराईल, बैठा छल में हुकम ले।
फिरत दोहाई इन की, तले काफर खेलत जे।। १९ ।।

अजराईल भगवान शंकर हैं जो खेल में ताकतवर बनकर बैठे हैं। सब जगह पर काफिर लोग ही इनकी दुहाई देते हैं।

फरामोस सरूप अजराईल, मौत हुकम सिर सबन।
जिन वजूद धरया खेल में, आए लेत कौल पर तिन।। २० ।।

यह अजराईल (भगवान शंकर) सबके ऊपर झूठे ब्रह्माण्ड में मौत के रूप हैं। जिन्होंने संसार में तन धारण किया है, समय आने पर उनको मार देते हैं।

पाले मेकाईल इन को, रूह कबज करे अजराईल।
ए खेल समेत फरिस्ते, आखिर उड़ावे असराफील।। २१ ।।

ब्रह्माजी इनको पालते हैं और अजराईल इन जीवों को मारते हैं। इन सबका खेल समेत असराफील फरिश्ता महाप्रलय कर देता है।

ला हवा से तेहेतसरा लग, ए सब खेल में पातसाह एक।
कहे या बिन और कोई नहीं, एही है एक नेक।। २२ ।।

निराकार से पाताल तक पूरे खेल में यही एक शहंशाह है। इसके बगैर और कोई दूसरा नहीं है। यही एक सब पर हुकूमत करता है।

और जो इनके तले, ठकुराइयां कहावत।
देखाए दुनी को साहेबी, अपने तले ल्यावत।। २३ ।।

इसके नीचे जितने भी हैं यह सब ठाकुर (देवता, देवियां) और ठकुराईयां (स्वामीपना) कहलाते हैं, अर्थात् देवी-देवता दुनियां को इस तरह से अपनी साहेबी दिखाकर अपनी हुकूमत के तले रखते हैं।

एक दूजे के गुमास्ते, वजीर वकील दिवान।
एक फरिस्ता सबका खावंद, यों खेल बन्या सब जहान।। २४ ।।

वजीर, वकील और दीवान की तरह सभी देवी-देवता उसी एक के नौकरों की तरह हैं। यह एक फरिश्ता असराफील सबका मालिक है। इस तरह से सारा संसार बना है।

Nijanand App

यामें बुजरक आलम आरफ, तिन करियां कई किताब।
इन सिर हक एक मलकूत, चौदे तबकों लेत हिसाब।। २५ ।।

दुनियां के बीच बड़े-बड़े ज्ञानी (अगुए) हुए जिन्होंने कई किताबें लिखीं। उनके मन में सबसे ऊपर बैकुण्ठ का एक फरिश्ता (भगवान विष्णु) है जो चौदह तबकों (लोकों) का हिसाब लेता है।

ब्रह्मा सिव या देव जन, कई दुनियां तिन सेवक।
सो कहे ए सुख देवहीं, खैंचे अपनी तरफ खलक।। २६ ।।

ब्रह्माजी, शिवजी और देवी-देवता और सब दुनियां के लोग इन्हीं के सेवक हैं। यह सब अपने मुख से कहते हैं कि सुख देने वाले भगवान विष्णु ही हैं। इस तरह से दुनियां को अपनी तरफ खींचते हैं।

करे पातसाही खेल में, ऐसी कर बंदोबस्त।
देत काफरों दोजख, बंदों कदमों चार भिस्त।। २७ ।।

भगवान विष्णु इस तरह इन्तजाम कर खेल के बादशाह बने हैं। यह काफिरों को दोजख तथा भक्तों को चार किस्म की मुक्ति (सालोक्य, सामीप्य, सारूप्य, सायुज्य) देकर अपने चरणों में रखते हैं।

जिन हक बका अर्स न पाइया, तिन खुदा हवा या मलकूत।
सो कटे पुलसरात में, जिन पकड़े वजूद नासूत।। २८ ।।

जिनको अखण्ड परमधाम और राजजी की पहचान नहीं हुई, उनके खुदा भगवान विष्णु या निराकार हैं। ऐसे लोग कर्मकाण्ड की तलवार की धार में कटते हैं, मरते हैं और फिर मृत्युलोक में ही तन धारण करते हैं।

सो ले न सके भिस्त कदमों, तिन अरवाहों देत दोजख।
और हिसाब सुख दुख हैं कई, ए खेल कह्यो चौदे तबक।। २९ ।।

जिन जीवों को भगवान विष्णु अपने चरणों में नहीं लेते उनको नरक (दोजख) देते हैं। इस तरह से चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड में कई तरह से दुःख-सुख हैं।

ए जो खेल पैदा की सब कही, इनों सिर अर्स मलकूत।
ला मकान जिमी तहेतसरा, ए सब फना तले जबरूत।। ३० ।।

जो सृष्टि की पैदाइश बताई है उनका धाम बैकुण्ठ है और निराकार से पाताल तक यह सब अक्षर की नजर के तले मिट जाने वाला है।

ए जो तले ला हवा के, जो खेल कह्या फना।
इनों सुध ना जबरूत लाहूत, ए बका वह सुपना।। ३१ ।।

निराकार के नीचे का ब्रह्माण्ड सब नाशवान् है। यहां के रहने वालों को अक्षर और अक्षरातीत के धाम की सुध नहीं है, क्योंकि अक्षर और अक्षरातीत अखण्ड हैं और संसार सपने का है।

लोक जिमी आसमान के, सुरिया न उलंघत।
कह्या चौदे तबक का पलना, बीच हवा के झूलत।। ३२ ।।

चौदह तबकों के लोग ज्योति स्वरूप को ही नहीं लंघ पाते। यह चौदह तबकों (लोकों) का ब्रह्माण्ड निराकार के अन्दर झूले की भांति झूल रहा है।

Nijanand App

चार लाख कोंम आजूज माजूज, ए जो आवे जाए रात दिन।
गिनती कौल पूरा कर, आखिर एही काल सबन।। ३३ ।।

आजूज-माजूज (दिन और रात) की चार लाख कौम कही हैं। यह रात-दिन आते-जाते हैं। यह अपनी गिनती पूरी करके ब्रह्माण्ड को खा जाएंगे, अर्थात् महाप्रलय हो जाएगा।

जबरूत लाहूत अर्स कहे, देवें रूह अल्ला हकीकत।
ए बका मता दोऊ अर्सों का, सो महंमद पे मारफत।। ३४ ।।

अक्षर धाम और परमधाम ईश्वरी सृष्टि और ब्रह्मसृष्टि के अर्श कहे गए हैं। इनकी जानकारी श्यामाजी महारानी (रूह अल्लाह) देते हैं। यह दोनों घर ही अखण्ड हैं। इनकी पूरी पहचान मुहम्मद श्री प्राणनाथजी की वाणी से मिलती है।

रूहें अर्स अजीम की, फौज असराफील फरिस्तन।
दोऊ गिरो उतरी दोऊ असौं से, खेल फरिस्तों का देखन।। ३५ ।।

रूहें परमधाम की हैं। असराफील की फौज (ईश्वरी सृष्टि) है। दोनों जमात दो अर्शों से तीन फरिश्तों (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) द्वारा रचित खेल देखने के लिए आई हैं।

पेहेले कही सब खेल की, और कहे देखनहार।
रूहें फरिस्ते खेल देखहीं, पकड़ ख्वाब आकार।। ३६ ।।

पहले भी खेल की और देखने वालों की हकीकत बताई है। रूहें और फरिश्ते सपने के तन धारण करके खेल देख रहे हैं।

अजाजील खेल खावंद, ए भी न्यारा रह्या सबन।
ए खेल कुफार इन भांत का, तो ऐसा किया इन।। ३७ ।।

खेल का मालिक अजाजील इन सबसे अलग है। इसने इस तरह से झूठा खेल बनाया है।

ऐसी छोड़ साहेबी अजाजील, पीठ दई आप बचाए।
ए खेल ऐसा कुफार का, बिना काजी कौन बताए।। ३८ ।।

अजाजील फरिश्ता अपनी साहेबी छोड़कर किनारे होकर बैठे हैं। इस तरह का झूठा खेल है जिसकी हकीकत काजी श्री प्राणनाथजी के बिना कौन बताएगा?

मोमिनों को देखलावने, किया खेल कुफार।
अब जो अर्स रूहें होवहीं, सो क्यों चलें इन लार।। ३९ ।।

मोमिनों को खेल दिखाने के लिए यह झूठा खेल बनाया है। जो रूहें परमधाम की होंगी इन जीवों के रास्ते पर कैसे चलेंगी?

खेल कुफार इन भांत का, सब खेलें हक बका भूल।
इनमें फुरमान ल्याइया, मेरे मासूक का रसूल।। ४० ।।

यह झूठा खेल इस तरह का है जिसमें सभी (ब्रह्मसृष्टि और ईश्वरी सृष्टि) आकर भूल गई हैं। इन्हीं के वास्ते श्री राजजी के रसूल कुरान ले करके आए।

आया रसूल पुकारता, राह सीधी बका वतन।
ए माएने कौन लेवहीं, बिना अर्स रूह मोमिन।। ४१ ।।

रसूल साहब घर का सीधा रास्ता बताते हैं, परन्तु अर्श की रूहों के सिवाय उस रास्ते को लेता कौन है?

Nijanand App

हम उतरे लैलत-कदर में, मांहें उरझे खेल कुफार।
दसों दिस हम ढूंढ़िया, पर काहूं न पाइए पार।। ४२ ।।

हम रूहें लैल-तुल-कदर की रात्रि में खेल में आए और इस झूठे खेल में उलझ गए। दसों दिशाओं में ढूंढ़ा पर इस ब्रह्माण्ड का पार नहीं मिला।

रसूलें हम वास्ते, मुनारे मुल्लां चढ़ाए।
जिन कोई मोमिन भूलहीं, ठौर ठौर पुकार कराए।। ४३ ।।

हमें सुध देने के लिए रसूल साहब ने मुल्ला को मीनारों पर चढ़ाकर बांग देने का नियम बनाया तथा हर ठिकाने पर आवाज लगवाई जिससे कोई मोमिन भूले नहीं।

कोई भूली राह बतावहीं, ताए बड़ा सवाब।
ढिंढोरा फिराइया, कर कर एह जवाब।। ४४ ।।

यदि कोई भूले को रास्ता बताता है तो उसका बड़ा पुण्य है। इस बात की सब जगह ढोल पीटकर जानकारी दी।

हम ढूंढ़ ढूंढ़ कुफार में, गए जो तिनमें भूल।
ऐसे मिने खसम के, पाए दसखत हाथ रसूल।। ४५ ।।

इस झूठे संसार में हम भी ढूंढ़ते-ढूंढ़ते भूल गए थे। इस बीच में (मेरते में) हमें श्री राजजी महाराज की हस्तलिखित चिट्ठी कुरान रसूल साहब के हाथ (द्वारा) मिली।

इन फुरमान में इसारतें, लिखियां जो खसम।
निसान अर्स अजीम के, पाए हमारे हम।। ४६ ।।

श्री राजजी महाराज ने कुरान के अन्दर जो इशारतें लिखी हैं, वह हमारे अर्श की बातें थीं। हमने इसे प्राप्त किया।

हम ढूंढ़ें हक वतन, और रसूल ढूंढ़ें हम।
यों करते सब आए मिले, मोमिन रसूल खसम।। ४७ ।।

हम श्री राजजी महाराज और वतन (घर) को ढूंढ़ रहे हैं और रसूल साहब हमको ढूंढ रहे हैं। ऐसे ढूंढ़ते-ढूंढ़ते श्री प्राणनाथजी के पास आकर दोनों मिल गए।

सुनो मोमिनों बेवरा, ए जो आपन देख्या खेल।
जो तीनों देखे आलम, उतर के मांहें लैल।। ४८ ।।

हे मोमिनो! हमने जो खेल देखा है उसकी हकीकत सुनो। तीन ब्रह्माण्ड हमने रात्रि में उतरकर देखे हैं।

हकें बचाए कोहतूर तले, तोफान हूद महत्तर।
दूसरे तोफान नूह के, बचाए किस्ती पर।। ४९ ।।

पहले ब्रह्माण्ड में हूद-तोफान (इन्द्र-प्रकोप) आया और कोहेतूर (गोवर्धन पहाड़) के तले श्री राजजी महाराज ने बचाया। दूसरा नूह-तोफान (ब्रज से रास में जाने पर) योगमाया में किश्ती पर बिठाकर रूहों को बचा लिया।

साल हजार पीछे रसूल के, मांहें उतरे लैलत-कदर।
हुआ अर्स बका दिन जाहेर, सदी अग्यारहीं के फजर।। ५० ।।

रसूल साहब के एक हजार वर्ष बाद हम सम्वत् १६३८ में लैल (रात) में उतरे। इसमें अखण्ड घर की पहचान हुई और ग्यारहवीं सदी में (१७३५ में) सवेरा हुआ, ज्ञान आ गया।

Nijanand App

एही फरदा रोज कयामत, जो कही हजरत।
सो ए हुए सबे जाहेर, जिनको दुनी ढूंढ़त।। ५१ ।।

हजरत रसूल साहब ने 'कल के दिन कयामत होगी' कहा था। यह कल का दिन ही ग्यारहवीं सदी है (हजार साल दुनियां के खुदा का एक दिन और सौ साल की रात्रि)। वह रात्रि जिसे दुनियां ढूंढ़ रही है, वह सबके लिए जाहिर हो गई।

सीधी राह वतन की, अब लों न पाई किन।
पैगंमर ना फरिस्ते, ना अहंमद मेंहेदी बिन।। ५२ ।।

घर की सीधी राह मेंहदी श्री प्राणनाथजी के बिना पैगम्बर या फरिश्तों किसी ने नहीं पाई थी।

खेल फरिस्ते अर्स बका, हक मता पाया हम सब।
आखिर भिस्त कयामत, ए कजा कहिए अब।। ५३ ।।

हमने श्री राजजी महाराज का सारा भेद, अखण्ड घर तथा इस खेल की सारी हकीकत को जान लिया है। अब आखिरत में सबको बहिश्तों में कायम करेंगे। इसको कजा कहते हैं (न्याय करना कहते हैं)।

ए कहूं फना पेहेले जिन विध, होसी इन आखिरत।
ज्यों पावें सुख भिस्त में, उठ के रूह कयामत।। ५४ ।।

यह ब्रह्माण्ड आखिरत में फना कैसे होगा, पहले यह कहती हूं। फिर जीव बहिश्तों में कैसे कायम होकर सुख पाएंगे, वह कहूंगी।

ए कजा हुई दुनियां मिने, खोले हकीकत मारफत।
तिन मता बका अर्स का, जाहेर करी न्यामत।। ५५ ।।

हकीकत और मारफत के भेद खोल करके दुनियां का न्याय होगा। इससे अखण्ड घर की सारी हकीकत की जानकारी सबको हो जाएगी।

बका सूरत पर बंदगी, करी इमामें इमामत।
दोऊ अर्स बताए दोऊ गिरोह को, करी महंमद सिफायत।। ५६ ।।

अखण्ड परमधाम में विराजमान पारब्रह्म अक्षरातीत की पूजा श्री प्राणनाथजी ने कराई। दो जमात ब्रह्मसृष्टि और ईश्वरी सृष्टि को परमधाम और अक्षर धाम की पहचान कराई। जिसकी सिफायत (सिफारिश) रसूल साहब ने की थी।

ए नूर कजा का या विध, जिन टाली फेर अंधेर।
जो न राखूं ले हुकम, तो भोर होत केती बेर।। ५७ ।।

न्याय के दिन की हकीकत जाहिर होने पर अज्ञानता का चक्कर मिटा दिया। यह श्री राजजी महाराज के हुकम से ही ब्रह्माण्ड खड़ा रहा। नहीं तो कभी का सवेरा हो गया होता।

कयामत काजी मोमिनों, पेहेले होसी जब।
फैलसी नूर आलम में, काजी कजा का सब।। ५८ ।।

मोमिनों और काजी (श्री प्राणनाथजी) की पहचान पहले दुनियां को होगी, तब इस बात का फैलाव दुनियां में होगा, फिर काजी सबका न्याय करेंगे।

Nijanand App

ए किरने कौन पकरे, इन नूरै के आवाज।
करत ए सब खसम, अर्स अरवाहों काज।।५९ ।।

इस तारतम वाणी की किरणों को कौन पकड़ेगा? अर्श की रूहों के कार्य के लिए यह श्री राजजी महाराज की आवाज है।

काजी कजा के नूर की, बजसी कई करनाल।
नूर अकल असराफील, बजाए स्वर रसाल।।६० ।।

श्री प्राणनाथजी महाराज जिस दिन न्याय के तख्त पर विराजमान होंगे, उस दिन तारतम वाणी के ज्ञान के बिगुल बजेंगे, अर्थात् सब मोमिन वाणी का शोर मचा देंगे, जाहिर कर देंगे। उसके बाद असराफील जागृत बुद्धि बड़ी जोर से मीठे स्वर में वाणी गाएगा।

कई करोर करनाइयां, कई करोर निसानों घोर।
यों गरज्या आलम में, सो कह्या न जाए सोर।।६१ ।।

न्याय के दिन कई करोड़ों करनाई (तुरही), नगाड़े बजेंगे और खुशियां मनाई जाएंगी। इस तरह से तारतम वाणी की आवाजें आलम (दुनियां) में फैलेंगी। इसका वर्णन शब्दों में नहीं होता।

याही सब्द के सोर से, पेहेले उड़सी इंड अंधेर।
कुदरत बुरका गफलत, उड़ाया फरिस्तों फेर।।६२ ।।

इस तारतम वाणी के शोर से संसार का अज्ञान उड़ जाएगा। फिर माया का परदा उड़ जाएगा और देवी देवताओं का चक्कर, जन्म-मरण समाप्त हो जाएगा।

आकास जिमी जड़ मूल से, पहाड़ आग जल वाए।
फिरया कतरा नूर का, और दिया सब उड़ाए।।६३ ।।

पांच तत्व का ब्रह्माण्ड और देवी-देवताओं की पूजा जो लोगों के लिए पहाड़ के समान है, जड़ (मूल) से उखड़ जाएगी। तारतम वाणी की एक बूंद ने सबको उड़ा दिया।

इन घाव के पड़घाव से, उड़सी चौदे तबक।
और आवाज के नूर से, बैठे भिस्त में कर हक।।६४ ।।

इस असराफील की वाणी के शोर से चौदह तबकों (लोकों) के संशय मिट जाएंगे और दूसरी बार असराफील के स्वर फूंकने से सब जीवों को बहिश्तों में कायमी मिल जाएगी।

पेहेले दिए सब उड़ाए के, चौदे तबक दम जे।
काजी कजा के नूर से, भिस्त में बैठे नूर ले।।६५ ।।

पहले चौदह लोकों को समाप्त कर दिया जाएगा। फिर न्यायाधीश की कृपा से इनको योगमाया में अखण्ड कर दिया जाएगा।

क्यों बरनों सुख भिस्त के, हो बैठे नूरी नेहेचल।
रेहेमत इन रेहेमान की, रच दिया और मंडल।।६६ ।।

जहां इन जीवों के अखण्ड तन बैठे होंगे उन बहिश्तों के सुख का वर्णन कैसे करें? पारब्रह्म की कृपा से ही इनके लिए नए ब्रह्माण्ड (बहिश्तें) बनाए गए।

Nijanand App

अपने अपने ताएफें, अरवाहें मिली सब धाए।
महंमद मेंहेदी की मेहेर से, भिस्त में बैठे आए।।६७।।

अपनी-अपनी जमातों में सब जीव दौड़ेंगे और मुहम्मद मेंहदी (श्री प्राणनाथजी) की कृपा से बहिश्तों में कायमी मिलेगी (अखण्ड हो जाएंगे)।

पेहेले सब फना कर, उठाए लिए ततखिन।
साफ किए सब नूर ने, यों भिस्त भई वतन।।६८।।

सबसे पहले ब्रह्माण्ड प्रलय कर फिर से जीवों को उठाएंगे और तारतम वाणी के ज्ञान से निर्मल कर सबको बहिश्तों में कायमी देंगे।

निमख में नूर नजरों, उठे अंग उजास।
बरस्या नूर सबन में, कायम सुख में बास।।६९।।

अक्षर ब्रह्म के एक पल में ही तारतम ज्ञान के नूर से सब पाक साफ हो जाएंगे। ब्रह्मसृष्टि के नूर की (ज्ञान की) वर्षा होगी और फिर सबको अखण्ड सुख दे दिए जाएंगे।

ए कायम नूर नजर की, सिफत या जुबां कही न जाए।
पाक हुए सब खेलहीं, जरा खतरा न पाइए ताए।।७०।।

अक्षर की नजर में सबको कायम होने की सिफत (विशेषता) इस जुबां से वर्णन करने में नहीं आती। जहां सब तारतम वाणी से पाक होकर खेलेंगे। वहां नाश होने का खतरा नहीं होगा।

खाना पीना दिल चाहता, सब बिध का करार।
नूर सरूपें होए के, भिस्त में बसें नर नार।।७१।।

बहिश्तों के अन्दर खान-पान, रहन-सहन की सब सुविधाएं उपलब्ध होंगी। जहां पर नए तन धारण कर जीव आनन्द लेंगे।

रूप रंग सब नूर के, गुन अंग इन्द्री नूर।
वस्तर भूखन नूर सबे, नूरै दिए अंकूर।।७२।।

वहां का रूप, रंग, गुण, अंग, इन्द्रियां, आभूषण, वस्त्र, तन सब नूरमयी होंगे।

मेवा मिठाई सेज सुख, सकल बिध भर पूर।
इस्क सबों में अति बड़ा, दिल हिरदे नूर हजूर।।७३।।

बहिश्तों के अन्दर मेवा, मिठाई और सेज्या के सुख, सब तरह के भरपूर हैं। इन सबमें बहुत इश्क होगा और दिल में धनी का स्वरूप विराजमान होगा।

या भिस्त में इन सुख को, केतो कहूं विस्तार।
दिल चाह्या सब पावहीं, सब बिध सुख करार।।७४।।

इस तरह से बहिश्तों के सुखों का वर्णन कहां तक करें? वहां मन की चाही चीजें तथा आराम मिलेगा।

लागी बरखा नूर की, चौदे तबक चौफेर।
अंतर मांहें बाहेर, कहूं पैठ न सके अंधेर।।७५।।

चौदह लोकों में चारों तरफ तारतम ज्ञान की वर्षा हो रही होगी जिससे अन्दर-बाहर कहीं भी अज्ञानता नहीं होगी।

Nijanand App

चौदे तबक नूरने, फेर किया मंडल।
खेल चाल दिल चाहते, नूर अरवा नूर बल।।७६ ।।

अक्षर ब्रह्म चौदह तबकों (लोकों) का ब्रह्माण्ड नया बनाएगा। वहां पर फिर अपनी इच्छानुसार सुख मिलेंगे। वहां पर सब नूरी तन होंगे और शक्ति भी नूरी होगी।

सुन्य चाही तिन सुन्य दई, भिस्त चाही तिन भिस्त।
नूर चाह्या तिन नूर दिया, यों पाई अपनी किस्त।।७७ ।।

उस नूरी ब्रह्माण्ड में जिसने शून्य चाहा उसे शून्य, जिसने बहिश्त चाही उसे बहिश्त और ईश्वरी सृष्टि को अक्षरधाम, अर्थात् हर एक को अपना-अपना ठिकाना मिला।

मात हुई मात चाहते, बुध बाबा आलम।
मन चाह्या सबको दिया, अर्स रूहों के खसम।।७८ ।।

तारतम वाणी के मालिक श्री प्राणनाथजी के आने से अन्धकार का नाश हो गया। मान चाहने वाले दुनियां के अगुओं ने अपनी हार मानी। अर्श की रूहों के मालिक ने सबको मनचाहे फल दिए।

मोमिन रूहें कदमों लिए, फरिस्ते नूर समाए।
तीसरे सारे भिस्त में, सो बैठे नूर की छांए।।७९ ।।

मोमिनों को अपने चरणों में लिया, ईश्वरी सृष्टि को अक्षर दिया, तीसरी जीव सृष्टि को बहिश्तों में योगमाया में बिठाया।

भिस्त भी बरकत मोमिनों, दई दुनियां को अविनास।
पर सुख बड़े मोमिन के, लिए कदमों अपने पास।।८० ।।

दुनियां के लोगों को मोमिनों की कृपा से बहिश्त के अखण्ड सुख मिले, परन्तु मोमिनों को, जिनको अपने चरणों में लिया है, उनके सुख सबसे अधिक हैं।

पैदास कतरे नूर की, ए जो हुई चल विचल।
फेर समेत समानी नूर में, सो नूर सदा नेहेचल।।८१ ।।

अक्षर के नूर के एक कतरे (बूंद) की शक्ति से जिससे क्षर ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति हुई थी, वह शक्ति फिर अक्षर में समा गई, क्योंकि वह सदा अखण्ड है।

असराफील बुध नूर की, ए जो आई काजी हजूर।
सो नूर में जाए झिल मिली, ऐसी हुई कजा के नूर।।८२ ।।

जागृत बुद्धि असराफील काजी श्री प्राणनाथजी के पास आई। वह भी अपना प्रकाश फैलाकर वापस अपने स्थान चली जाएगी। कजा के नूर से ऐसा फैसला होगा।

उड़ाया कतरा नूर का, सो जाए रह्या मिने नूर।
फेर नजर करी भिस्त पर, हुई रोसन भर पूर।।८३ ।।

अक्षर के नूर का कतरा (बूंद) अजाजील फरिश्ता ब्रह्माण्ड की समाप्ति पर अपने मूल तन में वापस जाएगा। फिर बहिश्त में अखण्ड किए गए ब्रह्माण्ड पर जब अपनी नूरी नजर डालेगा तो सारा ब्रह्माण्ड जगमगा उठेगा।

Nijanand App

कजा हुई सबन की, पर मोमिन बड़े अंकूर।
इन को खेल देखाए के, लिए कदमों अपने हजूर।। ८४ ।।

सबको न्याय देने के बाद मोमिन को खेल दिखाकर अपने चरणों (परमधाम) में ले जाएंगे।

यों कजा करी सबन की, बांट दिए सब ठौर।
ए सुध इन काजी बिना, कोई देवे जो होवे और।। ८५ ।।

इस तरह सबका न्याय करके सबको अपने-अपने ठिकाने भेज दिया। ऐसा सुख श्री प्राणनाथजी के बिना और कौन दे सकता है?

काजी कजा करके, ले उठसी रूह मोमिन।
पेहेले ए कयामत होएसी, पीछे अरवाहें सबन।। ८६ ।।

इस तरह से श्री प्राणनाथजी सबको न्याय देकर रूह मोमिनों के साथ परमधाम में उठेंगे। पहले मोमिन को अखण्ड तनों में उठाया जाएगा। पीछे सब संसार के जीवों को बहिश्तें मिलेंगी।

माएने इन कुरान के, या जाहेर या बातन।
दई सबों को हैयाती, खोल के इलम रोसन।। ८७ ।।

कुरान के जाहिरी या बातूनी अर्थों का रहस्य श्री प्राणनाथजी खोलकर ज्ञान का उजाला करेंगे और उसके बाद सबको अखण्ड करेंगे।

कुदरत की सारी कही, बुरका जो गफलत।
दोजख भिस्त फरिस्ते, आखिर कही कयामत।। ८८ ।।

पहले मूल प्रकृति की, फिर चौदह लोकों के ऊपर निराकार के पड़े आवरण की और फिर दोजख और बहिश्त की हकीकत बताई और आखिर में ब्रह्माण्ड कैसे कायम होगा, बताया।

ए सब्द तो लों कहे, जो लों आए जुबांए।
सब्द न अब आगे चले, आवे नहीं कजाए।। ८९ ।।

महामतिजी क़हती हैं कि जब तक मेरी जबान से धनी कहलवाते रहे, तब तक मैंने इन शब्दों को कहा। अब आगे बताने की शक्ति इस जबान में नहीं है, इसलिए न्याय के दिन की बाबत और क्या कहें?

आखिर हुई इन जिमी, इन जिमी आया कागद।
जिन कोई हिसबो खेल में, याको ना लगे सब्द।। ९० ।।

हिन्दुस्तान की इस धरती के ऊपर तारतम वाणी आई। अब तुम इस ब्रह्माण्ड के शब्दों में मत उलझो (भूलो)। उसका वर्णन यहां के शब्दों से नहीं हो सकता।

इन जिमी में महंमद, होए आया कासद।
जिन कोई हिसबो खेल में, याको ना लगे सब्द।। ९१ ।।

इसी जमीन पर रसूल साहब कासिद (डाकिया) बनकर आए हैं, इसलिए तुम इस ब्रह्माण्ड के शब्दों में मत उलझो (भूलो)। यहां के शब्दों से मुहम्मद साहब की पहचान नहीं हो सकती।

ल्याए ल्याए रूहों पिलावहीं, इस्क प्याले मद।
जिन कोई हिसबो खेल में, याको ना लगे सब्द।। ९२ ।।

श्री प्राणनाथजी महाराज रूहों को इश्क के प्याले ला-लाकर यहां पिला रहे हैं, इसलिए तुम इस ब्रह्माण्ड के शब्दों में मत उलझो (भूलो)। यहां के शब्दों से श्री प्राणनाथजी की महिमा नहीं कही जा सकती।

Nijanand App

करी कजा चौदे तबकों, उड़ाए दई सब हद।
जिन कोई हिसबो खेल में, याको ना लगे सब्द॥ ९३ ॥

यहां पर पारब्रह्म श्री प्राणनाथजी महाराज न्यायाधीश (काजी) बनकर आए और चौदह लोकों को जन्म और मरण से छुड़ाकर अखण्ड कर दिया, इसलिए तुम इस ब्रह्माण्ड के शब्दों में मत उलझो (भूलो)। यहां के शब्दों से प्राणनाथजी की महिमा नहीं कही जा सकती।

नूर अकल असराफील, ले पोहोंच्या पार बेहद।
जिन कोई हिसबो खेल में, याको ना लगे सब्द॥ ९४ ॥

अक्षर ब्रह्म की जागृत बुद्धि असराफील फरिश्ते ने यहां आकर सारे ब्रह्माण्ड को बेहद योगमाया में जागृत बुद्धि से अखण्ड कर दिया, इसलिए तुम इस ब्रह्माण्ड के शब्दों में मत उलझो (भूलो) यहां के शब्दों से असराफील, अक्षर की जागृत बुद्धि की महिमा नहीं हो सकती।

नूर इन आखिर का, और रोसन काजी सुभान।
क्योंकर इन जुबां कहूं, रसूल नूर फुरमान॥ ९५ ॥

आखिरत के समय में कायमी का, काजी के कजा करने का तथा फरमान लाने वाले रसूल के नूर का यहां की जबान से बयान कैसे करूं?

काजी नूर सोहागनियों, इस्क प्याला ले।
क्यों बरनों मैं इन जुबां, ए जो भर भर सबको दे॥ ९६ ॥

काजी श्री प्राणनाथजी महाराज अपनी अंगनाओं को इश्क के प्याले भर-भरकर पिला रहे हैं। उनका वर्णन मैं यहां की जबान से कैसे करूं?

नूर इस्क इन मद का, ए जो चढ़सी सबन।
ताए लेसी असलू नूर में, क्यों करे जुबां बरनन॥ ९७ ॥

इस नूर भरे इश्क की मस्ती का नशा सबको चढ़ेगा और इनको अखण्ड में ले लेंगे। इसका वर्णन इस जबान से कैसे करूं?

अर्स रूहें मोमिन, ए सब रूहें सोहागिन।
क्यों बरनू मैं इस्क इनका, ए जो रूह अल्ला के तन॥ ९८ ॥

अर्स की रूहें (मोमिन) सब सुहागिनी हैं, यह पारब्रह्म की अंगना हैं और श्यामाजी के तन हैं, तो उनके इश्क का वर्णन मैं इस जबान से कैसे करूं?

ए झूठी जिमी जो ख्वाब की, खाकी बुत सब रद।
ताए भी मद ऐसा चढ़्या, जो लगे न काहू को सब्द॥ ९९ ॥

इस सपने के ब्रह्माण्ड के झूठे जीवों को भी ऐसी मस्ती चढ़ेगी, जिसका बखान करने के लिए शब्द नहीं हैं।

लिखे हरफ सारे कहे, ए जो लिखे हरफ नांहें।
अब सो ए करूं मैं जाहेर, जो रसूल के दिल मांहें॥ १०० ॥

श्री महामतिजी कहती हैं कि कुरान में जो शब्द लिखे हैं, उन सबकी हकीकत बता दी। मारफत की जो बातें कुरान में नहीं चढ़ीं (लिखीं), वह अब मैं जाहिर करती हूं। इन हरफों को बयान करने से रसूल साहब को रोक दिया था।

Nijanand App

ए जो रसूलें कानों सुने, पर लिखे नहीं फुरमान।
सो गुझ मोमिनों को देऊंगी, अर्स अजीम के निसान।। १०१ ।।

उन मारफत के वचनों को रसूल साहब ने कानों से सुना था (मेयराजनामा में लिखा है), किन्तु खुदा के हुकम से कुरान में नहीं लिखे। अब उन छिपी बातों को मैं मोमिनों को बताती हूं और अर्श अजीम के निशानों की पहचान कराती हूं।

क्यों वतन क्यों खसम, कौन ठौर क्यों नूर।
ए सेहेरग से देखे नजीक, जो मोमिन सदा हजूर।। १०२ ।।

घर कितनी दूर है, धनी कितनी दूर हैं, अक्षर कितनी दूर है और उसका कौन ठिकाना है—यह सभी मोमिनों के लिए शहेरग से नजदीक हैं।

दोऊ अर्स बका जाहेर किए, जबरूत नूर जलाल।
हादी रूहें लाहूत में, हक सूरत नूर जमाल।। १०३ ।।

दोनों अर्श जो अखण्ड हैं, अक्षर ब्रह्म का धाम (जबरूत) और लाहूत जहां श्यामा महारानी, रूहें और हक साक्षात् विराजमान हैं, जाहिर कर दिए।

अब कहूं हुकम की, जिनसे सब उतपत।
खेल फरिस्ते हुकमें हुए, हुकमें हुई कयामत।। १०४ ।।

अब मैं उस हुकम का वर्णन करती हूं जिससे सारी सृष्टि बनी, फरिश्ते बने और खेल बना। हुकम से ही उनकी कायमी हुई।

हुकमें झूठे सांच कर, ताए सुख दिए नेहेचल।
अब हुकम कजामें न आवहीं, पर तो भी कहूं नेक बल।। १०५ ।।

हुकम ने ही झूठे संसार के जीवों को अखण्ड करके सच्चे सुख दिए। अब यह हुकम इतना महान् है कि न्याय में नहीं आएगा, परन्तु फिर भी इसकी शक्ति का थोड़ा वर्णन करती हूं।

॥ प्रकरण ॥ ३७ ॥ चौपाई ॥ १४०० ॥

सनन्ध—हुकम की

हुकमें परदा उड़ाइया, कर देऊं सब पेहेचान।
तुमसों गोसे बैठ के, देऊंगी सब निसान।। १ ।।

श्री राजजी महाराज के हुकम ने अज्ञानता का परदा हटा दिया है। अब मैं उसकी पूरी पहचान तुम्हें कराती हूं। मैं एकान्त में बैठकर तुमको घर के सारे निशान बताती हूं।

हुकमें बात वतन की, जो है गुझ खसम।
गोसे तुमको कहूंगी, जो हुआ मुझे हुकम।। २ ।।

हुकम ने घर की और खसम की गुझ (गुप्त) बातें मुझे बता दी हैं। मुझे हुकम हुआ है कि तुम्हें एकान्त में बैठकर बताऊं।

निसान बका हक अर्स के, सो सब देऊंगी तुम।
पर पेहेले नेक ए कहूं, जो तुम वास्ते हुआ हुकम।। ३ ।।

अखण्ड घर, धनी की पहचान करने की सब हकीकत तुमको बताऊंगी, परन्तु थोड़ा-सा हुकम का बयान करती हूं जो तुम्हारे वास्ते धनी ने किया था।

Nijanand App

कहूं हुकम हक के, जो बैठे कदमों मोमिन।
सो हमेसा अर्स में, ताए मेहेर बड़ी बातन।।४।।

उन मोमिनों को जो श्री राजजी महाराज के चरणों तले हमेशा परमधाम में बैठे हैं, हक के हुकम से कहती हूं कि इन मोमिनों के ऊपर बातूनी मेहर बड़ी है।

खसमें हमारे दिल पर, ऐसे किया हुकम।
तो यों दिल में उपज्या, मांगें खेल खसम।।५।।

श्री राजजी महाराज ने हमारे लिए दिल पर ऐसा हुकम किया कि हमने श्री राजजी महाराज से खेल मांग लिया। यह इच्छा श्री राजजी महाराज के हुकम से ही हमारे दिल में पैदा हुई।

तब हम मोमिन मिल के, खेल मांग्या हादी हक पे।
तब हुकमें पेहेले पैदा किया, हमारी नजर हुई खेल में।।६।।

तब हम मोमिनों ने मिलकर श्री राजजी महाराज से खेल मांग लिया। फिर हुकम से संसार पैदा हुआ और हमारी सुरताएं (आत्माएं) खेल में आईं।

तब सरूप हुकम के, खेल किया मिने पल।
हाथ फुरमान ले आइया, रसूल हमारा चल।।७।।

तब हुकम के सरूप ने हमारे वास्ते एक पल के अन्दर ब्रह्माण्ड बना दिया तथा खुदा का फुरमान (कुरान) हाथ में लेकर रसूल बनकर हमारे वास्ते आए।

हम भी देखें खेल को, हुकमें मोमिन मिल।
ढूंढ़े अपने खसम को, पेड़ हुकमें फिराई कल।।८।।

हम सब मोमिन मिलकर ही हुकम से खेल देख रहे हैं और अपने खसम को ढूंढ़ रहे हैं, क्योंकि हुकम ने पहले से ही हमारी बुद्धि को घुमा दिया है।

ए खेल सब हुकमें हुआ, सब खेलें हुकम मांहें।
हुकमें सब होसी फना, हुकम बिना कछू नांहें।।९।।

यह सारा संसार हुकम से हुआ है और हुकम से ही जीव इसमें खेल रहे हैं। हुकम से ही ब्रह्माण्ड का प्रलय होगा, अर्थात् हुकम के बिना और कुछ नहीं है।

एक हुकमें बुजरक, दूजे न खाक समान।
बेसुध कर सब हुकमें, खेलावत है जहान।।१०।।

संसार में एक हुकम से सयाने बने बैठे हैं, दूसरे खाक के समान नाचीज बने बैठे हैं। इस तरह से सारे संसार को बेसुध करके यह हुकम खेल खिला रहा है।

हुकमें जड़ चेतन करे, करे चेतन को जड़।
हुकमें सेती हारिए, हुकमें मारे पकड़।।११।।

हुकम से जड़ चेतन हो जाता है और हुकम से ही चेतन जड़ हो जाता है (मर जाता है)। हुकम से हार होती है और हुकम से ही मौत होती है।

एक चलाए पाउसों, एक उड़ाए पर।
पेटें हुकम चलावहीं, एक खड़े रखे जड़ कर।।१२।।

एक पैर से चलते हैं, एक परों से उड़ते हैं, एक पेट से चलते हैं और एक जड़ों के आधार से पेड़ बने खड़े हैं।

Nijanand App

कई दीन फिरके मजहब, खेल फरिस्ते दम।
ए खेल किया हुकमें देखने, सब पर एक हुकम।। १३ ।।

यहां कई धर्म हैं, फिरके हैं। हुकम से ही खेल बनता है, फरिश्ते बनते हैं और आदमी बनते हैं। यह सब हुकम का खेल देखने के वास्ते बना है। सबके ऊपर खुदा का एक ही हुकम चलता है।

भेख भाखा जातें जुदियां, न तो सोई दम सोई देह।
खैंचा-खैंच कर हुकमें, खेल बनाया एह।। १४ ।।

हुकम से ही भेष, भाषा, जातियां अलग-अलग हैं, नहीं तो सब एक ही होना चाहिए। खैंचा-खैंच (विरोध) भी हुकम से करते हैं, क्योंकि यही खेल है जो हुकम ने बनाया है।

एकों को हुकम हुआ, तिन लई राह मुस्लिम।
पीछे जुदी जुदी जिनसों, ए सब खेलें खेल हुकम।। १५ ।।

हुकम से कुछ लोगों ने सच्चा रास्ता यकीन से लिया। पीछे अलग-अलग फिरके बना दिए। इस तरह से सारा खेल हुकम से है।

हुकमें करहीं बंदगी, हुकमें इस्क ले।
हुकमें चोरी कर ल्यावहीं, हुकमें जाए सिर दे।। १६ ।।

हुकम से ही बन्दगी करते हैं और हुकम से ही इश्क मिलता है। हुकम से ही चोर चोरी कर लाता है और हुकम से लोग कुर्बानी देते हैं।

चले रहे सब हुकमें, बैठे सोवे हुकम।
बिना हुकम रूह सबके, मुख न निकसे दम।। १७ ।।

चलना, रहना हुकम से होता है। हुकम से ही सोना और बैठना होता है। बिना हुकम के किसी के मुख से एक शब्द भी नहीं निकलता।

करम काल सब हुकमें, बांधे खोले हुकम।
भिस्त दोजख हुकमें, हुकमें देवे कदम।। १८ ।।

कर्म भी हुकम से होता है। काल भी हुकम से आता है। माया के बन्धन और छुटकारा भी हुकम से होते हैं। बहिश्त, दोजख सब हुकम से होता है। हुकम से ही सहारा मिलकर कदम आगे बढ़ते हैं।

दाना दिवाना हुकमें, हुकमें दोस निरदोस।
दूर नजीक करे हुकमें, हुकमें अपना जोस।। १९ ।।

दाना, दीवाना, दोष, निर्दोष, दूर, नजदीक, यह सब हुकम अपने जोश से करता है।

हुकमें जोग जो लेवहीं, हुकमें देवे भोग।
हुकमें रोग जो आवहीं, हुकमें देवे सोग।। २० ।।

योग, भोग, रोग और दुःख सब हुकम से होते हैं।

लेवे देवे सब हुकमें, नेकी बदी हुकम।
मरे मारे सब हुकमें, या चीजें या दम।। २१ ।।

लेना, देना, नेकी, बदी, मरना, मारना, वस्तुओं का मिलना या जीवन यह सब हुकम से होते हैं।

Nijanand App

दुस्मन हुकमें सज्जन, सज्जन हुकमें वैर।
खूंनी मेहेर सीधा उलटा, हुकमें मीठा जेहेर।। २२ ।।

हुकम से दुश्मन सज्जन और सज्जन दुश्मन बन जाते हैं। हुकम से खूनी सीधा हो जाता है और हुकम से जहर मीठा हो जाता है।

जिमी हद न छोड़हीं, ना हद छोड़े जल।
रुत रंग सब हुकमें, होवे चल विचल।। २३ ।।

यह जमीन और सागर अपनी हद नहीं छोड़ते। ऋतु के रंग आते-जाते हैं। यह सब हुकम से होता है।

वाओ बादल बीज गाजहीं, जिमी जल न समाए।
पल में हुकम यों करे, पल में देवे उड़ाए।। २४ ।।

हवा, बादल, बिजली का गरजना, घोर बारिश से पृथ्वी पर जल न समाना यह सब हुकम एक पल में पैदा कर उड़ा देता है।

जल को थल उलटावहीं, थल को उलटावे जल।
कायर सूरे खाली भरे, सब में हुकम बल।। २५ ।।

जल को थल में और थल को जल में बदल देता है। कायर बहादुर बन जाते हैं। यह सब हुकम की ताकत से होता है।

पात ना रेहेवे बन में, हुकमें फल फूल बास।
हुकमें उजाला अंधेर, हुकमें अंधेर उजास।। २६ ।।

वन में पतझड़ तथा फल-फूलों में सुगन्ध आना, उजाला और अंधेरा—यह सब हुकम से होता है।

ताता सीरा फिरे हुकमें, ससि सूर नखत्र।
इन जुबां बल हुकम के, केते कहूं विचित्र।। २७ ।।

यह सूर्य, चन्द्रमा तथा नक्षत्र सब हुकम से घूमते हैं। हुकम की ताकत का इस जबान से वर्णन नहीं होता। कहां तक वर्णन करूं? सारी विचित्र परिस्थितियां हुकम से बनती हैं।

सब पर हुकम हक का, कहे पुकार रसूल।
जल थल चौदे तबकों, कोई जरा ना हुकमें भूल।। २८ ।।

रसूल साहब पुकार कर कुरान में कह रहे हैं कि सभी पर हक का हुकम चलता है। जल-थल में, चौदह तबकों में भूल से भी कोई जरा सी भी चीज हुकम से बाहर नहीं है।

कई कोट इंड ऐसे पल में, करके पैदा उड़ाए।
बल जरा इन हुकम का, इन जुबां कह्यो न जाए।। २९ ।।

करोड़ों ब्रह्माण्ड एक पल में हुकम बनाकर मिटा देता है, इसलिए इस जबान से हुकम की ताकत का वर्णन नहीं होता है।

सरूप रसूल हुकम, आगे खड़ा खसम।
हुकमें देखाया रूहन को, बैठे देखें तले कदम।। ३० ।।

हुकम का ही स्वरूप धारण कर श्री राजजी के सामने रसूल साहब खड़े हैं और हुकम ही श्री राजजी के चरणों तले बिठाकर रूहों को खेल दिखला रहा है।

Nijanand App

इन हुकम की इसारतें, कई फरिस्ते उपजत।
कई समावें सुन्य में, कई डारें ले गफलत।। ३१ ।।

हुकम के इशारे मात्र से सब देवी-देवता पैदा हो जाते हैं। कई निराकार में समा जाते हैं। कई संशय में ही पड़े रह जाते हैं।

जिन कहो अजाजील को, इनने फेरया हुकम।
इन हुकम की इसारतें, हादी वास्ते करी खसम।। ३२ ।।

ऐसा न कहो कि अजाजील फरिश्ते ने हुकम को नहीं माना। हुकम के इशारे मात्र से उसने ऐसा किया ताकि रूहें खेल देख सकें।

अजाजील भूल्या नहीं, पर हुकमें भुलाया ताए।
ओ तो सिर ले हुकम, खड़ा है एक पाए।। ३३ ।।

अजाजील भूला नहीं था, पर हुकम ने उसको भुलाया वरना वह हुकम को सिर पर लिए एक पैर पर खड़ा है, अर्थात् खुदा का हुकम वह टाल ही नहीं सकता था।

तो पीछा फेरे हुकम, जो कोई दूसरा होए।
हुकम सबों समझावहीं, हुकमें न समझे कोए।। ३४ ।।

अजाजील फरिस्ता तो हुकम का बंधा खड़ा है, हुकम अदूली तो कोई गैर ही कर सकता है अजाजील नहीं, पर राजजी के हुकम से ही सबको सुध आती है और हुकम से ही सब भूलते हैं।

नूरी फरिस्ता हुकमें, ले डास्या उलटाए।
ए मोमिनों खातिर हुकम, कई विध खेल बनाए।। ३५ ।।

हुकम ने इस नूरी फरिश्ते अजाजील को उलटा दिया। मोमिनों के वास्ते ही हुकम ने कई तरह के खेल बनाए।

पांउ न उठे हुकम बिना, मुख न निकसे दम।
दिल चितवन भी न करे, फरिस्ता बिना हुकम।। ३६ ।।

हुकम के बिना पैर नहीं उठता। हुकम के बिना मुंह से आवाज नहीं निकलती। दिल में चितवन भी हुकम के बिना नहीं होता। फरिस्ते भी हुकम के आधीन हैं।

तले खड़ा हुकम के, नाम जो नूरी जिन।
माएने जाहेर न किए, हुकमें एते दिन।। ३७ ।।

अजाजील हुकम से ही खड़ा है। यह नूरी फरिश्ता कहलाता है। उसने हुकम के कारण ही इतने दिनों तक ज्ञान नहीं फैलने दिया।

बुरका डाल अजाजील पर, हुकमें किया रद।
सिजदा कराया आदम पर, जित मेंहेदी मोमिन महंमद।। ३८ ।।

अजाजील के ऊपर हुकम ने परदा डाला। उसने आदम पर सिजदा करने की हुकम अदूली की। उस आदम पर जिसके तन में मुहम्मद मेंहदी और मोमिन विराजमान हैं, हुकम ने ही अजाजील से सिजदा करवाया।

Nijanand App

बेसुध हुकमें करके, खेल कराया छल।
ताए जो सिजदा करावहीं, पर हुकम बस अकल।। ३९ ।।

अजाजील को हुकम से ही बेसुध करके माया का खेल बनवाया। संसार के जीवों की बुद्धि भी हुकम के हाथ है जो इन्हें बेसुध करके अजाजील (विष्णु) पर सिजदे करा रही है।

फरिस्ता कतरे नूर से, लानत दीनी ताए।
सो मोमिन जाहेर करके, हुकमें सिजदा कराए।। ४० ।।

अजाजील फरिश्ता अक्षर के नूर के कतरे (बूंद) का रूप है। फिर भी उसे लानत लगी। बाद में उसे मोमिनों की पहचान कराकर हुकम ने ही अजाजील को मोमिनों पर सिजदा कराया।

जिन आदम में महंमद, हुकमें आए मोमिन।
अजाजील अब हुकमें, पकड़ कदम हुआ रोसन।। ४१ ।।

जिस आदमी की शक्ल में मुहम्मद आए उस जैसी शक्ल में मोमिन आए, इसलिए अब हुकम से ही अजाजील उन मोमिनों के कदम पकड़कर सुरूखरु (गुनाह रहित) हो गया।

हुकमें आवे लदुन्नी, हुकमें आवे किताब।
सोई खोले हक हुकमें, जिन सिर दिया खिताब।। ४२ ।।

हुकम से ही कुरान आया है। हुकम से ही कलमा आया है। हुकम से ही इसको खोलने वाले श्री प्राणनाथजी आए हैं, जिनके सिर पर आखिरी इमाम मेंहदी का खिताब (उपाधि) है।

नफा नुकसान सब हुकमें, हुकमें भिस्त दोजख।
झूठा सांच करे हुकमें, हुकम करे सबों हक।। ४३ ।।

नफा, नुकसान, बहिश्त, दोजख, झूठ में सच्चा करना, हुकम से ही होता है।

हुकमें मोमिनों वास्ते, कई चीजें करी पैदाए।
अर्स अरवाहें पेहेचान; कई विध हुकम कराए।। ४४ ।।

हुकम ने मोमिनों के वास्ते कई चीजें बनाई हैं, जिनसे अर्श अरवाहों (ब्रह्मसृष्टियों) की पहचान होती है।

हुकमें मुसाफ इसारतें, करें मोमिनों पेहेचान।
खोले बातून मोमिन हुकमें, याद आवे अर्स निसान।। ४५ ।।

हुकम से ही कुरान में गुझ (गुह्य) बातें लिखी हैं। हुकम से ही मोमिन उन्हें पहचानेंगे और हुकम से ही मोमिन उसके बातूनी भेद खोलेंगे। हुकम से ही परमधाम के निशान याद आएंगे।

ए खेल किया हुकमें, हुकमें आए रसूल।
हुकमें मोमिन आए के, गए खेल में भूल।। ४६ ।।

यह खेल हुकम ने बनाया। हुकम से ही रसूल साहब आए हैं। हुकम से ही मोमिन खेल में आकर भूल गए हैं।

आप हुकम आया इत, चलाया हुकम।
हुकमें छलतें छोड़ाए के, जाहेर किए खोल इलम।। ४७ ।।

आप हुकम के स्वरूप श्री प्राणनाथजी यहां आए और अपना हुकम चलाया जिससे कुरान (इलम) के भेद खोलकर मोमिनों को छल से छुड़ाया।

Nijanand App

रूहों को खेल देखाइया, विध विध हुकम कर।
आप बांध्या हुकम का, होए रसूल आया आखिर।।४८ ।।

पारब्रह्म ने तरह-तरह से हुकम देकर रूहों को खेल दिखाया। आप भी हुकम के बन्धन में बंधकर रसूल होकर आए।

बांधे आप हुकम के, काजी हुए इत आए।
कौल किया मोमिनोंसों, सो पाल्या खेल देखाए।।४९ ।।

आप ही हुकम के बन्धन में बंधकर श्री प्राणनाथजी काजी बनकर आए और परमधाम में जो मोमिनों से वायदे किए थे उसी वायदे को निभाने के लिए खेल दिखाया।

हुकमें सब जुदे जुदे, खेल किए विवेक।
मोमिनों को देखाए के, आखिर किया दीन एक।।५० ।।

हुकम से ही तरह-तरह के खेल किए और हुकम से ही मोमिनों को सब धर्मों की पहचान कराकर आखिर में एक पारब्रह्म के पूजक निजानन्द धर्म बनाया।

अबलों बेसुध हुकमें, खेली सकल जहान।
तिनों सुध हुई हुकमें, यों खुली इसारते फुरमान।।५१ ।।

आज दिन तक सारी दुनियां हुकम से ही बेखबर होकर चलती रही और अब हुकम से कुरान की इशारतें खुलीं और सबको ज्ञान मिला।

अजाजील दम सबन में, लगी लानत दम तिन।
लोक जाने लगी अजाजील को, वह तो हुकमें कही सबन।।५२ ।।

अजाजील (भगवान विष्णु) सबके अन्दर हैं, इसलिए सारे संसार को लानत लगी है। लोग समझते हैं कि खुदा ने लानत अजाजील को दी थी। वह तो हुकम से सबको लानत लगी बताया है।

पीछे हुकमें जाहेर करी, अबलीस सब दिलों पातसाह।
हुआ सबों का दुस्मन, ना करने देत सिजदाए।।५३ ।।

हुकम ने बाद में यह जाहिर किया कि सबके दिलों पर बादशाही अबलीस (शैतान-नारद) की है जो सबका दुश्मन है और श्री प्राणनाथजी के ऊपर सिजदा नहीं करने देता।

एही फौज दुनी अजाजील की, याही अकलें लगी लानत।
पेहेचान हुई सब हुकमें, पीछे छूटी बखत कयामत।।५४ ।।

यह सारे संसार के लोग अजाजील (भगवान विष्णु) की ही फौज हैं, इसीलिए लोगों की बुद्धि पर लानत लगी है। यह पहचान भी हुकम से हुई। यह लानत कायमी के वक्त ही हटेगी।

असल आदम रसूल, कह्या। सिजदा इन पर।
चीन्ह्या न नबी को लानती, तो दुनी रही सिजदे बिगर।।५५ ।।

असल आदम तो रसूल साहब हैं जिनके उपर सिजदा करने का हुकम हुआ था। लानती अजाजील ने नबी को नहीं पहचाना और इसलिए दुनियां भी सिजदा करने से रह गई।

हुकमें चिन्हाया रसूल, तब आया सबों आकीन।
किया सबों ने सिजदा, जब हुकमें हुआ एक दीन।।५६ ।।

अब हुकम से ही नूरी रसूल श्री प्राणनाथजी की पहचान हुई और सबों को यकीन आया। सभी ने श्री प्राणनाथजी के चरणों में सिजदा बजाया। तब हुकम से एक दीन (निजानन्द धर्म) होगा।

Nijanand App

लानत उतरी अजाजील से, सब कायम हुए तले नूर।
हुई हैयाती सबों हुकमें, उग्या रोसन अर्स बका सूर।। ५७ ।।

तब आखिरत के समय में अजाजील के सिर से लानत उतर जाएगी और सब अक्षर की नजर के तले अखण्ड हो जाएंगे। अखण्ड परमधाम की तारतमवाणी का सूर्य उदय होने पर हुकम से ही सबको बहिश्तें मिलीं।

हुकमें हम आए इत, ले हुकमें हक इलम।
मैं खासा मोहोल खसम का, कर हुकम केहेलाया तुम।। ५८ ।।

हुकम से हम यहां हक का इल्म (तारतम वाणी) लेकर आए। अब महामति जी कहती हैं कि श्री राजजी महाराज मेरे अन्दर विराजमान हैं (मैं ही हकी सूरत हूं)। अपने हुकम से ही मुझसे तुमको कहलवा रहे हैं।

जाहेर किया हुकमें, हुकमें किया हक।
हुकमें लीन्ही अन्दर, जुबां रही इत थक।। ५९ ।।

मैं हकी सूरत हूं यह हुकम ने जाहिर किया। हुकम से ही मैं पूर्णब्रह्म बनी। अब श्री राजजी महाराज ने मुझे अपनै अन्दर ले लिया (मैं एक हो गई) तो मेरी जबान आगे कुछ नहीं कह सकती।

हुकम न आवे सब्द में, तो भी कह्या नेक सोए।
अब केहेनी जुबां बदले, सो मेंहेदी बिना न होए।। ६० ।।

श्री राजजी महाराज के हुकम की महिमा शब्दों में नहीं आती। फिर भी थोड़ी-सी बताई है। अब आगे इसी बात को जबान बदलकर बताना है। मगर यह काम इमाम मेंहदी के बिना और कोई कर नहीं सकता।

अब लेने अर्स अजीम में, बोलसी जुबां इमाम।
सो तो अपने आप को, केहेने हैं कलाम।। ६१ ।।

अब मोमिनों को अर्श अजीम में लेने के लिए इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी कहेंगे और वह स्वयं ही अपने मुख से अपनी पहचान कराएंगे।

अब बातें अंदर की, पूछसी सब मोमिन।
जाहेर देऊं निसानियां, ज्यों देखो अर्स वतन।। ६२ ।।

अब मेरे परमधाम के अन्दर की सब बातें मोमिन मिलकर पूछेंगे और मैं भी उन्हें जाहिर रूप में ऐसा ज्ञान दूंगी जिससे उन्हें अपने घर की पहचान हो जाए।

समझो एक इसारतें, ऐसा कर दें हम।
तब फेर इत का पूछना, रहे उमेदां तुम।। ६३ ।।

मैं महामति, अब तारतम वाणी के इशारे से सब कुछ बता दूंगी। फिर तुम्हें पूछने की कोई उम्मीद (चाहना) बाकी नहीं रह जाएगी।

जब समझे तब देखिया, याद जो आवे दिल।
बीच खिलवत बातें हकपे, जो मांग्या तुम मिल।। ६४ ।।

जब समझ जाओगे तब देख लेना सब बातें (घर की) तुम्हारे दिल में याद आ जाएंगी। जो श्री राजजी महाराज से मिलकर खिलवत में बैठकर सबने मांगा था।

Nijanand App

याद आए आंखां खुलें, तब तुमें रहे उमेद।
ज्यों मकसूद सब होवहीं, अब कहूं तिन भेद।।६५ ।।

यह सब बातें याद आने पर हम सावचेत हो जाएंगे। तब घर चलने की चाहना होगी। वह सब मिलेगा कैसे? उसकी भी हकीकत बताती हूं।

ए नेक रखी रात खैंच के, सो भी वास्ते तुम।
न तो लेते अंदर, केती बेर है हम।।६६ ।।

यह रात थोड़ी लम्बी कर दी है, क्योंकि तुम्हारी खेल देखने की इच्छा पूरी नहीं हुई। नहीं तो खेल खत्म करके तुमको परमधाम ले चलने में कितनी देर लगती है।

।। प्रकरण ।। ३८ ।। चौपाई ।। १४६६ ।।

सनन्ध–नूर नूर-तजल्ला की

कह्या जाहेर रसूलें, मैं हरफ सुने हैं कान।
सो आए केहेसी इमाम, मैं लिखे नहीं फुरमान।।१ ।।

रसूल साहब कहते हैं कि मैंने खुदा से मारफत के वचन सुने हैं, लेकिन कुरान में नहीं लिखे हैं। इमाम मेंहदी आकर उनको जाहिर करेंगे।

जो हरफ जुबां चढ़े नहीं, सो क्यों चढ़े कुरान।
और जुबां ले आवसी, इमाम एही पेहेचान।।२ ।।

जो बातें मारफत की मुझे याद ही नहीं रहीं वह कुरान में कैसे कहता। उन्हीं बातों को दूसरी भाषा हिन्दुस्तानी में इमाम मेंहदी बोलेंगे। यही उनकी पहचान होगी।

बोलें न मेंहेदी एक जुबां, जुबां बोलें कई लाख।
आगे बिन जुबां बोलसी, बिन अंगों बिन भाख।।३ ।।

इमाम मेंहदी एक भाषा नहीं बोलेंगे। वह कई भाषाओं में बोलेंगे। मोमिनों के तनों में बैठकर लाखों भाषाओं में बोलेंगे। यह तन मोमिनों के होंगे, इसलिए लिखा है कि वह बिना अंग के बोलेंगे।

खेल में मेंहेदी तोतला, जुबां कजा ए ठौर।
आगे तो नूर-तजल्ला, तहां जुबां बोल है और।।४ ।।

खेल में मेंहदी की भाषा सरल और सुगम होगी। साहित्यिक और कानूनी भाषा जिसके अर्थ न हों, नहीं होगी। आगे तो नूरतजल्ला है, परमधाम है जहां बोली और भाषा अलग है।

खातिर मोमिन रसूलें, कई निसान लिखे प्यार कर।
सो मैं ठौर ठौर हक बका, कर देऊं सब खबर।।५ ।।

मोमिनों के वास्ते रसूल साहब ने प्यार करके कई तरह के निशान लिखे हैं जिससे हमारी और अखण्ड घर की पहचान होती है। उनके मैं ठिकाने बताती हूं।

इमामें मोहे सब दियो, राख्यो न कछुए बीच।
गुन अंग सोभा देय के, आप हुए नेहेचित।।६ ।।

श्री महामतिजी कहती हैं कि मुझे इमाम साहब ने सब कुछ दे दिया है। कुछ भी बाकी नहीं रखा। गुण, अंग और शोभा देकर आप बेफिक्र हो गए हैं।

Nijanand App

अब केहेनी आई असल की, नैन जुबां असल।
बातें करूं असलू, असल की अकल।। ७ ।।

अब मुझे घर की असल बातें बतानी हैं। वह सब घर की आंखों से, जबान से और परमधाम की बुद्धि से बताऊंगी।

अब कहूं अर्स रूहन को, अर्स हक खिलवत बात।
गोसे अपनी रूहोंसों, बैठ करूं अपन्यात।। ८ ।।

अब अर्श के मोमिन को अर्श की खिलवत की बातें एकान्त में एक किनारे बैठकर अपना समझकर बताऊंगी।

हक बातें तो इत सुनसी, पर हम जो करत गुजरान।
पेहेले कहूं आगे नूर-तजल्ला, जो ले खड़ा हक फुरमान।। ९ ।।

हक की बातें तो हम यहां सुनेंगे, पर हमारी रहनी क्या है उस पर विचार करो। पहले श्री राजजी महाराज के सामने रसूल साहब जो कुरान लेकर खड़े हैं, उनकी बातें कहती हूं।

आगे नूर फुरमान के, खड़ा हक नूर का नूर।
जिन से पैदा मलायक, चुआ कतरा जिनों अंकूर।। १० ।।

आगे श्री राजजी महाराज के हुकम से अक्षर ब्रह्म का नूरी फरिश्ता असराफील, जिसके कतरे से सारे फरिश्ते और सृष्टि पैदा हुई है, खड़ा है।

अब नेक कहूं इन नूर की, इन नूर से पैदा नूर।
पेहेले कहूं तिन नूर की, जित रूहें खेली मांहें जहूर।। ११ ।।

अब थोड़ी-सी अक्षर ब्रह्म की कहती हूं। जिनके नूर से असराफील तथा असराफील के नूर के कतरे (बूंद) से सारा खेल बना है, जिसमें हमने जाहिर होकर बृज लीला खेली।

अब कहूं रास जहूर की, इन खेल से न्यारा इंड।
सो नूर नजर ऐसा हुआ, नूर सारा ब्रह्मांड।। १२ ।।

अब रास की लीला जाहिर करती हूं जो इस ब्रह्माण्ड से न्यारी है। अक्षर की नजर से ही योगमाया के ब्रह्माण्ड की लीला (रास) अखण्ड हो गई।

इत खेलत स्याम गोपियां, ए जो किया अर्स रूहों विलास।
है ना कोई दूसरा, जो खेले मेहेबूब बिना रास।। १३ ।।

यहां श्री कृष्ण और गोपियां हैं। वह वही लीला कर रही हैं जो हम रूहों ने रास लीला खेली थी। धनी के बिना और दूसरा कोई नहीं हो सकता जो हमारे साथ रास खेलता।

ए हमारी अर्स न्यामतें, याके हमपे सहूर।
कह्या कतरा नूर का, चुआ है अंकूर।। १४ ।।

यह दोनों लीलाएं (बृज और रास) हमारे घर की न्यामतें हैं और इनको हम ही समझते हैं। जिनका वर्णन श्री राजजी महाराज की जागृत बुद्धि के कतरे (तारतम वाणी) से हुआ और सबको पता लगा।

इत सब्द न पोहोंचे दुनी का, नेक इन की देऊं खबर।
कायम हुआ साइत में, जो आया नूर नजर।। १५ ।।

योगमाया के ब्रह्माण्ड में इस दुनियां के शब्द नहीं पहुंचते। यह अक्षर की नजर में एक पल में अखण्ड हो गया। उसकी थोड़ी-सी पहचान देती हूं।

Nijanand App

ए जो बात बका अर्स नूर की, सो केहेनी या जिमी मांहें।
क्यों सुनसी दुनी इन कानों, जो कबहूं न सुनी क्यांहें।। १६ ।।

यह बातें अखण्ड अक्षर और अक्षरातीत की हैं और कहना इस संसार में है, तो यह दुनियां, जिसने कभी इन कानों से नहीं सुना, वह अब कैसे सुनेगी।

कोट हिस्से एक हरफ के, हिसाब किया मिहीं कर।
एक हिस्सा न पोहोंच्या इन जिमी लग, ए मैं देख्या दिल धर।। १७ ।।

एक अक्षर (शब्द) के मैंने करोड़ हिस्से किए, उसमें से एक हिस्से के समान भी इस ब्रह्माण्ड में बृज रास का ज्ञान नहीं पहुंचा है। यह मैंने दिल में विचार करके देख लिया है।

एक जरा इन जिमी का, ताके नूर आगे सूर कोट।
सो सूर न आवे नजरों, इन जिमी जरे की ओट।। १८ ।।

रास की जमीन की एक ककड़ी की रोशनी के सामने यहां के करोड़ों सूर्य ढक जाते हैं।

सोने जवेर के बन कहूं, तो ए सब झूठी वस्त।
सोभा जो नूर बन की, सो कही न जाए मुख हस्त।। १९ ।।

उस रास के अखण्ड वृन्दावन के वनों की उपमा यहां के सोने और जवाहरात से करूं तो यह झूठी है। जो वहां की शोभा है वह यहां के मुख से कही नहीं जाती और हाथ से लिखी नहीं जा सकती।

जो कहूं रोसनी एक पात की, सो भी कही न जाए।
कोट चांद जो सूर कहूं, तो एक पातै तले ढंपाए।। २० ।।

नित्य वृन्दावन के वृक्ष के पत्तों की रोशनी की शोभा भी नहीं कही जा सकती। यहां के करोड़ों चन्द्रमा और सूर्य की उपमा दूं तो यह सब एक पत्ते की रोशनी में ढक जाते हैं।

नूर ससि बन पसु पंखी, जिमी नूरै रेजा रेज।
थिर चर नूर सबों मिने, सब चीजें नूर तेज।। २१ ।।

वहां का चन्द्रमा, वन, पशु, पक्षी, जमीन का कण-कण नूर का है तथा चल और अचल में नूर की शोभा है। सब चीजें नूर के तेज से भरी हुई हैं।

वस्तर भूखन इन जिमी के, सो याही जिमी माफक।
जिन जिमी जरे की रोसनी, कही न जाए रंचक।। २२ ।।

नित्य वृन्दावन के वस्त्र आभूषण भी वहीं के माफिक हैं। वहां की जमीन के एक जर्रे (कण) की रोशनी का बयान नहीं हो सकता।

सुख जो अर्स अरवाहों के, जो लिए जिमी इन।
सो तुम देखो सहूर कर, कहे न जाए मुख किन।। २३ ।।

अर्श की रूहों को जो सुख उस वृन्दावन में मिले हैं, वह तुम विचार कर देखो। उनका वर्णन मुख से नहीं हो सकता।

जिन जिमी की ए रोसनी, ऐसे बाग के दरखत।
तो इत सुख ऐसे ही चाहिए, अर्स बका की न्यामत।। २४ ।।

जिस नित्य वृन्दावन के एक जर्रे (कण) का इतना प्रकाश है, वहां के वन के वृक्ष तथा सुख अखण्ड घर की न्यामत हैं। इसलिए वहां सुख ऐसे ही चाहिए।

Nijanand App

ए जिमी बाग पांचों चीजें, ए जो पैदा किए नूर।
एक पल लेहेरें कायम किए, नूर का ऐसा जहूर।। २५ ।।

उस वृन्दावन की जमीन, बगीचे और पांचों चीजें (जल, वायु, अग्नि, पृथ्वी, आकाश) नूर के हैं। अक्षर ब्रह्म के नूर की ऐसी शोभा है कि अक्षर ने एक पल में ही सबको अखण्ड कर लिया।

इत खेलत रूहें अर्स की, जो स्यामें उतारी किस्ती पर।
सो रूहें पोहोंची इन बाग में, और तोफाने डूबे काफर।। २६ ।।

इस नित्य वृन्दावन में श्री कृष्ण ने योगमाया की नाव बनाकर अर्श की रूहों को अपने पास बुलाया और रूहें उस वृन्दावन में पहुंचकर खेलीं और कालमाया के ब्रह्माण्ड का प्रलय हो गया।

ए नूह तोफान कह्या रसूलें, और गुझ रह्या रूहों रोसन।
किस्ती पार उतारी सबों सुनी, सुध न परी पोहोंची बाग किन।। २७ ।।

इसको ही रसूल साहब ने नूह-तूफान कहा है और इसका गुझ (भेद, रहस्य) आज दिन तक किसी को पता नहीं चला। किश्ती और पार उतरने की बात तो सबने सुनी, परन्तु किस बगीचे में पहुंची इसका पता किसी को नहीं लगा।

बात बड़ी इन नूर की, ए तो नेक कह्यो प्रकास।
इत खेलें रूहें हक सों, बिध बिध के विलास।। २८ ।।

यह तो मैंने जरा-सा बताया है। यहां के नूर की बड़ी भारी शोभा है। यहां पर रूहों ने हक से रास खेलकर तरह-तरह के सुख लिए।

कह्या जाए ना नूर इन बाग जिमी, हुआ सब रोसन भरपूर।
जिन ऐसा रोसन किया पल में, सिफत क्यों कहूं असल नूर।। २९ ।।

इस नूरी बाग और जमीन की शोभा का वर्णन नहीं हो सकता जिसे अक्षर ब्रह्म ने एक पल के अन्दर नूर से भर दिया तो ऐसे अक्षर ब्रह्म की सिफत (विशेषता) किन शब्दों में वर्णन करूं?

हद सब्द दुनी में रह्या, पोंहोंच्या नहीं नूर रास।
तो क्यों पोंहोंचे असल नूर को, जिनकी ए पैदास।। ३० ।।

यहां हद के शब्द माया में ही रह गए, अखण्ड रास तक नहीं पहुंचे, तो अक्षर तक यहां के शब्द कैसे पहुंच सकते हैं, जिनके हुकम से यह सारा संसार बना है।

बड़ी भिस्त भी याही से, जो कही कजा के मांहें।
तिन भिस्त के नूर की, बात बड़ी है तांहें।। ३१ ।।

अक्षर के सत स्वरूप में जहां पहली बहिश्त कजा वाली बनी है उसके तेज की बात बहुत बड़ी है।

नूर रास भी बरन्यो ना गयो, तो भिस्त बरनन क्यों होए।
बोहोत बड़ी तफावत, रास भिस्त इन दोए।। ३२ ।।

जब रास के वृन्दावन के नूर की ही शोभा का वर्णन नहीं किया जा सकता तो इस बहिश्त जो सत स्वरूप में होगी, उसका वर्णन कैसे करें? रास में और बहिश्त में बहुत ही बड़ा फर्क हैं, कैसे कहें?

सोभा भिस्त जिमीय की, और सोभा भिस्त दरखत।
पुरों पुरों नूरी बसें, ए क्यों होए खूबी सिफत।। ३३ ।।

बहिश्त की, भूमि की, वृक्षों की, पुरा-पुरा (कालोनी-कालोनी) जहां पर मोमिनों के जीवों के नूरी तन रहेंगे, उनकी खूबी की शोभा कैसे कहें?

Nijanand App

सोभा भिस्त मोहोल मंदिरों, और सोभा नूरियों अंग।
नूर असल अंग भेदिया, ए नाहीं नूर तरंग।। ३४ ।।

बहिश्त के महल, मन्दिर और उन नूरियों (ब्रह्म प्रियाओं) के तनों की शोभा अद्भुत है। यह नूरी तन हमारे असली अंगों के जीव हैं। यह अक्षर के नूर की तरंग नहीं है।

निबेरा भिस्त रास का, कहूं पावने रूहों हिसाब।
भिस्त को सुख है जागते, रास को सुख है ख्वाब।। ३५ ।।

रास और बहिश्त का ब्योरा रूहों को समझाने के वास्ते कहा है। रास का सुख सपने का है और बहिश्त का सुख जागृत अवस्था का है।

रास भिस्त या जो कछू, ए सब पैदा असल नूर।
तिन असल नूर की क्यों कहूं, जो द्वार आगूं हजूर।। ३६ ।।

रास और बहिश्त या जो कुछ भी है, अक्षर से उत्पन्न हुई है, तो उस अक्षर का वर्णन कैसे करूं जो नित्य ही श्री राजजी के दर्शन करने जाता है।

ए जो नूर मकान आगूं अर्स के, नूर बका असल।
ए रूहें असलू कानो सुनियो, असल तनों के दिल।। ३७ ।।

अखण्ड परमधाम में रंग महल के सामने ही अक्षर धाम है। हे मोमिन! तुम परमधाम की असल रूहें हो। वह अपने असल तनों के कानों से सुनो और दिल में विचार करो।

ए असल नूर मकान की, ए नूर सागर साबित।
देखे नूर के तरंग, रास भिस्त कही तित।। ३८ ।।

यह अक्षर ब्रह्म का जो नूर है वही नूर सागर है और उसी नूर सागर की एक तरंग में यह रास की बहिश्त अखण्ड है।

नूर लेहेरें दायम उठें, पाउ पल में बिना हिसाब।
कोई लेहेर कायम करे, कई उड़ावें कर ख्वाब।। ३९ ।।

अक्षर के चौथाई पल में नूर की लहरें सदा उठा करती हैं। जिनमें से किसी को अक्षर ब्रह्म कायम कर लेते हैं और बाकी को सपने की तरह उड़ा देते हैं।

नूर मकान जिमी असल, असल बन चौफेर।
पसु पंखी असल, खेलत घेरों घेर।। ४० ।।

अक्षर धाम की भूमि अखण्ड है। चारों तरफ वन अखण्ड है। पशु-पक्षी जो वहां खेलते हैं वह भी अखण्ड हैं।

नूर जिमी बन नूर जल, आकास वाए सब नूर।
नूर पसु पंखी द्वारने, नूर सब ससि सूर।। ४१ ।।

वहां की जमीन, जल, वन, आकाश, हवा, पशु, पक्षी, दरवाजे तथा चन्द्रमा और सूर्य सब नूर के हैं।

एक पात ना खिरे बन का, ना गिरे पंखी का पर।
नया पुराना न होवहीं, जंगल या जानवर।। ४२ ।।

वहां के वन का पत्ता नहीं गिरता और पक्षी का पंख नहीं गिरता। वहां जंगल हों, जानवर हों, कुछ भी नया या पुराना नहीं होता।

Nijanand App

दरबार मोहोल नूर सबे, सब नूरै नूर विस्तार।
ए नूर कहूं मैं कहां लग, कहूं याको वार न पार सुमार।। ४३ ।।

अक्षर ब्रह्म का दरबार नूर का है और सब नूर ही नूर का विस्तार है। उसका वर्णन कहां तक करूं? सब बेशुमार है।

ए सब नूर एक होए रह्या, रोसनी न काहूं पकराए।
बिना नूर कछू ना देखिए, रह्या बाहेर मांहें भराए।। ४४ ।।

यह सब नूर एक हो रहा है। जहां तक भी देखें नूर ही नूर है, इसलिए इसका वर्णन करना सम्भव नहीं है। अन्दर-बाहर सब नूर ही नूर झलक रहा है।

रास भिस्त लेहेरें कही, कही नूर मकान की बिध।
आगे तो नूर तजल्ला, सो ए देऊं नेक सुध।। ४५ ।।

रास और बहिश्त की लहरों की तथा अक्षर धाम की हकीकत तुमको बता दी है। अब आगे परमधाम है। इसकी भी तुमको थोड़ी-सी सुध देते हैं।

जहां पर जले जबराईल, इत थें आगे न सके चल।
दरगाह अर्स अजीम की, हक हादी रूहें असल।। ४६ ।।

जहां से आगे जबराईल फरिश्ता नहीं जा सका, वहां हक हादी और रूहों के रहने का घर परमधाम है।

अब नूर कहूं अंदर का, नूर मोहोल मंदिरों नहीं पार।
एही भूल है अपनी, सोभा ल्याइए मांहें सुमार।। ४७ ।।

अब परमधाम के अन्दर की शोभा बताती हूं। यहां के महल मन्दिरों की शोभा बेशुमार है। यह हमारी भूल है जो उस शोभा का यहां पर वर्णन करते हैं।

नूरजमाल अंग का नूर जो, बड़ी रूह रूहों सिरदार।
बड़ी रूह के अंग का नूर जो, रूहें बुजरक बारें हजार।। ४८ ।।

अक्षरातीत का नूर अंग श्री श्यामा महारानी हमारी सिरदार (प्रमुख) हैं तथा बड़ी रूह श्यामा महारानी के अंग के नूर से बारह हजार रूहें हैं।

सुख जो अर्स अजीम के, सो होए नहीं मजकूर।
ए अर्स तन से बोलत, मांहें खिलवत हक हजूर।। ४९ ।।

परमधाम के जो अखण्ड सुख हैं, उनका वर्णन यहां के तनों से और शोभा से नहीं हो सकता। श्री महामतिजी कहती हैं कि मेरे अन्दर श्री राजजी महाराज बैठे हैं और मैं अपने अर्श के तन से ही कुछ वर्णन कर रही हूं।

जो रूह होवे अर्स की, सो सुनियो अर्स तन कान।
अर्स अकलें विचारियो, मैं केहेती हों अर्स जुबान।। ५० ।।

जो रूहें अर्श परमधाम की हैं वह अपने अर्श तन के कानों से सुनना और अर्श की अक्ल से विचार करना। मैं भी अर्श की जबान से कहती हूं।

हम रूहें हमेसा बका मिने, रूह अल्ला के तन।
असल तन हमारे अर्स में, और कछू न जानें हक बिन।। ५१ ।।

हम ब्रह्मसृष्टियां अखण्ड घर में श्यामा महारानी के अंग हैं। असल तन अर्श में होने से हम सिवाय पारब्रह्म के किसी को नहीं जानते।

Nijanand App

हम सबमें इस्क हक का, ऊपर बरसे हक का नूर।
हम हमेसा हक खिलवतें, हम सब हक हजूर।।५२ ।।

हम सबके अन्दर हक का इश्क है और ऊपर से हक की नूरी बरसात (श्यामाजी के प्यार की) होती है। हम हमेशा हक के सामने परमधाम में रहती हैं। वह खिलवत है।

पेहेले कह्या नूर मकान जो, सो नूर मांहें वाहेदत्त।
हक हादी रूहें खिलवत, ए वाहेदत्त सब निसबत।।५३ ।।

पहले हमने जो अक्षरधाम का वर्णन किया है वह राजजी महाराज के स्वरूप का ही नूर है। परमधाम में हक हादी (श्यामाजी) और रूहें रहती हैं। वह सब एक दिल हैं, वाहेदत हैं।

बाग जिमी जो अर्स की, और पसु जानवर।
कहा कहूं सुख साहेबी, जिन पर हक नजर।।५४ ।।

परमधाम की जमीन, बगीचा, पशु और जानवरों के सुख की साहेबी का वर्णन कैसे करूं, जिन पर हक परवरदिगार की मेहर सदा बरसती है।

और जरा न हक बका बिना, खेल सदा होत नूर से।
एक पल में कई पैदा करे, इंड उड़ावे पल में।।५५ ।।

परमधाम में हक श्री राजजी महाराज के बिना कुछ और नहीं है। खेल सदा अक्षर के हुकम से बनते हैं। यह एक पल में ऐसे कई इण्ड (ब्रह्माण्ड) बनाते और मिटाते हैं।

हम रूहें खेल जानें नहीं, जो नूर से उपजत।
ओ खेले अरवा गफलत में, ऊपर भी गफलत।।५६ ।।

अक्षर जो खेल बनाते हैं हम रूहें नहीं जानती थीं। अक्षर द्वारा रचित खेल में निराकार के झूठे जीव रहते हैं और उनके ऊपर झूठा आवरण भी निराकार का है।

हम जानें इस्क बड़ा हमपे, बड़ी रूह और हक से।
बड़ी रूह जाने सब से, बड़ा इस्क है हम में।।५७ ।।

हम जानती थीं कि हमारा इश्क श्यामाजी और श्री राजजी से बड़ा है। श्यामाजी जानती थीं कि उनका इश्क बड़ा है।

हकें कह्या हादी रूहन से, तुम नहीं मेरे माफक।
तुम तेहेकीक मेरे मासूक, मैं तुमारा आसिक।।५८ ।।

हक श्री राजजी ने हादी श्री श्यामाजी से कहा कि तुम सब मिलकर मेरे बराबर नहीं हो सकते। तुम निश्चित ही मेरे माशूक हो और मैं तुम्हारा आशिक हूं।

होत हांसी हमेसा, सब बड़ा जाने अपना प्यार।
ए बेवरा वाहेदत में होए नहीं, जित नाहीं जुदागी लगार।।५९ ।।

परमधाम में सदा अपना प्यार ज्यादा बताकर हांसी (हंसी) करते थे, लेकिन परमधाम में जरा भी जुदाई नहीं है और इसलिए वहां इश्क का ब्योरा नहीं हो सकता।

तब हकें कह्या फरामोस का, खेल देखावें हम।
मैं जुदे भी तुमें न करूं, देखाऊं तले कदम।।६० ।।

तब श्री राजजी ने कहा कि हम तुमको फरामोशी का खेल दिखाते हैं। हम तुमको अलग भी नहीं करेंगे और चरणों के तले बिठाएंगे।

Nijanand App

हकें हुकम किया दिल पर, तब खेल मांग्या हम एह।
तब हमको खेल देखाइया, खेल हुआ नूर का जेह।।६१ ।।

श्री राजजी महाराज ने ऐसा हुकम हमारे दिल पर कर दिया जिससे हमने खेल मांग लिया और हमको अक्षर का खेल दिखाया।

तो खेल हम देखिया, न तो कैसा खेल कौन हम।
क्यों उतरें रूहें अर्स से, छोड़ के एह कदम।।६२ ।।

इसलिए हमने खेल को देखा, नहीं तो खेल कैसा और हम कौन। श्री राजजी के चरण छोड़ खेल में क्यों उतरे?

खेल हुआ हम वास्ते, हम पर हादी ल्याए फुरमान।
हम वास्ते कुंजी रूहअल्ला, दई इमाम हाथ पेहेचान।।६३ ।।

हमारे लिए खेल हुआ और हमारे लिए रसूल साहब कुरान लाए। हमारे वास्ते रूह अल्लाह (श्यामा महारानी) ने कुंजी (तारतम) लाकर पहचान कराने के वास्ते इमाम मेंहदी के हाथ में दी।

ए तीनों सूरत हादीय की, आई जुदी जुदी हम कारन।
आखिर खेल देखाए के, सब समझाई रूहन।।६४ ।।

यह तीनों सूरतें (बसरी, मलकी, हकी) हमारे हादी श्री राजजी की हमारे वास्ते आईं और आखिरत का खेल दिखलाकर के रूहों को पहचान कराई।

अर्स हक की लज्जत, दई खेल में हम को।
हक साहेबी हक इस्क, हमारे लाड़ पाले कुंजीसों।।६५ ।।

घर की तथा श्री राजजी महाराज के सुख की लज्जत हमको खेल में दी। तारतम की कुंजी से श्री राजजी महाराज की साहेबी या इश्क का और हमारे लाड़ पूरा करने का सब पता लगा।

हम बैठे देख्या वतन में, हकें ऐसी करी हिकमत।
आए न गए हादी हम, ऐसा देख्या मांहें खिलवत।।६६ ।।

हम घर में बैठे ही खेल देख रहे हैं। ऐसी हिकमत से श्री राजजी ने खेल दिखाया। हम और हादी न कहीं आए हैं और न कहीं गए हैं। मूल मिलावे में ही बैठकर खेल देख रहे हैं।

हक न्यामत मैं देत हों, जो होसी अर्स अरवाए।
ए सुनते निसानियां अर्स की, लगसी कलेजे घाए।।६७ ।।

श्री महामति जी कहती हैं, हे रूहो! मैं तुम्हें हक की न्यामत (जागृत बुद्धि) दे रही हूं, इसलिए जो अर्श की अरवाहें होंगी उनको, इस घर की बातों को सुनकर कलेजे में चोट लगेगी।

पेहेचान हक अर्स रूहन की, ए केहेते आवसी इस्क।
ए सुन रूहें न सेहे सकें, बिछोहा अर्स हक।।६८ ।।

हक की रूहों की ही पहचान है कि उनको यह वचन सुनते ही इश्क आएगा और वह धनी का विछोह नहीं सहन कर पाएंगी।

हम उतरें चढ़ें तो खेल में, जो जरा दूसरा होए।
ए देखो हक इलम से, अर्स अरवा न उरझे कोए।।६९ ।।

हम परमधाम से खेल में आने-जाने की बात तब करें जब खेल का जरा भी रूप हो। आप हक के इलम से विचार कर देखोगे तो उसके मोमिन कहीं नहीं उलझेंगे।

Nijanand App

हकें दिया इलम अपना, तिनका तो हकै से काम।
और हम को क्या हक बिना, रात दिन लेना क्यों आराम।। ७० ।।

हक ने जिनको अपना इलम दिया है उनको हक से ही काम है। हमको हक के बिना रात-दिन कैसे आराम हो सकता है?

हम खेल देख्या लग मुद्दत, जेते रूहअल्ला के तन।
खेल देख पीछे फिरें, जानें बेर न लगी अधखिन।। ७१ ।।

हम श्यामा महारानी के जितने तन (रूहें) हैं, उन्होंने समझा है कि जैसे हम मुद्दतों से खेल देख रहे हैं, परन्तु खेल देखकर जब वापस जाएंगे और देखेंगे तो आधे क्षण का समय भी नहीं हुआ होगा।

ए देख्या बैठे वतन में, हक सुख लिए हम इत।
सो इन देह इन जिमिऐं, लिए सुख हक निसबत।। ७२ ।।

हमने घर बैठकर यह खेल देखा और खेल में हक के सुखों को हमने यहां इस तन और यहां की जमीन पर लिया और अपनी निसबत को पहचाना।

फेर फेर हक वाहेदत्त, फेर फेर हक खिलवत।
फेर फेर सुख निसबत के, फेर फेर ए लई न्यामत।। ७३ ।।

हमने बार-बार हक की खिलवत और वाहेदत तथा निसबत होने के सुखों की न्यामत प्राप्त की।

महामत कहें मोमिन की, मिट गई दुनियां चाल।
देखिए हक दिल अर्स में, तो अबहीं बदले हाल।। ७४ ।।

श्री महामतिजी कहती हैं कि मोमिनों की दुनियां वाली रहनी मिट गई। यदि हम अपने अर्श दिल में हक को देखें तो हमारी भी रहनी अभी बदल जाएगी।

।। प्रकरण ।। ३९ ।। चौपाई ।। १५४० ।।

सनन्ध–खंडनी जाहेरियों की

लिख्या है कतेब में, पाया न किन ठौर।
ना फरिस्तों ना नबियों, तो क्यों पावे कोई और।। १ ।।

अंजील, जंबूर, तौरेत और कुरान ग्रन्थों में तो पारब्रह्म की पहचान लिखी है, पर किसी को उसकी पहचान या ठिकाने का पता नहीं चला। जब फरिश्तों और पैगम्बरों को ही नहीं पता चला तो और कोई कैसे पा लेता?

लिख्या जो रसूल ने, तिन तो कह्या अगम।
तबक चौदे ख्वाब के, न्यारा रह्या खसम।। २ ।।

रसूल साहब ने भी कुरान में लिखा है कि पारब्रह्म अगम है (पहुंचा नहीं जा सकता)। चौदह लोक का ब्रह्माण्ड सपने का है, इसलिए पारब्रह्म इससे न्यारा है।

खुद तो किन को ना मिल्या, अब काजी कजा चलाए।
कहें जो चाहे खुद को, हम मिलावें ताए।। ३ ।।

खुदा किसी को नहीं मिला। अब श्री प्राणनाथजी काजी (न्यायाधीश) बनकर न्याय करने आए हैं और कहते हैं कि जिसे पारब्रह्म चाहिए वह हमारे पास आओ, हम मिलाते हैं।

Nijanand App

पढ़े मुल्लां आगूं हुए, सो तो खाए गुमान।
लोकों को बतावहीं, कहें हम पढ़े कुरान।।४।।

आगे पढ़े-लिखे मुल्ला हुए तो, पर अहंकार में डूब गए। लोगों को कहते हैं कि हम कुरान पढ़े हैं।

दुनी बदले दीन खोवहीं, चलें सो उलटी रीत।
सुपने के सुख कारने, लोभें किए फजीत।।५।।

यह मुल्ला लोग उलटी चाल चलते हैं। दुनियां के बदले दीन की परवाह नहीं करते। सपने के सुख के वास्ते ही लोभ में इनकी फजीहत (मिट्टी पलीत) हो रही है।

राह बतावें दुनी को, कहें ए नबिएं कहेल।
लिख्या और फुरमान में, ए खेलें औरै खेल।।६।।

दुनियां को मनगढ़ंत रास्ता बताते हैं और कहते हैं कि रसूल साहब ने कहा है। कहते हैं कि कुरान में ऐसा ही लिखा है। इन्होंने इसे अपनी कमाई का धन्धा बना रखा है।

ए जो मोहोरे खेल के, धरें भेख विवाद।
एक भान दूजा धरें, कहें हमें होत सवाब।।७।।

खेल में बड़े-बड़े ज्ञानी, अगुए, मुल्ला, पादरी सभी अलग-अलग भेष धारण कर आपस में विवाद करते हैं। एक धर्म छुड़वाकर दूसरा धर्म धारण करवाते हैं और कहते हैं कि हमें पुण्य मिल रहा है।

ओ राजी एक भेख में, ताए मार छुड़ावें दाब।
ओ रोवे सिर पीटहीं, ए कहें हमें होत सवाब।।८।।

साधारण व्यक्ति अपने एक ही धर्म में चलता है। उसको मार-मारकर उसका धर्म छुड़ाते हैं। वह व्यक्ति इनकी मार से रोता है, सिर पीटता है। यह कहते हैं कि हमें पुण्य मिलता है।

एक खाई ग्रहतें काढ़ के, ले डारें दूजी खाड़।
ज़ब्हे करें जोरावरी, कहें हमें होत सवाब।।९।।

एक खाई (गड्ढे) से निकालकर दूसरी खाई में डालते हैं और जबरदस्ती उसकी सुंनत कर देते हैं और कहते हैं कि हमें सवाब होता है।

हिन्दू मुए जलावहीं, और ए आए तिन गाड़।
मिल तिन की जारत करें, कहें हमें होत सवाब।।१०।।

हिन्दू मुर्दे को जलाते हैं और यह उसे गाड़ आते हैं। इस तरह मुर्दों की समाधि (मज़ार) बनाकर सिजदा करते हैं और कहते हैं हमें लाभ मिलता है।

मार डार पछाड़हीं, ओ रोए पीट होवे ताब।
इन बिध जातां बदलें, कहें हमें होत सवाब।।११।।

साधारण इन्सान को मारते हैं और पीटते हैं। वह रो-पिटकर इनके अधीन हो जाता है। इस तरह से जातें बदलते हैं। कहते हैं कि हमें पुण्य मिलता है।

जैसे मछ गलागल, ना किनकी मरजाद।
यों खैंच लेवें आप में, कहें हमें होत सवाब।।१२।।

जैसे मगरमच्छ बिना रहम छोटे जानवरों को निगल जाते हैं, उसी प्रकार यह साधारण व्यक्ति को अपने धर्म में खींचते हैं और कहते हैं कि हमें पुण्य होता है।

Nijanand App

करें जुलम गरीब पर, कोई न काहूं फरियाद।
कर सुंनत गोस्त खिलावहीं, कहें हमें होत सवाब।। १३ ।।

इस तरह गरीबों पर जुल्म ढाते हैं उनकी कोई फरियाद नहीं सुनता। उनकी सुंनत करके गोश्त खिला देते हैं और कहते हैं कि हमें पुण्य मिल रहा है।

कोई जालिम जीव जनम का, खुराकी गोस्त सराब।
तिनको लेवें दीन में, कहें हमें होत सवाब।। १४ ।।

कोई जन्म से ही जालिम हो, जिसकी खुराक ही गोश्त और शराब हो, उसको अपने धर्म में मिला लेते हैं और कहते हैं कि हमें पुण्य मिलता है।

सिरोपाव दे गज चढ़ावहीं, ओ जाने हुआ खराब।
ए बजाए बाजे कूदहीं, कहें हमें होत सवाब।। १५ ।।

साधारण व्यक्ति को सम्मानित कर हाथी पर चढ़ा देते हैं, जबकि वह धर्म बदलने पर दुःखी होता है। यह बाजे बजा कर उसके सामने नाचते हैं और कहते हैं कि हमें पुण्य मिलता है।

काफर को मुस्लिम करें, मिनें लेवें दीन हिसाब।
सिर मूड़ दाढ़ी रखें, कहें हमें होत सवाब।। १६ ।।

हिन्दू को जब मुसलमान बनाते हैं तो उसका सिर मूंड कर दाढ़ी रख देते हैं और कहते हैं कि हमें पुण्य मिलता है।

खाना खिलावें आप में, देखलावें मसीत मेहेराब।
लेकर कलमा पढ़ावहीं, कहें हमें होत सवाब।। १७ ।।

अपने साथ बिठाकर खाना खिलाते हैं और मस्जिद में ले जाकर मेहराब के सामने कलमा पढ़ाते हैं और कहते हैं कि हमें पुण्य मिल रहा है।

चित दे एक चुनावहीं, हिन्दू जो आद के आद।
सो जोरा करके ढ़हावहीं, कहें हमें होत सवाब।। १८ ।।

हिन्दू लोग पहले से ही जो मन्दिर बनाते हैं उनको यह (मुसलमान) गिरा देते हैं और कहते हैं कि हमें यह पुण्य मिलता है।

हिन्दू मसीतां ढ़हावहीं, मुसलमानसों वाद।
दें सोभा इष्ट दीन को, कहें हमें होत सवाब।। १९ ।।

फिर हिन्दू लोग मस्जिदों को गिराते हैं और मुसलमानों से झगड़े करते हैं। धर्म का नाम लगाकर कहते हैं कि हमें पुण्य मिलता है।

सुध इष्ट न दीन की, मोह माते उनमाद।
ज्यों ज्यों वैर बढ़ावहीं, कहें हमें होत सवाब।। २० ।।

इनको न अपने इष्ट की खबर है न धर्म की। मोह की मस्ती में डूबे हैं और जैसे-जैसे बैर बढ़ाते हैं, कहते हैं कि हमें पुण्य मिलता है।

गरक हुए मोह गुमान में, जनम गमावत वाद।
या बिध खैंचें आप में, कहें हमें होत सवाब।। २१ ।।

इस तरह से अहंकार में डूबकर अपने जन्म को व्यर्थ गंवा देते हैं। इस तरह से अपने धर्म में खींचते हैं और कहते हैं कि हमें पुण्य मिलता है।

Nijanand App

यों पढ़े राह बतावहीं, खेलें मिने ख्वाब।
जाहेर जुलम होवहीं, कहें हमें होत सवाब।। २२ ।।

पढ़े-लिखे लोग संसार में जाहिरी जुल्म करते हैं और गुमराह करते हैं और कहते हैं कि हमें पुण्य मिलता है।

पर सवाब तो तिन को होवहीं, छोटा बड़ा सब जिउ।
एकै नजरों देखहीं, सब का खावंद पिउ।। २३ ।।

श्री प्राणनाथजी कहते हैं कि चाहे छोटा जीव हो या बड़ा जीव हो, सबको एक नजर से देखकर सबको एक पारब्रह्म की जो पहचान कराए उसको पुण्य मिलता है।

जो दुख देवे किनको, सो नाहीं मुसलमान।
नबिऐं मुसलमान का, नाम धरया मेहेरबान।। २४ ।।

रसूल साहब ने साफ लिखा है कि जो किसी को दु:ख देता है वह मुसलमान नहीं है। नबी ने मुसलमान का नाम मेहरबान रखा है।

कोई बूझे ना इसलाम को, ना लगें नबी के बान।
ना सुध सल्ली ना बंदगी, कहें हम मुसलमान।। २५ ।।

कोई धर्म को समझता नहीं और न किसी को नबी के वचनों की चोट ही लगती है, उन्हें न निमाज की, न बन्दगी की खबर है, और कहते हैं कि हम मुसलमान हैं।

कौन दीन क्यों चलना, और क्यों रेहेनी फुरमान।
क्यों अंतर मांहें बाहेर, कहें हम मुसलमान।। २६ ।।

दीन क्या है, उसके अनुसार कैसे चलना है, कुरान के हिसाब से अन्दर और बाहर से रहनी कैसी होनी चाहिए, इसकी तो खबर नहीं हैं और कहते हैं कि हम मुसलमान हैं।

ना सुध उजू निमाज की, ना रोजे रमजान।
ना तसबी ना नाम की, कहें हम मुसलमान।। २७ ।।

न उजू (पाक होने की) की, न निमाज की, न रमजान में रोजे की और न अल्लाह के नाम की माला फेरने की सुध होती है और कहते हैं कि हम मुसलमान हैं।

सुध नहीं दिल साफ की, ना कछू सब्द पेहेचान।
ना सुध छल ना वतन, कहें हम मुसलमान।। २८ ।।

दिल साफ कैसे करना है, नबी के शब्दों को कैसे पहचानना है, यह माया क्या है और वतन कहां है, यह सुध नहीं है और कहते हैं कि हम मुसलमान हैं।

मैं कौन आया किन ठौर से, कहा देखत हों जहान।
कौन नबी भेज्या किने, कहें हम मुसलमान।। २९ ।।

मैं कौन हूं, कहां से आया हूं, संसार में क्या देखता हूं, रसूल को किसने भेजा और रसूल कौन हैं, की पहचान नहीं है और कहते हैं कि हम मुसलमान हैं।

हक को कबूं ना याद करें, हुए नहीं गलतान।
खुद कबूं ना सुपने, कहें हम मुसलमान।। ३० ।।

पारब्रह्म को कभी याद नहीं करते और न उसमें मग्न ही होते हैं, पारब्रह्म के बारे में कभी सपने में भी नहीं सोचते और कहते हैं कि हम मुसलमान हैं।

Nijanand App

ए तो आग है जलती, ताए लई सुख मान।
देखाए भी अंधे न देखहीं, कहें हम मुसलमान।। ३१ ।।

यहां तो माया (कुफ्र) की आग जलती है। इसी को उन्होंने सुख मान लिया है। ऐसे अन्धे हो गए हैं कि समझाने पर नहीं समझते और कहते हैं कि हम मुसलमान हैं।

बाहेर के देखावहीं, अंदर आंख न कान।
सो कहा सुने कहा देखसी, कहें हम मुसलमान।। ३२ ।।

बाहरी रूप बनाकर दिखाते हैं। अन्दर सोचने की शक्ति नहीं है। जिसके अन्दर के आंख-कान नहीं, वह क्या सुनेंगे और क्या देखेंगे? फिर कहते हैं हम मुसलमान हैं।

विध भी देखावें बाहेर की, सुध नहीं वृध हान।
ना पेहेचान जो रूह की, कहें हम मुसलमान।। ३३ ।।

तरीका भी बाहर का दिखाते हैं और हानि-लाभ की सुध नहीं है, अपनी रूह की भी पहचान नहीं है और कहते हैं कि हम मुसलमान हैं।

गुन ना देखें काहू को, अवगुन लेवें सिरतान।
आप पड़े बस इंद्रियों, कहें हम मुसलमान।। ३४ ।।

किसी के गुण नहीं देखते, उसके अवगुण जल्दी पकड़ लेते हैं तथा इन्द्रियों के वश में पड़े रहते हैं और कहते हैं कि हम मुसलमान हैं।

जुलम करें कई जालिम, मूंदी आंखें गुमान।
खून करते ना डरें, कहें हम मुसलमान।। ३५ ।।

ऐसे जालिम लोग कई तरह के जुल्म करते हैं, जिनकी आंखें बन्द होती हैं, अहंकार में डूबे होते हैं, खून करने में डरते नहीं और कहते हैं कि हम मुसलमान हैं।

नीयत ना नीकी कबहूं, जनम दगाई जान।
निस दिन चाहें छल को, कहें हम मुसलमान।। ३६ ।।

इनकी नीयत कभी साफ नहीं होती। जन्म से ही दगाबाज होते हैं। रात-दिन छल का ही काम करते हैं और कहते हैं कि हम मुसलमान हैं।

मने उड़ाए तूल ज्यों, न पावें ठौर ठेहेरान।
सो सारे गफलतें फिरें, कहें हम मुसलमान।। ३७ ।।

इनका मन आक के तूल (रुई) के समान उड़ता फिरता है, इन्हें अपने ठिकाने का पता नहीं कि जाना कहां है, यह अंधेरे में ही घूमते फिरते हैं और कहते हैं कि हम मुसलमान हैं।

ले गरब खड़े होवहीं, जाने हम ही मेर समान।
ना सुध भारी हलके, कहें हम मुसलमान।। ३८ ।।

अहंकार लेकर ऐसे खड़े होते हैं जैसे पर्वत के समान हों, उनको बड़े-छोटे की खबर नहीं होती और कहते हैं कि हम मुसलमान हैं।

कहे अंग तो काम क्रोध के, गोस्त खान मद पान।
हक हराम न जानहीं, कहें हम मुसलमान।। ३९ ।।

इनके सब अंग काम-क्रोध से भरे होते हैं, इनका खान-पान भी गोश्त और शराब का होता है, सत और झूठ की पहचान नहीं होती और कहते हैं कि हम मुसलमान हैं।

Nijanand App

सुपेत हुए स्याही गई, स्याही अंदर बढ़ती जान।
काट गला लोहू पीवहीं, कहें हम मुसलमान।।४०।।

ऊपर के काले बाल सफेद हो गए हैं तथा मन की निर्मलता काली हो गई है, दूसरे का गला काटकर खून पीते हैं और कहते हैं कि हम मुसलमान हैं।

दुख ना देखें और को, ऐसे हिरदे निपट पाखान।
दुख देते ना सकुचें, कहें हम मुसलमान।।४१।।

किसी के दुःख को दर्द से नहीं देखते। ऐसे इनके दिल पत्थर हो गए हैं। दूसरे को दुःखी करने में जरा भी संकोच नहीं करते और कहते हैं कि हम मुसलमान हैं।

ब्राह्मण कहें हम उत्तम, मुसलमान कहें हम पाक।
दोऊ मुठी एक ठौर की, एक राख दूजी खाक।।४२।।

ब्राह्मण अपने को उत्तम बताते हैं और मुसलमान अपने को पाक कहते हैं। दोनों ही एक ठिकाने के हैं। एक राख हो जाता है, दूसरा खाक हो जाता है।

कुफर न काढ़ें आपको, और देखें सब कुफरान।
अपना अवगुन ना देखहीं, कहें हम मुसलमान।।४३।।

अपने कुफ्र को निकालते नहीं और दुनियां को काफिर कहते हैं। अपने अवगुण देखते नहीं है और कहते हैं कि हम मुसलमान हैं।

ज्यों सुपनें में मनुआ, आप भाव सब ठौर।
तरंग जैसा आप में, सोई देखे मिने और।।४४।।

जैसे स्वप्न में मन भटकता है और सबको एक जैसा समझता है, जैसे खुद होता है, वैसे ही अन्दर की विचारधारा से सब देखता है।

बदी न छोड़ें एक पल, डर न रखें सुभान।
फैल करें चित चाहते, कहें हम मुसलमान।।४५।।

बद फैली की भावना एक क्षण को भी नहीं छोड़ते, सुभान (अल्लाह) का डर नहीं है, मनचाहा कुकर्म करते हैं और कहते हैं कि हम मुसलमान हैं।

ना परतीत जो और की, यों पढ़े काजी कुरान।
राह बतावें और को, कहें हम मुसलमान।।४६।।

दूसरों पर विश्वास नहीं करते और कुरान के बड़े काजी कहलाते हैं। दूसरों को अपने मन के अनुसार रास्ता बताते हैं और कहते हैं कि हम मुसलमान हैं।

हिरदे फूटे ऐसे बेसुध, एता भी न रहे याद।
खुद काजी आखिर होएसी, तब देसी कहा जवाब।।४७।।

हृदय की आंखें फूटी हैं और ऐसे बेसुध हैं कि इतना भी इनको याद नहीं है कि खुद खुदा आखिर में काजी बनकर आएगा, तब उसको क्या जवाब देंगे?

कलाम अल्ला काजी पढ़ें, पर होत नहीं आकीन।
कैसा डर कौन आवहीं, तो हलका किया दीन।।४८।।

काजी बनकर कुरान को पढ़ते हैं और खुद को यकीन नहीं होता। खुदा का कैसा डर? कब खुदा आएगा? कौन आएगा? इस तरह से उन्होंने दीन (धर्म) को हलका कर रखा है।

Nijanand App

तिनों तो सस्ता किया, जिनों नहीं भरोसा निदान।
या विध आपे अपना, हलका करें कुरान।।४९ ।।

इन्होंने कुरान को इतना सस्ता बना दिया है कि उसके वचनों पर भरोसा नहीं करते। इस तरह से स्वयं ही कुरान को हलका करते हैं।

महामत केहेवे यों कर, ए पढ़े बड़े कुफर।
बातून नजर इन को नहीं, तो कजा की न हुई खबर।।५० ।।

श्री महामतिजी कहती हैं कि यह पढ़े-लिखे बड़े लोग ही काफिर हैं। इनकी नजर बातूनी नहीं है, इसलिए इनको कजा के दिन की खबर नहीं है।

|| प्रकरण || ४० || चौपाई || १५९० ||

सनन्ध–पत्री बड़ी

यह पत्री मेड़ते में बांग सुनने के बाद सुन्दरसाथ को लिखी है।

तुमको देऊं सुख जागनी, साथजी मेरे आधार।
भेख धरे जो वासना, छोटे बड़े नर नार।। १ ।।

हे मेरे साथजी! मैं तुमको जागनी के सुख देता हूं। तुम मेरी आत्मा के आधार हो और परमधाम की वासना हो। यहां आकर नर-नारी का भेष धारण किया है, जिनमें कोई गरीब है कोई अमीर है।

सुनियो भीम मकुंदजी, ऊद्धव केसो स्याम।
हम पाती पढ़ी महंमद की, सब पाई हकीकत धाम।। २ ।।

हे भीम भाईजी, मुकंददासजी, उद्धवजी, केशोदासजी तथा स्याम भट्टजी! मैंने मुहम्मद साहब की चिट्ठी (कुरान) पढ़ी। उसमें हमारे घर की सारी हकीकत है।

अपने घर की इसारतें, और न समझे कोए।
और कोई तो समझे, जो कोई दूसरा होए।। ३ ।।

यह अपने घर की बातें दूसरे नहीं समझ सकते। दूसरा कोई उस घर का है ही नहीं, तो समझेगा कैसे?

वतन की बातें सबे, पाई हमारी हम।
सो ए रोसन करत हों, कहियो साथ को तुम।। ४ ।।

हमारे घर की सारी बातें इसमें हमको मिलीं। वह मैं तुमको बताता हूं। तुम भी सुन्दरसाथ को कहना (बताना)।

किया बरनन श्री धाम का, कई विध लिखे निसान।
साथ को सुख उपजावने, ठौर ठौर किए बयान।। ५ ।।

इसमें परमधाम का वर्णन और कई तरह के निशान हैं। सुन्दरसाथ को सुख देने के वास्ते अलग-अलग ठिकाने पर समाचार लिखा है।

जमुना जरी किनार पर, कई दयोहरियां तलाब।
भांत भांत रंग झलकत, यों कई जवेर जड़ाव।। ६ ।।

यमुनाजी के किनारे पर मोती जड़े हैं और हौज कौसर तालाब के चारों तरफ दयोहरियां (गुमटियां) हैं, जिनमें तरह-तरह के रंग और जवाहरात जड़े हुए झलकते हैं।

Nijanand App

नीर उजले खीर से, खुसबोए जिमी रेत सेत।
पसु कई विध खेलहीं, यों कागद निसानी देत।।७ ।।

परमधाम का पानी दूध से भी अधिक साफ है। परमधाम की रेत चमकदार है और खुशबू देती है। पशु कई तरह के खेल खेलते हैं, ऐसा कुरान में लिखा है।

सबज बन कई रंग के, जवेर कई झलकत।
सैयां बरनन इसारतें, कई पंखी मिने घूमत।।८ ।।

कई रंग के वहां वन हैं। कई तरह के जवाहरात झलकते हैं। हे सुन्दरसाथजी! थोड़ा-सा वर्णन इशारे मात्र से लिखा है। वहां वनों में कई प्रकार के पक्षी घूमते हैं।

कह्या मैं तारतम तुम को, मूल वचन जिन पर।
सो सारे इनमें लिखे, निसान अपने घर।।९ ।।

परमधाम के मूल वचनों की याद दिलाते हुए मैंने जो तारतम वाणी से पहचान कराई थी, वही सारी बातें अपने घर की इसमें लिखी हैं।

ऊपर से तले आए के, सब बैठियां खेल देखन।
भेली रूह भगवान की, हुकम हुआ सबन।।१० ।।

ऊपर (तीसरी भोम) से नीचे आकर (मूल मिलावा में) खेल देखने बैठीं। अक्षर भगवान की सुरता भी (अक्षर धाम में) साथ ही खेल देखने बैठी। तब श्री राजजी महाराज का हम सब पर खेल देखने का हुकम हुआ।

हुई रात सबन को, तिन फेरे खेल में मन।
सोई रात सोई साइत, पर भूल गैयां वह दिन।।११ ।।

हम सब फरामोशी में हो गए जैसे रात्रि हो गई हो। जिससे हमें ऐसा लगा कि हम खेल में आ गए। वहां वही समय है और वही दिन है, परन्तु खेल में आकर हम भूल गए।

तीन तकरार कहे रात के, तिन तीनों के बयान।
बृज रास और जागनी, ए कई विध लिखे निसान।।१२ ।।

इस खेल की रात के तीन भाग कहे हैं और उन तीनों की हकीकत बृज, रास और जागनी की कई तरह से इशारतों में लिखी है।

फुरमान उसी साइत का, पिया भेज्या हम पर।
सारी विध सोई लिखी, जो कही बाई सुन्दर।।१३ ।।

उसी पल में धनी ने हमारे वास्ते कुरान भेजा है और उसमें सारी हकीकत लिखी है जो सुन्दरबाई (श्री देवचन्द्रजी) ने हमको बताई थी।

धाम रास और बृज की, कही सुन्दरबाईऐं जेह।
ए तो कागद नेक देखिया, देत साख सब एह।।१४ ।।

सुन्दरबाई (श्री देवचन्द्रजी) ने जो बृज, रास और धाम की हकीकत बताई, वह कुरान को थोड़ा देखने से ही सब गवाहियां मिलती हैं।

Nijanand App

काल माया जोग माया, तीसरी लीला जागन।
सुन्दरबाईऐं ना कहे, ए आगम के वचन।।१५।।

बृज कालमाया की, रास योगमाया की और तीसरी लीला जागनी की है, जो कालमाया के ब्रह्माण्ड में हो रही है। इसकी भविष्यवाणी सुन्दरबाई (श्री देवचन्द्रजी) ने नहीं की।

सुन्दरबाईऐं देखिया, दिल के दीदों मांहें।
बृज रास और धाम की, पर जागनी की सुध नांहें।।१६।।

सुन्दरबाई (श्यामा महारानी) ने अपने दिल की नजरों से देखा। बृज, रास की लीला और धाम का वर्णन किया, परन्तु जागनी की सुध उनको नहीं थी।

और सुख कई विध के, कई विध किए प्यार।
सुन्दरबाई के संगतें, कई औरों पाए दीदार।।१७।।

और कई तरह के सुख, और कई तरह के प्यार, कई तरह के दर्शन कई औरों को भी सुन्दरबाई (श्री देवचन्द्रजी) की संगत से मिले।

अंतरगत आरोगते, तीन बेर पिया आऐं।
आप भी मेवे मिठाइयां, कई हमको आन खिलाऐं।।१८।।

धनी तीन बार गांगजी भाई के घर (चाकला मन्दिर में) आकर आरोगते थे और स्वयं भी मेवा मिठाइयां लाकर हमको खिलाते थे।

विध विध के सुख और कई, देत दायम अनेक।
पर लीला जो जागन की, कदी वचन न पाया एक।।१९।।

और तरह-तरह के सुख हमको सदा देते थे, पर जागनी की लीला का एक वचन भी उन्होंने कभी नहीं बताया।

लरी सुंदरबाई पिउसों, इन आगम के कारन।
पर पाया नहीं पड़ उत्तर, एक आधा भी सुकन।।२०।।

सुन्दरबाई (श्यामा महारानी) जागनी के लिए पियाजी से बहुत लड़ीं कि जागनी मेरे हाथ से कराओ पर इस बात का जरा भी उत्तर नहीं मिला।

इन पड़ उत्तर वास्ते, बाईजीऐं किए उपाए।
विलख विलख वचन लिखे, सो ले ले रूहें पोहोंचाए।।२१।।

जागनी कार्य के उत्तर लेने के लिए सुन्दरबाई (श्यामाजी) ने कई उपाय किए तथा रो-रोकर वचन चिट्ठियों में लिखे और धनी के प्रगट होने पर सुन्दरसाथ द्वारा पहुंचाई।

यों उनहत्तर पातियां, लिखियां धाम धनी पर।
तब सैयां हम भी लिखी, पर नेक न दई खबर।।२२।।

इस तरह उनहत्तर पातियां (पत्र) धाम के धनी श्री प्राणनाथजी को दीं। फिर पीछे हमने भी लिखीं, परन्तु एक का भी उत्तर या थोड़ा-सा इशारा भी नहीं मिला।

सो सुध सारी ल्याइया, लीला आगूं से निसान।
जागनी की सुध सब लिखी, तुम लीजो साथ चित आन।।२३।।

यह सारी हकीकत रसूल साहब ने पहले से ही आकर बताई। जागनी की भविष्यवाणी कुरान में बताई। हे सुन्दरसाथजी! इसको आप चित्त में धारण करना।

Nijanand App

अव्वल मध और आखिर, यामें तीनों की हकीकत।
पर ए पावें एक इमाम, जित हुकम नूर महामत।। २४ ।।

इसमें शुरू परमधाम की, मध्य बृज और रास की और आखिरी जागनी की तीनों की हकीकत लिखी है, परन्तु इसको केवल इमाम मेंहदी, जिनके पास जागृत बुद्धि और हुकम है, जान पाए।

ज्यों आया नूर तारतम, श्री देवचन्दजी के पास।
सो विध सब इनमें लिखी, ज्यों कर हुआ प्रकास।। २५ ।।

जिस तरह श्री देवचन्द्रजी के पास तारतम आया और उसका प्रकाश हुआ वह सारी हकीकत कुरान में लिखी है।

फुरमान ल्याए महंमद, सब लिखी हमारी बात।
जरा एक न घट बढ़, सब अंग निसानी जात।। २६ ।।

मुहम्मद साहब कुरान लाए उसमें हमारी सारी बातें लिखी हैं। उसमें कुछ कमी-बेशी नहीं है। ऐसे निशान मिले हैं।

श्री देवचन्दजी सों जुध किया, कुली दज्जाल जिन पर।
ईसा दो जामें पेहेरसी, सो लिखी सारी खबर।। २७ ।।

जिस प्रकार श्री देवचन्द्रजी के साथ दज्जाल ने युद्ध किया वह भी लिखा है। यह भी लिखा है कि ईसा रूह अल्लाह दो तनों में लीला करेंगे।

श्री देवचन्दजी सों हम मिले, मुझ अंग हुआ रोसन।
सो बातें सब इनमें लिखी, निसान नाम सोई दिन।। २८ ।।

हम श्री देवचन्द्रजी से मिले और हमें ज्ञान मिला। यह सब बातें इसमें लिखी हैं। निशान, नाम तथा दिन तक लिखा है।

बोहोत बातें कई और हैं, सो केते लिखों निसान।
साथ हम तुम मिलके, हंस हंस करसी बयान।। २९ ।।

कुरान में और कई बातें लिखी हैं। कहां तक उसको लिखें? हे सुन्दरसाथजी! हम तुम जब मिलेंगे तो हंस-हंसकर बातें करेंगे।

कई विध की निसानियां, जिन विध हुई जागन।
हंसते हरखे जागसी, सुख देसी सब सैयन।। ३० ।।

कई तरह की निशानियां जिनसे जागनी होगी तथा हंसते हुए खुशी में परमधाम में जागेंगी और सब साथ को सुख होगा, वह सब लिखा है।

बाल लीला और किसोर, तीसरी बुढ़ापन।
तीन अवस्था तीन ब्रह्मांड, देखाए मिने एक खिन।। ३१ ।।

बृज की बाल लीला, रास की किशोर लीला, जागनी की बुढ़ापे की लीला—इन तीन अवस्थाओं के तीन ब्रह्माण्ड एक क्षण में दिखाए।

बाबा बूढा होए खेलावसी, दे मन चाह्या सुख सब।
तीन अवस्था एक साइत में, देखाए के हंससी अब।। ३२ ।।

श्री प्राणनाथजी बूढ़े बाबा बनकर सुन्दरसाथ को खेल खिलाएंगे तथा सभी को मनचाहा सुख देंगे। तीनों अवस्थाओं की लीला एक क्षण में दिखाकर सब हंसेंगे।

Nijanand App

तीन ठौर लीला करी, देखाए तीन ब्रह्मांड।
सो तीनों एक पल में, देखाए के उड़ावसी इंड।। ३३ ।।

तीन ठिकानों पर तीन लीलाएं कीं और तीन ब्रह्माण्ड दिखाए। अब यह तीनों ही ब्रह्माण्ड एक क्षण में उड़ जाएंगे।

खेले एकै रात में, बृज रास जागन।
बेर साइत भी ना हुई, यों होसी सब सैयन।। ३४ ।।

एक ही रात में बृज रास और जागनी की लीला खेली। एक क्षण भी नहीं हुआ, ऐसा जागने पर पता लगेगा।

बीच ब्रह्मांड ना जुग कोई, बरस मास ना दिन।
खिन में सब देखाए के, दोए साखें करी जागन।। ३५ ।।

इन ब्रह्माण्डों के बीच में कोई युग, वर्ष या दिन नहीं बीते। यह तीनों एक पल में सब कुछ दिखाकर वेद और कतेब की गवाहियां देकर जागनी की।

दाना एक खस खस का, तामें देखाए चौदे भवन।
सो दाना फेर होएसी, तुम देखोगे सब जन।। ३६ ।।

एक खस खस के दाने (पल में) में चौदह लोकों का ब्रह्माण्ड दिखाया। उसी पल में ही यह सभी समा जाएंगे।

पट कर बड़ा देखाइया, चौदे तबक बनाए।
तुम पर हांसी करके, देसी पट उड़ाए।। ३७ ।।

चौदह तबकों (लोकों) के ब्रह्माण्ड को बनाकर फरामोशी के परदे में बड़ा करके दिखाया। यह फरामोशी का परदा हटाकर तुम्हारे ऊपर धनी हांसी (हंसी) करेंगे।

ज्यों ज्यों होसी जागनी, त्यों त्यों उड़सी एह।
देखोगे सब नजरों, पिया हांसी करी है जेह।। ३८ ।।

जैसे-जैसे जागनी होगी वैसे-वैसे यह अज्ञान का परदा उठेगा और धनी ने जो हांसी करी है, उसे तुम आंखों से देखोगे।

पियाजीएं कई हांसी करी, सो लिखी मिने किताब।
जब सैयां सबे मिली, तब होसी बिना हिसाब।। ३९ ।।

धनी ने कई तरह से हांसी (हंसी) की है, ऐसा लिखा है। जागने पर फिर से हम मिलकर उठेंगे तो हांसी (हंसी) बेहिसाब होगी।

और भी कहूं सो सुनो, जाहेर महंमद बात।
और सबे उड़ाए के, एक रखी कदर की रात।। ४० ।।

और भी कहती हूं उसे सुनो, मुहम्मद साहब ने कुरान में लिखा है कि सब ब्रह्माण्ड का प्रलय करके लैल-तुल-कदर की रात हुई। उसे अखण्ड करके अर्थात् बृज, रास और जागनी जहां हुई उसे अखण्ड कर दिया, बाकी ब्रह्माण्डों को लय कर दिया।

Nijanand App

सब रोसनाई इनमें, सांची कहियत हैं जेह।
उतरी है पिया पास थें, रात नूर भरी है एह।।४१।।

कुरान में सब ज्ञान लिखा है। वह सच्चा है। धनी के पास से हम रूहें उतरी हैं, इसलिए यह रात नूरी रात कही है।

वतन थें पिउ प्यारियां, आइयां सबे मिल।
इसी रात के बीच में, करने को सैल।।४२।।

परमधाम से सब सखियां मिलकर इसी रात में सैर करने आई हैं।

पिया भेजे मलायक, रखोपे रूहों कारन।
सो संग अंदर रेहेवहीं, करत सदा रोसन।।४३।।

धनी ने फरिश्ते रखवाली करने के लिए भेजे हैं। वह सब हमारे साथ अन्दर रहकर हमें सही रास्ता बताते हैं।

तबक चौदे इन में, जिमी और आसमान।
रांत बड़ी कदर की, कोई नाहीं इन समान।।४४।।

चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड में दुनियां और आसमान के बीच में इतनी बड़ी रात्रि के समान और कोई रात नहीं है।

फिरत चिरागां इन में, एक चांद दूजा सूर।
ए तो सोर सेहेरन का, नहीं रोसन वतनी नूर।।४५।।

इस रात (यह चौदह तबकों) के अन्दर चांद और सूर्य चिराग की तरह घूमते हैं। शहरों के अन्दर जैसे शोर होता है वैसे ही चौदह तबकों में धर्म, पन्थ, पैंडे सब शोर मचा रहे हैं। इनमें से कोई भी घर की सुध देने वाला ज्ञान नहीं है।

रसूलें ए जाहेर कह्या, दिन रोसन पिया वतन।
और अंधेर सब दज्जाल, जो गोविंद भेड़ा फितन।।४६।।

रसूल साहब ने साफ लिखा है कि परमधाम में ही नूर (रोशनी) है। बाकी संसार सब अंधेरा है। यह गोविंद भेड़ा माया का मण्डल है।

नोट : गोविन्द भाई पटेल मरने के बाद प्रेत योनि को प्राप्त करता है और फिर उसी गांव के बाहर अपना डेरा डालता है। जो भी वहां से निकलता है उसे लालच देकर प्रेत बना लेता है। इसी प्रकार धीरे-धीरे उसने एक प्रेत-नगरी बनाई। इसे सब प्रकार सजाया। मन के लुभावने सामान सजवाए। पूरा राज्य का ठाठ-बाट बनाकर स्वयं वहां का राजा बन बैठा। सबको इसका पता चल गया कि जो इस रास्ते जाता है, प्रेत बनकर रह जाता है और कोई पार नहीं जाता। फिर कुछ समय बाद तीन महात्मा जो अपनी यात्रा पर थे, वह भी इसी रास्ते से जब निकले, उन्हें भी बहुत मना किया गया। महात्मा होने के कारण विश्वास था कि हम माया के प्रलोभन में नहीं फंसेंगे। चल पड़े। यह अनेक प्रकार के सुन्दर दृश्य देखते हैं। लुभावनी वस्तुएं देखकर मन तो ललचाता है पर याद आ जाती है कि यदि यहां की किसी वस्तु पर भी हाथ रखा या मोह छा गया तो प्रेत होकर फंस जाएंगे, इसीलिए चलते गए और किसी वस्तु पर हाथ नहीं रखा। यह सूचना गोविन्द पटेल के पास पहुंची तो वह स्वयं भागा। महात्माओं के पास आकर बड़े-बड़े प्रलोभन दिखाता है। किसी ने भी उसकी ओर ध्यान नहीं दिया। अन्तिम दरवाजा निकट आ गया तो गोविन्द पटेल भी परेशान था कि यदि यह पार हो गए तो मेरी मायाजाल का भांडा फूट जाएगा। यह साधु हैं यह सोचकर तीन बढ़िया कम्बल लेकर हाजिर करता है और कहता है, महाराज! शरद ऋतु आ रही

Nijanand App

है। यह मेरी भेंट स्वीकार करो। इतने में नगरी का बाहरी द्वार आ गया। पहला साधु मालिक पर भरोसा रखते हुए पार हो गया। दूसरा ललचाया तो, पहले के पीछे निकल ही गया। तीसरा सोचने लगा अब पांव उठाकर बाहर ही तो रखना है। सर्दी आ रही है, कम्बल लेना ही ठीक है, अर्थात् मालिक का भरोसा छोड़कर जैसे कम्बल का लालच किया, हाथ में कम्बल लेते ही वह भूत बन गया। दरवाजे से पार नहीं जा सका। यह माया का ब्रह्माण्ड प्रेत नगरी है। गोविन्द पटेल भगवान विष्णु हैं, तीन साधु ब्रह्मसृष्टि, ईश्वरी सृष्टि और जीव सृष्टि हैं। ब्रह्मसृष्टि और ईश्वरी सृष्टि सुध आने के बाद परमधाम को नजर में लेकर भवसागर से पार हो जाएंगे। जीव समझ आने के बाद भी माया नहीं छोड़ते और माया के अन्दर ही भूत बनकर पड़े रहते हैं।

नींद को रात कदर कही, दुनी ढूंढ़ें खेल में रात।
कहे जो आजूज माजूज, ए तिन में गोते खात।।४७ ।।

फरामोशी की रात ही कदर की रात कहलाती है। दुनियां वाले मुसलमान रमजान के महीने में कदर की रात को खोजते हैं। (पढ़े-लिखे मुल्ला) अपने अनुमान से रमजान के आखिरी सप्ताह के मध्य वाली रात अर्थात् रोजों की सत्ताइसवीं रात को कदर की रात कहते हैं। यह तो दिन और रात आजूज-माजूज की लीला है। रात्रि में यह गोते खाते हैं।

दरिया रूप अंधेरी, आदम रूप दज्जाल।
एही सरूप कुलीय का, वैर विखे लानती चाल।।४८ ।।

यह चौदह लोकों का निराकार का ब्रह्माण्ड ही दरिया रूप है। इसमें आदमी आदम का रूप है। उसका मन जिस पर अबलीस बैठा है, आदमी को परमात्मा की राह से भटकाता है। यह आदमी का दुश्मन बना बैठा है। यही सारे कलियुग का रूप है।

आदम रूप वैराट, अनेक विध खेलत।
झूठ कुफर कुली पसरया, सब सचराचर पसु मत।।४९ ।।

वैराट के बीच में आदमी की शक्ल में भगवान विष्णु अनेक तरह के खेल खेलते हैं। कलियुग के अन्दर झूठ और कुफ्र फैला रखा है। सब चर, अचर और पशुओं में स्वयं जीव रूप से बैठे हैं।

सुन्दरबाइऐं याको कह्या, गोविंद भेड़ा मंडल।
सोई कलजुग दज्जाल, व्याप रह्या सकल।।५० ।।

सुन्दरबाई (श्यामाजी) ने इस ब्रह्माण्ड को गोविन्द-भेड़ा का मण्डल कहा है। इसमें कलियुग ही दज्जाल है जो सबके मन में बैठा है।

खेल कह्या है नींद का, सब खेलें बीच अंधेर।
ए जो आइयां खेल देखने, ताए खैंच लिया दिल फेर।।५१ ।।

यह खेल सारा फरामोशी का है। इसके अन्दर सभी अज्ञान के अंधेरे में खेल रहे हैं। इसी खेल को देखने ब्रह्मसृष्टियां आईं। उनके दिलों को भी इसने अपनी तरफ खींच लिया।

जंग किया सैयां तिनसों, जो आगे कछुए नांहें।
ए भी कहें ओ ना कछू, पर उरझ रहियां तिन मांहें।।५२ ।।

ब्रह्मसृष्टियों ने, जो कुछ भी नहीं है, उससे लगातार युद्ध किया। यह खुद भी कहती हैं कि संसार कुछ नहीं है फिर भी उसमें उलझी हैं।

Nijanand App

लई लड़ाई सैयां तिनसों, जाए पड़ियां बंध।
ना रस्सी ना बांधे जिने, पर छूट ना सके कोई फंद।।५३ ।।

मोमिनों ने इस संसार से लड़ाई तो ले रखी है और उसी के बन्धन में फंसे हैं। यदि देखा जाए तो न कोई रस्सी है, न बन्धन है, फिर भी फंसी बैठी हैं।

जुदी जातें भांतें जुदी, खड़ियां जुदे भेख धर।
जानत नीके झूठ है, तो भी पकड़ रहियां सत कर।।५४ ।।

संसार में आकर मोमिन अलग-अलग जातियों में अलग-अलग भेषों में हैं और जानते हैं कि संसार झूठा है। फिर भी इसे सच्चा समझकर पकड़े बैठे हैं।

जुदे जुदे नाम खसम के, एक नारी दूजे नर।
खुद खसम को भूल के, खेल में बेठियां सत कर।।५५ ।।

अपने धनी को भूलकर संसार को सच्चा समझ बैठे हैं और अलग-अलग देवी-देवताओं की नाम से पूजा कर रहे हैं।

पिया खजाना खरच के, आए बंध से लैयां छुड़ाए।
अब सो करें मेहेमांनियां, बस्तर भूखन पेहेराए।।५६ ।।

इसलिए पिया ने यहां आकर तारतम वाणी का खजाना खर्च करके माया के बन्धनों से मोमिनों को छुड़ाया। अब वह मोमिन अपने धनी को वस्त्राभूषण पहनाकर आवभगत (मेहमानी) कर रहे हैं।

कई भोजन मेवे मिठाइयां, तकिए सेज जवेर।
सेवक सेवा दुनियां, करसी ब्याह सुंदर।।५७ ।।

कई सुन्दरसाथ अपने धनी को सुन्दर-सुन्दर भोजनों से, सुन्दर-सुन्दर मेवा मिठाइयों से, सेवक बनकर सेवा कर रहे हैं। तकिये लगाए जा रहे हैं। सेज बिछाई जा रही है। सारी दुनियां सेवा कर रही है और नए-नए सुन्दरसाथ आ रहे हैं मानो सुन्दर शादी हो रही है।

यामें कई विध हांसियां, पियाजी लिखी चित ल्याए।
सो आप मिने बैठ के, हंससी साथ मिलाए।।५८ ।।

इस संसार में प्रीतम कई तरह से सुन्दरसाथ को हंसाएंगे और स्वयं सुन्दरसाथ में बैठकर हंसेंगे।

वैराट सब पुकारहीं, सो भी इनमें लिखे सब्द।
कई विध लीला जागनी, पर भली गाई महंमद।।५९ ।।

संसार के धर्म ग्रन्थ जो भविष्यवाणियां कर रहे हैं वह भी इस कुरान में लिखी हैं। जागनी लीला के निशानात में मुहम्मद का कुरान ही सबसे श्रेष्ठ पाया।

याही लीला सब कोई, गावत गुझ अगम।
गरजसी वैराट में, हुए जाहेर सैयां हम।।६० ।।

इसी जागनी लीला की बातें सभी धर्म ग्रन्थ गा रहे हैं। जब हम संसार में जाहिर हो जाएंगे तो इसकी गूंज सारे ब्रह्माण्ड में फैल जाएगी। सबको ज्ञान हो जाएगा।

वैराट सारा गाएसी, नर नारी चित ल्याए।
पर गावना सुन महंमद का, रेहेसी सबे अचंभाए।।६१ ।।

सारे संसार के धर्म ग्रन्थ अथवा नर-नारी ध्यान से गान करेंगे, पर मुहम्मद साहब ने जो पहले से लिख रखा है उसे सुनकर सब हैरान होंगे।

Nijanand App

महंमद बातें बोहोत हैं, सो केती लिखूं तुम।
ए बातें तब होएसी, जब मिलसी हम तुम।। ६२ ।।

मुहम्मद साहब की बातें बहुत हैं। पर चिट्ठी में कहां तक लिखूं। जब हमं और तुम मिलेंगे तब इसकी चर्चा होगी।

महंमद कहे मैं हुकमें, सब रूहें मुझ मांहें।
मैं चल्या अर्स मेयराज को, पर पोहोंच सक्या नांहें।। ६३ ।।

मलकी मुहम्मद श्यामा महारानी कहती हैं कि मैं श्री राजजी महाराज के हुकम से सब रूहों को साथ लेकर खेल में आई। यहां आकर मैं वापस अर्श में जाने लगी तो अर्श में जा नहीं सकी (श्री इन्द्रावती धाम के दरवाजे खड़ी रो रही थीं इसलिए नहीं जा सकी), अर्थात् परमधाम के अन्दर नहीं जा सकी।

मैं ल्याया धनीय की, इसारतें जिन खातिर।
सो ताला अजूं खुल्या नहीं, तो मैं पोहोंचों क्यों कर।। ६४ ।।

मैं सुन्दरसाथ के लिए धनी से तारतम (कुंजी) लेकर आई थी वह ताला उस समय खुला नहीं था तो अन्दर कैसे जाएं? क्योंकि सबके वास्ते ताला खोलने का अधिकार श्री इन्द्रावतीजी को है।

ताला द्वार कजाए का, आए खोलसी जब।
कयामत रोसन करके, मिल भेले चलसी सब।। ६५ ।।

जब श्री प्राणनाथजी आकर न्याय का ताला खोलेंगे तथा कयामत में (बहिश्तें) कायम करेंगे तब हम सब एक साथ घर चलेंगे।

बाईजीएं घर चलते, जाहेर कहे वचन।
आड़ी खड़ी इंद्रावती, है इनके हाथ जागन।। ६६ ।।

सुन्दरबाई (श्यामाजी) ने सतगुरु श्री देवचन्द्रजी का तन छोड़ते समय साफ कहा था कि धाम के दरवाजे पर इन्द्रावती खड़ी हैं और जागनी का काम इनके हाथ से होना है।

जुदी हम से भगवान की, रूह फिरी एक सोए।
जब फिरे सुनसी हम को, तब घरों आवसी रोए।। ६७ ।।

जब हम घर चलेंगे तो हममें से केवल अक्षर ब्रह्म की एक आत्मा अलग होगी और उसे जब यह मालूम होगा कि ब्रह्मसृष्टियां घर जा रही हैं और उससे यह सुख छिन रहा है तो वह रोकर घर आएगी।

ए जो भिस्त हमों करी, फेर एही भानसी दुख।
बुध असराफील पोहोंचहीं, तब ताए भी देसी सुख।। ६८ ।।

सत स्वरूप में अपने जागनी के जीवों की जो बहिश्त कायम की है, उसे अक्षर ब्रह्म असराफील की बुद्धि से जागकर देखें तो उसके बिछुड़ने का दुःख मिट जाएगा और बहिश्त के सुख ही उसे आनन्दित करेंगे।

रूहअल्ला ईसा मसी, नूर नाम तारतम।
मूल बुध असराफील, ए हमारी मिने हम।। ६९ ।।

रूह अल्लाह (श्यामाजी), तारतम, मूल बुद्धि (असराफील) यह हमारी है। यह हमारे साथ रहेंगे।

काजी कजा ऐसी करी, रही ना किसी की हाम।
हुआ महंमद खिताब मेहेदी, मिल्या मिने इमाम।। ७० ।।

श्री प्राणनाथजी ने सबका न्याय इस तरह से चुकाया कि किसी को किसी प्रकार की चाहना बाकी नहीं रही। अब मुहम्मद ने मेंहदी का खिताब पाया और श्री प्राणनाथजी के तन से मिलकर इमाम कहलाए।

Nijanand App

जबराईल पिया हुकमें, रूहों करत रखोपा आए।
सोई सूरत है अपनी, पिया हुकमें लेत मिलाए।।७१ ।।

जबराईल फरिश्ता भी श्री राजजी के हुकम से रूहों की रक्षा करने के लिए आया था। वह भी अपनी ही सूरत है। धनी अपने हुकम से उसे भी अपने अन्दर मिला लेंगे (अक्षरधाम में रहेगा)।

जुदे जुदे नामें गावहीं, जुदे जुदे भेख अनेक।
जिन कोई झगड़ो आप में, धनी सबों का एक।।७२ ।।

श्री प्राणनाथजी महाराज के स्वरूप को संसार वाले अलग-अलग नामों से बोल रहे हैं तथा अलग-अलग रूपों में (धर्मों में) भेष बनाकर झगड़ रहे हैं। स्वामीजी कहते हैं कि अब कोई मत झगड़ो। सबका मालिक एक है और वह मैं हूं।

अब सुनो प्यारे साथजी, पिया प्रगट होत सबन।
सारों को सुख देय के, उड़ावत एह सुपन।।७३ ।।

हे मेरे प्यारे सुन्दरसाथजी! सुनो, सबके धनी प्रगट हो रहे हैं। सबको अखण्ड सुख देकर ब्रह्माण्ड का प्रलय कर देंगे।

वैराट चौदे तबक, करके नूर नजर।
कायम दिए सुख मन बंछे, ब्रह्मांड सचराचर।।७४ ।।

चौदह लोकों के सचराचर ब्रह्माण्ड को योगमाया में अक्षर की नजर तले कायम करके सबको मनचाहे सुख देंगे।

।। प्रकरण ।। ४१ ।। चौपाई ।। १६६४ ।।

सनन्ध–पत्री छोटी

प्रीतम मेरे प्रान के, आतम के आधार।
ए दिल भीतर देखियो, है अति बड़ो विस्तार।। १ ।।

श्री महामतिजी सुन्दरसाथजी से कहती हैं कि तुम मेरे प्राणों के प्रीतम हो। आत्मा के आधार हो। दिल के अन्दर विचार करके देखना, इस बात का विस्तार बहुत भारी है।

सैयां सुन दौड़ियो, सई मेरी नाहीं बिलम कछू अब।
ऐसी खबर दई महंमदें, सैयां सुन दौड़ियो सब।। २ ।।

हे सुन्दरसाथजी! तुम्हें सुनकर दौड़ना है। मेरी बहन! (शाकुमार) अब देरी करने की बात नहीं है। मुहम्मद साहब ने ऐसी खबर दी है। सुन्दरसाथजी! सुनकर सब दौड़ना।

कागद चौदे तबक के, मैं देखी हकीकत।
सब गावें लीला जागनी, पर बड़ी महंमद की मत।। ३ ।।

मैंने चौदह तबकों के धर्म ग्रन्थों को देखा है और उनकी हकीकत को समझा है। सब भविष्य की वाणी बोलते हैं, परन्तु मुहम्मद साहब के कुरान में सबसे बड़ी बातें लिखी हैं (मुहम्मद साहब का ज्ञान सबसे अच्छा है)।

Nijanand App

महंमद पाती के वचन, सुनियो भीम मकुंद।
आगम था पट बीच में, सो काढ़्या पट निकंद।।४।।

मुहम्मद साहब के कुरान के वचनों को सुनना है। हे भीम भाई! हे मुकुन्ददासजी! इस बात को सुनना। पहले से ही कुरान की भविष्यवाणी पर आज दिन तक परदा पड़ा था। वह परदा अब हटाकर भविष्य को जाहिर करती हूं।

आगम निगम सब लिख्या, हुआ है होसी जेह।
ए बानी तो बोहोत है, पर नेक कहूं तुमें एह।।५।।

सब धर्म ग्रन्थों में क्या हुआ है और भविष्य में क्या होना है, पहले से लिखा है। यह वाणी तो बहुत है, पर तुम्हें थोड़ा-सा बता रही हूं।

ए खेल है जो नींद का, तामें आधी दई उड़ाए।
बाकी उड़ाए देत हों, तुम साथ को लीजो बुलाए।।६।।

यह सारा खेल फरामोशी का है, जिसमें से तारतम ज्ञान के द्वारा आधी नींद उड़ाकर, बृज, रास और धाम का ज्ञान तुमको दिया। अब जागनी का भी ज्ञान देती हूं। इससे तुम सुन्दरसाथ को बुलाना।

तारीख तीन ब्रह्मांड की, केहेती हों कर हेत।
नींद एक आधी दूसरी, तीसरी में सावचेत।।७।।

तीनों ब्रह्माण्ड की तारीख (हकीकत) का भेद प्यार से तुमको बताती हूं। पहली ब्रज की लीला नींद में, दूसरी रास की कुछ नींद में कुछ जागृत में तथा तीसरी जागनी पूर्ण जागृत अवस्था की है।

बरस पांच हजार पर, सात सै सैंतालीस।
होसी नेहेचल नूर नजरों, जित दिन हजार बरीस।।८।।

आदि आदम के पांच हजार सात सौ सैंतालीस वर्ष बाद ब्रह्माण्ड अक्षर की नजर में चढ़ेगा (उस समय विक्रम सम्वत् सत्तरह सौ अड़तालीस होगा तथा रसूल साहब की बारहवीं सदी शुरू होगी) रसूल साहब के एक हजार वर्ष बाद ब्रह्मसृष्टि खेल में उतरेगी, अर्थात् सोलह सौ अड़तीस से जागनी की लीला शुरू होगी।

यामें नव सै छेहंतर जब हुए, तब हुआ नूह तोफान।
जल ऊपर तले से उमड़्या, हो गया एक जिमी आसमान।।९।।

आदि आदम से जब नौ सौ छिहत्तर वर्ष बीते तब बृज का ब्रह्माण्ड प्रलय हुआ (नूह-तूफान हुआ), जिसमें ब्रह्माण्ड का प्रलय हो गया।

पार हुई तहां से रूहें, और सब हुए गरक।
फेर तीसरा ए पैदा हुआ, यों देत साहेदी हक।।१०।।

वहां से रूहें पार हुईं, रास में गईं और संसार का प्रलय हो गया, फिर यह तीसरा ब्रह्माण्ड पैदा हुआ। ऐसी कुरान से खुदा की गवाही मिलती है।

आद आदम के छपन सै, बीते जब सैंतीस।
तबहीं दस सदी पर, होसी नब्बे बरीस।।११।।

आदि आदम के पांच हजार छः सौ सैंतीस वर्ष जब बीते तब मुहम्मद साहब के दस सौ नब्बे वर्ष हुए (विक्रम सम्वत् सत्तरह सौ पैंतीस)।

Nijanand App

महंमद हुआ मेंहेदी, सैयद केहेलाया सही।
खिताब दिया जब खसमें, तब भेली इमाम भई।। १२ ।।

सत्रह सौ पैंतीस में रसूल साहब इमाम मेंहदी बन गए और वह सैयद मुहम्मद इबने इस्लाम कहलाए (विजया अभिनन्द बुद्ध निष्कलंक अवतार कहलाए), तब रसूल साहब को ऊपर लिखे खिताब दिए।

रूह अल्ला ईसा रोसन, असराफील अकल।
सूरत साफ जबराईल, आए मेंहेदी में मिले सकल।। १३ ।।

रूह अल्लाह (श्यामा महारानी), असराफील (जागृत बुद्धि), जबराईल (जोश का फरिश्ता) सभी इमाम मेंहदी में आकर मिल गए।

हुआ हिंदुओं में जाहेर, हिंद से पाक मरद।
इस्क राह चलावसी, चालीस बरस लों हद।। १४ ।।

हिन्दुओं के बीच में पाक मर्द निष्कलंक अवतार जाहिर हुए और यहां से (१७३५ से १७७५ तक) चालीस वर्ष तक इश्क की राह में मोमिन चलेंगे।

नोट : १७३५ से १७७५ तक चालीस वर्ष ईसा रूह अल्लाह की बादशाही के हैं।

काबिल हिंद के बीच में, होसी इमाम रोसन।
ए लीजो प्रगट इसारतें, दोए रूहों का मिलन।। १५ ।।

कुरान में लिखा है काबुल और हिन्द के बीच में इमाम मेंहदी प्रगट होंगे। यह कुरान में इशारतों में लिखा है। इस समय दोनों रूहें मिल जाएंगी (श्यामा महारानी और मुहम्मद साहब की बसरी और मलकी दोनों सूरतें इमाम मेंहदी में मिलाईं)।

कोई दूजा मरद न कहावहीं, एक मेंहेदी पाक पूरन।
खेलसी रास मिल जागनी, छत्तीस हजार सैयन।। १६ ।।

एक इमाम मेंहदी के बिना दूसरा कोई मर्द नहीं होगा। यही बारह हजार ब्रह्मसृष्टि और चौबीस हजार ईश्वरी सृष्टि अर्थात् छत्तीस हजार के साथ जागनी का आनन्द लेंगे।

असलू जुथ रूहें चालीस, तिनमें बारे हजार।
बारे भेलियां रास में, इत चौबीस सहस्त्र कुमार।। १७ ।।

असल में रूहें चालीस जुत्थ हैं और उनकी संख्या बारह हजार है, इनके तनों में चौबीस हजार कुमारिकाओं ने बैठकर रास देखी थी।

दस बरस लों खेलहीं, होसी विनोद कई हांस।
सबके मनोरथ पूरने, करसी बड़ो विलास।। १८ ।।

दस वर्ष तक रूहें बड़े आनन्द के साथ मिलकर खेलेंगी। उसमें कई प्रकार का आनन्द विलास होगा। सबके मनोरथ पूर्ण होंगे (अर्थात् सत्तरह सौ पैंतीस से पैंतालीस के बीच परमधाम की वाणी का अवतरण हुआ)।

सत वैराट में पसरया, काढ्या कुली जालिम।
चौदे तबक सचराचर, नूर इस्क हमारा हम।। १९ ।।

यह सत ब्रह्माण्ड में फैला तथा कलियुगी ज्ञान का अन्त हुआ। चौदह तबकों के जीवों में जानकारी फैली और हम रूहों को इश्क का ज्ञान मिला।

Nijanand App

एक जरा जुलम न रेहेवहीं, सुबुध सबों में धरम।
बरत्यो सुख संसार में, विकार काटे सब करम।। २० ।।

अब तारतम वाणी के विस्तार से सारे संसार के अत्याचार खत्म हो गए। सारे संसार में अखण्ड का सुख फैला और कर्म के बन्धन टूटे।

जब पूरन सदी अग्यारहीं, तब जागनी रास तमाम।
मन चाह्या सुख दे सबों, हंसते उठे घर धाम।। २१ ।।

जब ग्यारहवीं सदी पूरी हुई तो सम्वत् १७४५ में सब जागनी रास पूर्ण हो गया, अर्थात् जागनी के वास्ते पूरी वाणी का अवतरण हो गया। सबको मनचाहे सुख मिले और यहां बैठे-बैठे चितवन से परमधाम अनुभव होने लगा।

पीछे सदी अग्यारहीं के, जब होसी तीस बरस।
बनी आदम पसु पंखी, नूर इस्क पिलाया रस।। २२ ।।

ग्यारहवीं सदी के तीस वर्ष बाद (सम्वत् १७७५) से सब संसार के जीवों को भी इश्क रस अर्थात् दुनियां में वाणी पसरनी शुरू हुई।

रोसनाई नूर बुध की, रही न किसी की हाम।
बारहीं सदी संपूरन, ब्रह्मांड ने पायो इनाम।। २३ ।।

तारतम की वाणी के प्रकाश से किसी की कोई चाहना बाकी नहीं रही। बारहवीं सदी पूर्ण होने पर अर्थात् सम्वत् १८४८ में सारे ब्रह्माण्ड को इनाम मिलेंगे।

अछर के दोए चसमें, नहासी नूर नजर।
बीसा सौ बरसों कायम, होसी वैराट सचराचर।। २४ ।।

अक्षर की दोनों दृष्टि (जबराईल और असराफील) तारतम ज्ञान में सराबोर हो जाएंगी। तब एक सौ बीस वर्ष बाद चर-अचर ब्रह्माण्ड अक्षर की नजर में अखण्ड हो जाएगा।

ए तलबे तुम वास्ते, मैं नेक देखी किताब।
ए दिन दिल में आन के, तुम साथ मिलाओ सिताब।। २५ ।।

जबराईल और असराफील तुम्हारी चाहना लेकर बैठे थे। हे सुन्दरसाथजी! मैंने तुम्हारे वास्ते कुरान को देखा और यह कयामत की गणना बताई है, इसलिए इस बात को हृदय में रखकर सुन्दरसाथ को जल्दी बुलाओ।

बेरिज करी वैराट की, ए पढ़ियो चित दे।
खेलाए रास जागनी, झलकाओ नूर ए।। २६ ।।

वैराट को अखण्ड करने का हिसाब मैंने बता दिया है। उसको चित्त देकर समझो। मैंने तुमको जागनी, रास के भेद दे दिए हैं। यह ज्ञान सब संसार को समझा दो।

Nijanand App

मेहेदी हदां कर दई, घर इमाम बताई राह।
पोहोंचे अर्स मेयराज को, हंस मिलियां रूहें खुदाए।।२७।।

मेंहदी ने कुरान के हिसाब से सारी सीमा बता दी है और इमाम साहब ने रूहों को घर चलने का रास्ता बता दिया है। अब सब रूहें हंसकर मिलेंगी और उठकर श्री राजजी के दर्शन करेंगी।

॥ प्रकरण ॥ ४२ ॥ चौपाई ॥ १६९१ ॥

॥ सम्पूर्ण प्रकरण तथा चौपाइयों का संकलन ॥ प्रकरण ॥ २१४ ॥ चौपाई ॥ ६३६० ॥

॥सनन्ध सम्पूर्ण॥

Nijanand App